प्रकाशक :
जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता



प्रथमावृत्ति :
सन् १६६०
सं० २०१७



प्रति संख्या :
१५००



पृष्ठांक :
२६३



मूल्य :
सात रुपये



मुद्रक :
ओसवाल प्रेस
१८६, क्रोस स्ट्रीट
कलकत्ता-७

विषय-सूची

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में 'तेरापंथ-आचार्य-चरितावलि' के प्रकाशन की कल्पना अपना एक विशेष महत्त्व रखती है।

तेरापंथ-संघ के प्रवर्तक आद्य आचार्य श्रीमद् भीखणजी के राजस्थानी भाषा में लिखित चार जीवन-चरित उपलब्ध हैं : (१) मुनि श्री वेणीरामजी रचित, (२-३) मुनि श्री हेमराजजी कृत दो चरित और (४) श्रीमद् जयाचार्य रचित 'भिक्षु यश रसायण' नामक चरित। इसके अतिरिक्त श्रावक श्री शोभजी कृत गुणावलियाँ और स्मरण तथा अन्य सम सामयिक व्यक्तियों द्वारा रचित संक्षिप्त जीवन-चरित भी उपलब्ध हैं। इन सब को एक स्वतंत्र खण्ड में प्रकाशित करने की योजना विचाराधीन है। अतः इस खण्ड में द्वितीय आचार्य भारीमालजी स्वामी से लेकर पंचम आचार्य मघराजजी स्वामी तक के जीवन-चरितों का ही समावेश किया गया है। बाद के खण्डों में अवशेष आचार्यों के जीवन-चरित प्रकाशित करने की योजना है।

इन प्रकाशनों से पाठकों को तेरापंथ सम्प्रदाय के बहुमूल्य इतिहास, तेरापंथी आचार्यों की महान् देन, उनकी जैन-शासन की अपूर्व सेवा और असाधारण साहित्य-साधना का गंभीर ज्ञान होगा। इनके स्वाध्याय से वैराग्य और शान्त-रस पूर्ण पुष्ट आध्यात्मिक खुराक की प्राप्ति होगी।

इस खण्ड में प्रकाशित जीवन-चरित पद्यबन्ध गीतिकाओं में हैं। उनकी भाषा ठेठ राजस्थानी है। प्रस्तुत प्रकाशन राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा—इसमें कोई सन्देह नहीं।

आशा है, पाठक इस प्रकाशन का विशेष रूप से स्वागत करेंगे और महासभा की साहित्य-प्रकाशन योजना में अपना अधिकाधिक सहयोग प्रदान करते हुए उसे सफल बनायेंगे।

तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह
व्यवस्था उप-समिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

'तेरापंथी-आचार्य-चरितावलि' कई खण्डों में प्रकाशित की जा रही है। प्रथम खण्ड में आद्य आचार्य संत भीखणजी विषयक अनेक जीवन-चरित्र और स्तवन ढालों का संग्रह रहेगा। प्रस्तुत खण्ड में द्वितीय से पंचम आचार्य तक के सुयशों का संग्रह है। बाद के खण्ड में अष्टम आचार्य कालूगणि तक के सुयश रहेंगे। प्रस्तुत खण्ड में केवल चार आचार्यों के ही सुयश-बखाणों का संग्रह है फिर भी सर्व आचार्यों के विषय में स्थूल जानकारी करा देना अप्रासंगिक न होगा।

तेरापंथ संघ के वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी हैं। साधारणतः आप 'आचार्य तुलसी' के नाम से प्रख्यात हैं। आपका जन्म संवत् १९७१ की कार्तिक शुक्ला २ के दिन लाडनूं (मारवाड़, राजस्थान) में हुआ। आपके पिता श्री झूमरमलजी खटेड़ का देहावसान आपकी बाल्यावस्था में ही हो गया था। आपकी माता श्री वदनांजी साध्वी के रूप में गण में विद्यमान हैं। आपकी बड़ी बहिन साध्वी लाडांजी पर साध्वियों के नेतृत्व का भार है। आपके बड़े भाई श्री चम्पालाल जी भी गण में साधु हैं। दीक्षा के समय आपकी अवस्था केवल ११ वर्ष की थी। आपने सं० १९८२ की मिति पौष कृष्ण ५ के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। आपकी शिक्षा आपके पूर्ववर्ती आचार्य श्रीमद् कालूगणि के हाथों से हुई। आप सं० १९९३ भाद्र शुक्ला ९ के दिन गंगापुर में आचार्य-पद पर आसीन हुए। आप कुशल आचार्य हैं। आध्यात्मिक नव-जागरण के नेता के रूप में आप प्रसिद्धि पा चुके हैं। आप अणुव्रत-आन्दोलन जैसी नैतिक-क्रांति के उन्नायक और संचालक हैं। आप एक दूरदर्शी विचारक पुरुष और उच्च कोटि के आध्यात्मिक कवि हैं। आपने अनेक साहित्यिक कृतियों के द्वारा तेरापन्थी साहित्य की श्री वृद्धि की है।

तेरापंथ संघ के मूल स्रोत आचार्य भीखणजी स्वामी हैं। वे बाईस सम्प्रदाय की एक शाखा विशेष के साधु थे। इस सम्प्रदाय के आचार्य रुघनाथजी थे। स्वामीजी सं १८१७ में इस सम्प्रदाय से पृथक् हुए। इस तरह तेरापन्थ सम्प्रदाय २०० वर्ष पुराना है।

इस संघ का नाम 'तेरापंथ' कैसे पड़ा, इसका इतिहास बड़ा रसपूर्ण है। स्वामीजी बगड़ी में आचार्य रुघनाथजी से पृथक् हुए। पृथक् होने के कुछ ही दिनों बाद संतों की संख्या तेरह हो गई। श्रावकों की संख्या भी तेरह हुई। इस १३ संख्या के संयोग को देख एक कवि ने संघ का नाम-संस्करण 'तेरापन्थ' कर दिया। मारवाड़ी में 'तेरा' शब्द हिन्दी 'तेरा' और 'तेरह' का पर्यायवाची है। नाम-संस्करण की यह बात स्वामीजी के कानों में पड़ी। 'तेरा' शब्द के कारण उन्हें यह नाम रुच गया। पाट से उतर उन्होंने ठोस भूमि पर आसन बिछाया। घुटनों के बल प्रार्थना की मुद्रा में वे आसीन हो गए। आँखें ध्यानस्थ हुईं। वे अञ्जलिबद्ध हो 'नमुत्थुणं' का पाठ करने लगे। उसके बाद बोले : "प्रभु! हम जिस मार्ग पर अग्रसर हुए हैं वह पन्थ तेरा नहीं तो और किसका है? तेरा ही पन्थ तो हमें सुहाता है। अतः प्रभु! हम वास्तव में ही तेरापन्थी हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति—ये तेरह बातें तुम्हारे शासन की महान् विशेषताएँ हैं। ये तेरह बातें हमारे जीवन-सूत्र हैं। हम उनके दृढ़प्रतिज्ञ पथिक हैं। अतः हम 'तेरापन्थी' ही हैं।" स्वामीजी साथी संतों के साथ आषाढ़ सुदी १५, १८१७ के दिन पुनः प्रव्रजित हुए। यही संघ के सूत्रपात का दिन कहा जा सकता है। नाम-संस्करण की उपर्युक्त घटना इसके पूर्व ही घट चुकी थी। संघ की स्थापना के बाद संघ 'तेरापन्थ' नाम से प्रसिद्ध हो गया।

नीचे हम एक ऐसी तालिका देते हैं जिससे पाठकों को स्वामीजी और उनके परावर्ती आचार्यों के विषय में अनेक बातें संक्षेप में मालूम हो जायेंगी—

मार्गणा	श्री भीखणजी	श्री भारीमालजी	श्री रायचन्दजी	श्री जीतमलजी
देश	मरुधर	मेवाड़	मेवाड़	मरुधर
ग्राम	कंटालिया	मुवो	वड़ी रावलियां	रोयट
जन्म संवत्	१७८३ अषाढ़ शुक्ला १३	१८०३	१८४७	१८६० आश्विन शुक्ला १४
पितृ नाम	वल्लूजी	कृष्णोजी	चतुरजी	आईदानजी
मातृ नाम	दीपांजी	धारणीजी	श्री कुशलांजी (दीक्षित)	कल्लूजी (दीक्षित)
विवाहित वालव्रह्मचारी	विवाहित	वालव्रह्मचारी	वालव्रह्मचारी	वालव्रह्मचारी
जाति	सुकलेचा	लोढा	वम्व	गोलछा
दीक्षा-ग्राम	केलवा	केलवा	वड़ी रावलियां	जयपुर
दीक्षा-संवत्	१८१७ अषाढ़ सुदी १५	१८१७ अषाढ़ सुदी १५	१८५७ चैत सुदी १५	१८६९ माघ कृष्णा ९
वड़ी दीक्षा	७ दिन से	७ दिन से	४ मास से	६ मास से
दीक्षा किसके द्वारा	स्वहस्ते	श्री भीखणजी	श्री भीखणजी	श्री रायचन्दजी
दीक्षा-वय	३३ वर्ष	१४ वर्ष	११ वर्ष	९ वर्ष
युवाचार्य पद		१८३२ मगसिर	१८७८ माघ वदी ८	१८९३
सिंघाड़ा किस वर्ष		आचार्य-सेवा में	आचार्य-सेवा में	१८८१
पाट किस वर्ष	१८१७ अषाढ़ सुदी १५	१८६० भादों सुदी १३	१८७८ माघ वदी ९	१९०८ माघ सुदी १५
दीक्षा कितने वर्ष	४४	६१	५१	६८
आयुष्य	७७	७५	६२	७७ वर्ष ७॥ मास
संथारा कहाँ	सिरीयारी	राजनगर	छोटी रावलियां	जयपुर
संथारा कितना	७ प्रहर	९ प्रहर	किञ्चित्	२ प्रहर
देवलोक वर्ष	१८६० भादों सुदी १३	१८७८ माघ कृष्णा ८	१९०८ माघ कृष्णा ८	१९३८ भादों वदी १२
कितने साधु छोड़े	२१	३५	६७	७१
कितनी आर्याएँ छोड़ीं	२८	४१	१४३	२०५

श्री मघराजजी	श्री माणिकलालजी	श्री डालचन्दजी	श्री कालूरामजी
थली	ढूंढाड़	मालवा	थली
वीदासर	जयपुर	उज्जैन	छापर
१८९७	१९१२	१९०९	१९३३
चैत्र शुक्ला ११	भादों कृष्णा ४	अषाढ़ सुदी ४	फागुन सुदी २
पूर्णमलजी	हुक्मचंदजी	कन्हैयालालजी	मूलचंदजी
श्री वन्नांजी	श्री छोटांजी	श्री जड़ावांजी	श्री छोगांजी
(दीक्षित)		(दीक्षित)	(दीक्षित)
वालब्रह्मचारी	वालब्रह्मचारी	वालब्रह्मचारी	वालब्रह्मचारी
वेगवानी	श्रीमाल	पींपाड़ा	कोठारी
लाडनूं	लाडनूं	इन्दोर	वीदासर
१९०८	१९२८	१९२३	१९४४
मिगसर वदी १२	फागुन सुदी ११	भादों वदी १३	आसोज सुदी ३
४ मास से	७ दिन से	७ दिन से	४ मास से
श्री जीतमलजी	श्री जीतमलजी	श्री हीरालालजी	श्री मघराजजी
१२ वर्ष	१६ वर्ष	१४ वर्ष	१० वर्ष ७ मास
१९२०	१९४९	—	१९६६
आसोज वदी १३	चैत्र वदी २		सावन-वदी १
आचार्य-सेवा में	१९३१	१९३०	आचार्य-सेवा में
१९३८	१९४९	१९५४	१९६६
भादों वदी १२	चैत्र वदी ८	माघ वदी २	भादों सुदी १५
४१	२५ वर्ष ९ मास	४३ वर्ष	४९ वर्ष
५३ वर्ष	४२ वर्ष ३ मास	५७ वर्ष ३ मास ८ दिन	६० वर्ष
सरदारशहर	सुजानगढ़	लाडनूं	गंगापुर
१ प्रहर	१ प्रहर	—	७ मिनट
१९४९	१९५४	१९६६	१९९३
चैत्र वदी ५	कार्तिक वदी ३	भादों वदी १२	भादों सुदी ६
७१	७१	६८	१३९
१९३	१९४	२३१	३३३

तेरापन्थ-संघ के आचार्यों के शासन-काल की अवधि का विवरण इस प्रकार है :

१—आद्य आचार्य भीखणजी स्वामी—	आषाढ़ सुदी १५, १८१७ से भाद्र सुदी १३, १८६०	=४४ वर्ष
२—आचार्य भारीमालजी स्वामी—	भाद्र सुदी १३, १८६० से माघ वदी ८ सं० १८७८	=१८ वर्ष
३—आचार्य रायचन्दजी स्वामी—	माघ वदी ८ सं० १८७८ से माघ वदी १४ सं० १९०८	=३० वर्ष
४—आचार्य जीतमलजी स्वामी—	माघ वदी १४ सं० १९०८ से भाद्र वदी १२ सं० १९३८	=३० वर्ष
५—आचार्य मघराजजी स्वामी—	भाद्र वदी १२ सं० १९३८ से चैत वदी ८, सं० १९४९	=११ वर्ष
६—आचार्य माणिकलालजी स्वामी—	चैत वदी ८ सं० १९४९ से कार्त्तिक वदी ३ सं० १९५४	=५ वर्ष
७—आचार्य डालचन्दजी स्वामी—	कार्त्तिक वदी ३ सं० १९५४ से भाद्र सुदी १५ सं० १९६६	=१२ वर्ष
८—आचार्य कालूरामजी स्वामी—	भाद्र सुदी १५, १९६६ से भाद्र सुदी ६, १९९३	=२७ वर्ष
९—आचार्य तुलसीरामजी स्वामी -	भाद्र सुदी ६, १९९३ के दिन आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। वर्तमान में आप ही का शासन चल रहा है।	

तेरापंथी साधुओं के अपने मठ, मन्दिर, आवास, उपाश्रय आदि नहीं होते। वे अपने लिए निर्मित मकान या उपाश्रयादि में नहीं ठहरते। गृहस्थों के खाली स्थान की याचना कर उसमें मर्यादित अवधि तक वास करते हैं। वे नंगे पैर एक जनपद से दूसरे जनपद, एक स्थान से दूसरे स्थान पाद-विहार करते रहते हैं। साधारणतः वे एक महीने से अधिक एक गांव में नहीं टिकते। केवल वर्षा ऋतु में वे एक स्थान पर चातुर्मास करते हैं। जिस गांव में साधु, साध्वियों अथवा आचार्य का चातुर्मास होता है वहाँ के वासी अपने को अत्यन्त धन्य और कृतकृत्य मानते हैं। इसका कारण यह है कि उन्हें कई महीनों तक निरन्तर रूप से धर्म-श्रवण का अवसर प्राप्त होता है। त्याग-प्रत्याख्यान और धर्मध्यान की अभिसिद्धि होती है। इस दृष्टि से आचार्य का चातुर्मास तो और भी अधिक महत्त्व का माना जाता है। नीचे हम एक तालिका देते हैं जिससे तेरापन्थी आचार्यों के भिन्न-भिन्न वर्षों के चातुर्मासों का पता चलेगा :

श्री भीखणजी स्वामी

१८१७ केलवा
१८१८ बरलू (मारवाड़)
१८१९ सिरीयारी
१८२० राजनगर
१८२१ केलवा
१८२२ सिरीयारी
१८२३ पाली
१८२४ कंटालिया
१८२५ केलवा
१८२६ खेरवा
१८२७ बगड़ी
१८२८ कंटालिया
१८२९ सिरीयारी
१८३० सुधरी (बगड़ी)
१८३१ सवाई माधोपुर
१८३२ खेरवा
१८३३ पाली
१८३४ पींपाड़
१८३५ आमेट
१८३६ सुधरी (बगड़ी)
१८३७ पादु
१८३८ केलवा
१८३९ सिरीयारी
१८४० पाली
१८४१ खेरवा
१८४२ सिरीयारी
१८४३ श्रीजीद्वारा
१८४४ पाली
१८४५ पींपाड़
१८४६ खेरवा
१८४७ पुर
१८४८ सवाई माधोपुर
१८४९ केलवा
१८५० श्रीजीद्वारा
१८५१ सिरीयारी
१८५२ पाली
१८५३ सोजतरोड
१८५४ खेरवा
१८५५ पाली
१८५६ श्रीजीद्वारा
१८५७ पुर
१८५८ केलवा
१८५९ पाली
१८६० सिरीयारी

श्री भारीमालजी स्वा०

१८६१ पिसांगण
१८६२ पाली
१८६३ खेरवा
१८६४ केलवा
१८६५ श्रीजीद्वारा
१८६६ आमेट
१८६७ वालोतरा
१८६८ पाली
१८६९ जयपुर
१८७० सवाई माधोपुर
१८७१ वोरावड़
१८७२ सिरीयारी
१८७३ पाली
१८७४ श्रीजीद्वारा
१८७५ कांकरोली
१८७६ पुर
१८७७ श्रीजीद्वारा
१८७८ केलवा

श्री रायचन्दजी स्वा०

१८७९ पाली
१८८० जयपुर
१८८१ पींपाड़
१८८२ पाली
१८८३ उदयपुर
१८८४ पेटलावद
१८८५ श्रीजीद्वारा
१८८६ पाली
१८८७ बीदासर
१८८८ श्रीजीद्वारा
१८८९ उदयपुर
१८९० पाली
१८९१ गोगुन्दा
१८९२ जयपुर
१८९३ पाली
१८९४ श्रीजीद्वारा
१८९५ उदयपुर
१८९६ पाली
१८९७ जयपुर
१८९८ लाडनूं
१८९९ बीदासर
१९०० जयपुर
१९०१ श्रीजीद्वारा
१९०२ पाली
१९०३ जयपुर
१९०४ श्रीजीद्वारा
१९०५ पाली
१९०६ लाडनूं
१९०७ जयपुर
१९०८ उदयपुर

श्री जीतमलजी स्वा०

१९०९ जयपुर
१९१० नाथद्वारा
१९११ रतलाम
१९१२ उदयपुर
१९१३ पाली
१९१४ बीदासर
१९१५ लाडनूं
१९१६ सुजानगढ़
१९१७ बीदासर
१९१८ लाडनूं
१९१९ सुजानगढ़
१९२० चुरू
१९२१ जोधपुर
१९२२ पाली
१९२३ बीदासर
१९२४ सुजानगढ़
१९२५ जोधपुर
१९२६ बीदासर
१९२७ लाडनूं
१९२८ जयपुर
१९२९ बीदासर
१९३० बीदासर
१९३१ सुजानगढ़
१९३२ लाडनूं
१९३३ लाडनूं
१९३४ लाडनूं
१९३५ बीदासर
१९३६ बीदासर

१९३७ जयपुर
१९३८ जयपुर

श्री मघराजजी स्वामी

१९३९ बीदासर
१९४० चुरू
१९४१ सरदारशहर
१९४२ जोधपुर
१९४३ उदयपुर
१९४४ बीदासर
१९४५ सरदारशहर
१९४६ लाडनूं
१९४७ बीदासर
१९४८ जयपुर
१९४९ रतनगढ़

श्री माणिकलालजी स्वा०

१९५० सरदारशहर
१९५१ चुरू
१९५२ जयपुर
१९५३ बीदासर
१९५४ सुजानगढ़

श्री डालचन्दजी स्वा०

१९५५ लाडनूं
१९५६ सरदारशहर
१९५७ बीदासर
१९५८ राजलदेसर
१९५९ जोधपुर
१९६० सुजानगढ़
१९६१ चुरू
१९६२ लाडनूं
१९६३ सरदारशहर
१९६४ बीदासर
१९६५ लाडनूं
१९६६ लाडनूं

श्री कालूरामजी स्वामी

१९६७ सरदारशहर
१९६८ बीदासर
१९६९ चुरू
१९७० लाडनूं
१९७१ सुजानगढ़
१९७२ उदयपुर
१९७३ जोधपुर
१९७४ सरदारशहर
१९७५ राजलदेसर
१९७६ बीदासर
१९७७ भिवानी
१९७८ रतनगढ़
१९७९ बीकानेर
१९८० जयपुर
१९८१ चुरू
१९८२ बीदासर
१९८३ गंगाशहर
१९८४ श्री डूंगरगढ़
१९८५ छापर
१९८६ लाडनूं
१९८७ गंगाशहर
१९८८ बीदासर
१९८९ सरदारशहर
१९९० सुजानगढ़
१९९१ जोधपुर
१९९२ उदयपुर
१९९३ गंगापुर

आचार्यों के चातुर्मासों की देश और गांववार तालिका इस प्रकार है :

१—श्री भीखणजी स्वामी के चातुर्मास ४४

१३ देश मेवाड़—

केलवा,	राजनगर,	आमेट,	श्रीजीद्वारा,	पुर
६	१	१	३	२

२९ देश मारवाड़—

बरलू,	सिरीयारी,	पाली,,	कंटालिया,	खेरवा,	सोजतरोड,	बगड़ी	पीपाड़,	पादू
१	७	७	२	५	१	३	२	१

२ देश ढूंढाड़—

सवाई माधोपुर
२

———
४४

२—श्री भारीमालजी स्वामी के चातुर्मास १८

८ देश मेवाड़—

केलवा,	श्रीजीद्वारा,	आमेट,	कांकरोली,	पुर
२	३	१	१	१

८ देश मारवाड़—

पिसांगण,	पाली,	खेरवा,	वालोतरा,	बोरावड़,	सिरीयारी
१	३	१	१	१	१

२ देश ढूंढाड़—जयपुर, सवाई माधोपुर
१ १

१८

३—श्री रायचन्दजी स्वामी के चातुर्मास ३०

१० देश मेवाड़—उदयपुर, श्रीजीद्वारा, गोगुन्दा
४ ५ १

११ देश मारवाड़—पाली, पींपाड़, लाडनूं
८ १ २

६ देश ढूंढाड़—जयपुर
६

२ देश थली—बीदासर
२

१ देश मालवा—पेटलावद
१

३०

४—श्री जीतमलजी स्वामी के चातुर्मास ३०

१३ देश थली—बीदासर, सुजानगढ़, चुरू
८ ४ १

१० देश मारवाड़—पाली, लाडनूं, जोधपुर
२ ६ २

२ देश मेवाड़—नाथद्वारा, उदयपुर
१ १

४ देश ढूंढाड़—जयपुर
४

१ देश मालवा—रतलाम
१

३०

५—श्री मघराजजी स्वामी के चातुर्मास ११

७ देश थली—बीदासर, चुरू, सरदारशहर, रतनगढ़
३ १ २ १

२ देश मारवाड़—जोधपुर, लाडनूं
१ १

१ देश मेवाड़—उदयपुर
१

१ देश ढूंढाड़—जयपुर
१

११

६—श्री माणिकलालजी स्वामी के चातुर्मास ५

४ देश थली—सरदारशहर, चुरू, बीदासर, सुजानगढ़
१ १ १ १

१ देश ढूंढाड़—जयपुर
१

५

७—श्री डालचन्दजी स्वामी के चातुर्मास १२

७ देश थली—सरदारशहर, बीदासर, राजलदेसर, सुजानगढ़ चुरू
२ २ १ १ १

५ देश मारवाड़—लाडनूं, जोधपुर
४ १

१२

८—श्री कालूरामजी स्वामी के चातुर्मास २७

१८ देश थली—सरदारशहर, बीदासर, चुरू, राजलदेसर, रतनगढ़, बीकानेर, गंगाशहर,
३ ४ २ १ १ १ २
छापर, श्रीडूंगरगढ़, सुजानगढ़
१ १ २

४ देश मारवाड़—लाडनूं, जोधपुर
२ २

३ देश मेवाड़—उदयपुर, गंगापुर
२ १

१ देश हरियाना—भिवानी
१

१ देश ढूंढाड़—जयपुर
१

२७

जैन साधु पंच महाव्रत धारी होते हैं। सर्व प्राणातिपात विरमण, सर्व मृषावाद विरमण, सव अदत्तादान विरमण, सर्व मैथुन विरमग, सर्व परिग्रह विरमग ये पाँच महाव्रत कहलाते हैं। जैन साधु यावज्जीवन तीन करण तीन योग से—मन-वचन-काया और कृत-कारित-अनुमोदन रूप से इन महाव्रतों का पालन करते हैं। वे कभी भी कोई वस्तु रात में नहीं खाते-पीते। जाने-आने, बोलने, आहार-प्राप्त करने, वस्तु को उठाने-रखने तथा शौच-निवृत्ति आदि की दैनिक क्रियाओं को करते हुए उन्हें बड़ी सूक्ष्म मर्यादाओं का ध्यान रखना पड़ता है। इन मर्यादाओं को समितियाँ कहते हैं। उन्हें तीन गुप्ति—मन, वचन और काय गुप्ति—का पालन करना पड़ता है। उनका जीवन महाव्रतों के प्रचार के लिए न्योछावर होता है। अपने सात्विक जीवन और उपदेशों के द्वारा वे जन-जन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की भावनाओं को फैलाते रहते हैं। दीक्षा का अर्थ है इन्हीं अहिंसादि महाव्रतों को आजीवन के लिए ग्रहण कर उनके पालन के लिए कटिबद्ध होना। जो यावज्जीवन के लिए इन महाव्रतों को अङ्गीकार करता है वह प्रव्रजित-दीक्षित कहलाता है। तेरापन्थी आचार्यों ने अहिंसादि धर्मों के व्यापक प्रचार द्वारा जनता का बहुत बड़ा उपकार किया है। भिन्न २ आचार्यों के आचार्य-काल में कितनी दीक्षाएँ हुईं उनका व्यौरा निम्न प्रकार है :

आचार्य नाम	कुल दीक्षा		नाबालिग		बालिग		नाबालिग गणबाहर		बालिग गण बाहर	
	संत	सती	संत	सती	संत	सती	संत	सती	संत	सती
१ श्री भीखणजी स्वामी	४६	५६	४	×	४५	५६	×	×	२०	१७
२ श्री भारीमालजी ,,	३८	४४	५	१	३३	४३	×	×	७	४
३ श्री रायचन्दजी ,,	७७	१६८	६	१२	७१	१५६	१	×	२३	३
४ श्री जीतमलजी ,,	१०५	२२४	२१	२९	८४	१९५	३	२	३१	९
५ श्री मघराजजी ,,	३६	८३	१२	१०	२४	७३	३	×	८	५
६ श्री माणिकलालजी ,,	१६	२४	१	५	१५	१९	×	×	७	१
७ श्री डालचन्दजी ,,	३६	१२५	४	१२	३२	११३	२	×	७	×
८ श्री कालूरामजी ,,	१५५	२५५	७०	१०६	८५	१४९	१६	१	२२	४

प्रस्तुत चरितावलि खण्ड

प्रस्तुत खण्ड में चार सुयशों का संग्रह है—(१) भारीमालजी स्वामी रो वखाण, (२) रायचन्दजी स्वामी रो वखाण, (३) जीतमलजी स्वामी रो वखाण और (४) मघराजजी स्वामी रो वखाण। अब हम यहाँ संक्षेप में इन कृतियों एवं उनके रचयिताओं का परिचय देंगे।

१—भारीमालजी स्वामी रो वखाण : यह मुनि श्री हेमराजजी की कृति है। आप सिरीयारी गांव के संत थे। आपके पिता श्री का नाम अमरोजी बागरेचा था। आप जाति के ओसवाल

थे। आपकी माता श्री का नाम सोमांजी था। एक वार सोमांजी ने स्वप्न में देव विमान देखा। सोमांजी की सन्तान जीती न थी। उन्होंने स्वप्न में ही कहा—"सन्तान नहीं जीती।" उत्तर मिला : "तुम्हारी दो सन्तानें जीवित रहेंगी।" स्वप्न के अनुसार यह पण्यशाली पुत्र सोमांजी को प्राप्त हुआ। हेमराजजी का जन्म १८२९ साल की माघ शुक्ला १३ शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र में आयुष्मान योग में हुआ। आप के एक छोटी वहिन हुई जिनका नाम रत्तुजी था। वचपन से ही आपमें बड़ा धर्म-प्रेम था। नियमित रूप से रोज सामायिक करते। साधुओं के प्रति वड़ा अनुराग रखते और उनकी सत्संगति में ज्ञान-ध्यान में समय व्यतीत करते। वड़े पाप-भीरु थे। धर्म-चर्चा में वड़े प्रखर थे। बुद्धि बड़ी गंभीर, पैनी, तत्पर और हाजिर-जवाव थी। कण्ठ वड़े मधुर, सुरीले और कलापूर्ण थे। गृहस्थावस्था में भी व्याख्यान देते, चर्चा करते, त्याग-प्रत्याख्यान के लिए लोगों को उत्साहित करते। इतने निर्भीक थे कि विपक्षी साधुओं के स्थानकों में जाकर चर्चा-वार्ता करते और विजयी होकर आते।

आपके प्रव्रज्या ग्रहण करने की घटना वड़ी रोचक है। स्वामीजी आपके उक्त गुणों के कारण आपके प्रति वड़े आकर्षित थे। एक बार हेमराज जी मांढ्ढे गांव स्वामीजी के दर्शन के लिए आए। रात में स्वामी जी पौल के चौंतरे पर सोये। हेमराजजी नीचे खाट डाल कर उस पर सोये। स्वामीजी और साधु परस्पर साधु और आर्याओं को अलग-अलग क्षेत्रों में भेजने की वातचीत करने लगे। सिरीयारी किसी साधु-संत को भेजने की वात नहीं आई। हेमराजजी से रहा नहीं गया। वोले—"स्वामीनाथ! आपने सिरीयारी साधु या आर्याओं को भेजने की तो वात ही नहीं की। स्वामीजी को यह वात वड़ी नागवार गुजरी। उन्होंने कड़े शब्दों में हेमराजजी को उपालम्भ दिया : साधुओं के वीच में वोलने की क्या आवश्यकता है? हेमराजजी स्वामी को यह बड़ी मर्म की लगी। मौन हो सो गये। सुवह दर्शन कर हेमराजजी ने सिरियारी जाने के लिए नींबली का मार्ग लिया और स्वामीजी ने कुशलपुर की ओर विहार किया। कुछ आगे जाने पर स्वामीजी को अपशकुन हुए। स्वामीजी पीछे लौटे और नींवली का रास्ता पकड़ा। हेमराजजी की चाल मन्थर थी। स्वामीजी की चाल शीघ्र थी। थोड़े ही समय में स्वामीजी उनके समीप पहुँच गये। स्वामीजी पीछे से वोले : "हेम! हम भी आ रहे हैं।" हेमराजजी के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने रुक कर वंदना की। स्वामीजी वोले : "आज तो तुम पर ही आये हैं।" हेमराजजी वोले : "भले ही पधारे।" स्वामीजी वोले : "प्रव्रज्या लूँगा, प्रव्रज्या लूँगा करते तुम्हें तीन वर्ष के लगभग हो गये। मन की वात तो वता।" हेमराजजी वोले : "प्रव्रज्या का विचार तो पक्का है।" स्वामीजी वोले : "मेरे जीवन काल में लोगे या वाद में?" यह वात हेमराजजी के लिए वड़ी मर्मस्पर्शी थी। वे वोले : "स्वामीनाथ! आपके मन में मेरी वात के प्रति शंका हो तो नौ वर्ष वाद अब्रह्मचर्य सेवन का त्याग करा दें।" स्वामीजी ने त्याग करा दिये। त्याग कराकर वोले : "क्या नौ वर्ष विवाह करने के विचार से रखे हैं?" "हेमराजजी ने उत्तर दिया—हाँ, स्वामीनाथ।" स्वामीजी वोले : "एक वर्ष तो विवाह होते होते लग जायगा। ८ वर्ष रहे। विवाह के वाद एक वर्ष स्त्री

पीहर रहती है। बाकी ७ वर्ष रहे। तुझे दिन के त्याग हैं अतः साढ़े तीन वर्ष रहे। तुझे पाँच तिथियों के त्याग हैं। शेष दो वर्ष चार महीने रहे।" इस तरह हिसाब समझाते-समझाते स्वामीजी ने ९ वर्ष की अवधि को ६ मास के बराबर सिद्ध कर दिया। इसके बाद स्वामीजी बोले : "विवाह के बाद यदि पुत्र-पुत्री होकर स्त्री का देहान्त हो जाय तो मन की मन में ही रह जाय। फिर मुनित्व ग्रहण करना कठिन हो जाता है। आगार क्यों रखा है ? यावज्जीवन के लिए शीलव्रत ग्रहण कर लो।" हेमराजजी ने हाथ जोड़ लिए। स्वामीजी अब गंभीर हो गये। बोले—"बड़ा कठिन काम है। क्या शील अङ्गीकार करवा दूँ ?" इस तरह बार-बार पूछकर हेमराजजी के कहने पर पाँच पदों की साक्षी से यावज्जीवन के लिए शीलव्रत ग्रहण करा दिया। अब हेमराजजी बोले : "अब आप शिरियारी शीघ्र पधारें।" स्वामीजी बोले : "अभी तो हीरांजी को भेजते हैं। साधु का प्रतिक्रमण सीखना।" इसके बाद नींबली पधारे। नींबली में पहुँचने के बाद हेमराजजी के पास मिठाई थी उससे उनके बारहवाँ व्रत निपजाया।

हेमराजजी ने गृहस्थावस्था में ही माघ सुदी १५ सं० १८५३ के बाद छः काय जीवों की हिंसा का त्याग कर दिया था। दीक्षा के लिए माघ सुदी १३ का दिन नियत हुआ। उनके बड़े बाप के बेटे ने रावले में शिकायत की—"भीखणजी हेमराज को जबर्दस्ती दीक्षा देना चाहते हैं।" स्वामीजी को गाँव में न रहने की आज्ञा दी गई।

गाँव के पंच हेमराजजी को साथ ले ठुकराणी के यहाँ पहुँचे। हेमराजजी का रूप-रंग बड़ा आकर्षक था। ठुकराणीजी ने कहा : "मैं अभी तुम्हारा विवाह कराए देती हूँ।" हेमराजजी बोले : "विवाह कराने का इतना शौक है तो गाँव में कुँवारे तो और भी बहुत हैं। मैं विवाह न करने का व्रत ले चुका हूँ।" इतना कह वहाँ से उठ चले आए। हेमराजजी की आन्तरिक वैराग्य-भावना को देख ठुकराणीजी ने स्वामीजी पर लगाये गये हुक्म को हटा लिया।

दीक्षा के समय हेमराजजी की अवस्था २४ वर्ष की थी। आपकी दीक्षा विशाल बट वृक्ष के तले हुई। यह घटना १८५३ के माघ शुक्ला १३ बृहस्पतिवार के दिन की है। उस समय पुष्य नक्षत्र और आयुष्मान योग था।

हेमराजजी स्वामी की दीक्षा हुई तब संघ में १२ साधु थे। आप तेरहवें साधु हुए। उसके बाद संख्या बढ़ती ही गई। स्वामीजी जब १८६० में देवलोक हुए तब २१ साधु और २८ साध्वियाँ गण में थे।

हेमराजजी स्वामी बड़े आतापी पुरुष थे। वे एक महान् तपस्वी और स्थिर परिणामी योगी थे। वे बड़े बहुश्रुती थे। उनके चरणों में रहकर अनेक संतों ने गहरा शास्त्र-ज्ञान पाया। अनेक साधुओं ने उनके साथ रह दीर्घ रोमाञ्चकारी तपस्याएँ कीं। उन्होंने तेरापंथ के इतिहास में अनेक स्वर्ण पृष्ठ जोड़े। चतुर्थ आचार्य जीतमलजी स्वामी के वे विद्यागुरु थे। उनके निर्माण का सारा श्रेय इसी तपस्वी संत को है। हेमराजजी स्वामी शासन के स्तम्भ माने गये हैं। आपका स्वर्गवास सं १९०४ के वर्ष जेठ सुदी २ के दिन सिरीयारी में हुआ। आपके स्वर्गवास के बाद आचार्य

रायचन्दजी स्वामी ने जीतमलजी स्वामी को उनका चरित लिखने की आज्ञा दी। श्री आचार्य की आज्ञा को पा जीतमलजी स्वामी ने उनका ढाल-बंध जीवन-चरित राजस्थानी में लिखा जो 'हेम नव रसो' के नाम से विख्यात है, और जो उनकी अमर कृतियों में से एक है।

हेमराजजी स्वामी एक महान् वहुश्रुती तपस्वी ही नहीं थे पर वड़े विद्या रसिक और सहज कवि थे। उनकी साहित्यिक कृतियों में स्वामीजी के दो जीवन-चरित उपलव्ध हैं। उनकी 'वीस विहरमाण की ढाल' का गण में वही स्थान है जो कवीन्द्र रवीन्द्र के 'जन गण मन अधिनायक' का भारत के राष्ट्रीय जीवन में।

'भारीमालजी स्वामी रो वखाण'—इन्हीं तपे हुए संत की कृति है। यह भारीमाल सुयश मारवाड़ के पीपाड़ शहरमें सं० १८७६ में रचा गया था। इसमें कुल १३ ढालें हैं। दोहे और ढाल-गाथाओं की कुल संख्या क्रमशः ७८ और १७३ है। इस कृति में आचार्य भारीमालजी स्वामी का प्रामाणिक जीवन-चरित हो यह कोई खास वात नहीं पर वह इतना वैराग्यपूर्ण है कि उसको पढ़ते समय बड़ा गंभीर समाधि-योग सध जाता है। यह रचयिता की उच्च आध्यात्मिक स्थिति का परिचायक है। कृति में घटनाओं का स्वाभाविक चित्रण है जो स्वयं ही हृदय को मोह-सा लेता है।

२—रायचन्दजी स्वामी रो वखाण : यह चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी की कृति है। आपका विस्तृत जीवन-चरित इसी ग्रन्थ (पृ० २७-४८) में प्रकाशित है। आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी जयाचार्य के नाम से प्रख्यात हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में लगभग तीन लाख पदों की रचना की। 'भगवती सूत्र' की उनकी जोड़ राजस्थानी साहित्य में सवसे वड़ा ग्रंथ माना गया है। उनकी अनेक कृतियों में से कुछ के नाम इस प्रकार हैं :

जयजश, दीपजश, धनजी, महिपाल, सुरसुन्दर दवदन्ती, पारस चरित्र, मंगल कलश, सीयल मंजरी, मोहजीत, सीतेन्द्र, ब्रह्मदत्त, यसोभद्र, भरत वाहुवल, व्याधु क्षत्री, जमाली, महावल, खन्धक सन्यासी, भिक्षु यश रसायन, भिक्षु चरित्र, रिषीराय चरित्र, खेतसी चरित्र, शान्तिविलास, हेम नवरसो, सरूप नवरसो, भीम विलास, मोतीजी स्वामी बड़ा, उदयराजजी, सरदार सती, शासन विलास, रिषीराय, सरूपचन्दजी स्वामी, शिवजी स्वामी, हरखचंदजी स्वामी, आराधना, श्रद्धा री चोपी, अकल्पती व्यावच, जिन आज्ञा ओलखावण, १८९० में गणवाहिर हुयोड़ांरी जोड़, उपदेश री चोपी, सीखावण री चोपी, चर्चा री चोपी, भिक्षु लिखतरी चोपी, चोवीसी वड़ी, चोवीसी छोटी, प्रश्नोत्तर तत्ववोध, न्याय चक्र की जोड़, धातु रुपावली का दोहा, टालोकड़ां की ढाल, लघुरास छोगजी चतुरभुजजी को, प्रतिमां उपर ग्रन्थमाला, परम्परा की ढालां, प्रश्नोत्तर सार्धसतक १५० प्रश्न, चर्चा रत्न माला, ध्यान , सन्त गुणमाला, हुंडी की जोड़, भगवती जोड़ ढाल ५०१, पहला आचारांग की जोड़, उत्तराध्ययन की जोड़ (अ० २८ सम्पूर्ण, अ० २९ अधूरा), विपाक दो अध्ययन की जोड़ (उदियो एवं अभंग सेन), निशीथ की जोड़, अनुयोग द्वार की जोड़ (थोड़ी), पन्नवणा की जोड़ (१० पद तांई), दूजे आचारंग को टव्वो, ज्ञाता सूत्र १२ अध्ययन की जोड़, भाद्र महोछव की २४ ढाल,

मर्याद महोछ्व की १७ ढाल, साधु सती गुण माला, मर्यादा की ढालां आदि। सैद्धान्तिक कई बड़े ग्रथों के नाम इस प्रकार हैं : १ भ्रमविध्वंसन, २—कुमति विहंडन, ३—संदेह विष ओषधि, ४—जिन आज्ञा मुख मंडन, ५—सिधांतसार, ६—जिन आज्ञा, ७—मिथ्यात्वी री करणी, ८—व्रत अव्रत।

प्रस्तुत कृति सं १९०९ की श्रावण बदी १२ बुधवार के दिन जयपुर में समाप्त की गई। इसमें कुल १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५१ दोहे २ सोरठे और २०७ गाथाएँ हैं।

स्वामीजी के बाद जयाचार्य की साहित्य-साधना वेजोड़ है। वे महान् तत्त्वज्ञानी पुरुष थे। जन्मजात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव जीवन-चरित्र लिखने की उनकी प्रवीणता तो अनोखी और अद्भुत है। रचना कौशल की दृष्टि से 'भिक्षु यश रसायण' जैसा जीवन-चरित्र केवल राजस्थानी साहित्य में ही नहीं किसी भी साहित्य में दुर्लभ होगा। शासन के एक-एक संत के जीवन का रसपूर्ण इतिहास उन्होंने अपनी कलापूर्ण लेखनी के द्वारा ऐसा हुवहू चित्रित कर रख छोड़ा है जो भावी पीढी के लिए स्थायी प्रकाश-स्तम्भ का सा कार्य देगा।

३—आचार्य जीतमलजी रो वखाण : यह पंचम आचार्य श्री मघराजजी स्वामी की कृति है। आपका विस्तृत जीवन-चरित्र इसी ग्रंथ में प्रकाशित है।

आचार्य मघराजजी बड़े गम्भीर विश्रुत विद्वान थे। संस्कृत के आप प्रौढ़ विद्वान थे। श्रीमद् जयाचार्य ने संस्कृत का कुछ अभ्यास किया था पर संस्कृत के गम्भीर व्यवस्थित अभ्यास की परम्परा का आरंभ मघराजजी स्वामी से ही हुआ।

प्रस्तुत कृति में चार खण्ड हैं। कुल ६७ ढालें हैं जिनमें २९७ दोहे और १४४५ गाथाएँ हैं। यह कृति संवत् १९४३ में उदयपुर में परिसमाप्त की गई थी जैसा कि निम्न गाथा से पता चलता है :

हर नयन युग निधि शशि वर्षे, ऋषि पूनम दिन सार।
शनिश्चर वारे जोड़ रची एह, उदियापुर शहर मझार॥ ६७॥

मघराजजी स्वामी की साहित्यिक कृतियों में 'गुलाव सती का वखाण' प्रसिद्ध है। गुलाब सती उनकी वहिन थीं जो गण में प्रव्रजित थीं। वह वड़ी विदुषी थीं। उनकी सौन्दर्य-सम्पदा अनोखी थी। उनके अक्षर वड़े सुन्दर थे। पीछे की ओर से अक्षर पढ़ सकती थीं। उनकी साहित्यिक अभिरुचि, प्रतिभा और निर्मल चरित्र की कथाएँ प्रसिद्ध हैं। श्रीमद् जयाचार्य कृत भगवती की विशाल जोड़ इनके हस्ताक्षरों में लिखित हैं।

४—मघराजजी स्वामी रो वखाण : यह षष्ठम आचार्य श्री माणक गणि की कृति है। इस कृति में कुल २५ ढालें हैं जिनमें सव मिलाकर १२५ दोहे और ५०४ गाथाएँ हैं। इसके रचयिता आचार्य श्री माणकलालजी स्वामी का जीवन चरित इसके वाद के खण्ड में प्रकाशित होनेवाला है। उनकी साहित्यिक प्रतिभा का कुछ परिचय प्रस्तुत कृति से हो जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि चरितावलि के इस खण्ड की चार कृतियों में से तीन आचार्य-कृत हैं और चौथी आचार्य-रचित न होने पर भी शासन-स्तम्भ महान् यशस्वी हेमराजजी स्वामी की कृति है।

इस तरह यह खण्ड सामग्री एवं उसके पुरस्कर्ता दोनों दृष्टियों से बड़ा महत्वपूर्ण है और तेरापंथी इतिहास ग्रंथों में यह विशिष्ट स्थान प्राप्त करे वैसा है इसमें कोई सन्देह नहीं।

प्रस्तुत खण्ड में प्रकाशित चार सुयशों में से प्रथम दो मेरे सम्पादन-काल में 'जैन भारती' में प्रकाशित हो चुके हैं। अवशेष दो प्रथम वार ही प्रकाशित हो रहे हैं। इस तरह पाठकों के सम्मुख दुर्लभ सामग्री ग्रंथ रूप में प्रथम वार ही सुलभ हो रही है और हिन्दी और अन्य भाषाओं में इन चरित पुरुषों की महान् देन और विशिष्टताओं को उद्‌घाटन करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

इस ग्रंथ के सम्पादन में हमें सरदारशहर निवासी स्वर्गीय श्री महालचन्दजी सेठिया (हरिसिंह संतोकचन्द) के संग्रहालय से बड़ी सहायता मिली। आचार्य भारीमालजी स्वामी के वखाग के सम्पादन में हमने तीन प्रतियों का सहारा लिया है—(१) आमेट के पोथे की प्रति का (२) जोधपुर के पोथे की प्रति का और (३) सेठियाजी के संग्रह से प्राप्त प्रति का। जोधपुर के पोथे की प्रति आमेट की प्रति की ही नकल है। आमेट का पोथा उसके लिपिकार श्री लूणावत गुमानचंदजी की एक महान् साधना का फल है। उसमें अनेक दुर्लभ कृतियां संग्रहीत हैं। स्वामीजी के अनन्य श्रावक कवि शोभजी की प्रायः सारी ढालें उसमें एकत्रित हैं। स्वामीजी की प्रमुख प्रमुख रचनाएँ उसमें देखी जाती हैं। इस पोथे का संक्षिप्त परिचय बहुत पूर्व 'जैन भारती' में मेरे द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। अवशेष वखाणों के सम्पादन में तो श्री सेठियाजी के संग्रहालय की प्रति का ही उपयोग किया गया है। इस संग्रह का जय सुयश वखाण कई जगह खंडित है। उसकी पूर्ति शासन के संग्रह की प्रति से की गई है।

उपर्युक्त प्रतियाँ हमें सहज रूप से प्राप्त हो सकीं इसके लिए हम सौजन्यमूर्ति श्री धर्मचन्दजी पुनमचन्दजी सेठिया, आमेट तेरापन्थी सभा एवं श्री जव्वरमलजी भण्डारी, जोधपुर के कृतज्ञ हैं। लाडनूं निवासी श्री महालचन्दजी वयेद ने प्रूफ-संशोधन में विशेष रूप से सहारा दिया है, उसके लिए हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता
८-६-६०

श्रीचन्द रामपुरिया

आचार्य चरितावलि

: १ :

आचार्य भारीमालजी रो वखाण

ढाल : १

: दुहा :

श्री आदिनाथ आदेसरु, धर्म आद काढी अरिहंत ।
च्यार तीर्थ सरू किया, भवतारण भगवंत ॥ १ ॥
त्यां बेल 'बधारी धर्मनी, सींचे अमृत सार ।
वारू वाणी वागरी, अखंड अमोलक धार ॥ २ ॥
सिष भीषूना सोभता, भारीमाल बड़भाग ।
गुण गाऊं छूं तेहना, धरे धर्म सुं राग ॥ ३ ॥
भेष धार्‍यां नें छोड़नें, तेरे जणा तिण वार ।
नीकल्या व्रत नीका करण, मनमें गाढी धार ॥ ४ ॥
स्वामी थिरपालजी फतेचन्दजी, आचारज भीषू रिषराय ।
टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल मन भाय ॥ ५ ॥
ऐ छहुं रह्या वड सूरमा, संजम उपर नेत ।
जिण मारग दीपावता, खरा मुनि रण खेत ॥ ६ ॥
वीरभाण ऊंधो पर्‍यो, इन्द्रयां सावज सरध ।
लिखमीचंदजी आठवों, वषतमल गुलाव मिथ्यात में गरध ॥ ७ ॥
दूजो भारमल रूपचंद ने पेमजी, ऐ सुध न चाल्या सात ।
आचार में पिण ढिला पर्‍या, सुध सरधा पिण नांई हाथ ॥ ८ ॥
पिण छहुं मुनिसर मोटका, विचरत आरज देस ।
घणां जीवां नें तारता, दया धर्म उपदेस ॥ ९ ॥
पांच मुनी परभव गया, संथारो कर सार ।
हिवे भारीमाल रिषराय नो, भवियन सुणो विचार ॥ १० ॥
देस मेवाड़े दीपतो, मुंहा गांव मझार ।
कृष्ण पिता माता भली, उदर लियो अवतार ॥ ११ ॥
भीषू गुरु भल पामिया, वाप वेटो तिणवार ।
दरवे संजम आदर्‍यो, पिण सुध नहीं आचार ॥ १२ ॥
अठारे से षट दस समें, थया मोटा मुनिराज ।
पिता पाखण्ड मत में रह्यो, पुत्र सारे निज काज ॥ १३ ॥

ढाल

(परभवो मन माहिं चिंतवे—ए देशी)

भीषू जनम्या हे मुरधर देस में, मेवाड़ देसे भारीमाल ।
गुरु चेला हुआ दोनूं दीपता, आणी चोथा आरा नी चाल ॥ १ ॥
पुर सहर अति दीपतो, सहर भीलोड़ो ताम ।
माडल ने राजपुर विषे, जठे मुंहो गाम ॥ २ ॥
तिण गांव में सामींजी जनमिया, मोटे कुल जाण ।
पिता किशनों साह जाणिये, धारणी माता पिछाण ॥ ३ ॥
सुखे समाधे मोटा हुआ, बुध अकल गुण खाण ।
दसवां वरस रे आसरे, भीषू गुरु मिल्या आण ॥ ४ ॥
वागोर सहर विध सुं करी, बाप बेटो तिण वार ।
वड़ विरष रलियामणो, लीधो संजम भार ॥ ५ ॥
चतुर बरस रे आसरे, दरवे संजम भार ।
विरचत विरचत आविया, सहर भिलोड़ा मझार ॥ ६ ॥
भीषू कहे भारीमाल ने, मुख सुं अमृत वांणी ।
तुझ पिता संजम लायक नहीं, तूं तो उत्तम प्राणी ॥ ७ ॥
छोडवा लागा पिता भणी, पिता कहे तिण वार ।
मुझ नें छोडो इण रीत सूं, तो पुत्र लेसुं म्हारी लार ॥ ८ ॥
जव पुत्र कहे पिता भणी, मुख सूं एहवी वांण ।
थांहरा हाथरा अन्न पाणी तणा, जाव जीव पच्चषांण ॥ ९ ॥
अभिग्रह कियो इण रीत सूं, भारीमाल करी भारी ।
दोय दिन आषा नीकल्या, अडिग रह्या गुणधारी ॥ १० ॥
पछे पिता पिण दीधी आगन्या, थांहरे गुरु सू प्रेम ।
अन पाणी ले यांरा हाथ रो, नीकां राष तूं नेम ॥ ११ ॥
पिता रह्यो पाखण्ड मझे, भारीमाल गुरु भगता ।
संघ न छोड्यो सांम रो, अंते वासी रह्या लगता ॥ १२ ॥
संमत अठरे पट दस समें, पंच महाव्रत लीधा ।
असाढ सुद पूनम दिने, जीत नगारा दीधा ॥ १३ ॥

ढाल : २

: दुहा :

खबर हुई बहु देस में, भीषू रिष भारीमाल ।
आदि देई साधु घणा, चाले सुतर नी चाल ॥ १ ॥
केई भेषधारी अडता थका, करता थका विषवाद ।
गामा नगरां बहु विधे, पिण साचा भीषू साध ॥ २ ॥
परिसह दिया बहु पूज ने, वचनादिक वसेष ।
पिण षिम्यावंत मुनिवर षरा, राषी जिण सासन री टेक ॥ ३ ॥
जिम २ जिण मारग जमें, तिम २ अधिक उद्योत ।
नर नारी समझ्या घणा, घण घट घाली जोत ॥ ४ ॥
भीषू रिष रे पाटवी, भारीमाल भलकंत ।
गोतम ज्यूं गिरवा मुनि, सील रतन झलकंत ॥ ५ ॥
गुणवंत गुरु ना गुण कीया, तिर्थंकर गोत बंधाय ।
उत्कष्टि रसायण आया थकां, ज्ञानी कह्यो गिनाता मांहि ॥ ६ ॥

ढाल

(ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय बाई—ए देशी)

गुरु भीषु रिष मिलिया भारी, भारीमाल चेला हुआ सुखकारी ।
वीर गोतम ज्यूं जोड़ वखाणी, भारीमाल भजो भवियण प्राणी ॥ १ ॥
नीका थया बाल ब्रह्मचारी, नव वाड़ सहित शील व्रत धारी ।
पांच महाव्रत पूरण जाणी, भारीमाल भजो भवियण प्राणी ॥ २ ॥
छतीस गुणा सहित आचारज वाजे, वषाण देता ज्यूं अम्बर गाजे ।
आछा सूत्र वांचे अमृत वाणी, भारीमल भजो भवियण प्राणी ॥ ३ ॥
गहिर गंभीर गिरवा ज्ञानी, सतगुरु नी सीष साची मानी ।
त्यां आतम दिन २ वस आणी, भारीमाल भजो भवियण प्राणी ॥ ४ ॥
चित में घणी त्यांरे चतुराई, सूरवीर वचन फिरता नांहि ।
गुरु भगता उजम आणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ ५ ॥
गुरु चेला दोन्यू ही घणा गमता, ज्ञान ध्यान माहि रह्या रमता ।
त्यां पार उतास्या बहु प्राणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ ६ ॥

भीषू भारीमाल री जुगती जोड़ी, दोन्यू धर्म तणा हुआ धोरी ।
त्यां श्री जिण आगन्या आगे आणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ ७ ॥
व्रत अव्रत रा काढ्या षाता, वहु जीव राख्या नरकां जाता ।
त्यां दान दया न्याय हद छाणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ ८ ॥
सुध सरधा जिनवर भाषी, सुत्र न्याय करे संठी रापी ।
त्यांने देष रह्या केवल नाणी, भारीमल भजो उजम आणी ॥ ६ ॥
वड़ा २ जीव आया वंका, त्यांरी मेट दीधी मन री संका ।
ज्यां लीधो मारग निरवाणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ १० ॥
गावां नगरा पुर पाटण फिरतां, सुध करणी करे पातक हरता ।
निरदोषण लेता अन पाणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ ११ ॥
मुरधर मेवाड़ हाडोती ढूंढार विचर्‌या, भवजीव उवार्‌या कारज सर्‌या ।
एहवा उत्तम पुरुष प्रगट्या आणी, भारीमाल भजो उजम प्राणी ॥ १२ ॥
भीषू भारीमाल री महिमा भारी, त्यां प्रतिवोध्या वहु नर नारी ।
भव कूप महा सूं काढ्या ताणी, भारीमाल भजो उजम आणी ॥ १३ ॥

ढाल : ३

: दुहा :

महाविदेह षेत्र मुनिवर रहे, सदा काल लग सोय ।
चौथा आरानी परे, धर्म बधंतो जोय ॥ १ ॥
पांचमें आरे प्रगट्या, भरत खेत्र ने मांहि ।
गुण गाऊं छुं तेहना, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ २ ॥

ढाल

(एक दिवस विषे नेमकुमार निज मित्र संघाते आवे—ए देशी)

भीषू भारीमाल गुण भारी हे, चिंतामण ज्यूं सुखकारी हे ।
कांई सुध संजम ना धारी हे, भरत खेतर विषे ।
प्रगटिया हे उत्तम पुरुष आचारी, सुध संजम रपे ।
वारुंवार वंदना हुयज्यो महारी* ॥ १ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जिण परदेस विचरता हे, भवि जन तारण फिरता हे।
कांई पाप पडल अघ हरता हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ २॥
ग्यान ध्यान मन धरता हे, पाषंड बहु विध अडता हे।
पूज चरचा सूं बंध करता हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ३॥
ओ दुषम काल दुषकारी हे, लागू घणा भेषधारी हे।
पिण पूज तणा पुण्य भारी हे, भीषू भारीमाल गुण भारी हे॥ ४॥
ऊंधी चरचा आणे हे, पींपल बंधी ज्यूं ताणे हे।
पूज सूतर न्याय पिछाणे हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ५॥
पूज सूत्र न्याय करी पूठे हे, आगम न्याय अषूटे हे।
कांई पाषंड ना पग छूटे हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ६॥
आचार अषंडता पाले हे, मोह कर्म मद गाले हे।
कांई जिन मारग उजवाले हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ७॥
दान दया अर्थ उंडा हे, ते न्याय न जाणे मूढा हे।
पूज ग्यान बतावे गूढा हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ८॥
धर्म आग्या में धरता हे, जाडा पातिक झरता हे।
सांमी मुगत नगर ने षरता हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ९॥
विरत में धर्म वताया हे, इवरत पाप उडाया हे।
कांई भव जीवां मन भाया हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ १०॥
कई अग्यानी ऊंधा हे, पाये पंथ विलुधा हे।
सांमी अर्थ वतावे सुंधा हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ ११॥
खिम्या कर २ षिमता हे, पांचूं इन्द्रयां दमता हे।
ज्यूं ज्यूं जिण मारग जमता हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ १२॥
भीषू भारीमाल गुरु गेंहरा हे, मुगत सुषां सूं नेरा हे।
कांई मेटे भव भव जेहरा हे, भवि जन तारण फिरता हे॥ १३॥

ढाल : ४

: दुहा :

चमालीस वरस आसरे, गुरु चेला गुणवंत।
च्यार देस में चूंप स्यूं, उपगार कियो मतवंत॥ १॥

साध साधवी श्रावक श्रावक, वहुत किया वुधवंत ।
षिम्या धरम मारग षरो, त्यां मारग जमायो तंत ॥ २ ॥
श्रीयारी में सांमजी, साठे वरस संथार ।
हिवे भारीमाल वड़ भाग हे, वरते त्यांरी वार ॥ ३ ॥
गामां नगरां वधियो घणों, उपगार विशेष विशेष ।
पिण व्रिहो सालें श्रीपूज रो, सो रह्या केवली देप ॥ ४ ॥
गुण घणा भारीमाल में, समुद्र जेम अथाय ।
पिण थोहरा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

(जादूपत चढ़ियो गढ़ गिरनार—ऐ देशी)

ज्ञानी पुरुष छें गुणनीला रे लाल, भारीमल वड़ भाग ।
संजम पालें निरमलों रे लाल, साधें सिवपुर माग ॥
भीषू सिष भारीमाल वड़ वीर* ॥ १ ॥
पांचे सुमते सुमता सदा रे लाल, तीनूं गुपत तही तीक ।
पांच आचारे परवडा रे लाल, धारी सत गुरु सीष ॥ २ ॥
चंद ज्यूं सीतल सुहामणा रे लाल, सूरज ज़िम तप तेज ।
वाणी मीठी वीर ज्यूं रे लाल, हिवडे उपजे हेज ॥ ३ ॥
फिटक रतन ज्यूं निरमला रे लाल, सरल घणा सुविनीत ।
आतम कीधी ऊजली रे लाल, गोतम रिष नी रीत ॥ ४ ॥
सीख देवा समर्थ घणा रे लाल, च्यार तीर्थ सुखकार ।
सतवादी घणा सूरमा रे लाल, आचारज गुणधार ॥ ५ ॥
संजम में सेंठा घणा रे लाल, समकीत सील श्रीकार ।
डिगायां ही डिगे नहीं रे लाल, उत्तम पुरुष छे सार ॥ ६ ॥
सूत्र सिधंतरा जाण छे रे लाल, स्वय मत पर मत सोय ।
पाषंड मत पिछाणता रे लाल, जिण मत जमायो जोय ॥ ७ ॥
कर्म कटिक दल उपरें रे लाल, सूरा घणा सहासीक ।
तोड़्ता तप तरवार सुं रे लाल, षिम्या खडग नजीक ॥ ८ ॥
भीषू गुरु समीपे भला रे लाल, गणधर ज्यूं रह्या गाज ।
समभावें नरनार नें रे लाल, सारें आतम काज ॥ ९ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में हैं ।

इण आरें इसडा मुनि रे लाल, हुवें घणा दूलभ।
चौथें आरें पिण बिरला हूसी रे लाल, साधु सरल दूलभ ॥१०॥
मेरू ज्यूं धीरा घणा रे लाल, समुद्र जेम गंभीर।
घोरी ज्यू संजम धूरा रे लाल, सिंघ जेम सधीर ॥११॥
अरिहंत देव री आगन्या रे लाल, धारी धर कर कोड।
भीषू सिष भारीमालजी रे लाल, नमो नमो कर जोड ॥१२॥
च्यार देस में चूंप सुं रे लाल, उपगार कियों अपार।
सम्वत अठारें तिमंतरें रे लाल, मुनि चढ़िया देस मेवार ॥१३॥

ढाल ५

: दुहा :

पांच चोमासा पूजजी, किया देस मेवार।
कांकरोली पुर केलवें, दोय किया श्रीजीदुवार ॥ १ ॥
श्रीजीदुवारा सेंहर मे, चिमंतरें चउमास।
दया धर्म दिपावता, हुवा भवक हुलास ॥ २ ॥
पिचंतरे वर्स पूजजी, सेंहर कांकरोली सोय।
पोसा सतरेसोंरें आसरें, वैराग बधंतो जोय ॥ ३ ॥
छिहंतरें वर्ष पुर मझें, भारीमाल रिषराय।
आई हिन्दुपति नी विनती, करी घणी नरमाय ॥ ४ ॥
उदयापुर पधारियें, दुनियां साहमों देष।
दुष्ट साहमों नहीं देखियें, क्रिपा करों विसेष ॥ ५ ॥
सामीं मानी वीणती, चौमासों उतरियां सोय।
विचरत-विचरत आविया, सहर कांकरोली जोय ॥ ६ ॥
हेम रिष रायचंदजी, तेरे साध तिंवार।
पूज हुकम सूं आविया, उदयापुर सेंहर मझार ॥ ७ ॥
उदयापुर आयें नम्यो, हिन्दुपति हरष सहीत।
उपगार हुवो त्यां अति घणो, जांणे चौथा आरा नी रीत ॥ ८ ॥
एक मास रहि उदियापुर में, गोघूंदें रावलियां कर उपगार।
सुखे समावे सावजी, भेंट्या भारीमाल अणगार ॥ ९ ॥
चौमासा भोलाया सावां भणी, गामा नगरां तिणवार।
पूज समत अठारे सितंतरे, चौमासो कीधो श्रीजीदुवार ॥ १० ॥

ढाल

(मुझ मन मुझ मन मान्यो हो अभय कुमार सूं—ऐ देशी)

श्रीजीदुवारा सेंहर में, होजी सांमीजी कियों चत्रमास ।
भारी उपगार भलों कियों, कांई दिन २ अधिक हुलास ॥
महाराज धिन २, धिन २ पूज भारीमालजी* ॥ १ ॥
सिहार होय कोठारव्यें पधारिया, होजी गुड़ला कियों रे विहार ।
कूंठवें होय सिसोदें पधारिया, सुखे आया कांकरोली मझार ॥ २ ॥
एक मास रह्या कांकरोली मझे, होजी वहुत कियों उपकार ।
सैंकडा नरनारी आविया, त्यां देख्यो पूज दीदार ॥ ३ ॥
वहु संतां रा परिवार सूं, होजी राज नगर परवेस ।
श्रावक आया घणा सेंहर सूं, कांई विणती आई देस देस ॥ ४ ॥
साध साधवी बहु आविया, होजी भगति करण अभिराम ।
धिन २ दिन छे मांहिरो, कांई भेट्या भारीमल साम ॥ ५ ॥
वखांण बाणी तिहां होय रह्या, होजी प्रषदा रा वहु भिड़ ।
सैंकडां नर नारी आवीया, जाणे मेलो रह्यो छे मंड ॥ ६ ॥
राजनगर रहितां थकां, होजी अड़तीस गणे अणगार ।
आया दर्शन करवा श्रीपूज रो, करायो कितांहीक ने विहार ॥ ७ ॥
कांयक असाता उठी षरी, होजी ओषध कीधा अनेक ।
सांमी परिणाम सेंहठा घणा, कांई दिन २ अधिका देष ॥ ८ ॥
बाईस ठांणें साथे करी, होजी सांमीजी कियो रे विहार ।
फागण सुद तेरस दिने, आया केलवा सेंहर मझार ॥ ९ ॥
मुरधर देस जावा तणा, होजी मन रा हुंता परिणाम ।
दरसण देणों हिवे जायनें, कांई ढील तणों नहीं काम ॥ १० ॥
केई दिन केलवे निकल्या, होजी ऊठी असाता आंण ।
सांमी परिणाम सेंहठा घणा, कांई मन कीयों मेरु समान ॥११॥
आछों उपगार मेवार देस में, होजी हुवो हद श्रीकार ।
हजारां नर नारी समझिया, केईक थया अणगार ॥१२॥
हजारां नर नारी आविया, होजी छोडी ने घर ना काम ।
दरसण करवा श्रीपूज रो, परगट हुवों केलवों गांम ॥१३॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अंत में है ।

ढाल : ६

: दुहा :

असाता ऊपनी जाण नें, साधां नें कहे सांम ।
तपस्या करणी मांहिरे, सारूं आतम कांम ॥ १ ॥
छेहलें अवसर सूरमा, टालें आतम दोष ।
संलेषणा संथारो कियां, पामे अविचल मोष ॥ २ ॥
भारीमाल भय मेटियो, जीवण मरण जरूर ।
ममता मेटे देहनी, ते साचेला सूर ॥ ३ ॥
किण विध तपस्या आदरें, किण विध करें संथार ।
कारज सुधारें किण विधे, ते सुणज्यो नर नार ॥ ४ ॥

ढाल

(वेग पधारो महिल थी—ए देशी)

समत अठारें सितंतरें, बैसाख वद हो आठम नमी दशमी जाण ।
तिण में तेलों कियो तंत ऊजलों, सूरवीर हो धीरपणो मन आंण ॥
भव जीवां तुम भजो भारीमाल नें * ॥ १ ॥
तिण में चतुर अहार सामी पचखिया, इग्यारस दिन हो लीधो अलप सों अहार ।
तिण में रोग कितोयक उपसम्यों, च्यार तीर्थ हो सुष पाम्या अपार ॥ २ ॥
वलें दोय दिन अहार लगतों कियों, चउदस रो हो सांमी कियो उपवास ।
अमावस रो सामीजी कियो पारणों, तपस्या उपर हो दिन २ छें हुलास ॥ ३ ॥
वैसाख शुकल पष तेह में, सात दिन हो जेष्ट बद तणा जाण ।
तिण में अलप अहार सामी आचर्यों, फेर वोल्या हो मुख सूं इमृत वाण ॥ ४ ॥
हिवें साधांनें तेडीनें सांमीजी कहे, तपस्या उपर हो म्हारो अति घणो पेम ।
साव अरज करे छें हाथ जोड़नें, अलप लेवो हो मांहने राजी करों एम ॥ ५ ॥
तोही सामीजी अरज मांनी नहीं, तेलों कीधों हो दूजों निरमलों जांण ।
जेष्ठ वद आठम नम दशमी तणों, पारणो कीधो हो इग्यारस रो पिछांण ॥ ६ ॥
वलें दोय उपवास आछा किया, दोय बेला हो सांमी कीया श्रीकार ।
एक चोलो कियों चित ऊजलें, सूर वीर हो भीषू सीष सरदार ॥ ७ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अंत में है ।

असाढ़ सुद छठ उपवास कियों, उवास माहिं हो सांमीजी वेलों दियों ठाय ।
वेला मांहिं तंत तेलों कियो, तेला मांहिं हो चोंलों दियों ठहिराय ॥ ८ ॥
सांमी चतुर माहिं पांच पचखीया, पांचां माहिं हो किया षट उपवास ।
षट मांहि सप्त किया सोभता, सप्त मांहि हो अष्ट किया हुलास ॥ ९ ॥
सांमी अष्ट माहिं नव नीका किया, नव माहिं हो दश दिन श्रीकार ।
दसम वधी तिण लेखे जाण जो, पारणो कीधों हो पूनम रविवार ॥१०॥
परिवा बीज तीज तेलों कियों, सांवण वद हो चोंथ पंचमी पिछांण ।
तिणरों पारणों कियों श्रीपूजजी, अहार लीधों हो सामी अल्प सो जांण ॥११॥
पछें तीन दिन अहार लगतो कियों, वेराग आयो हो भारी भरपूर ।
सांमी आठम सूं एकांतर मांडिया, करमा ने हो करता चकचूर ॥१२॥
जैसा ही भीषू गुरु भेटिया, जैसा चेला हो मिलीया भारीमाल ।
जैसो ही जिण मारग जमावियों, सगली आणी हो चोंथा आरानी चाल ॥१३॥

ढाल ७

: दुहा :

सावण मासे सांमजी, एकन्तर मन धार ।
वद आठम सूं सुद दशमी, अडिग रह्या अणगार ॥ १ ॥
इग्यारस वारस वेलों कियों, तेरस पारणों ताहि ।
दोय दिन अहार लगतों करे, वले दिया एकंतर ठाय ॥ २ ॥
केई दिन करी अणोदरी, केई दिन किया उपवास ।
साध कनें सेवा करें, केलवे सेंहर चउमास ॥ ३ ॥
खेतसी जी सांमी आद दे, आठ साध करें सेव ।
उजम मन में आणता, अलगों कर अहिमेव ॥ ४ ॥
साताकारी सिष मिल्यां, सांमी ने सुष थाय ।
चित समाध रहें सदा, आड दोढ नहीं आय ॥ ५ ॥

ढाल

(धतुरो राचणो जी—ए देशी)

साधे साध घणा सूर वीर, जिण मारग दीपावता जी ।
केई तपस्या करण सवीर, करमा नें खपावंता जी ॥
भारीमालजी कियोंरे चौमासो केलवा सेंहरमें जी* ॥ १ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में हैं।

हिवे नव साधां रा नाम, सुणो तुम भाव सूं जी ।
मुदें तो भारीमालजी सांम, त्यांरा गुण गावसुं जी ॥ २ ॥
ते तो लाषां ग्रन्थ रा जांण, हजारां मुंहढें कस्याजी ।
ज्यांरी मिठी इम्रत वाण, ग्यान पिंजरें भस्या जी ॥ ३ ॥
थेटरा बाल ब्रह्मचार, नार सहु परहरी जी ।
जिण सासण रा सिणगार, आचारज पदवी षरी जी ॥ ४ ॥
सतजुगीजी खेतसी सार, साधां में दीपता जी ।
विनें व्यावच में श्रीकार, इन्द्रयां ने जीपता जी ॥ ५ ॥
रायचंद मुणंद आणंद, भयों गुरु ग्यान में जीं ।
ऐ तो तोरें कर्मां रा फंद, चढी शुभ ध्यान में जी ॥ ६ ॥
जीवो मुनी घणो गुणवंत, साधां में शोभा घणी जी ।
रामचंद रुडो विनैवंत, व्यावच करिवा भणी जी ॥ ७ ॥
बिरधोजी व्यावच में वजीर, साता दीधी सांम नें जी ।
अहार ओषध आणे हजूर, फिरे करे काम नें जी ॥ ८ ॥
हीरजी करी हरष सहित, व्यावच विध २ घणी जी ।
रात दिवस रह्यो रूडी रीत, भारीमाल कीरत भणी जी ॥ ९ ॥
सिवजी रा षुल्या भल भाग, पूगो छेहली चाकरी जी ।
व्यावच किधां स्यूं मिट जाय दाग, करणी घणी आकरी जी ॥ १० ॥
नवमों नाहनों जीवो साध, ते पिण चौमासे खरोंजी ।
इण केलवे सहर समाध, ओ नव साधां रो धरोजी ॥११॥
हुवे वषाण वांणी रा हगांम, तीन्यूं टंक में तिहां जी ।
नर नारी रह्या हर्ष पाम, गुण ग्राम करे जिहां जी ॥१२॥
आवे मुरधर देस मेवाड, श्रावक ने श्रावका जी ।
वले और घणा नर नार, दरसण जिण सारषा जी ॥१३॥

ढाल ८

: दुहा :

चौमासा में सांम रे, कायक असाता जांण ।
असाता वेदनी उदय थकी, पिण सेंहठा चतुर सुजान ॥ १ ॥

रोग परिसह ऊपना, अडिग रहें अणगार ।
सताइस गुणा कर सोभता, धिन त्यारों अवतार ॥ २ ॥
चौमासों उतरियां साध सावची, भेला हुवा वहु आंण ।
केलवे सहर सांमी कने, मंडिया वहु मंडाण ॥ ३ ॥
आलोवण आछी तरे, कीधी चतुर सुजांण ।
याद करी २ सांमजी, सिप नें सुणाई जांण ॥ ४ ॥
नित्य एक पहोर रे आसरे, सिप देता श्रीकार ।
ग्रहण आसेवन आदि दे, भापे अनेक प्रकार ॥ ५ ॥
काची सीष किण कांम की, दीधां कर्म बंधाय ।
साची सीष सांमी तणी, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

(वेग पधारो महिल थी—ए देशी)

सिषावण दे सांमीजी, छेहले अवसर सार ।
सगला साध ने सावची, अडिग रहिज्यो इक धार ॥
सिष सुणों सांमी तणी* ॥ १ ॥
नीको संजम निरमलों, धस्यो सुध धर नेम ।
जिण हिज रीते जाणज्यो, पूरों राखजो पेम ॥ २ ॥
इरज्या भाषा ने एषणा, वारू वचन विनाण ।
आछी रीत अराधज्यो, धारजो जिणवर आंण ॥ ३ ॥
हेत घणो हद रीत सूं, पूरी राखज्यो पीत ।
संजम सुध सोभा जगत में, आ जिण मारग री रीत ॥ ४ ॥
समकित सील अराधज्यो, वार सहित बषाण ।
हांस कतोहल करवी नहीं, ए जावजीव पचषांण ॥ ५ ॥
खेतसीजी हेमजी भणी, पूछी ने दियो पाट ।
ब्रिह्मचारी रिष रायचन्द नें, थिर कर राखज्यों थाट ॥ ६ ॥
वड़ा सावां री आगन्या, आछी रीत अराव ।
चतुर विचष्पण अति घणों, चित में कीजे समाव ॥ ७ ॥
थिर वुध करनें सोभतों, ब्रह्मचारी वड़ वीर ।
पदवी दीधी छे तेहने, जाणे सूर वीर नें धीर ॥ ८ ॥

---

* यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दरशण करवा दिन दिने, आवे बहु नर नार ।
सीष देवे सांमी तेहनें, अडिग रहिज्यो एक धार ॥ ६ ॥
दान सील तप भावना, आदरज्यो ओंछाहि ।
दान सुपातर दोहिलों, इम कहि कहि समझाय ॥१०॥
संघत पाखण्डियां तणी, परहर देज्यो दूर ।
भागल एकल नहीं मानणों, सेंहठा रहिज्यो सूर ॥११॥
बाल ब्रह्मचारी थेट रा, भारी संजम रो जोर ।
सुघ परिणामां सांमजी, काटे क्रम कठोर ॥१२॥
फागण थी आषण लगे, केलवें रह्या रूड़ी रीत ।
कारण न मिटियों सांमरो, बले करें उपाय धर पीत ॥१३॥

ढाल : ६

: दुहा :

साधां संघाते सांमजी, राजनगर आवंत ।
बहु नर नारी हरषिया, गाढो सुख पावंत ॥ १ ॥
उदियापुर अड़सी तणो, तपें भीम दीवाण ।
राजनगर रलियामणो, कुवर जवान सिंघ री आण ॥ २ ॥
रोग गमावण सांम रो, साधां किया उपाय ।
ओषध दीधों अन चढ्यां, दिन २ साता थाय ॥ ३ ॥
साध साधवी आविया, केई मालव देस थी ताहि ।
दरसण कर हरषत हुआ, प्रेम महा सुष पाय ॥ ४ ॥
अवसर काल आए लग्यां, कुण छे राषणहार ।
त्याग वैराग किण विघ हुवे, ते सुणज्यो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

(आ अणुकंपा जिन आगन्या में—ए देशी)

काल जुर करली चढी तिण काले, तिणसुं पूरो तो मुंहढे बोलणी नावें ।
श्रावकां जाण्यों सामीं जी रे करली असाता, जब च्यार तीर्थ नें वेग बोलावें ॥
भारीमाल संथारो सुणो भव जीवां* ॥१ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधां पिण जाण्यों सांमी जी रो अवसर आय लागो, सावचेत वोलाय ने सुंहस कराया।
साघारी संथारो करायो ओषद पाणी रे आगारे, परभात हुयां वोले मुख वाया ॥ भा० २॥
सावचेत हुआ दूजे दिहारें, थोहरी सी सूंठ नें पाणी मांग के लीघो।
अन री रूच पूछयां सुं सुंहस वताया, जावजीव साघारी अणसण कीघो ॥ ३ ॥
च्यार तीर्थ मुख आगल सेवा करें छे, दरशण कर २ पूरे छे मन री पांत।
तीजो पहोर आयों तिण काले, अण चिंतवी किण विघ आवे छे मांत ॥ ४ ॥
मालव देस थी आइ आरजियां, कपडो पूज नें आंण देखायो।
उपगार धर्म री बातां करे छे, दर्शन करे पूज रो चित लायो ॥ ५ ॥
पाठा फिरंगी रा चोषा घणा छे, ते श्रावकां कनें जांचने लाया।
पाठा खोल चोड़ा कर त्यानें, ते पिण पूज नें आण देखाया ॥ ६ ॥
देखतां देखतां ढल गया सांमी, वहुत न लागी वेला वारो।
भगजी वेंरागी कहे सांमी जी जावे छे, कराय द्यो सर्वथा पूर्ण संथारो ॥ ७ ॥
सतजुगी ने रायचन्द जी ब्रह्मचारी, मुख सूं बोलिया एहवी वाण।
सरधों तो सांमी जी जावजीव रा, आपरें सर्वथा छे पचषांण ॥ ८ ॥
वचन वायक पाछो बोलणी नायो, खमत खामणा करता साधु पाय परिया।
लुल २ लटका करे वारूंवार, हेज तणा ज्यांरे हिया भरिया ॥ ९ ॥
रायचन्द जी ब्रह्मचारी रूड़ी रीत, तीन पहोर आसरे सेवा कीघी।
सरणा सुंहस दिया भली भांत, मन वस कर सुमता धार लीघी ॥१०॥
छव पहोर आसरे साघारी संथारो, पछे जावजीव च्यारुं अहार पचखाया।
तीन पहोर रे आसरे तिण माहिं वरत्या, पछे भारीमाल रिष छोड़ी काया ॥११॥
आधी रात रे आसरे काल परापत, कहे वीरजी वालीं बेलां लीघी।
चरम कल्याण राजनगर में, मेवाड़ देस जाणो परसिधी ॥१२॥
ज्यांरे संयम तप रो जोर छे लारी, ते तो निश्चय ही देव री पदवी पावे।
उतकष्ट एका अवतारी इण काले, मुगत नगर में बेगा जावे ॥१३॥
समत अठारे ने वरस इठंतरे, महा विद आठम मंगलवार।
भारीमाल संथारो सीघो इण रीते, वहु गुण ग्राम करे नर-नार ॥१४॥

ढाल : १०

दुहा

साव सरीर वोसराय ने, अलगा वैठा जाय।
विरहो पस्यो सांमी नाथ रो, समभाव रह्यां सुख थाय ॥ १ ॥

श्रीजीदुवारा सेंहर सुं, बले केलवा कांक्रोली सुं जाण ।
नर-नारी आया घणा, मंडिया बहु मंडाण ॥ २ ॥
इत्यादिक गामां नगरां तणा, श्रावक श्रावका अनेक ।
सामी चलिया जाण ने, आणे आरत विसेष ॥ ३ ॥
इगताली षंडी मांडी करी, जाणेक देव विमाण ।
इग्यारे सो रे आसरे, रोकड़ लागा जाण ॥ ४ ॥
आगे ही अरिहंतना, इन्द्र महोछव कीध ।
जनम दिष्या चवण किल्यांण ना, पिण भगवंत आग्या न दीध ॥ ५ ॥
समदिष्टि सरधे समो, ते सावज निरवद रा जाण ।
आज्ञा बारे धर्म सरवे नहीं, बोले निरवद वाण ॥ ६ ॥
कई भेषधारी भागल तिके, कर दे भेल सभेल ।
सावज निरवद जाणे नहीं, सो किण विध खावे मेल ॥ ७ ॥
गाय आक दूध भेलो करे, घ्रित घाले तम्बाखु मांहि ।
ज्यूं धर्म अधर्म भेला कियां, सोभा कदेय न थाय ॥ ८ ॥
जसकर्मी भारी भारीमाल जी, तिण सुं जस करे नरनार ।
क्रितव करे संसार ना, ते सुणजो विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल

(एहवी कोजे पीतरी जेहवी राजुल नेमो ए । मुनि खेमो ए ।
मन वंछित द्यो सामजीक सह्यां ए—ए देशी)

च्यार तीर्थ देखि रह्या, मुख सुं करे गुण ग्रामो ए । अमांमो ए ।
पंडित मरणज पामियाक, मुनिवर ए ॥ १ ॥
इगसट वरस रे आसरे, कांई पाल्यो संजम भारो ए । सुध सारो ए ।
यो दुषम आरो तिण मझेक, मुनिवर ए ॥ २ ॥
बालब्रह्मचारी थेट रा, भारीमाल गुण भरपूरो ए । अति सूरो ए ।
पाली गुरु नी आगन्याक । मुनिवर ए ॥ ३ ॥
गोतम ज्यूं लगता रह्या, वीर जिणंद ज्यूं जोड़ो ए । घर कोडो ए ।
गुरु कुल वासो मूक्यो नहींक, मुनिवर ए ॥ ४ ॥
एहवी कीजे पीतरी, जेहवी भीषू भारीमालो ए । सुव चालो ए ।
संजम तप कर सोभताक, मुनिवर ए ॥ ५ ॥

भीषू गुरु भल पामियां, मोष तणा दातारो ए। भव पारो ए।
मेले भवियण जीवनेक, मुनिवर ए ॥ ६ ॥
भीषू संथारो श्रीयारी कियो, राजनगर भारीमालो ए। सुविसालो ए।
आतम कीधी ऊजलीक, मुनिवर ए ॥ ७ ॥
मांडी कराई श्रावका, जाणेक देव विमाणो ए। जिम भाणो ए।
जोत क्रियंत करि झिगमिगेक, भवियण ए ॥ ८ ॥
हेठे मांडी मेवार नी, उपर खंड ड्गताली ए। रूपाली ए।
रीत करी मुरधर तणीक, मुनिवर ए ॥ ९ ॥
वसतर पंच प्रकारना, तास बादला तुरडी ए। अरु फरड़ी ए।
बणाई विध विध करीक, मुनिवर ए ॥१०॥
पषाली पावन पणे, काया करी सुचंगी ए। रुच अंगी ए।
भांत भांत कपड़ा करीक, मुनिवर ए ॥११॥
मुखपती जरी नी सोभती, टोपी तास किलंगी ए। नवरंगी ए।
सोभ रही नीकी परेक, मुनिवर ए ॥१२॥
नरनारी वहु आविया, ओछव देखण काजो ए। मेली साझो ए।
दाग दियो चंदण मभेक, मुनिवर ए ॥१३॥
ए किरतब सहु संसारना, मूरख सरधे धर्मो ए। तिण मर्मो ए।
पायो नहीं जिणराजरोक, मुनिवर ए ॥१४॥
अरिहंत देव अराधिये, गुरु गिरवा श्री साधो ए। तिण लाधो ए।
धर्म जिनेसर भाषियोक, भवियण ए ॥१५॥
त्याग वैराग वंध्यो घणो, च्यार तीर्थ में सारो ए। व्रत धारो ए।
माह विद आठम ने नम तणोक, भवियण ए ॥१६॥

ढाल : ११

दुहा

सासन श्री व्रिधमांन रो, दिन २ अधिक दीपंत।
समत अठारे तेपना पछे, ज्ञानी वचन महंत ॥ १ ॥
चंक चूलीया मे वारिता, उदै २ पूजा कहि ऐन।
धर्म आगन्या धारसी, त्यांरा चित में हुसी चैन ॥ २ ॥
सतावीस पाट हुवा निर्मला, विच में विघन विचार।
भीषू भारीमाल री वार में, वरत्यो सुध ववहार ॥ ३ ॥

ढाल

(कपूर हुवे अति ऊजलो रे—ए देशी)

भीषू भारीमाल जी री वार में रे, बुधवंता हुवा बहु साध ।
बुधवंती हुई बहु आरज्यां रे, त्यां ग्यान अपूर्व लाध ॥
मुनिसर साध महा गुणधार* ॥ १ ॥
पहिली वय वैरागिया जी, दिन २ अधिकों तेज ।
सुत्र सिधांत भणै घणा जी, बालक बहु गुण हेज ॥ मु० ॥ २ ॥
तपसी हुआ बहु तप करी जी, त्यां थोकरा कीधा अनेक ।
च्यार मास उपर चढ्या जी, त्यांरे निर्जरा हुई विशेष ॥ ३ ॥
चरचावादी बहु सूरमा जी, सुत्र सिधंत रा धार ।
पाखण्डियां रा मद उतारता जी, बोलता वचन विचार ॥ ४ ॥
बाल ब्रह्मचारी बुधवंत घणा जी, नीकां संजम उपर नेत ।
महिमा करे सुर मानवी जी, त्यांरे हद मांहो माहिं हेत ॥ ५ ॥
तीन भाई कुंवारा ब्रह्मचारी साधु थयाजी, बालक वय बुधवान ।
सगाई छोड़ी संसार नी जी, मुगत सगाई मान ॥ ६ ॥
कुंवारी कन्या हुई साधवी जी, बले धणी धणियां नीं जोड़ ।
ते संजम पाले निरमलो जी, तो मिट जासी त्यांरी षोड़ ॥ ७ ॥
बंयासी हुवा साध साधवी जी, आसरे अर्थ अमोल ।
ज्यां भारीमाल गुरु भेंटिया जी, त्यांरो तीखो बधियो तोल ॥ ८ ॥
मुरधर मेवाड़ देश में जी, मालवो हाड़ोती ढुंढार ।
तिहां साध साधवी विचरता जी, करता पर उपगार ॥ ९ ॥
जिण मारग जमायो जुगत सुं जी, करणी करता हद वेस ।
भीषू संथारो श्रीयारी सेंहर में जी, भारीमाल मेवाड़ देस ॥ १० ॥
जिण देस में पोते जनमियां जी, तिण देस में अणसण लीध ।
ज्यांरी जस महिमा हुई जगत में जी, आतम कारज कीध । ११ ॥
गुणवंत नाम गुणवंत घणा जी, भीषू भाष्यो भगवंत ।
सुत्र सिधंत में सोभता जी, मिलियो तंतो तंत ॥ १२ ॥
सिष भारीमाल सुहामणा जी, भीषू रिष रे पाट ।
गोतम सांमी ज्यूं गुण निला जी, जुगती जोड़ी गुण थाट ॥ १३ ॥

---

* यह ओंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढाल : १२

दुहा

सतरां सुं साठा लगे, बहुत कियो उपगार ।
मुरधर देस मेवाड़ में, हाड़ोती ढूंढार ॥ १ ॥
एक सो तीन रे आसरे, साध साववी सोय ।
भीषू रिष नीं वार में, बहु अराधक होय ॥ २ ॥
भारीमाल साथे लगा, गुरु भगता गुणवंत ।
नाम धरायो लोक में, तेरापंथी तंत ॥ ३ ॥
भीषू रिष संथारो कीयो, श्रीयारी में सार ।
भारीमल सिर थापियो, जिण सासन रो भार ॥ ४ ॥
इगसठा सुं इठंतरा लगे, जाभेरा लग जोय ।
चोमासा भारीमाल रा, सांभल जो सहु लोय ॥ ५ ॥

ढाल

(इण स्वारथ सिध रे चंदरवे कांई मोती झूम्बक सोहे जी—ए देशी)

प्रथम चोमासो कियो पीसांगण, इगसटे बरस विचारी जी ।
भारीमाल रषेवर साथे, साध भला सुखकारी जी ॥
कांई भीषू रिष संथारा पाछे । भारीमाल चोमासा जी* ॥ १ ॥
पाली सहर में प्रसिद्ध चावा, तीन चोमासा ताह्यो जी ।
बासटे अड़सटे बरस तिमंतरे, उपगार कियो अथायो जी ॥कां०२॥
बरस तेरसटे सहर खेरवे, चौमासो सुखकारी जी ।
सेंहर केलवे बरस चोसटे, प्रतिबोध्या नर नारी जी ॥ ३ ॥
श्रीजीदुवारे तीन चौमासा, हरष धरी ने कीधा जी ।
पैंसटे ने बरस चिमंतरे, सितंतरा लग लीधा जी ॥ ४ ॥
आमेट सेंहर में बरस छासटे, बालोतरे सितष्टे जी ।
गुणंतरे तो जयपुर नगरे, उपगार घणो हुवो तठे जी ॥ ५ ॥
सितरे बरस माधोपुर कीधो, इकोतरे बोरावड़ ठायोजी ।
बोहंतरे श्रीयारी सेंहर में, भारीमाल रिष रायो जी ॥ ६ ॥

---

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कांकरोली पिचंतरे कियो चौमासो, व्रत पचखाण बधाया जी ।
छिहंतरे पुर सेंहर रे छाजे, दया धर्म दीपाया जी ॥ ७ ॥
भारीमाल भव तारण भारी, राजनगर चल आया जी ।
भव जीवां ने दरसण देतां, साध केलवे लाया जी ॥ ८ ॥
जिहां २ नगरां किया चौमासा, तिहां २ किया उपगारो जी ।
वखाण वाणी जाणे अंबर गाजे, पेम करी अति प्यारो जी ॥ ९ ॥
भारीमाल रिष भेंट्या त्यांनें, याद घणा हिज आवे जी ।
सूरत सोहे मन नें मोहे, ग्यान करी गुण पावे जी ॥ १० ॥
सतरे चौमासा आगे कह्या ते, आछा किया आणंदो जी ।
इठंतरे चौमासो सेंहर केलवे, आया तिहां मुणंदो जी ॥ ११ ॥
भारीमाल ना पुन छे भारी, साध मिल्या बहु नीका जी ।
व्यावच करता अति हरषंता, नेरा रहे नजिका जी ॥ १२ ॥
गुण कर गहिरा भारीमाल जी, सायर जेम अथायो जी ।
संषेपे विसतार कह्यो, गुण पूरा केम कहायो जी ॥ १३ ॥

ढाल : १३

दुहा

साताकारी सिष सांम रे, सतजुगी सावधान ।
सेवग सांम धर्मी पणे, ज्यूं पके मते परधान ॥ १ ॥
सतजुगी सेवा करे, खेतसी जी षरे षेत ।
विनय वियावच में विचखण पणे, साचा रह्या सचेत ॥ २ ॥
भीषू रिष नीं भली परे, इम हिज भारीमाल ।
खेतसी जी व्यावच करी, सुवनिता ए चाल ॥ ३ ॥
साताकारी सिष मिल्यां, सामी नें सुष थाय ।
प्रवल पुण्य उदै हुवे तो, कमी रहे नहीं काय ॥ ४ ॥
ज्यूं भीषू ने भारीमाल रे, सिष नीं जुगती जोड़ ।
विनयवंत साधु मिल्या, उपजे आणंद कोड़ ॥ ५ ॥

ढाल

(पातक जाणो न वीर रे । आपणीये तो आवेवो ढाले ढलतो पाणी हो लाल—ए देशी)

साधु गुण कर सोभता, विनय भगत में वधता २ गुण वधाया हो लाल ।
चाल चोथा आरा तणी, अरिहंत आण अखंडित जिण सासण दिपाया हो लाल ॥ १ ॥
धर्म आग्या मांहि धारियो, जिणपणंतं ततं मंडल मांहि मुणायो हो लाल ।
पाले ते सुध परूपसी, अरिहंत आगम आछो सुतर में सार सुणायो हो लाल ॥ २ ॥
आणा व्रत दया दीपती, इवरत अधर्म हिंसादिक आश्रव असुभ नपेद्यो हो लाल ।
गांम नगर पुर पाटणे, उत्तम पुरुष हलुकर्मी ते भव जीवां मन भेद्यो हो लाल ॥ ३ ॥
केई गुण बिण साधु बाजे लोक में, सुध साधां रा वेषी आग्या बारे धर्म कहि अलूझे हो लाल ।
हिंसा इवरत में धर्म परूपता, सांची सरधा सवली सुतर नी मूल न सूझे हो लाल ॥ ४ ॥
एहवा पाखण्डी इण लोक में, त्यांने तज ने सांमी आपण पे हुवा निराला हो लाल ।
सुध संजम पाल अणसण कियों, घणा वर्ष दीपायो श्रीजिणवर धर्म रसालो हो लाल ॥ ५ ॥
चमालीस बरस रे आसरे, भगवत धर्म भली पर भीषू रिष भलो बतायो हो लाल ।
भारीमाल इगसट बरस आसरे, संजम तप वखाण वाणीमें मुनिवर धर्म षरो षतायो हो लाल ॥ ६ ॥
इसड़ा पुरुष इण लोक में, हुवा न बले हुसी केई विरला धर्म उपगारी हो लाल ।
पिण इण आरे हूवैणा दोहिला, मोटा माल कमाया अरू जुग में महिमा भारी हो लाल ॥ ७ ॥
राजनगर में रूड़ी रीत सूं, भारीमाल रिष सुध गत पहुंता अणसण धारी हो लाल ।
संजम तप रो बल घणो, त्यां ने वांरु वार बंदना नित २ हुयजो म्हारी हो लाल ॥ ८ ॥
मुंहा गाम में सांमी जनमिया, ओस बंस अवतरिया सुध जाते लोढा जुगता हो लाल ।
त्यां वाल पणै संजम लियो, सरल सभावी साचा भिषू रिष ना भल भगता हो लाल ॥ ९ ॥
दस वरस आसरे घर में रह्या, चतुर वरस उनमाने रह्या दरवे भेष मंझारी हो लाल ।
संजम पाल्यो इगसट वरस आसरे, पिचंतर वरस उनमाने मुनि पाया उमर भारी हो लाल ॥ १० ॥
साव पेंतीस इगताली साधव्यां, मेली ने सामीजी सुध गत में आप सिधाया हो लाल ।
समकित सील अराधियो, ज्ञान अपूरव पामी बहु जांमण मरण मिटायो हो लाल ॥ ११ ॥
ए चरित कियो भारीमाल रो, सुणियो ओ सांचो अटकल अनुसारे हो लाल ।
आघो पाछो कहिणी आयो हुवे, निर्जरा हेत मिच्छामि दुक्कडं जाणो महारे हो लाल ॥ १२ ॥
समत अठारे गुणियासियै, भादरवा विद एकम अरु वार सनेसर जाणो हो लाल ।
चतुमासो सत्त सावां तणो, भवजीवां उपगार पींपाड सेंहर पिछांणो हो लाल ॥ १३ ॥

: २ :

आचार्य रायचन्दजी रो वखाण

ढाल १

दुहा

अरिहंत सिद्ध साधु प्रणम, आणी हरष अपार ।
कथन सरस कहूं उमंग कर, ऋषराय सुयश विस्तार ॥ १ ॥
भिक्षु ऋष भारी करी, सतरे संजम साध ।
साठे संथारो करी, पाम्या परम समाध ॥ २ ॥
भारीमाल पट भलकता, राजनगर सुध रीत ।
अठंतरे अणसण करी, पण्डित मरण पूनीत ॥ ३ ॥
तिजे पट अधिका तप्या, रायचन्द ऋषराय ।
सरस सुयश तस सांभलों, आणी हरष उछाह ॥ ४ ॥
किहां उपना जन्म्या किहां, किहां संयम कहिवाय ।
पाट विराज्या किण परे, परभव पद किहां पाय ॥ ५ ॥
किण २ देशे विचरिया, अधिक कियो उपगार ।
किम चिऊ तीर्थ जमाविया, सुजस लियो संसार ॥ ६ ॥
किण २ ने संयम दियो, संख्या सखर सुहाय ।
संक्षेपे हूं वरणवूं, सांभलजो सुखदाय ॥ ७ ॥
जशधारी ऋषराजजी, सुजश करे संसार ।
हस्तमुखी सुरत सुहद, पेषत नावें पार ॥ ८ ॥
गुण सागर गिरवा घणा, निर्मल नयनानंद ।
सुखकारी वर्णन सुजश, कहूं सखर सुखकन्द ॥ ९ ॥

ढाल

[परभव मन में चिन्तवे—ए देशी]

देश मेवाड़ सु दीपतो, वड़ी रावलीया वखाण ।
गोगन्दारे परगनें, ग्राम मनोहर जाण ॥
देश मेवाड सु दीपतो * ॥ १ ॥
साह चतुरोजी तिहा वसे, सरल भद्र सुखकार ।
जाति वंव सुद्ध जाणज्यो, ओसवंस अधिकार ॥ २ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रीजीदुवारे भोपो साहा वसै, पुत्र खेतसी हेम ।
पुत्री खुसाला रूपा कही, पुरो धर्म सु पेम ॥ ३ ॥
रावलीया व्याही सही, दोनूं ने तिणवार ।
खुसाला चतुरा साह भणी, पुरो पुन्य प्रकार ॥ ४ ॥
पुत्र दोय पहिला हूंता, नान जी मोती नाम ।
उग्रभागी सुत तीसरो, ऊपनो अभिराम ॥ ५ ॥
समत अठारे सैतालै समै, जशधारी सुत जायो ।
पुन्य प्रबल गुण पोरसौ, रायचन्द ऋपरायो ॥ ६ ॥
सुखे समाधे मोटा हुवा, निर्मल बुद्धि निधान ।
दिशावान सुत दिपतो, परम पुरुप प्रधान ॥ ७ ॥
भिक्षु गुर भल पामिया, भाग्य दिशा अति भारी ।
हलुकर्मीं जीव तेहने, जोग मिले तंतसारी ॥ ८ ॥
वलि सतयुगी ना प्रसंगथी, बहिन वैनोई विचार ।
अधिक धर्म मांहे समझिया, परम पीत अति प्यार ॥ ९ ॥
धर्म हुवे जिण रा घर मझे, बालक पिण समझे ताहि ।
कर्म तणो क्षयोपसम हुवे, आफे जोग मिल जाहि ॥१०॥
गोगुन्दा रावलीया मझे, संत सती वहू आवे ।
स्वामी भिक्षु पिण संचरे, धर्म वृद्धि अति थावै ॥११॥
जन कहे साधूनें सुरसरी, चालै भुजंगी चाल ।
जिण २ सेरी संचरे, त्यां त्यां करे निहाल ॥१२॥
प्रथम ढाल प्रगट पणै, कह्यो जनम अधिकार ।
प्रेम धर्म नो पामीया, उत्तम पुरुष उदार ॥१३॥



ढाल २

दुहा

समणी भिक्षु स्वाम नी, वरजू विंजा विचार ।
ग्रामा नगरा विचरती, सतिया ने परिवार ॥ १ ॥
त्यां तीन जण्यां संयम लियो, इकदिन भिक्षु पास ।
वरजू विजा वना सती, वरस बावनं तास ॥ २ ॥

संयम लीधा ने थया, तीन वर्ष उनमान।
कियो सिंघाड़ो स्वामी जी, वरजू तणो पिछाण ॥ ३ ॥
सील तणों घर महासती, सूत्र सिद्धंत सुवोल।
भिक्षु स्वाम वधारियो, तीखो तोल अमोल ॥ ४ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल—ए देशी]

वडी रावलीयां पधारीया रे लाल, वरजू सती सुवदीत रे। सुगण नर।
हलुकर्मी सुण हरषीया रे लाल, पूरण धर्म सूं प्रीतरे॥ सुगण नर।
सुणज्यो गुण स्वामी तणा रे लाल *॥ १ ॥
सुन्दर देसनां सांभल्या रे लाल, समज्या चतुर सुजान रे। सु०।
सुलभ थया वहु धर्म सूं रे लाल, उद्यम अधिको आण रे॥ सु० ॥ २ ॥
माता सहित ऋषराय ने रे लाल, वारूं चढायो वैराग रे। सु०।
चारित्र लेवा चित थयो रे लाल, संसार सूं मन गयो भाग रे॥ सु० ॥ ३ ॥
सुत रायचन्द सुहामणो रे लाल, मात खुसाला मा हेतरे। सु०।
वात काढी दिक्षा तणी रे लाल, पिण न्यातिलां सूं मोह अत्यंत रे॥ सु० ॥ ४ ॥
घर मांहे राखण भणी रे लाल, किया अनेक उपाय रे। सु०।
दोनूं वैरागी दीपता रे लाल, किम राचे घर माहि रे॥ सु० ॥ ५ ॥
वालक वय वुद्धि आगलो रे लाल, रायचन्द सुद्ध रीत रे। सु०।
जाव दिया अति जुक्ति सूं रे लाल, पूरण चरण सूं प्रीत रे॥ सु० ॥ ६ ॥
ज्यां रे मोहकर्म पतलो पड्यो रे लाल, उग्रभागी दीसावान रे। सु०।
ते किम राचे कामभोग में रे लाल, संवेग रस गलतान रे। सु० ॥ ७ ॥
न्यातीला काया हुवा रे लाल, आग्या दीधी तिण वार रे। सु०।
पुत्र सहित माता भणी रे लाल, संजम लेवा सार रे॥ सु० ॥ ८ ॥
दुजी ढाले दाखीयो रे लाल, थया संयम ने त्यार रे। सु०।
हिवे किण विध संयम आदर रे लाल, आगे कहूं अधिकार रे॥ सु० ॥ ९ ॥



* यह आंकड़ो प्रत्येक गाथा के अंत में है।

ढाल : ३

दुहा

आचार्य गुण आगला, भिक्षु गुण भंडार ॥
ग्रामा नगरां विचरता, आप तिरे पर तार ॥ १ ॥

ढाल

[सुण प्राणी—ए देशी]

पूज्य भिखण जी पधारिया, आनन्दा रे ।
वडी रावलिया वखाण क, आज आनन्दा रे ॥
दिक्षा देवा मा पुत्र ने आनन्दा रे, भला पधास्या जाण क ॥ आज आ० ॥ १ ॥
नर नारी हरष्या घणा आ०, पूज्य भिखनजी ने पेष क । आज आ० ।
मा सुत दिक्षा ले चूंप सू आ०, ज्यां रे मन मांहे हरष विशेष क ॥ आज आ० ॥ २ ॥
वैरागी वनडो वण्यो आ०, रायचन्द विध रात क । आज आ० ।
मात खुसाला सोभता आ०, परम चरण सूं प्रीत क ॥ आज आ० ॥ ३ ॥
चतुरो साह अति चुप सूं आ०, करे दिक्षा मोछव अधिकाय क । आज आ० ।
हथणी होदै हरष सू आ०, तिण उपर वैसाय क ॥ आज आ० ॥ ४ ॥
गाम २ ना आविया आ०, नर नास्था ना वृंद क । आज आ० ।
अंब वृक्ष तला विहुं भणी आ०, संयम दियो सुखकन्द क ॥ आज आ० ॥ ५ ॥
समत अठारे सतावने आ०, चैती पूनम चाह क । आज आ० ।
स्वमुख भिक्षु स्वामी जी आ०, चरण दियो सुखदाय क ॥ आज आ० ॥ ६ ॥
वर्ष इग्यारा रे आसरे आ०, रायचन्द गुण गेह क । आज आ० ।
तात भाई वहिन छोड़ ने आ०, मात साथ व्रत लेह क ॥ आज आ० ॥ ७ ॥
तात चतुरोजी सरल भला आ०, नांन जी मोती बै भ्रात क । आज आ० ।
भोजायां मन भावती आ०, वहिन मैंना सुविख्यात क ॥ आज आ० ॥ ८ ॥
स्वजन वर्ग अति सांवठै आ०, घर मांहे वहु ऋध क । आज आ० ।
सर्व भणी छिटकाय ने आ०, साध्यो चरण समृद्ध क ॥ आज आ० ॥ ९ ॥
संयम देइ माता भणी आ०, सूंपी वरजूजी नै स्वाम क । आज आ० ।
पूरण क्रिया पूज्य नी आ०, गुणवंता अभिराम क ॥ आज आ० ॥१०॥
तंत ढाल कही तीसरी आ०, उतम चरण उदार क । आज आ० ।
मात पुत्र ने दै करी आ०, स्वामी जी कियो विहार क ॥ आज आ० ॥११॥

ढाल : ४

दुहा

पुनवंत गण में प्रगट्या, सुद्धगण वृद्धि सवाय।
प्रतक्ष निजरा पेखली, रायचन्द ऋषराय ॥ १ ॥
पग छेहड़ै ऋषराज रे, अधिक थयो उपगार।
संक्षेप कहूं छुं सही, वानगी मात्र विचार ॥ २ ॥

ढाल

[राजनगर भणतां थकां रे—ए देशी]

सतावनै वर्ष स्वामजी रे, आप थया अणगार।
धर्म उद्योत हुवो घणो, तिण वर्ष मांहे अवधार ॥
स्वाम सुगण सुखकारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे।
ऊजागर गण हितकारी रे, परम पूज्यनी वलिहारी रे *॥ १ ॥
एक वर्ष मांहे थई रे, पीउ छाड़ व्रत धार।
श्रमणी पंच मुद्रा सोहती, एतो सासण री शिणगार ॥ २ ॥
हस्तु कस्तु भगनी वेहूं रे, खुसाला ऋष राय नी मांय।
जीता नौरा नो जश घणो, पांच पीउ छाड़ व्रत पाय ॥ ३ ॥
चैत्री पूनम चारित्र लियो स्वामजी रे, रायचन्द ऋषराय।
जैठ माहे चारित्र आदर्या, पिता पुत्र विहूं सुखदाय ॥ ४ ॥
तात ताराचन्द दीपतो रे, पुत्र डूंगरसी पिछाण।
पिता भार्या परहरी, सुत छांडी सगाई सयाण ॥ ५ ॥
वड़ वैरागी मुनि विहूं रे, भारी गुण भण्डार।
पग छेहड़े ऋषराय रे, वले अवर थयो उपगार ॥ ६ ॥
अढी वर्ष रे आसरे रे, रह्या भिक्षु ऋषराय।
विनवान शिष्य त्यां थया, अढी वरस रे मांहि ॥ ७ ॥
जीवो मुनि जसोल नो रे, जाति वरल्या वोहरा जाण।
संयम लियो स्वाम पै, औ तो सरल भद्र सुविहाण ॥ ८ ॥
वालपणे व्रत आदर्या रे, जोगीदास जसवंत।
छाड़ त्रिया ऋध छिनक में, थयो मोटो संत महंत ॥ ९ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अंत में है।

जोधो मारू करेड़ा तणो रे, स्वाम संयम दियो सार।
महा तपसी महिमा निलो, सुद्ध सरल भद्र सुखकार ॥ १० ॥
जाति वैद मुहंता जाणजो रे, भगजी गुण भण्डार।
स्वाम संयम दियो सोभतो, ओ तो विनयवान सुविचार ॥ ११ ॥
वासी विदासर तणो रे, भागचन्दजी नाम।
जोगड़ जाति सुजाणजो, छेहड़े साझ्या हे आतम काम ॥ १२ ॥
भारी तपसी थयो भोपजी रे, जाति तणो चपलोत।
संयम स्वाम समापियो, इण कियो घणो उद्योत ॥ १३ ॥
पग छेहड़े ऋषराय ने रे, ए थया संत उदार।
श्रमणी थई बहू सोभती, भारी ग्यान गुणां री भण्डार ॥ १४ ॥
पुन्यवंत ऐसा प्रगट्या रे, दिशावान दीपाय।
भाग्य बली भिक्षु तणा, रूडा संत मिल्या ऋषराय ॥ १५ ॥
चोथी ढाले ऋषराय ना रे, भाग्य दिशा देखाय।
पुंन्य प्रभाव महाराज ना, गुण पुरा किम कहिवाय ॥ १६ ॥

●

ढाल : ५

दुहा

बुद्धि पुन्य गुण देखनें, भीक्षु भाख्यो एम।
पट लायक दीसै प्रगट, निमल निभावण नेम ॥ १ ॥
अढी वरष रे आसरे, भिक्षु नी भरपूर।
सेव करी साचे मने, सखरी रीत सनूर ॥ २ ॥
संथारा नो साझ अति, स्वामी ने सुद्ध रीत।
राय ऋषी रूड़ो दियो, परम सुगुरु सुं प्रीत ॥ ३ ॥
समत अठारे साठै वर्ष, सात पोहर अनुमान।
भाद्र शुक्ल पक्ष स्वामजी, पोहता परभव स्थान ॥ ४ ॥

ढाल

[सीहल नृप कहे चन्द नें—ए देशी]

भिक्षु पट भारीमालजी मुनिन्द मोरा, सरल भद्र सुखदाय हो।
निरहंकार चित निरमले मुनिन्द मोरा, नहीं कोई नी परवाहि हो॥
सखर गुणाकर सोभता मुनिन्द मोरा, भारीमल ऋपराय हो ॥ १ ॥

तंत संत तेरा माहिला मुनिन्द मोरा, भारीमाल भलकंत हो।
खेतसीजी सेवा में खरा मुनिन्द मोरा, सुगुणा शीष सोहंत हो ॥ २ ॥
मुख आगले ऋषरायजी मुनिन्द मोरा, सर्व कार्य में सोभाय हो।
चरचा करण बुद्धि चातुरी मुनिन्द मोरा, उत्पतिया अधिकाय हो ॥ ३ ॥
सरस वयण स्वर सूं सही मुनिन्द मोरा, वाचत वारू वखाण हो।
संत सत्यारी संभाल में मुनिन्द मोरा, ऋषरायजी अगवाण ॥ ४ ॥
सती खुषाला सोभती मुनिन्द मोरा, रहे वरजूजी पास हो।
प्रवर चरण हद पालती मुनिन्द मोरा, पुरो पुन्य प्रकास हो ॥ ५ ॥
लघु भगनि रूपांजी भली मुनिन्द मोरा, स्वाम भिक्षु छतां सोय हो।
पिउ छांड़ चरण आदर्यो मुनिन्द मोरा, वारू वैरागी सुजोय हो ॥ ६ ॥
भाई सतजुगी सारषा मुनिन्द मोरा, अपर खेतसी नाम हो।
शासण स्थंभ शिरोमणी मुनिन्द मोरा, वारू गण विश्राम हो ॥ ७ ॥
सुत ऋषरायजी सारिषा मुनिन्द मोरा, नीका नै निरमोल हो।
ब्रह्मचारीजी नाम दूसरो मुनिन्द मोरा, च्यार तीर्थ में तोल हो ॥ ८ ॥
महा भाग्यवान महासती मुनिन्द मोरा, भिक्षु तथा भारीमाल हो।
तीन चौमासा भेला कराविया मुनिन्द मोरा, गुण निष्पन्न नाम खुषाल हो ॥ ९ ॥
समत अठारेसे सतसठै मुनिन्द मोरा, पंदरे दिन तपस्या प्रधान हो।
पंदर मांहै संथारो कियो मुनिन्द मोरा, आयो आठ पोहर उनमान हो ॥ १० ॥
सुख मांहे चारित्र आदर्यो मुनिन्द मोरा, सुखे २ चरण पाल हो।
संयती सुख मांहे छता मुनिन्द मोरा, सुखे २ कियो काल हो ॥ ११ ॥
प्रवर ढाल कही पंचमी मुनिन्द मोरा, रूडा स्वाम ऋषराय हो।
मात तास मही मंडणी मुनिन्द मोरा, जीत रा डंका बजाय हो ॥ १२ ॥

●

ढाल : ६

: दुहा :

गामा नगरा विचरता, भारीमाल महाभाग।
संत जुग राय ऋष आदि, संत वारू दिल वैराग ॥ १ ॥
समत अठारे गुणंतरे, जैपुर नगर मझार।
चौमासा चित चाह कर, अधिक थयो उपगार ॥ २ ॥

भिक्षु प्रथम पधारिया, सेंतालीसे उनमान।
रात्री वावीसरे आसरे, रह्या मुनि गुणखान ॥ ३ ॥
हरचन्द लाला आदि दे, अल्पज समज्या जाण।
ता पीछै भारीमाल जी, कियो गुणंतरे मंडाण ॥ ४ ॥
जन बीहला समज्या तदा, प्रभात रात्री व्याख्यान।
भारीमाल ऋषराय जी, वांचै उद्यम आण ॥ ५ ॥

ढाल

[सो ही तेरा पंथ पावे हो—ए देशी]

भारीमाल रे मन मभै, व्रण वेदन भारी हो।
तिण कारण अधिका रह्या, फागण ताई विचारी हो ॥
स्वामी गण शिणगारी हो, भिक्षु शिष महा सुखकारी हो ॥ १ ॥
सरूप भीम अरू जीतनै, माता सहित तिवारी हो।
उपदेश देई समभावीया, दिक्षा ने किया त्यारी हो ॥
स्वामी महा उपगारी हो ॥ २ ॥
हेम आदि मुनि आविया, दर्शणरी मन धारी हो।
हीरां अजवू हस्तु आदि दे, श्रमणी गण हितकारी हो ॥
शिव पंथ ने त्यारी हो ॥ ३ ॥
भूआ तीन भाया तणी, अजवू नाम उदारी हो।
चौमालिसे चारित्र लियो, दियो उपदेश उदारी हो ॥
वारू विवध प्रकारी हो ॥ ४ ॥
हस्तु सती उपदेश दे, सरूपचन्द ने तिवारी हो।
दे तू जश भूवा भणी, मान वचन हितकारी हो ॥
करले बंधो उदारी हो ॥ ५ ॥
वयण सुणी सतीया तणा, पाया प्रेम अपारी हो।
ततक्षिण त्यां बंध्यो कियो, संजम नो सुविचारी हो ॥
दोढ मास हद धारी हो ॥ ६ ॥
पोह सुदि नवमी रे दिने, भारीमाल गुणभारी हो।
संयम सरूपचन्द नें, मोछव थया अपारी हो ॥
दिक्षा मोहन वाडी हो ॥ ७ ॥

दिक्षा देवा जीतने, भारीमाल सुविचारी हो।
मेहल्या ऋष रायचन्द ने, माह विद सातम धारी हो॥
स्वाम विचारणा भारी हो॥ ८॥

संयम देई सूंपीया, हेम भणी तिण वारी हो।
हेम भणाय पका किया, विद्या दान दातारी हो॥
ज्यांरी बहु जलहारी हो॥ ९॥

फागुण विद ग्यारस दिने, भारीमाल सुविचारी हो।
मात सहित भीम जी भणी, दियो चरण उदारी हो॥
विहार कियो तिण वारी हो॥ १०॥

प्रथम शिष ऋषराय जी, स्व हथ वयण उचारी हो।
जीत भणी किधो सही, जोग मिल्यो तंतसारी हो॥
अकस्मात अवधारी हो॥ ११॥

पूर्ण पुन्य प्रबल हुवे, भाग्य दिसा हुवे भारी हो।
आपेइ जोग आयि मिलै, प्रत्यक्ष पेखो विचारी हो॥
अंतर आंख उघाडी हो॥ १२॥

छठी टाल विषै कह्यो, ऋषरायजी भारी हो।
दिक्षा दिवी जीत नें, वायो रूंख विचारी हो॥
आगल फल विस्तारी हो॥ १३॥

●

ढाल : ७

दुहा

भारीमाल ऋषरायजी, विचरत देश विदेश।
जीव घणा समझावता, काटण कर्म कलेश॥ १॥
सम्वत अठारे छिहंतरे, भारीमाल ऋषराय।
सरूपचन्दजी नो कियो, सिंघाडो सुखदाय॥ २॥

ढाल

[परम गुरु पूजजी मुझ प्यारा रे—ए देशी]

सतंतरे वर्ष पिछाणी रे, भारीमाल तणे तन जाणी रे।
उदर वेदन अधिक जणाणी, स्वाम गुण सागरू ऋष रायो रे* ॥ १॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भिक्षु प्रथम पधारिया, सेंतालीसे उनमान।
रात्री वावीसरे आसरे, रह्या मुनि गुणखान ॥ ३ ॥
हरचन्द लाला आदि दे, अल्पज समज्या जाण।
ता पीछै भारीमाल जी, कियो गुणंतरे मंडाण ॥ ४ ॥
जन वीहला समज्या तदा, प्रभात रात्री व्याख्यान।
भारीमाल ऋषराय जी, वांचै उद्यम आण ॥ ५ ॥

ढाल

[सो ही तेरा पंथ पावे हो—ए देशी]

भारीमाल रे मन मझै, व्रण वेदन भारी हो।
तिण कारण अधिका रह्या, फागण ताई विचारी हो॥
स्वामी गण शिणगारी हो, भिक्षु शिष महा सुखकारी हो ॥ १ ॥
सरूप भीम अरू जीतनै, माता सहित तिवारी हो।
उपदेश देई समझावीया, दिक्षा ने किया त्यारी हो॥
स्वामी महा उपगारी हो ॥ २ ॥
हेम आदि मुनि आविया, दर्शणरी मन धारी हो।
हीरां अजवू हस्तु आदि दे, श्रमणी गण हितकारी हो॥
शिव पंथ ने त्यारी हो ॥ ३ ॥
भूआ तीन भाग्या तणी, अजवू नाम उदारी हो।
चौमालिसे चारित्र लियो, दियो उपदेश उदारी हो॥
वारू विवध प्रकारी हो ॥ ४ ॥
हस्तु सती उपदेश दे, सरूपचन्द ने तिवारी हो।
दे तू जश भूवा भणी, मान वचन हितकारी हो॥
करले वंधो उदारी हो ॥ ५ ॥
वयण सुणी सतीया तणा, पाया प्रेम अपारी हो।
ततक्षिण त्यां वंध्यो कियो, संजम नो सुविचारी हो॥
दोढ मास हद धारी हो ॥ ६ ॥
पोह सुदि नवमी रे दिने, भारीमाल गुणभारी हो।
संयम सरूपचन्द नें, मोच्छव थया अपारी हो॥
दिक्षा मोहन वाडी हो ॥ ७ ॥

दिक्षा देवा जीतने, भारीमाल सुविचारी हो ।
मेहल्या ऋष रायचन्द ने, माह विद सातम धारी हो ॥
स्वाम विचारणा भारी हो ॥ ८ ॥

संयम देई सूंपीया, हेम भणी तिण वारी हो ।
हेम भणाय पका किया, विद्या दान दातारी हो ॥
ज्यांरी वहु जलहारी हो ॥ ९ ॥

फागुण विद ग्यारस दिने, भारीमाल सुविचारी हो ।
मात सहित भीम जी भणी, दियो चरण उदारी हो ॥
विहार कियो तिण वारी हो ॥ १० ॥

प्रथम शिष ऋषराय जी, स्व हथ वयण उचारी हो ।
जीत भणी किधो सही, जोग मिल्यो तंतसारी हो ॥
अकस्मात अवधारी हो ॥ ११ ॥

पूर्ण पुन्य प्रवल हुवे, भाग्य दिसा हुवे भारी हो ।
आपेइ जोग आयि मिलै, प्रत्यक्ष पेखो विचारी हो ॥
अंतर आंख उघाडी हो ॥ १२ ॥

छठी टाल विषै कह्यो, ऋषरायजी भारी हो ।
दिक्षा दिधी जीत नें, वायो रूंख विचारी हो ॥
आगल फल विस्तारी हो ॥ १३ ॥

●

ढाल : ७

दुहा

भारीमाल ऋषरायजी, विचरत देश विदेश ।
जीव घणा समझावता, काटण कर्म कलेश ॥ १ ॥
सम्वत अठारे छिहंतरे, भारीमाल ऋषराय ।
सरूपचन्दजी नो कियो, सिंघाडो सुखदाय ॥ २ ॥

ढाल

[परम गुरु पूजजी मुझ प्यारा रे—ए देशी]

सतंतरे वर्ष पिछाणी रे, भारीमाल तणे तन जाणी रे ।
उदर वेदन अधिक जणाणी, स्वाम गुण सागरू ऋष रायो रे* ॥ १ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

देश २ तणा सुखदाया रे, श्रावक श्राविका सखर सुहाया रे।
पूज्यरा दर्शण करवा आया ॥ २ ॥

साध साधव्यां वहु सुख दाणी रे, स्वामी रे तन खेद सुणाणी रे।
हेम आदि मिल्या संत आणी ॥ ३ ॥

सत जुगी हेम वयण वदीजे रे, रायचन्द जी ने पट दिजे रे।
म्हारी तरफ सूं चिंता न कीजे ॥ ४ ॥

भारीमाल सुणी मन हर्ष्यो रे, निकलंक दोनुंई ने निरख्या रे।
यां ने परम विनैवंत परख्या ॥ ५ ॥

एहवा उभय बडा मुनि धीरा रे, गणस्थभण गैहर गंभीरा रे।
हद विमल अमोलक हीरा ॥ ६ ॥

रायचन्द जी ने पट आप्यो रे, आचार्य पद स्थिर कर स्थाप्यो रे।
ज्यारो जग जश चिहू दिशा व्याप्यो ॥ ७ ॥

अठंतरे वर्ष माघ मासो रे, कृष्ण पक्ष आठम तिथि तासो रे।
राजनगर मांहे सुविमासो ॥ ८ ॥

अणसण नव पोहर रे अनुमानो रे, ऋषराय करायो सु जाणो रे।
भारीमाल सुविहाणो ॥ ९ ॥

सेवा किधी है विविध प्रकारो रे, अंत सीम अधिक अवधारो रे।
लियो लाभ अमोलक सारो ॥१०॥

भारीमाल तणो वरतारो रे, रह्यो आसरे वरस अठारो रे।
साध साधवी हुवा सुखकारो ॥११॥

बयासी ठाणा तणो उनमानो रे, दिक्षा लीधी गण मांही प्रधानो रे।
कोई रह्या कोई टलिया जाणो ॥१२॥

संत पैंतिस चरण खुसालो रे, इकतालीस श्रमणी सुद्ध चालो रे।
मेली परभव पौंहता भारीमालो ॥१३॥

तीजे पट तप्या ऋषरायो रे, देश २ में धर्म दिपायो रे।
तिण रो लेखो सुणो चित ल्यायो ॥१४॥

सातमी ढाल मांहे सोभायो रे, भारीमाल परलोक सिद्धायो रे।
ऋषराय पूज्य पद पायो ॥१५॥

ढाल : ८

दुहा

माघ कृष्ण नवमी दिने, पूज्य विराज्या पाट।
श्रमण सत्यां शिर सेहरा, राजनगर गह घाट॥ १॥
च्यार तीर्थ चित चाह अति, रायन्द ऋषराय।
तीजे पाट भिक्षु तणे, जंबु जिसा कहाय॥ २॥
खेतसी जी ने हेम ऋष, बडा संत सुवदित।
अखंड आणा माने सहु, पूरण पूज्य सूं पीत॥ ३॥
देश २ में दीपतो, जश विस्तरीयो जाण।
प्रवल गुणे पुन्य पोरसो, परम पूज्य पिछाण॥ ४॥
भिक्षु ऋष भेला किया, तीन चौमासा तास।
भारीमाल साथे भला, अष्टादश चौमास॥ ५॥
भिक्षु भारीमाल नो, सखरो चरित्र संभाल।
वृतांत चौमासा तणो, वर्णन त्यां सु विशाल॥ ६॥
गुण्यासी सूं आदि दे, आठताई अवधार।
तीस चौमासा ज्यां किया, आखु ते अधिकार॥ ७॥

ढाल

[कासी जल नहीं भरे ए—ए देशी]

समत अठारे गुण्यासीये रे, पाली सहर मझार।
प्रथम चोमासो पिछाणज्यो रे, अधिक कियो उपगार॥
भविक रे मुनिवर गुणरा भण्डार *॥ १॥
जैपुर सहरे जाणज्यो रे, असीये वर्ष चौमास।
नरनारी समझा घणा रे, अधिको धर्म उजास॥ २॥
मरूधर देश मेवाड़ ना रे, देश ढूंढाड़ ना देख।
नरनारी आव्या घणा रे, वन्दना काज विशेष॥ ३॥
सतजुगी स्वाम ऋष राय नी रे, सुन्दर मुद्रा सोभाय।
देखी ने हरख्या घणा रे, वयण सुणी विकसाय॥ ४॥
धर्म उद्योत हुवो घणो रे, उदक तणे आगार।

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दिवस तयालीस दीपता रे, कीया वृद्धमान अणगार ॥ ५ ॥
हिव चोमासो उतरयो रे, विचरत २ ताय।
शहर पीपाड़ पधारिया रे, सतजुगी स्वाम ऋषराय ॥ ६ ॥
स्वाम सतजुगी तिण समे रे, सारया आतम काज।
संथारो सावचेत में रे, अदरायो ऋषराय ॥ ७ ॥
सखरो साहज दियो सही रे, स्वाम खेतसी सार।
ऋषराय सेव हद सांचवी, अंत समै अववार ॥ ८ ॥
शहर पीपाड़ मांह सही रे, इक्यासीये अवधार।
चौमासो धर चूंप सूं रे, कीयो घणो उपगार ॥ ९ ॥
हेम जीत जैपुर मझे रे, तिण हिज वर्ष चौमास।
पौस मास पाली में भेला थया रे, ऋषराय हेम गुण रास ॥ १० ॥
संत च्यार २ सूं सोभता रे, सिंघाड़ो सुखकार।
जीत तणो अति उमंग सू रे, ऋषराय कियो सुविचार ॥ ११ ॥
जीत अने वृद्धमान जी रे, कर्मचन्द ने इकतार।
जीवराज साघ गुणी रे, यां ने मेल्या देश मेवाड़ ॥ १२ ॥
ढाल आठमी में कह्यो रे, संक्षेप सुविचार।
तीन चौमासा आखीया रे, आगल बहु विस्तार ॥ १३ ॥

सोरठा

वयांसीये वरस सार रे, प्रगट पाली शहर में।
चौमासो सुखकार रे, त्यां उपगार कियो घणो ॥ १ ॥
तयासीये वर्ष धार रे, उदैपुर आनन्द सूं।
वारू जस विस्तार रे, चउमासो चित चाहि सु ॥ २ ॥



ढाल : ६

: दुहा :

हिवे चोमासो उतरयो, विहार कियो मुनिराज।
मालव देश पधारिया, पूज्य भवोदधि पाज ॥ १ ॥

ढाल

[सुण २ रे सीख सयाणा—ए देशी]

चोपन ठाणां सूं पूज्य पधास्या, मालवा में बहु जन तास्या ।
जिन धर्म नो थयो उद्योत, घाली घण घट ग्यानी जोत ॥
सुण २ रे सीख सयाणा, ऋषराय सुजश सु बिहाणा ।
ऋषराय सुजश भारी, हद सुरत मुद्रा प्यारी *॥ १ ॥
खाचरोद उजीण नोलाई, रतलाम झाबू आया ही ।
धर्म चरचा तणी अधिकाई, दीया जीतरा डंका वजाई ॥ २ ॥
ऋषराय जीत संग जाय, पटलाबद में पिछाण ।
चौरासीयो वर्ष कियो चौमास, अधिको थयो धर्म नो उजास ॥ ३ ॥
षट मास कोदर तप ठायो, चढतौ जस कलस चढायो ।
तिहां करे घणो उपगार, मुनि आया है देश मेवाड ॥ ४ ॥
पीच्यासीये चौमासो सुखकार, स्वामी किधो है श्री जी द्वार ।
छयासीय पाली जश छायो, रूढा रायचन्द ऋषरायो ॥ ५ ॥
जयनगर ना बहु नर नार, आया वंदन काज विचार ।
ताराचन्द लाला आदि ताय, जाणे मेल्यो मंड्यो अधिकाय ॥ ६ ॥
पछे थली देश में पधास्या, वहु जीवारा संसय निवारस्या ।
सरूप जीत आदि साथ जाणी, वहु साधविया पहिछाणी ॥ ७ ॥
शहर विदासर मांहे चोमासो, वर्ष सित्यासीये सुविमासो ।
जीत ने चुरू शहर भोलाया, सरूपचन्द ने रीणी पठायो ॥ ८ ॥
रतनगढ ई शहर ऋषरायो, और गामा श्रमणी ने करायो ।
सर्व गांमा में उपगार घणा, समझ्या तिहां नर नार ॥ ९ ॥
वर्ष सीत्यासीये सुखकार, हुवो धर्म उद्योत अपार ।
थया थली देश में थाट, चार तीर्थ तणा गह घाट ॥१०॥
अठ्यासीये वर्ष अवधार, चौमासो कीयो श्रीजीदुवारा ।
नव्यासीये उदेपुर तास जीत, कियो दिली में चौमासा ॥११॥
चौमासो उतरियां विचार, शहर दिली सुं कीयो विहार ।
जैपुर होय मेवाड़ में आया, रावलीयां पूज दर्शण पाया ॥१२॥
पछे जीत साथ सुविचारी, गुजरात तणी मन धारी ।
इडर होय अहमदावाद, आया नीवडी धर अहलाद ॥ १३ ॥

---

* यह आँकड़ो प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दिवस तयालीस दीपता रे, कीया वृद्धमान अणगार ॥ ५ ॥
हिव चोमासो उतर्‍यो रे, विचरत २ ताय।
शहर पीपाड़ पधारिया रे, सतजुगी स्वाम ऋषराय ॥ ६ ॥
स्वाम सतजुगी तिण समे रे, सार्‍या आतम काज।
संथारो सावचेत में रे, अदरायो ऋषराय ॥ ७ ॥
सखरो साहज दियो सही रे, स्वाम खेतसी सार।
ऋषराय सेव हद सांचवी, अंत समै अवधार ॥ ८ ॥
शहर पीपाड़ मांह सही रे, इक्यासीये अवधार।
चौमासो धर चूंप सूं रे, कीयो घणो उपगार ॥ ९ ॥
हेम जीत जैपुर मझे रे, तिण हिज वर्ष चौमास।
पौस मास पाली में भेला थया रे, ऋषराय हेम गुण रास ॥ १० ॥
संत च्यार २ सूं सोभता रे, सिंघाड़ो सुखकार।
जीत तणो अति उमंग सू रे, ऋषराय कियो सुविचार ॥ ११ ॥
जीत अने वृद्धमान जी रे, कर्मचन्द ने इकतार।
जीवराज साध गुणी रे, यां ने मेल्या देश मेवाड़ ॥ १२ ॥
ढाल आठमी में कह्यो रे, संक्षेप सुविचार।
तीन चौमासा आखीया रे, आगल बहु विस्तार ॥ १३ ॥

सोरठा

वयांसीये वरस सार रे, प्रगट पाली शहर में।
चौमासो सुखकार रे, त्यां उपगार कियो घणो ॥ १ ॥
तयासीये वर्ष धार रे, उदैपुर आनन्द सूं।
वारू जस विस्तार रे, चउमासो चित चाहि सु ॥ २ ॥

●

ढाल : ९

: दुहा :

हिवे चोमासो उतरस्यो, विहार कियो मुनिराज।
मालव देश पधारिया, पूज्य भवोदधि पाज ॥ १ ॥

ढाल

[सुण २ रे सीख सयाणा—ए देशी]

चोपन ठाणां सूं पूज्य पधास्या, मालवा में वहु जन तास्या ।
जिन धर्म नो थयो उद्योत, घाली घण घट ग्यानी जोत ॥
सुण २ रे सीख सयाणा, ऋषराय सुजश सु बिहाणा ।
ऋषराय सुजश भारी, हद सुरत मुद्रा प्यारी *॥ १ ॥
खाचरोद उजीण नोलाई, रतलाम भाबू आया ही ।
धर्म चरचा तणी अधिकाई, दीया जीतरा डंका वजाई ॥ २ ॥
ऋषराय जीत संग जाय, पटलावद में पिछाण ।
चौरासीयो वर्ष कियो चौमास, अधिको थयो धर्म नो उजास ॥ ३ ॥
षट मास कोदर तप ठायो, चढतौ जस कलस चढायो ।
तिहां करे घणो उपगार, मुनि आया है देश मेवाड ॥ ४ ॥
पीच्यासीये चौमासो सुखकार, स्वामी किधो है श्री जी द्वार ।
छयासीय पाली जश छायो, रूढा रायचन्द ऋषरायो ॥ ५ ॥
जयनगर ना वहु नर नार, आया वंदन काज विचार ।
ताराचन्द लाला आदि ताय, जाणे मेल्यो मंड्यो अधिकाय ॥ ६ ॥
पछे थली देश में पधास्या, वहु जीवारा संसय निवारस्या ।
सरूप जीत आदि साथ जाणी, वहु साधविया पहिछाणी ॥ ७ ॥
शहर विदासर मांहे चोमासो, वर्ष सित्यासीये सुविमासो ।
जीत ने चुरू शहर भोलाया, सरूपचन्द ने रीणी पठायो ॥ ८ ॥
रतनगढ ई शहर ऋषरायो, और गामा श्रमणी ने करायो ।
सर्व गांमा में उपगार घणा, समझ्या तिहां नर नार ॥ ९ ॥
वर्ष सीत्यासीये सुखकार, हुवो धर्म उद्योत अपार ।
थया थली देश में थाट, चार तीर्थ तणा गह घाट ॥१०॥
अठ्यासीये वर्ष अवधार, चौमासो कीयो श्रीजीदुवारा ।
नव्यासीये उदेपुर तास जीत, कियो दिली में चौमासा ॥११॥
चौमासो उतरियां विचार, शहर दिली सुं कीयो विहार ।
जैपुर होय मेवाड़ में आया, रावलीयां पूज दर्शण पाया ॥१२॥
पछे जीत साथ सुविचारी, गुजरात तणी मन धारी ।
इडर होय अहमदावाद, आया नीवडी धर अहलाद ॥ १३ ॥

---

* यह आँकड़ो प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

धांगरूरे हो कछ में आया, तिहां जीव घणा समझाया।
मांडवी मंदरे वैले जाण, स्वामी दर्शण दिया सु विहाण ॥१४॥
वाव होय पाली चौमास, वर्ष नेउआणो सु विमास।
जीत ने वालोतरे भोलायो, इसडा उदमी पूज्य ऋषरायो ॥ १५ ॥
नवमी ढाल मांहे ऋषरायो, कियो धर्म उद्योत सवायो।
थली मालव कच्छ गुजरात, वारू धर्म फेलायो विख्यात ॥१६॥

●

ढाल : १०

: दुहा :

एक चौमासो पूज्य जी, गोघुंदे गुणकार।
समत अठारे एकाणवै, कियो घणो उपगार ॥ १ ॥
वर्ष बाणवै जय नगर, त्रेणवै पाली ताम।
पछे मेवाड़ पधारिया, पूज्य परम गुण धाम ॥ २ ॥
पूज्य तणी आज्ञा थकी, थली देश ऋष जीत।
विचरे ऋष राय सू, तन मन अधिकी प्रीत ॥ ३ ॥
श्रीजीदुवारे स्वाम जी, आया आषाढ मास।
वारू करे विचारणा, सांभलजो सु विलास ॥ ४ ॥

ढाल

[आवत मोरी गलियन में गिरधारी—ए देशी]

परम दृष्टि करी जीत नें परख्यो, अधिक ए मुझ आज्ञाकारी।
पद युवराज समापूं इण नें २, पूज्य इसी मन धारी ॥
गावत ऋषराय तणा गुण भारी।
ज्यांरी सुरत मुद्रा प्यारी, गावत ऋषराय तणा गुण भारी ॥
एतो हस्तमुखी हितकारी, गावत ऋषराय तणा गुण भारी *॥ १ ॥
स्वाम सरूप थकी कर मिसलत, वर दिल उंडी विचारी।
स्व हस्त अक्षर लिख जय थाप्यो, पद युवराज प्रकारी ॥ २ ॥

* आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

स्व हस्त दिक्षा गुणंतरे दिधी, सिघाड़ो इक्यासी संभारी ।
पद युवराज त्रैणमै प्रगट, आप थाप्यो सुविचारी ॥ ३ ॥
जन्म प्रारंभीक कन्या ने पाली, मात पिता तिण वारी ।
युक्तभर्तार सूं जोग मिलावे, तिम शिष्य नें आचार्य धारी ॥ ४ ॥
दशवेकालीक नवमे आख्यो, ए दृष्टान्त सुविनीत शिष्य नें सुधारी ।
सूत्र भणाय अनुक्रमे स्थापे, पद आचार्य अधिकारी ॥ ५ ॥
एहीज रीत धारी ऋषराजी, स्वमुख दिक्षा उचारी ।
कुरब वधाय सिंघाड़ो करी ने, पद युवराज प्रकारी ॥ ६ ॥
आप मेवाड़ जीत अन्य देश में, पर पूठे स्वाम ए धारी ।
वर्ष त्रेणुवा नी आखी वारता, पूज्य परम उपगारी ॥ ७ ॥
वर्ष चोराणू ए कियो स्वाम जी, चौमासो श्रीजीदुवारी ।
जीत पाली चतुर मास करी ने, फलोदी गया तिह वारी ॥ ८ ॥
ते कागद देइ जय पास साधां नें, पूज्य मेल्या सुखकारी ।
पीचण गाम मिल्या पत्र वांची, जीत जाणो तिण वारी ॥ ९ ॥
जोधाणे पाली होय जय, पूज्य ना दर्शण किया श्रीजीदुवारी ।
इह अवसर में वृतांत थयो ते, सांभलजो सुविचारी ॥ १० ॥
पुर में गुलाव जी तीन साधां सूं, उलटा पड्या ऊंधीं धारी ।
श्रीजीदुवार थी पूज्य जय आवी, कीधो हे गण थी वारी ॥ ११ ॥
ओगुण अनेक बोलता साधां रा, मुख सूं कहिता अणाचारी ।
दो पड़ पीटा केई भाई वाई, ते पिण त्यांरी पक्षधारी ॥ १२ ॥
तीसरे दिवस पूज्य आज्ञा थी, जय समझाय लिया उदारी ।
जन वृन्द देखता पूज्य तणे पगां, आय पड्या तिण वारी ॥ १३ ॥
डंड चौड़े ले तीनुं गण आया, आश्चर्य हुआ नर नारी ।
गण नैं असाध परूप्या क्रोधवस, त्यारै पगा पड्या धारी ॥ १४ ॥
पक्षपात ज्यांरी करता केई ग्रहस्थी, ते पिण हुआ खुवारी ।
चिमतकार अधिक हुओ चौराणूए, पूज्य तणा पुन भारी ॥ १५ ॥
भाग्यवली ऋषराय उजागर, शासन महा सुखकारी ।
दसमी ढाल मांही विविध वारता, सांभलता चिमतकारी ॥ १६॥

●

ढाल : ११

दुहा

पिचाणवै वर्ष पूज्यजी, उदिरापुर अधिकार।
पाली प्रगट छन्नूए, चौमासो सुखकार ॥ १ ॥
गुमान जीरा गण थकी, चरण लियो पूज्य पास।
तात सहित ऋष भवानजी, छन्नूए वर्ष चौमास ॥ २ ॥
चौमासे भैला हूंता, नाथांजी सुविशाल।
श्रमणी एक थई तिहां, परम पूज्य पे न्हाल ॥ ३ ॥

ढाल

[भवि जीवा तुम जिन धर्म ओलखो ए—देशी]

समत अठारे सिताणवै, स्वामी कीधो हो जय नगर चौमास।
तिहा अष्ट मुनि गुण आगला, अधिको कियो हो जिण धर्म नो उजास ॥
धिन २ धिन पुज्य ऋषराय ने* ॥ १ ॥
वहू संत सत्या साथे स्वामजी, अठाणूवै हो कियो लाडणू चौमास।
कुंवारी कन्या मगनाजी दिक्षा ग्रही, मृगसर विद हो एकम तिथि तास ॥ २ ॥
ऋषराय जीत ग्यारा मुनिवरू, आठ आरज्या हो संग अधिक उदार।
निनाणवै विदासर चौमास में, संयम लीधो हो हरषु अकन कुवार ॥ ३ ॥
उगणीसै चौमासो जयनगर में, संत सत्या सूं हो स्वामी कियो चौमास।
तिहां स्त्री सहित हीरालालजी, आसोज मांहि हो संयम लीयो सुखवास ॥ ४ ॥
उगणीसै एकै श्रीजी दुवार में, कियो चौमासो हो संत सत्या सहित।
जैंचन्दजी भूमजी संयम लीयो, मृगसर विद हो एकम धर पीत ॥ ५ ॥
पछे विहार कर विचरत २ आवीया, श्रीजी दुवारे हो संत सत्यारे परिवार।
मात सहित चतुरभुज छोगजी, थली सू आवी हो लीधो संयम भार ॥ ६ ॥
उगणी से वीए पाली सहर में, संत सत्या सूं हो चौमासो सुखकार।
माधोपुर थी शीवचन्दजी आवी करी, त्रिया छांडी हो लीधो संयम भार ॥ ७ ॥
वहू संत सत्यां रा परवार सूं, जय नगरे हो तीये चौमासो उदार।
त्रिया सहित चिमनजी संयम लियो, मावोपुर थी हो आवी ने तिण वार ॥ ८ ॥
च्यार की साल श्रीजीदुवार में, स्वामी कीधो हो चौमासो सुखकार।
वहु संत सत्या सेवा करे, मन हरषे हो देखी पूज्य नो दिदार ॥ ९ ॥

उगणीसे पांचै पाली मभे, संत सती बहु हो करता स्वामीजी नी सेव ।
तिहां त्रिया सहित देवीचन्दजी, चरित्र लीधो हो अलगो करी अहमेव ॥ १० ॥
छकै लाडणूं चौमासो संत सत्या थकी, मृगसर विद हो एकम विहार किध ।
तिण हिज दिन सुजानगढ आयने, एक बाइ ने हो स्वामी चरित्र दिध ॥ ११ ॥
उगणीसे सातै जय नगर में, दस संता सूं हो चौमासो कियो स्वाम ।
पंदरे सत्या मुख आगले, च्यार तीर्थ हो कर रह्या गुण ग्राम ॥ १२ ॥
चरम चौमासो उदियापुर कियो, संत इग्यार हो तीन सतिया सहीत ।
रूडो सखर व्याख्यान आप वांचता, वारुं करता हो धर्म उद्योत वदीत ॥ १३ ॥
भिक्षु भारीमाल चलीयां पछे, तीस चौमासा हो स्वामी किया तंत सार ।
इकवीस चौमासा आगे कीया, सर्व चौमासा हो इकावन सुखकार ॥ १४ ॥
शैष काल उपगार कीयो घणो, वहू जीवाने हो दीयो संयम भार ।
देश व्रत धारी कीया दीपता, सुलभ बोधी हो किया वहु नरनार ॥ १५ ॥
खिम्यावान गंभीर धीर घणा, बहु श्रुति हो नीत निपुण पुन्यवान ।
धर्म उद्योत करण उद्यमी घणा, दिशा भारी हो भाग्यवली गुणखान ॥ १६ ॥
एकादशमी ढाल मांहि आखीया, सखर चौमासा हो स्वामीना श्रीकार ।
परम पूज्य गुण पुन्य पोरसो, जशधारी हो गुण गावे नरनार ॥ १७ ॥



ढाल : १२

दुहा

भिक्षु ऋष भेला किया, तीन चौमासा सार ।
अष्टादश भारीमाल पे, तीस पाछला धार ॥ १ ॥
मणिधारी मुनि मोटका, अधिक कियो उपगार ।
रायचन्द ऋषराय जी, शासन रा शिणगार ॥ २ ॥
सुन्दर प्रकृती सुहामणी, वारू अधिक विशाल ।
शासण शिरमणी सेहरा, स्वामी परम दयाल ॥ ३ ॥
सुखदाई ऋषराय जी, सुयश करे संसार ।
हस्तमुखी निरमल हिये, वयण सुद्ध सुविचार ॥ ४ ॥

ढाल

[सीता आवे रे धर राग—ए देशी]

परम दयाल कृपाल पूज्य जी, सुर गिरी जेम सधीर ।
शासन भार निभावा समर्थ, स्वाम अमोलक हीर ॥
रूडा भजले रे ऋषराय* ॥ १ ॥

शीतल चन्द सुहामणा स्वामी, वचनामृत वरसंत ।
दर्शण देख्या चित्त हुवे परसन, हीये हरप हुलसंत ॥ २ ॥

लघु वृद्धना जतन करण ने, गुवाल जेम गण नाथ ।
माफ करण ऋषराय मोटका, वारू जश विख्यात ॥ ३ ॥

अन्यमति स्वमति स्वाम नी, दैखी मुद्रा नैन ।
वाण सुद्धा सांभल चित विकसै, चित में पामे चैन ॥ ४ ॥

च्यार तीर्थ संतोषण स्वामी, नरम वचन निर्दोप ।
प्रवर जीभ में अमृत वस रह्यो, पूरो स्वाम नो पोष ॥ ५ ॥

मुख आगल वहु सेव करंता, जन २ जाणे ताम ।
पूज्य परम गुरु मुझ सूं राजी, अधिक कृपा अभिराम ॥ ६ ॥

चरचा करवा अधिक चातुरी, वर अवसर ना जाण ।
उत्पातिया बुद्धि अधिक धारणा, वारू करत वखाण ॥ ७ ॥

मधुर कण्ठ स्वर मधुर मनोहर, सखर देशना सार ।
देश प्रदेश विचरवा स्वामी, उद्यमी अधिक उदार ॥ ८ ॥

आवश्यक दशवैकालिक, अरु उत्तराध्येन उमंग ।
वृहतकल्प ए च्यार सूत्र, सीख्या मुनि सखर सुचंग ॥ ९ ॥

सूत्र बतीस सार रस सखरा, वाच्या वोहली वार ।
सार सिद्धंत तणो अति सखरो, परम पूज्य रे प्यार ॥ १० ॥

मरुधर मेवाड़ ढूंढाड़ मालवो, कच्छ गुजरात मझार ।
थली देश में थाट किया अति, कीयो घणो उपगार ॥ ११ ॥

बुद्धमान पीथल मोती दीपजी, कोदर शिवजी किया षटमास ।
वैं वार छमासी करी हीरजी, ऋषराय वरतारे विमास ॥ १२ ॥

निर्मल पंच इन्द्र रा वल पूरा, समर्थवान सुहाय ।
विचरत २ चर्म चौमासौ, उदपुर ऋषराय ॥ १३ ॥

ढाल वारमी माहि पूज्यना, आख्या गुण अधिकार ।
जंवु स्वामीजी सा इण आरे, कीयो अधिक उपगार ॥ १४ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अंत में है ।

ढाल : १३

दुहा

चर्म चौमासे स्वामजी, कीयो घणो उद्योत।
सूत्र प्रभाते सुणावता, घणा घट घाले जोत ॥ १ ॥
श्रावक मालव देशना, आया वंदना काज।
करे वीनती पूज्य सूं, दर्शण दो ऋषराज ॥ २ ॥
पूज्य मानली वीनती, मुनि नी रीत प्रमाण।
श्रावक सुण हरषित हुआ, पूज्य वचन अमिय समान ॥ ३ ॥
हिवे चौमासो उतस्यो, विहार कीयो तिणवार।
शक्ति अधिक स्वामी तणी, मन औछाह अपार ॥ ४ ॥
छेहला २ ग्राम फरसता, छेहला ई करता विहार।
किहां दर्शण दिया पूज्यजी, ते सुणजो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल

[मुझ मन मान्यो हो—ए देशी]

विहार कीयो उदपुर थकी होजी, वेदले होय तिवार।
विचरत २ आविया, कांई गोघुन्दा शहर मझार। महराज ॥
धिन २ धिन २ धिन २ पूज्य ऋषरायजी* ॥ १ ॥
नवै ग्राम दर्शण देइ करी, होजी पाछा आया ऋषराय।
दिवस सतावीस आसरे, रह्यां गोघुन्द मांय ॥ म० ॥ २ ॥
एक वाई ने तिहां स्वामजी, होजी दीधो संयम भार।
वर उपगार करी तदा, तिण हिज दिन कीयो विहार ॥ म० ॥ ३ ॥
विहार कर गोघुन्दा थकी, होजी रह्या सेंवयल रात।
वडी रावलीयां पधारीया, होजी दर्शण दिया स्वामीनाथ ॥ म० ॥ ४ ॥
वीवीन दिन रे आसरे, रह्या वडी रावलीया स्वाम।
विहारी करी ने पधारीया, कांई छोटी रावलीयां तांम ॥ म० ॥ ५ ॥
पांच रात्रि रह्या आसरे, होजी छोटी रावलीयां मझार।
नानसमे गांम पधारीया, कांई पूज्य परम दयाल ॥ म० ॥ ६ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

आलोवण चित उजले, होजी स्वामकरी सुविहाण।
सीक्षा विविध दीधी सही, कोई सखरी रीत सुजाण॥ म० ॥ ७॥
दश रात्रि रे आसरे, होजी नानसमे रह्या ताहि।
माहा विद बारस पाछा आविया, कांई छोटी रावलीयां मांही॥ म० ॥ ८॥
कदेहिक २ खास रो, होजी कारण हूंतो तन माहि।
पिण स्वाम साहसिक वेदन सझे, तिण सूं खातर न आणे काय॥ म० ॥ ९॥
माह विद चवदस रे दिन, होजी विहूं टंक में ऋषराय।
दिसा पधारया गांम बारणे, तन मांहे स्वास लखाय॥ म० ॥ १०॥
आथण रा उन्हो कीयो, होजी अल्प आहार स्वामीनाथ।
पछे संध्या पडिकमणो, कीयो बैठा थका विख्यात॥ म० ॥ ११॥
खेद विशेष शरीर में, होजी दीसे नही तिण वार।
आयु अचिंत्यो आवियो, कांई आश्चर्य ए अधिकार॥ म० ॥ १२॥
पडिकमणो कीधो सुखे, होजी परम पूज्य गुणधार।
स्वाम परिणाम सुवा तणा, कांई जाग्यां पूंजण तिण वार॥ म० ॥ १३॥
स्वाम कहे साधा भणी, होजी पूंजणी आपो मोय।
साधा सूंपी जब पूंजणी, कांई पूंजण काजे जोय॥ म० ॥ १४॥
पूंजणी लेई जयणा करी, होजी सूता पूज्य ऋषराय।
परसेवो तब बाधियो, कांई तिण अवसर रे मांय॥ म० ॥ १५॥
स्वास अधिक सूता बध्यो, होजी बैठा थया तिण वार।
आज पहिलां सूतां स्वास न चढ्यो, इम बोल्या वचन विचार॥ म० ॥ १६॥
संत पूछै बैठा सही, होजी बैठा छता ऋषराय।
परभव मांहे पागरया, कांई किंचित वेला मांही॥ म० ॥ १७॥
संवत उगणीसे आठे सही, होजी माह विद चवदस ताय।
आसरे महुर्त रात्रि गया छता, पोहता परभव मांहि॥ म० ॥ १८॥
धिग २ एह संसार नें, होजी काल सूं जोर न कोय।
ऋषरायजी सा महापुरुष था, सो परभव पौहता सोय॥ म० ॥ १९॥
खेद विशेष पाया नही, होजी पूरा पुन्याईवान।
किण ही ने खबर पडी नही, कांई आज अछे अवसान॥ म० ॥ २०॥
जघुकर्मी था जीवड़ा, होजी सुजश करे संसार।
वलभ तीर्थ च्यार नें, कांई याद करे नरनार॥ म० ॥ २१॥
मालव देश जायवा तणा, होजी मनरा हूंता परिणाम।
पिण आयु अचिंत्यो आवीयो, तिण सूं रही लोकां रे हाम॥ म० ॥ २२॥

साध सतंतर आसरे, होजी दिक्षा लीधी गण मांही ।
साधवीया एक सो चौतीस आसरे, कांई ऋषराय बरतारा मांही ॥ म० ॥ २३ ॥
सत सठ साधु रे आसरे, होजी श्रमणी एक सो तयालीस उनमान ।
सर्व दोय सो दस रे आसरे, मेली परभव पोहंता जान ॥ म० ॥ २४ ॥
काल गया ऋषरायजी, होजी जाण लीयो मुनिराय ।
शरीर ने वोसिराय ने, कांई काउसग दीधो ठाय ॥ म० ॥ २५ ॥
स्वाम मरण निसुणी करी, बहु नर नाख्या ने ताहि ।
करडी लागी अति घणी, कांई जाण रह्या जिनराय ॥ म० ॥ २६ ॥
नांनसमे वडी रावल्या, होजी नवो शहर गोघूंदे ताम ।
रातो रात समाचार साभली, आय गया तिण ठाम ॥ म० ॥ ॥ २७ ॥
तेरे खण्डी त्यारी करी, जाणक देव विमाण ।
लोक हजारा भेला थया, वहु ग्रामा रा आण ॥ म० ॥ २८ ॥
वाजित्र अनेक वजावता, महोछब करता विशेष ।
सोना रुपारा फूल उछालीया, संसार ना कर्तव्य देख ॥ म० ॥ २९ ॥
चंदण पीपल रा काठ में, दाग दीयो तिण वार ।
सैकडा रुपीया लगाविया, संसार ना व्यवहार ॥ म० ॥ ३० ॥
ए सगलाई सावद्य जाणज्यो, अरिहंत नी आज्ञा वार ।
न करणी त्यांरी अनुमोदना, धर्म पुन्य म जाणो लिगार ॥ म० ॥ ३१ ॥
तीन चौमासा भिक्षु साथे कीया, भारीमाल पे अठार ।
तीस चौमासा आचार्य पद मझै, सर्व चौमासा इकावन सार ॥ म० ॥ ३२ ॥
वारे चौमासा पाली शहर में, जैपुर सात श्रीकार ।
च्यार चौमासा उदपुर कीया, आठ कीया श्रीजी दुवार ॥ म० ॥ ३३ ॥
दो चौमासा लाडणू, दोय वीदासर देख ।
तीन चौमासा केलवे, दोय सिरियारी पेख ॥ म० ॥ ३४ ॥
पीसांगण पुर खेरवे, गोघून्दा आमेट विचार ।
माधोपुर ने वालोतरे, इक इक चौमासा सार ॥ म० ॥ ३५ ॥
वोरावड कांकड़ोली मझै, पटलावद पीपाड़ ।
इक इक चौमासो कियो, आख्या शहर इग्यार ॥ म० ॥ ३६ ॥
उगणीस शहरा मे कीया, इकावन चौमास ।
मरुधर मेवाड़ थली मालवो, ढूंढाड़ माहि विमास ॥ म० ॥ ३७ ॥
वर्ष इग्यारे आसरे, रह्या ग्रहस्थावास ।
संयम पाल्यो इकावन वर्ष आसरे, आचार्य पद रह्या तीस वर्ष ॥ म० ॥ ३८ ॥

सर्व आउखो बासठ वर्ष आसरे, पाल्यो पूज्य महाराज।
घणा जीवांने प्रतिबोधिया, कीधा आतम काज॥ म०॥ ३९॥
मो सूं उपगार कीयो घणो, विंदू तणो सिंधू कीध।
ते गुण हूं किम वीसरू, चरण ग्यान पद दीध॥ म०॥ ४०॥
ए विस्तार रच्यो ऋषरायनो, विरुध आयो हुवे कोय।
अरिहंत सिद्धनी साख सूं, 'मिच्छामि दुक्कड़ं मोय॥ म०॥ ४१॥
समत उगणीसे नव के समे, सावण विद वारस बुधवार।
जीत रच्या गुण ऋषरायना, जैपुर शहर मझार॥ म०॥ ४२॥



आचार्य जीतमलजी रो वखाण

प्रथम खण्ड

ढाल : १

दोहा

परम रमण शिव वरण वर, अर्हन सिद्ध उदार।
गणपति ने उवझाय मुनि, प्रणमुं हरष अपार ॥ १ ॥
गुण मणि रयण सुगणपति, भिक्षु सुबुद्धि भंडार।
भवदधि तरण सु भरत में, प्रगट्या पंचम आर ॥ २ ॥
उस्नाश्रु पिण भावतम, मेटण समरथ नांह।
तेह मिथ्या तम मेट गणि, कृत उद्योत अथाह ॥ ३ ॥
बोधी चरण दाता इह, अरक गरक गुण ग्यान।
ध्यान धरक तारक तिरक, आदिदेव सम जान ॥ ४ ॥
इम भिक्षु गुण अमित युत, तसु पट भारीमाल।
नृपति इंदु प्रणमी रचूं, जयगणि सुयश रसाल ॥ ५ ॥
जन्म्यां किहां किम चरन ग्रह्यं, पाम्या किम प्रतिबुद्ध।
विद्या विनय किम सीखिया, पद किम लह्यो प्रसिद्ध ॥ ६ ॥
विचरया किण २ देश में, किम तारया जन वृन्द।
सघन ग्रथा संकोच नें, कहुं संक्षेप संबंध ॥ ७ ॥

ढाल

[ज्यांरे सोभे केसरीया साड़ी साथे लिया फिरे रा—ए देशी]

जंबु द्विप भरत सुखकारो, तिहां मरुधर देश उदारो।
कलुजी के सुत प्यारो ॥
जन प्यारो सुगण सुखकारो, गुणी जन गुणकारो।
वर रोयट शहर मझारो, कलुजी के सुत प्यारो ॥
साह आईदान श्रीकारो, कलुजी के सुत प्यारो ॥
हद प्यारो कुल सिणगारो, गुणी जन गुणकारो ॥ क० १ ॥
एतो बड़े साजन ओस बंसो, प्रवर गोलछा जाति प्रशंसो। क०।
तसु अंगना अति बुद्धिवंती, वारू सतीय कलु सोहंती ॥ क० २ ॥

जिण दोय पुत्र धुर जाया, एतो सरूप भीम सुखदाया। क०।
हिवे तृतीय सुतन अवदातो, वारूं दिशावान सुविख्यातो ॥ क० ३ ॥
अष्टा दश सय साठै वासो, वारू मास आसोज विमासो। क०।
सित चउदश निशि सुखदाणी, कह्यूं नष्ट थी जन्म सुजाणी ॥ क० ४ ॥

छंद

तनु भुवन केतु तृतीय भुवने, शुक्र सूर्य गुरू शनि।
चतुर ग्रही ए जोग च्यारूं, अथ तुर्य भुवने सुण गुनी ॥
वुद्ध मंगल ग्रहे बिहुँ, फुन सप्तमें राहु सही।
जय धर्म भुवने चन्द्रमा फुन, अवर भुवने ग्रह नही ॥ १ ॥

ढाल

ज्यांरो जीतमल्ल अभिधानो, गुण निपन्न नाम सुजाणो। क०।
वय बालक पिण बुद्धिवंता, ज्यांरा सम दम गुण सोहंता ॥ क० ५ ॥
तिण रोयट शहर मझारो, समवसस्या भिक्षु गुणधारो। क०।
स्वामी दान दया दिपाया, वारू भिन्न भिन्न भेद बताया ॥ क० ६ ॥
अति समय न्याय ओलखाया, तिहां गोलेछा दिक समझाया। क०।
आईदान वहिन गुणवंती, पुज्य वयण सुणी पुन्यवंती ॥ क० ७ ॥
संवत अठारे वर्ष चमालो, धास्यूं चरण रयण सुविशालो। क०।
सती गण सिणगारो, ज्यांरो अजवु नाम उदारो ॥
यातो करती ग्यान उजारो ॥ क० ८ ॥
तास प्रसंग नें सुण उपदेशो, वारूं गोलेछा रे सुविशेषो। क०।
धर्म रुचि थई अधिक वदितं, अति आसता परम प्रतीतं ॥ क० ९ ॥
हुवा भण गुण अधिक प्रवीणा, वारू ग्यान क्रिया लहलीना। क०।
त्यांरो सिघाड़ो कियो भिक्षुस्वामी, विचरत आया रोयट गुणधामी ॥ क० १० ॥
हुवै वखाण वाणी अधिक हगामो, लोक करे अधिक गुण ग्रामो। क०।
कहे अजवुजी कलू नें वाणी, सुंणो कलुजी सुखदाणी ॥ क० ११ ॥
करो धर्मोद्यम चित लायो, नित सुणो वखाण सुखदायो। क०।
संत संगत थी गुण थावे, मन वंछित फल सुख पावे ॥ क० १२ ॥
तव कहे कलू गुणखाणी, तीजा सुतन जीत रे जाणी। क०।
नहीं उतरे धान गल तासो, बलि जीवन री नहीं आसो ॥ क० १३ ॥

तिण कारण थी सुविचारी, चित्त में चिंत अपारी । क० ।
सेवा पिण थोड़ी सजंतो, रहे आरत ध्यान अत्यन्तो ॥ क० १४ ॥
दियो सती उपदेश सवायो, जो तुज सुत नें कारण मिट जायो । क० ।
जीवतो रहे दिक्षा लिये तायो, तो थे मत दिज्यो अंतरायो ॥ क० १५ ॥
तुमे करो वरजण रा त्यागो, तव त्याग किया धर रागो । क० ।
ए अभिग्रह कियो तुरंत ही जानो, कारण मिट्यो खावण लागो धानो ॥ क० १६ ॥
हर्ष्या मात पिता सजन सवायो, मन इचरज अधिक सुपायो । क० ।
भली थई जीवतो रह्यो एहो, ते तो संता रा भाग्य करे हो ॥ क० १७ ॥
सरूप भीम नी करी सगाई, परणावणरी पितारे मन मांही । क० ।
तिण अवसर हुवो वरतंतो, तिको सांभल ज्यों धर खंतो ॥ क० १८ ॥
प्रथम ढालरे माह्यो आख्यो, जन्म धर्म जिम पायो । क० ।
हिवे चरण रयण लहे केमो, तिको सांभलज्यो धर प्रेमो ॥ क० १९ ॥

ढाल : २

दोहा

संवत अठारे तेसठे, 'मीर खां' लूट्यो ग्राम ।
धसका थी आइदानजी, परभव पहुंता ताम ॥ १ ॥
पिता परलोक गयां पछे, गाम धूंघारा मांहि ।
थइ सगाई जय तणी, वलि नानाणो ताहि ॥ २ ॥

ढाल

[आछे लाल री—देशी]

जय वालक वय पिण ताहि, मुनि वल्लभ लागे अथाय ।
आछे लाल, धर्म करण मनसा घणी ।
हलु कर्मी हुवे जे जीव, तसु गमतो लागे धर्म अतीव । आ० ।
हुवे कुल द्योतक जिम दिन मणी ॥ १ ॥
कोई पूछा करे किणवार, तुं लेसी संजम भार । आ० ।
जय कहे चरण लेस्यूं सही ।
जव श्रमण सत्यां कहे वाय, हिवड़ा तुं वालक है ताहि । आ० ।
नव वर्ष पहिलां तुं कल्पे नहीं ॥ २ ॥

वले संताने देखे किह वार, जय पूछा करे तिहवार। आ०।
अब हूं कल्पुं के नहीं।
इम पूछा करे बारंबार, मुनि देख्यां लहे हर्ष अपार। आ०।
बोले वयण चरण ने उमही ॥ ३ ॥
पल्ला में घाल बाटकी ताहि, बोले काका नें घर जाय। आ०।
देखो साधुपणो म्हें आदर्यो।
मुझ सुझतो अन्न वहिराय, इम कोड करे अधिकाय। आ०।
बालपणे चित्त व्रत धर्यो ॥ ४ ॥
विखो पड्यां थकां हिवे जोय, किता वर्ष पछे अवलोय। आ०।
सती कलुजी त्रिहुं सुत लेइ तदा।
रह्या कृष्णगढ़ में आय, विणज करे सरूप शशि ताय। आ०।
तिहां रहितां थकां हिवे एकदा ॥ ५ ॥
हिवे बिहुं भ्रात ने माय, कांई म्हेली कृष्णगढ़ मांय। आ०।
सरूप आयो रोयट में निज घरे।
रहि दिवस कितायक ताहि, पाछा आवत हरिगढ़ मांहि। आ०।
सासरिया आण दिराई तिण अवसरे ॥ ६ ॥
तुज ने परणायां बिन ताहि, म्है पाछा जावाद्यां नांहि। आ०।
प्रोढ़ी पुत्री घर में खटे नहीं।
सरूप कहै सुणो मुझ वाय, छे ज्यां मुझ बंधव माय। आ०।
रोग चालो तिण देश मांहि सही ॥ ७ ॥
तिण सुं हिवड़ां रह्यो नहिं जाय, पाछो आविनें करस्युं व्याह। आ०।
इम कही कामदार थकी मिल्या।
पछे कामदार सुं करने उपाय, पाछा आया हरिगढ़ मांय। आ०।
कर्म थोड़ा सो फंद मां सुं निकल्या ॥ ८ ॥
तिहां आया भारीमाल ऋषिराय, वलि हेम आदि सुखदाय। आ०।
चारूं सेवा करे चित्त उमही।
ए बीजी ढाल रे मांही, हरिगढ़ में गणिनो ताहि। आ०।
भाग्य प्रमाणे जोग मिल्यो सही ॥ ९ ॥

ढाल : ३

दोहा

दिवस कितायक तिहां रही, भारीमाल गणधार।
जयपुर सहर पधारिया, करवा भवि उद्धार॥ १॥
संवत अठारे गुणंतरे, गणपति कियो चौमास।
सेठ पदमसी ढढा तणी, जायगां में सुविमास॥ २॥
हिवे हरिगढ़ सुं हालिया, सुतन त्रिहुं मा संग।
जयपुर शहरे आविया, गणि दर्शन अधिक उमंग॥ ३॥
हरचंद लाला जौहरी, तसु जायगां में जाण।
रहे सेव गणपति तणी, करे हर्ष मन आण॥ ४॥

ढाल

[चेत चतुर नर कहे तोने सतगुरु—ए देशी]

भारीमाल गणपति वहु संपति, प्रात समय जन मनोहारी।
वहु हेतु युक्ति युत धर्म देशना, देत भविक जन हितकारी।
जग सिणगारी अतिसय धारी, गुरुमाल गणि नो गुणकारी।
जीत सरूप भीम कलूना, भाग्य थी जोग मिल्यो भारी॥ १॥
हरचन्दलाल आदि परषदा, सुणे वखाण जन श्रीकारी।
सुधारस वयण ग्रही अति विकसित, त्रि-सुत जननी जयकारी॥ ज० २॥
रात्रि समय ऋषिराय मनोहर, मधुर स्वरे जन सुखकारी।
रामचरित्र प्रमुख देशना, वर्षत जिम भाद्रव वारी॥ ज० ३॥
त्रि-बंधव मात करे गणि सेवा, मेवा ग्यान लिये भारी।
वर देवा सुमति गणीश्वर सूरा, अरु लेवा चित उद्यमधारी॥ ज० ४॥
जय प्रात वखाण सुणी अति समजे, वलि दिनरा सेव करे भारी।
भांगा विण पंचवीस बोलनो, सिख्या थोकड़ा श्रीकारी॥ ज० ५॥
तेरे द्वार महिला ग्यारे सिख्या, चरचा पिण वहु विध धारी।
फुन चारित्र लेवा अधिक हर्ष, गणि संगति सहजे गुणकारी॥ ज० ६॥
नव वर्षनी वय पिण अधिक चातुरी, वलि वुद्धि उतपात सु अधिकारी।
सम दम गुण अति सखर विलोकी, कहे हरचन्द लाला हितकारी॥ ज० ७॥

एह मुनीश्वर आछा होसी, जो चारित्र लिये चित्तधारी।
तब तो म्हे एहने नहीं वरजां, नहीं तो सुणो तुम्हे सुखकारी॥ ज० ८॥
ए छोटी बीबी सगी भतीजी, परणावां म्है घर प्यारी।
वादर सींघ ने गोदे बसाणी, सूंपा तेहनी ऋद्ध सारी॥ ज० ६॥
रोकड़ सहस्र पचास आसरे, वलि अवर वस्तु पिण अवधारी।
सूंपी एहने इह विध राखां, जो चरण लिये तो घणुं भारी॥ ज० १०॥
पिण उत्तम प्राणी गुणमणि खाणी, निसुणी वाणी सुविचारी।
भोग भयंकर जाणी दुखकर, सुखकर धर्म सु मन धारी॥ ज० ११॥
धन रमणी पर दृष्टि न दीधी, करण भवो दधी निस्तारी।
विरक्त विषय थी रक्त हुआ अति, उद्यम वरवा शिव नारी॥ ज० १२॥
तृतीय ढाल सुविशाल कही ए, महिए भाग्य दिशाधारी।
जयपुर आया ग्यान सुपाया, हिवे दिक्षा ले हितकारी॥ ज० १३॥

ढाल : ४

दोहा

चोमासो उतर्‍यां पछे, तनु कारण थी ताय।
फागण तांई अधिका रह्या, भारीमाल ऋषिराय॥ १॥
गुरु दर्शन करवा भणी, आया हेम आदि मुनिराय।
हीरांजी अजबू सती, आणी हर्ष सवाय॥ २॥
हस्तु कस्तु हरख घर, बिहुं भगनी सुविचार।
अधिक उमंग घर आविया, देखण गणि दिदार॥ ३॥

ढाल

[संभव साहिब समरीये—ए देशी]

जयपुर शहर विषै तदा, वारू श्रमण सत्यां ना अति श्रीकार क।
जवर मेला गह घट घणुं, निरखी प्रमोद लहे नर नार क।
चारू चरण महोछव महिमा सुणो॥ १॥
लोक समज्या घणा जिन धर्म में, केइ ले श्रावक व्रत सुचंग क।
जय चरण लेवा त्यारी थया, मन मांहे घरनें अधिक उमंग क॥ चा० २॥

सरूपचंद नें चरण लेवा तणो, भुवा अजबुजी दिये उपदेश क।
हेतु युक्ति दृष्टांत देइ करी, विविध प्रकार सती सुविशेष क॥ चा० ३॥
इतले हस्तु सती इम उचरे, सुजश भुवा ने दे सुविचार क।
देखे कांइ इण अवसरे, कर बंधो मन धर नें करार क॥ चा० ४॥
वारु वयण सुणी श्रमण्यां तणा, वधियो मन मांही अति वैराग क।
घर में रहिवारा त्याग किया तदा, गयो विषय थकी मन मूल थी भाग क॥ चा० ५॥
संयम लेवा सरूप त्यारी थया, जब पूज्य भारीमाल कहै इम वाय क।
पहिला चारित्र देनो सरूप ने, तब अनुमति मात दिवी हुलसाय क॥ चा० ६॥
किया चरण महोच्छव सरूप ना, हरचन्द लाला धर उचरंग क।
पीठी मंजन सिणगार कराय ने, वैरागी वनड़ो बनायो सुचंग क।
दिक्षा महोच्छव सरूप ना सांभलो॥ ७॥
वारू रथ में वेसाणी सरूप नें, आगे कोतल हय गज पल्टन पेख क।
विविध वाजित्र नगारा बाजते, लारे सुहव गाती गीत विशेष क॥ दि० ८॥
मझ बाजार थइ जन वृन्द सुं, मोहन बाड़ी आया चलाय क।
वड़ वृक्ष तले भारीमालजी, स्वहत्थ चरण दियो सुखदाय क॥ दि० ९॥
संवत अठारे गुणंतरे, पोह सुद नवमी दिन श्रीकार क।
चारू सामामिक चरण समापीयो, तब मोदक बांट्या जन मनोहार क॥ दि० १०॥
दिक्षा देइ ने मुनिवर वृन्द सुं, मुनिपति हे आया नगरी मांह क।
हिवे जीत चरण लिये युक्ति सूं, आणी हे मन अधिक उच्छाह क॥ चा० ११॥
जय ने वालक वय में जाण ने, पूज्य भारीमालजी करी सुविचार क।
ऋषिराय भणी तव मोकल्या, जय ने चरण देवा जयकार क॥ चा० १२॥
जिम सिज्झम्भव नें प्रतिवोधवा, जंबु स्वामी हे मेल्या प्रभव अणगार क।
तिम भारीमाल ऋषिराय नें, एहवो जोग स्वतः ही मिलीयो श्रीकार क॥ चा० १३॥
माह विद सातम सुभ दिने, घाट दरवजे पूर्व दिशि मांह क।
वड़ वृक्ष तले ऋषिरायजी, सामायिक चरण दियो सुखदाय क॥ चा० १४॥
अति दिशावान पुन्यवंत घणा, हस्त मुखी नृप इन्दु मुनिंद क।
ज्यांरे प्रथम शिष्य जय कारीया, हुवा हे जय अति सुखकंद क॥ चा० १५॥
स्वकर सिंच्या तरु तणी, जग में हे हुवे अति प्रतिपाल क।
तिम ऋषिराय अंकुर ए वाहियो, होसी आगल हे फल फूल विशाल क॥ चा० १६॥
सरूप जीत ने संयम देइ करी, ऋषि हेम भणी सूंप्या सुविचार क।
दिवस किते जयपुर थकी, मावोपुर नें करायो विहार क॥ चा० १७॥

सरूप जीत संजम आदस्यां पछे, भाइ भीम तणा पिण हुआ परिणाम क।
फागुण कृष्ण ग्यारस मां सहित ही, संजम दियो भारीमालजी स्वाम क ॥ चा० १८ ॥
मोहनबाड़ी में चरण महोछव हुवो, धर्म उद्योत सूं अधिक उदार क।
समणी अजबूजी ने सुंपीया, सती कलूजी अति सुखकार क ॥ चा० १९ ॥
चोथी ढाल चरण मोछव तणी, च्यारूं ई दिक्षा देइ गणिराज क।
विहार कियो जयनगर थी, तरण तिरण भव दधी ज्याज्फ क ॥ चा० २० ॥



ढाल : ५

दोहा

विचरत २ आविया, माधोपुर महाराज।
मिथ्या तिमिर मिटावता, सारत भविजन काज ॥ १ ॥
वूंदी कोटे विचर करि, सरूप जीत पिण संग।
माधोपुर में हेम मुनि, आया धरि उमंग ॥ २ ॥
दर्शन करी सु प्रसन्न थइ, धार्‌यो हेम चोमास।
इन्द्रगढ़ वड शहर में, करवा धर्म उजास ॥ ३ ॥
भीम भणी चिहुं मास थी, वड़ी दिक्षा वर दीध।
षट मास थी जय भणी, दीर्घ भीम इम कीध ॥ ४ ॥
भीम मुनि भारीमाल पे, माधोपुर चोमास।
जीत सरूप मुनि हेम पे, करता ग्यान अभ्यास ॥ ५ ॥

ढाल

[सुगणा साधजी हो मुनिवर मन चलियो तूं घेर—ए देशी]

इन्द्रगढ़ चोमास में हो मुनिवर, जय वर सरूप विचार।
संवत अठारे सित्तरे हो मुनिवर, धर्म मूर्त गुण धार क।
सुगणा सांभलो हो गुणिजन, जय वर सुयश विशाल ॥ १ ॥
तत्व ग्यान तप जप तणो हो मु०, उद्यम करत उदार।
विनय विवेक विचार में हो मु०, सावधान सुखकार क ॥ सु० २ ॥
समित गुप्ति गुण शोभता हो मु०, सित जिम मोक्तिक माल।
जाणक महाव्रत निर्मला हो मु०, गंगोदक सुविशाल क ॥ सु० ३ ॥

लघु वय पिण लज्जा घणी हो मु०, चाले माधुरी चाल।
पवर गजेन्द्र तणी परे हो मु०, धुन ईर्या सुविशाल क ॥ सु० ४ ॥
ग्यान ध्यान उद्यम घणो हो मु०, चरचा करण सूं चूंप।
वयण मधुर वर उच्चरे हो मु०, जाण अमीरस कूप क ॥ सु० ५ ॥
परिसह सैन्य ने जीतवा हो मु०, गज जिम अधिक सौडीर।
बहु वयण सुणी नहीं उच्छलै हो मु०, सुर गिरि जेम सधीर क ॥ सु० ६ ॥
गुण अति अनघ सु जय तणा हो गु०, कहां लग कहूं सुविचार।
भुजा करी किम पामीये हो मु०, क्षीरोदधी जल पार क ॥ सु० ७ ॥
इन्द्रगढ़ थी विहार करी हो मु०, हेम जीत गुण रास।
गणपति आग्या थी कियो हो मु०, पाली शहर चोमास ॥ सु० ८ ॥
भीम रू जीत भाई बेहुं हो मु०, हेम ऋषीश्वर पास।
द्वितीय चोमास इकोतरे हो मु०, करता समय अभ्यास क ॥ सु० ९ ॥
भारीमाल गणपति कनें हो मु०, सरुप ऋषि सुखकार।
द्वितीय चोमास बोरावड़े हो मु०, विनयवंत सुविचार क ॥ सु० १० ॥
दशवैकालिक सीखिया हो मु०, वलि उत्तराध्ययन सिखंत।
वर अक्षर सखर सुवांचणी हो मु०, मृदु मार्दव गुणवंत क ॥ सु० ११ ॥
अति भक्ति करी रिझाविया हो मु०, भारीमाल महाराज।
कह्यो हेम समीप भेला रहो हो मु०, त्रिहुं बंधव सुख साहज क ॥ सु० १२ ॥
भिक्षु नगर कंटालिये हो मु०, बोहितरे चोमास।
तृतीय वर्ष त्रिहुं बंधवा हो मु०, रहे हेम समीप हुलास क ॥ सु० १३ ॥
शहर सिरियारी में सही हो मु०, हेमराज ऋषि पास।
त्रिहुं बंधु वर्ष तिमंतरे हो मु०, करता ग्यान विलास क ॥ सु० १४ ॥
चारू वर्ष चिमंतरे हो मु०, गोगुन्दे गुणकार।
पवर चोमासो पंचमो हो मु०, हेम समीप उदार क ॥ सु० १५ ॥
त्रिहुं बंधव भेला तिहां हो मु०, जीत सरूप सुजोय।
द्वितीय श्रुतस्कंध धुर अंगनो हो मु०, भण्या हर्ष मन होय क ॥ सु० १६ ॥
पंचमी ढाल विषै कह्या हो मु०, पवर चोमासा पंच।
हिवे आगल भवियण सुणो हो गु०, सखर सम्बंध सु संच क ॥ सु० १७ ॥

ढाल : ६

दोहा

पाली वर्ष पिचन्तरे, हेम संग त्रिहुं वंधु।
चोमासा में चूंप सूं, तप करता गुण सिन्धु ॥ १ ॥
वास बयाली जय किया, वलि सरूप सुविचार।
उपवास बयाली आसरे, कीधा हर्ष अपार ॥ २ ॥
दिवस तयासी नो कियो, वड़ पीथल तप घोर।
लघु पीथल छतीस को, काटण कर्म कठोर ॥ ३ ॥

ढाल

[दलाली लालन की—ए देशी]

पाली शहर में जय कियो रे, अभिग्रह एह उदार।
दर्शण कियां विण पूज्यनां रे, पंच विगय परिहार।
सुविनीत शिष्य सेव करे।
ज्यांरे सुगुरु दर्शण सूं प्रेम, अभिग्रह विविध धरे ॥ १ ॥
एह अभिग्रह धार्‍यां पछे रे, तेरे मास उन्मान।
गणपति दर्शन नां हुवा रे, ते जोग सुणो सावधान ॥ सु० २ ॥
पाली सूं विहार करी मुनि रे, विचरत २ जेह।
सुरगढ़ शहर समोसर्‍या रे, हेम जीत गुण गेह।
ज्यांरे परम गुरू सूं प्रेम ॥ सु० ३ ॥
दिशा जइ पाछा आवतां रे, अचाणचकी अवलोय।
चोट लगाई गउ तदा रे, गोड़ा रो गटो टल्यो जोय।
सुगण शिष्य सेव सिरे, आणी निर्जरा हिये दृष्टि।
व्यावच विविध करे ॥ सु० ४ ॥
कांबला झोली में घाल नें रे, लाया शहर मझार।
मुनिवर अति उद्यम कियो रे, वैद्य वतायो उपचार ॥ सु० ५ ॥
सरूप शशी पग झाल नें रे, गटो चढ़ायो गुणकार।
अति पीड़ा थयां करुणा करी रे, पग छोड़ दियो तिणवार ॥ सु० ६ ॥
किंचित कसर तिण सूं रही रे, सुरगढ़ हुवो चोमास।
नव मास आसरे रहिणो हुवो रे, थयो अति धर्म उज्मास ॥ सु० ७ ॥

वर्ष छिह्नंतरे हेमनो रे, नव श्रमण संग चौमास।
जय आदि त्रिहुं बंधव तदा रे, करे तप ग्यान प्रकाश॥ सु० ८॥
इक सो षट दिन आछ नो रे, पीथल तप सुविचार।
वलि सुधारस बरषती रे, हेम वाणी सजल जलधार॥ सु० ९॥
सुण वैराग्य पाया घणा रे, एक साथे सुविचार।
त्याग किया घर में रहिवा तणा रे, पंच जणा धर प्यार।
सुगण जन सेव करे।
एतो सुण २ मुनि वच कान, हृदय घट ग्यान भरे॥ सु० १०॥
ए बात शहर में विस्तरी रे, तब लागु हुआ बहु लोग।
कटुक वचन ना मुनि तदा रे, परिसह सह्या शुभ योग॥ सु० ११॥
द्वेषी लोकां रावजी कने रे, किधी विविध प्रकार।
पिण रावजी कह्यो लोकां भणी रे, हुंतो नही बरजूं लिगार॥ सु० १२॥
वलि सांधा भणी कहिवावियो रे, आप खुशी रहिजो मन मांही।
दोय माला अधिकी फेरज्यो रे, म्हारी तरफ सूं ताहि॥ सु० १३॥
न्यातीला ना परिसह थकी रे, तीन सेंठा रह्या ताम।
शिवजी रत्न कर्मचन्द नां रे, रह्या अति दृढ़ परिणाम।
सुगण जन सुमति धरे।
ज्यांरे मुक्ति जावण रो कोड, चरण तप विविध वरे॥ सु० १४॥
मृगसर में दिक्षा त्रिहुं रे, शिवजी रत्न विहुं साथ।
मोहछव कराया रावजी रे, वे वे रुपया दिया हाथ॥ सु० १५॥
कह्यू रूपा नाणा री बोहिणी रे, मंगलीक छै ताय।
म्हांरी तरफ सूं वांटज्यो थे, पतासी मोहछब माय॥ सु० १६॥
तात भ्रात त्रिया तजी रे, खीवेसरो रत्नचन्द।
माद्रेचा शिव व्रत ग्रह्यू रे, तजि त्रिया नो फंद॥ सु० १७॥
पछे तिण हिज दिन संजम लियो रे, कर्मचन्द सुकुमार।
जननी तात भगनि तजि रे, काको दादो परिवार॥ सु० १८॥
ए तीनू नें दिक्षा देई करी रे, द्वादश मुनि सुजाण।
हेम जीत आदि भारीमाल नां, दर्शन किया गंगापुर आण॥ सु० १९॥
त्याग इक विगय उपरंत नु रे, रह्यो तेरे मास उन्मान।
दर्शण थया अभिग्रह फल्यो रे, लघु वय दृढ़ मन जाण।
सुगण जय सेव सिरे।
ज्यां रे पूज्य दर्शन रो प्रेम, अभिग्रह विविध धरे॥ सु० २०॥

छठी ढाल विषै कह्यो रे, अभिग्रह नों अधिकार।
बलि देवगढ़ में मुनि रे, अधिक कियो उपगार ॥ सु० २१ ॥

●

ढाल : ७

: दोहा :

भारीमाल गणपति तदा, सरूप तणो सुखकार।
सिंघाड़ो कीधो सही, विनयवंत सुविचार ॥ १ ॥
सरूप सहित मुनि पंच दे, आणी अधिक हुलास।
अति आग्रह करी भोलावियो, पुर में प्रगट चोमास ॥ २ ॥
हेम भणी उदयापुरे, चतुर्मास सुविचार।
जय आदि मुनि अष्ट संग, करावियो गुणकार ॥ ३ ॥

ढाल

[ए तो जिन मारग रा नायक—ए देशी]

वर्ष सितंतरे सखर चोमासो, उदयापुर शहर मझारो।
वखाण वाणी अति जबर जमावत, पावत श्रुत जल प्यारो ॥
ए तो हेमराज मुनिराया रे, भविक जीव मन भाया।
ज्यांरे संग जीत सुखदाया रे, जाझा झंड जमाया ॥ १ ॥
वर्द्धमान तपसी तप तपियो, धोवण उदक आगार।
एक सौ ने चिहु दिवस तणो हद, कीधो अधिक उदार ॥ ए० ॥ २ ॥
धर्म उद्योत हुवो अति सखरो, असवारी मांही अमंदे।
राणा भीमसिंघ जी हेम आदि ने, वार २ करे नमस्कार आनंदे ॥ ए० ॥ ३ ॥
असवारी नो असक घणुं जसु, मुनि देखी हर्ष अपारो ॥
इहां भला पधार्या भला पधार्या, इम कहे वारम्वारो ॥ ए० ॥ ४ ॥
अति उपगार करी गुणवंता, हेम जीत मुनिराया।
उदयापुर सूं विहार करी नें, शहर गोगुन्दे आया ॥ ए० ॥ ५ ॥
वाघजी सुत वाघ ज्यूं सूरो, सतीदास सुविचारी।
एक वनोलो जीम व्याह नो, हुवो संयम ने त्यारी ॥ ए० ॥ ६ ॥

सोले वर्ष नी वय अति सुन्दर, बहु ऋद्ध जात कोठारी ।
वसंत पंचमी घणे हंगामें, चरण लियो सुखकारी ॥ ए० ॥ ७ ॥
सतीदास जी नें संजम नो, जय साहज्य दियो अति भारी ।
वालपणा थी प्रीत जीत थी, पय जल जेम उदारी ॥ ए० ॥ ८ ॥
बड़ा गाम सूं विहार करी नें, हेम जीत आदि गुण रासो ।
राजनगर गणि भारीमाल रा, दर्शन किया हुलासो ॥ ए० ॥ ९ ॥
भारीमाल तनु कारण जाणी, बहु संत मिल्या तिहां आणी ।
गणपति नी मरजी ओलख, ऋषि हेम वदे इम वाणी ॥ ए० ॥ १० ॥
प्रगट पाट ऋषिराय शशी ने, महर करी नें दीजे ।
म्हारी तरफ नुं आप मन मांही, किंचित फिकर न कीजे ॥ ए० ॥ ११ ॥
डावी जीमणी आंख दोनुं में, नहिं है फरक लिगारो ।
तिम आप तणे ऋषिराय अने हूं, सरीखा बेहुं सुविचारो ॥ ए० ॥ १२ ॥
हेम वयण वर रयण समा सुण, गणपति हर्ष सुपाया ।
परम विनीत रू नीतवंद हद, जाण्या हेम सवाया ॥ ए० ॥ १३ ॥
तव पद युवराज दियो ऋषिराय ने, हेम भणी सु विमासो ।
नव संता स्युं स्वाम भोलायो, शहर आमेट चोमासो ॥ ए० ॥ १४ ॥
अठहतरे वर्ष हेम आंवापुरी, जीत संग सुविलासो ।
आछ आगारे पृथ्वीराज तप, निणाणु सु प्रकाशो ॥ ए० ॥ १५ ॥
विहार करी नें राजनगर में, दर्शन पूज्य नां कीधा ।
सप्तमी ढाले दोय चोमासा, दाख्या पवर प्रसिद्धा ॥ ए० ॥ १६ ॥

●

ढाल : ८

सोरठा

भारीमाल ऋषिराय रे, हेम जीत प्रमुख भणी ।
विहार करायो ताहि रे, करो उपगार इण देश में ॥ १ ॥
पछे महाविद अष्टम जोय रे, राजनगर भारीमाल गणि ।
आराधन अवोलय रे, करि निज कारज साझिया ॥ २ ॥
जव पोहर तणे उनमान रे, अणसण सखर सू आवियो ।
ऋषिराय करायो जान रे, वलि सेवा कीधी विविद पर ॥ ३ ॥

यतनी

माघ बिद नवमी श्रीकार, राजनगर शहर मझार।
ऋषिराय विराज्या पाट, हुआ च्यार तीर्थ गह घाट ॥ १ ॥
बांरू दिशावन पुन्यवान, तृतीय पाट जंवू सम जाण।
मुनि लघु वृद्ध छोड़ घमंड, सहु आण आरावे अखंड ॥ २ ॥

ढाल

[कपी रे प्रिया संदेसो कहे—ए देशी]

वर्ष गुण्यासीये हेम ऋषि संग, जय आदि मुनि गुणरास।
ऋषिराय तणी आणा करी रे, कीयो पीपाड़ शहर चोमास ॥
धन्य गुणी संत जय मतिवंत ॥
मतिवंत तंत सु तिरण तारण, भव उदधि अतिहि मंहत ॥ १ ॥
अहो निशि कर तसु अधिक उद्यम, समय अर्थ सुविचार।
वखाण वाणी अरू करण चरचा, हुवा अधिक हुशियार ॥ ध० ॥ २ ॥
असीये वर्ष चउमास पाली, जय हेम मुनिवर संग।
ग्यान क्रिया अति करत उत्तम, विमल जल जिम गंग ॥ ध० ॥ ३ ॥
हेम संग चोमास जयपुर, इक्यासीए अवधार।
तिहां सीख्या विद्या पवर व्याकरण, धुर वृति अर्थ विचार ॥ ध० ॥ ४ ॥
सीखतो व्याकरण एक श्रावक, सूत्र अर्थ साधनका सार।
ते साधनका संभलाता जय, सुण २ लीवी धार ॥ ध० ॥ ५ ॥
धुर वृति कंठ कर अर्थ धार्‍या, देव शब्दादि पत्र लिखेह।
तेह विषै सूत्र लागे तेह लीखीनें, आपरे वश्य करेह ॥
एसी जय वुद्धि उत्पात अत्यंत, अत्यंत बुद्धि वलि पुन्य अतिशय ॥
धारण शक्ति महंत ॥ ध० ॥ ६ ॥
इम जयपुर में कियो ज्ञान उद्यम, वलि जप तप विविध प्रकार।
वलि घणा जीवा नें प्रतिवोध नें रे, कियो तिहां थी विहार ॥
एसा ऋषि जीत जग जयकार ॥ ध० ॥ ७ ॥
ए द्वादश चोमासा हेम पासे, जय किया सुविचार।
वहु समय धारण अति हि खपकर, हेम कराइ विविध प्रकार ॥ ध० ॥ ८ ॥
वलि व्याख्यान हेतु युक्ति वहुविध, कला अनेक उदार।
चरचा करण री चातुरी अति, सीखाई सुविचार ॥ ध० ॥ ९ ॥

विचरत २ पोष मासे, विद तेरस सुविचार ।
पाली शहर में पूज्यनां रे, कीया दर्शन गुणकार ॥ ध० ॥ १० ॥
विनय विवेक गुण बहु विलोकी, वली विद्या बुद्धि विचार ।
अति धीर वीर गंभीर देखी, राय शशी गणधार ॥ ध० ॥ ११ ॥
कियो सिंघाड़ो जय तणो रे, पोह सित तीज उदार ।
आप सहित चिहुं संत सखरा, सूंप्या गणि श्रीकार ॥ ध० ॥ १२ ॥
ए अष्टमी ढाल सुविशाल मुनि जय, रह्या हेम ऋषि पे हुलास ।
सणो हिवे स्वयमेव मुनिवर, जे करे धर्म उजास ॥ ध० ॥ १३ ॥

कलश

धुर खंड में कह्यो जन्म जय वलि, प्रबंध दिक्षा नो कह्यो ।
संवेग रस गलतान थइ, जिह रीत संजम संग्रह्यो ॥
विविध विद्या विनय विवेक, सोवन ऋषि नें संग ही ।
समय रहस्य व्याख्यान प्रमुख बहु, उमंग धर सीख्या सही ॥ १ ॥

इति प्रथम खंड सम्पूर्णम्

द्वितीय खण्ड

ढाल : ६

दोहा

सिंघाड़ो करि जय तणो, तिणहिज दिन सुविचार ।
परम कृपा करी पूज्य जी, तुरत करायो विहार ॥ १ ॥
चिहुँ ठाणे चित चूंप सूं, तीज तणो दिन तंत ।
खेरकारी वर खेरवे, शहर रह्या जय संत ॥ २ ॥
अनुक्रमें विचरत आविया, मेद पाट मनोहार ।
तिहां उपगार कियो तिको, श्रवण करो नर नार ॥ ३ ॥

ढाल

[राणी भावे सुण रे सुडा—ए देशी]

स्वामी सुरगढ़ शहर में आया, तिहां जीव घणा समझाया ।
पछे आमेट शहर उमाह्या रे मुनि प्यारा, जय भाग्य दशा अति भारी ॥ १ ॥
आया आमेट ने आगरिये, मुनि वायक एह उच्चरिये ।
भव उदधी तुरत ही तरिये रे मु० ॥ ज० २ ॥
लावे धर्म लाभ अति लीधो, पछे राजनगर सुप्रसिद्धो ।
कांकरोली उपगार बहु कीधो रे मु० ॥ ज० ३ ॥
पछे श्रीजीद्वार मझारो, दर्शण दीधा हरष अपारो ।
तिण अवसर देश मेवाड़ो रे मु० ॥ ज० ४ ॥
तव ग्राम २ में सुविचारी, परषदा रा झंड अति भारी ।
लागे जय मुद्रा जन प्यारी रे मु० ॥ ज० ५ ॥
चारू व्याख्यान विविध सुणावे, वर वचनामृत बरसावे ।
भवि हृदय कमल सुलसावे रे मु० ॥ ज० ६ ॥
किहां गाम ना ठाकुर आवे, किहां हाकिम चित हुलसावे ।
सुण वाणी जय गुण गावे रे मु० ॥ ज० ७ ॥
किहां कचपड़ा स उमावे, वाणी सुण प्रमोद सु पावे ।
जिम घन वर्षा पृथ्वी हरी थावे रे मु० ॥ ज० ८ ॥

वलि डहडायमान ह्वै भारी, तिम जय वाण हिय में धारी।
अति प्रफुल्ल थइ धर्म क्यारी रे मु०॥ ज० ९॥
तिण वर्ष मेवाड़ रे मांयो, देख्यो लोकां रे हर्ष सवायो।
जय आश्चर्य अधिक सुपायो रे मु०॥ ज० १०॥
हिवे श्रीजीदुवारे सुखदायो, नंदराम जती कनें आयो।
करी धर्म चरचा चित्त लायो रे मु०॥ ज० ११॥
कोइ संदेहो रो प्रश्न पूछ्यो सारो, उत्तर सुण लह्यो हर्ष अपारो।
अर्ज करी उपाश्रे पधारो रे मु०॥ ज० १२॥
तब तिहां गया जय जशधारी, बहु सूत्र मेल्या मुंह आगे भारी।
कह्यो ग्याता री पड़त विण धारी रे मु०॥ ज० १३॥
तुझ नें चाहिजे सो लेवो, तब पाठ की भगोती ततखेवो।
वलि तसु वृति ग्रही स्वमेवो रे मु०॥ ज० १४॥
लियो पाठ को अनुयोगद्वार, वलि दीपिका सहित तिवार।
ग्रही उत्तराध्ययन उदार रे मु०॥ ज० १५॥
पछे उदयापुर में पउधार्या, देशना दे भविक बहु त्यार्या।
केकाने देई सुमति सुधार्या रे मु०॥ ज० १६॥
तिहां केशरजी भंडारी नां धारी, जाच्या सुयगडांग दीपिका नी सारी।
कर्म ग्रंथ सटीक ग्रह्यु भारी रे मु०॥ ज० १७॥
तिहां थी शहर गोगुन्दे आया, तिण समे हेम मुनि राया।
सुण्या सादरीशहर सुहाया रे मु०॥ ज० १८॥
जब गोगुन्दा रा केई भाया, विनती कर हेम ने ल्याया।
भाणपुर रे मारग होय आया रे मु०॥ ज० १९॥
पांच कोस आसरे ताहि, जय स्हामा गया हुलसाई।
हेम संग आया शहर मांहि रे मु०॥ ज० २०॥
एक मास तणे उनमान, रह्या हेम संग सुविधान।
शहर गोगुन्दे गुणखान रे मु०॥ ज० २१॥
नवमी ढाल सिंघाड़ो धार, सेखे काल करी उपगार।
हेम दर्शण किया श्रीकार रे मु०॥ ज० २२॥

ढाल : १०

दोहा

पछे विहार कर आविया, श्रीजीदुवारे शहर।
सरूप शशि तिण अवसरे, पंच ठाणें गुण गहर ॥ १ ॥
चोमासो उज्जैण करि, तीन दिक्षा दे ताम।
पूंजो हिन्दुजी भणी, वलि धनजी नें गुणधाम ॥ २ ॥
कोदरजी नें दिक्षा भणी, त्यारी करी तिवार।
कागद आज्ञा रो ले करी, सरूप शशि गुणधार ॥ ३ ॥
वैशाख सुद पूनम लगे, जाणी जेज जिवार।
आठ ठाणें मालव थकी, विहार करी सुविचार ॥ ४ ॥
देश मेवाड़ में आविया, श्रीजीद्वारे मांह।
वेहुं वंधव भेला थया, चित में अति उच्छाह ॥ ५ ॥

ढाल

[पायलवाली पदमणी कांई—ए देशी]

सरूपचन्द जय आदि दे कांई, द्वादश मुनि गुणधार।
विचरत २ आविया कांई, मरुधर देश मझार।
मुनि गुणधारी जी, शासन सिणगारी जी।
होजी एतो सरूप जीत सुखकार, वंधव विहुं जोड़ी जी।
धर्म रथ धोरी जी ॥ १ ॥
तिहां परम पूज्य दर्शन किया कांई, हुवो अधिक आनन्द।
पछे भिक्षु नगर कंटालिये कांई, समवसर्या नृपचंद।
गणि गुणधारी जी, दिशा अति भारी जी।
होजी ज्यांरा अतिशय अधिक उदार, शिष्य सुखकारी जी।
शासन सिणगारी जी ॥ २ ॥
जय सरूप आदि सेवा करे कांई, तिहां दिक्षा री दिल धार।
वैशाखी पूनम दिन आवियो कांई, कोदर जी सुविचार ॥ ग० ३ ॥
जेठ वदि वीज कोदर भणी कांई, दिक्षा दी ऋषिराय।
तिहां कर्यो सिघाड़ो भीम नुं कांई, तीन संता सूं ताहि ॥ ग० ४ ॥

भीम अने कोदर भला कांई, भवान मेसरी जात।
ए तीनूं मांढा मझे कांई, कस्यो चोमास विख्यात ॥ ग० ५ ॥
चिहुं ठाणे ऋषि जीत नो, करायो उदयापुर चोमास।
संग वर्द्धमान तपसी भलो, वृद्ध जीव हिन्दु गुण रास।
मुनि मतिवंता जी, पुन्य दीपंता जी।
होजी ज्यांरो जीत नाम जयकार, जबर जशवंता जी।
इन्द्रिय मन दंता जी ॥ ग० ६ ॥
संवत अठारे बयासीए, धुर उदयापुर चोमास।
कियो ग्यान ध्यान तप जप करीजी कांई, अधिको धर्म उजास।
मुनि जशधारी जी, कीर्त्त जग भारी जी।
होजी जय पुन्य दिशा अधिकाय, सुगुण सुखकारी जी।
मुद्रा हद प्यारी जी ॥ ग० ७ ॥
तिण चोमासा पहिलां तिहां कांई, वर्ष छियंतरे जोय।
सेखे काल थइ जे वारता, कहुं प्रसंग इहां अवलोय ॥ ग० ८ ॥
भंडारी श्रावक पको कांई, केशर जी सुविचार।
तास प्रसंग थी समझिया, राणा भीमसिंघ सुखकार ॥ ग० ९ ॥
कांकरोली भारीमाल नें कांई, विनती अधिक विशाल।
परवानो निज हाथ सूं, लिख्यो छिहंतरे वर्ष नहाल ॥ ग० १० ॥
भारीमल गणपति तदा कांई, निज वय वृद्ध विचार।
शक्ति थोड़ी तिण कारणे कांई, पोते न कियो विहार ॥ ग० ११ ॥
मेल्या ऋषिराय हेम जय प्रमुख ही कांई, तेरे संत श्रीकार।
उदियापुरे पधारिया कांई, ऋषिराय सुगण सिणगार ॥ ग० १२ ॥
तिहां राणा भीमसिंघ जी कांई, असवारी में जोय।
हेम ऋषिराय नें देखने, हुलसित चित अति होय ॥ ग० १३ ॥
दोनूं हाथां सूं लटका करी कांई, वंदणा करी तिहवार।
इहां भला पधास्या वलि, कहे शब्द श्रवन सुखकार ॥ ग० १४ ॥
भीमसिंघ जी असवारी मझे कांई, जिहां थी वंदणा करता जोय।
पिण जवानसिंघ जी पाटवी कांई, कुंवर न करता कोय ॥ ग० १५ ॥
जय चोमास बयासिये कांई, असवारी रे मांही।
जवानसिंघ जी पिण वंदना कांई, करवा लागा ताही ॥ ग० १६ ॥
इक दिन जवर असवारी थई कांई, राणा भीमसिंघ जिह वार।
ऋषि जीत भणी वंदणा करी कांई, कहे वचन सुविचार ॥ ग० १७ ॥

ए सर्व पवन की लहर है कांई, ए शब्द सुणी श्रीकार।
जय मुनि जाब दिया जदा, उपदेश रूप अवधार ॥ ग० १८ ॥
कोइ कारण जोग दिन केतले कांई, असवारी न हुई ताय।
पछे बहु दिवसे असवारी करी, सूर्य्य पोल मग जाय ॥ ग० १९ ॥
ते असवारी तिहां थामने कांई, थोड़ा पावड़ां जोय।
अश्व की जाति जय दिशि लायने, तब वंदे हुलसित होय ॥ ग० २० ॥
वंदणा करने पाछा फिरया, गया सूर्य्य पोल ने माग।
इम सुलभ बोधी नें हिये हुई, मुनि धर्म थकी अनुराग ॥ ग० २१ ॥
चतुर्मास उतर्‌यां हिवे कांई, करने तिहां थी विहार।
नाथदुवारे थइ नें आविया कांई, कांकडोली गुणकार ॥ ग० २२ ॥
एक गृहस्थ रे त्यां हुतो कांई, पुस्तक तणु भण्डार।
जीर्ण पत्र पुस्तक घणा कांई, सुंदर अति श्रीकार ॥ ग० २३ ॥
ते गृहस्थ कहे तुझ चाहिजे, ते लेवो पड़त विचार।
ली उत्तराध्ययन ज पाठ की, अवचुरी युक्त उदार ॥ ग० २३ ॥
वलि संस्कृत प्राकृत प्रमुख ही कांई, लीध्या ग्रन्थ अनेक।
जे व्याकरण जाण पंडित तणे कांई, काम आवे सुविशेष ॥ ग० २५ ॥
मिले दिशावंत मुनि भणी कांई, वंछित वस्तु सुजान।
जन कहे पुन्यवंत जीव नें कांई, पग २ प्रगटे निधान ॥ ग० २६ ॥
तिम पुन्यवान जय महामुनि कांई, विचरत ही स्वमेव।
ऋषिराय तणा दर्शन करी कांई, घणा दिवस करी सेव ॥ ग० २७ ॥
जय श्रीजीदुवारे तियांसीए, कियो चिहुं ठाणे चोमास।
तिहां थी विहार करी ऋषिराय ना, किया दर्शन आन हुलास ॥ ग० २८ ॥
द्वितीय खंड दूजी ढाल में कांई, दाख्या दोय चोमास।
सिंघाड़बंध पणे विचरता, जय करता धर्म उजास ॥ ग० २९ ॥

ढाल : ११

दोहा

हिवे ऋषिराय गणाधिपति, जय मुनि संग सुजाण।
चोपन ठाणे परवर्‌या, मालव कियो मंडाण ॥ १ ॥
खाचरोद में खांत सू, ऋषिराय संग जय जोय।

संवेगी थी चरचा करी, अति कष्ट कियो अवलोय ॥ २ ॥
बुद्धि उत्पात अति धारणा, वलि धारणा गुण बहु जाण ।
जिहां जाए तिहां जय करे, एहवा जंय अणगार ॥ ३ ॥

ढाल

[अनन्त नाथ जिन चवदमा रे—ए देशी]

हिवे विहार करीने विचरता रे, ऋषि रायचन्द गणिराज ।
रतलाम शहर पधारिया रे, जन तारन धर्म जिहाज ।
पूज्य गुणखाणी रे ।
संग जीत मुनिंद आनन्द, कंद सुखदाणी रे ॥ १ ॥
तिहां भेषधारी रबिमल थकी रे, चरचा करण अवलोय ।
ऋषिराय मेल्या जय मुनि भणी रे, गाम बारे गुण जोय ॥ पू० २ ॥
तिहां कंटकवोदिया नी चरचा थई रे, ऋषि जीत दिया बहु जाब ।
घणां लोकां रा वृन्द देखतां रे, तसु कीधो कष्ट सताब ॥ पू० ३ ॥
पछै पूज्य ऋषिराय पधारिया रे, नगर उजेणी उदार ।
बहु भव्य जीवा नें तारता रे, देई समकित व्रत श्रीकार ॥ पू० ४ ॥
तिहां बाइस टोलां नो मुनि रे, शोभाचन्द तसु नाम ।
तिण सुं चरचा हुई तिका रे, भविक सुंणो राख चित्त ठांम ॥ पू० ५ ॥
तिण कह्यो गोशाला भणी रे, प्रभु दिक्षा नहीं दीध ।
जय कहे भगवती सूत्र में रे, पाठ पनरम शतक प्रसिद्ध ॥ पू० ६ ॥
श्रवानुभूति मुनिवर कह्यो रे, हे गोशाला तुझ ने जोय ।
भगवंत हिज प्रवर्ज्या दीवी रे, प्रभु हिज मुंड्यो तोय ॥ पू० ७ ॥
भगवंत हिज शिष्य पणे कियो रे, भगवंत सिखायो सार ।
भगवंत हिज जे तुझ प्रते रे, बहुश्रुति कीयो धार ॥ पू० ८ ॥
इम हिज बीजी बार उचस्यो रे, सुनक्षत्र मुनि सुविचार ।
अने तीजी बार प्रभु पोते कह्यो रे, हे गोशाला तुझ प्रति धार ॥ पू० ९ ॥
म्हैं प्रवर्ज्या दीधी सही रे, जाव बहुश्रुत कीयो तोय ।
इम ठाम २ पनरम शतक में रे, दिक्षा दिधी कही अवलोय ॥ पू० १० ॥
इम सुण नें अन्य मति तिको रे, कष्ट थयो तिहवार ।
वलि वड़नगर आदि शहर में रे, करता अति उपगार ॥ पू० ११ ॥
चोमासो वर्ष चोरासिये रे, पटलावद पहिछाण ।
नव मुनिवर सूं गुण निला रे, जय मुनि संग सुजान ॥ पू० १२ ॥

तिहां पनर दिवस तप जप कीयो रे, आछ आगार उदार ।
वलि कोदर तप कियो आकरो रे, षट मासी आछ आगार ॥ पू० १३ ॥
इम मालव देश मांहि हुवो रे, अधिक सुधर्म उद्योत ।
गाम नगर पुर विचरता रे, भवि प्रगट करे ग्यान ज्योत ॥ पू० १४ ॥
हिवे मालव देश थकि आवता रे, मंदसोर शहर ऋषिराय ।
पाछो कीयो सिंघाड़ो जय तणो रे, आया देश मेवाड़ रे मांहि ॥ पू० १५ ॥
पुर में पधारतां पूज्यजी रे, तिहां दिव्या वड़ा मुनि हेम ।
बहु वाया भाया ना वृन्द स्यूं रे, पूज्य स्हामा आया धर प्रेम ॥ पू० १६ ॥

यतनी

पुर में आया घणे हगाम, तठा तांइ चोलणा न हुइ ताम ।
तिण सूं पडिक्कमणे मांहि मुनि हेम, निज मते आलोयण ले तेम ॥ १ ॥
जद जय नें कह्यु ऋषिराय, आलोयण लेणी गणी कने ताय ।
हेम नें आरे कियां विण इण जाग, तुझ नें च्यारुं आहार ना त्याग ॥ २ ॥
जद ऋषि जीत अर्ज करी जाय, हेम ने आरे कराया ताय ।
तठा पछे हेम मुनिराय, आलोयण करता पूज्य पे आय ॥ ३ ॥

ढाल

एकादशमी ढाल में रे, मालव देश मझार ।
पूज्य संग उपगार करी घणुं रे, हिवे विहार कियो सुविचार ॥ पू० १७ ॥

●

ढाल : १२

दोहा

आसाढ़ महिने जय मुनि, नाथद्वारे न्हाल ।
हंसराज सुता चंदणा भणी, चरण दियो सुविशाल ॥ १ ॥
धुर दिक्षा जय हाथ सूं, ली श्रमणी चंदनां सार ।
थइ वड़ तपसण सुवनीत हद, गुण मणि रयण भंडार ॥ २ ॥
पंच श्रमण थी जय भणी, जयपुर शहर मझार ।
भोलावियो चोमास गणि, करवा भविक उद्धार ॥ ३ ॥

ढाल

[कुंथु जिनवर रे मनड़ो०—ए देशी]

वर्ष पिच्यासीये पवर चौमासो, जयपुर शहर सुजोय।
वखाण वाणी थट्ट प्रगट्ट देशन सुण २, हर्ष भविक अति होय॥
सखर गुणागर रे मुनिवर जय जशधारी।
सघन श्रुत सागर रे जय चरण करण बलिहारी॥ १॥

विविध हेतु दृष्टान्त युक्ति करी २, समय न्याय समझाया।
दान दया अरु सावद्य निरवद्य, भिन्न भिन्न भेद बताया॥ स० २॥
वहु भव्य प्राणी सुण जय वाणी, समझ्या तिण चौमास।
ग्रह्या रामचंद कोठारी भारी, श्रावक व्रत सु विमास॥ स० ३॥
मालीराम जी लुणीया वारूं २, वलि गोरूजी गुणवंत।
आदि बावन जणा आसरे गुरु किया, थयो उपगार सु तंत॥ स० ४॥
हिवे चउमास उतरियां आया, कृष्णगढ़ गुणकार।
धर्म चरचा करी वहु जन समझ्या, हुवो तिहां अति उपगार॥ स० ५॥
धाड़ीवाल तिहां चंदनमलजी २, भंडारी तिहां उग्रचंद।
प्रमुख चवदे जण धर्म में समज्या, गुरु सिक्को धर्‍यो सुखकंद॥ स० ६॥
पछे विहार करी अजमेर थइ ने, ऋषिराय तणा अवधारं।
दर्शन कर उपगार कियो ते, संभलाया समाचारं॥ स० ७॥
गणपति सहु समाचार सुणी ने, जय ने अति उपगारी।
जाण गणाधिप विचरत आया, जोधाणै जयकारी॥ स० ८॥
त्यां आषाढ़ महिने महामंदिर में, जन वहु वृन्द मझारी।
रत्नजीरा कनीरामजी सेती, चरचा थइ अति भारी॥ स० ९॥
चसमां ने वलि दान दया नी २, षट लेश्या प्रभु में पावे।
इत्यादिक वहु बोलां नी चरचा, थइ प्रगट तिणे प्रस्तावे॥ स० १०॥
तीजो तिरायत संभूदास तव, जय साख भरी जिह वार।
ए षट लेश्या भगवंत में ठहरी २, कह्यूं प्रगट शब्द सुविचार॥ स० ११॥
जीतफते हुइ जय मुनिवर नी, थइ खंड्या नी हलकाई।
वहु जन जाण्यो यांने जाव न आयो, जय जिन मग शोभ चढ़ाई॥ स० १२॥
पछे जीत चोमासो वर्ष छिआसै २, नगर जोधाणे ठायो।
पाली शहर कियो पूज परम गुरु, थयो धर्मोद्यम अधिकायो॥ स० १३॥
नगर जोधाणै वहु जन समझ्या, सुणी जय वयण रसालं।
ए बारमी ढाले वहु जन तार्‍या, देइ समकित व्रत सुविशालं॥ स० १४॥

ढाल : १३

दोहा

हिवे चोमासो उतर्यां, मृगसर मास रे मांहि।
ऋषिराय तणा दर्शन कर्या, आणी अधिक ओछाह ॥ १ ॥
शहर खेरवे कलू भणी, दर्शण दिया ऋषिराय।
त्रिहुं सुत पिण तिहां आविया, तयांलीस ठाणा थया ताहि ॥ २ ॥
तिण अवसर कलू सती, करे संलेषण सार।
पहिला पिण बहु तप कियो, किंचित कहुं अधिकार ॥ ३ ॥

कलश

गुणंतरा थी छिंयासी लगे, तप तणुं वर्णन भणुं।
द्वादशम भक्त फुन इक अठाई, पनरे दिवस वलि तप थुणूं ॥
सतरे दिवस ने वीस नुं फुन, पंच वीस दिन तप भलो।
जूजूवा पंच मास प्रगट, तप जल आगार सु उजलो ॥ १ ॥

दोहा

वलि वास बेला प्रमुख बहु, कीधा विविध प्रकार।
कारण कांयक खास नो, जाणी तनुं जिहवार ॥ ४ ॥
इम सोले वर्ष मांहे सती, तप करी तनु कृष कीध ॥
हिवे संलेषणा नी पूज्य पे, आग्या लिये प्रसिद्ध ॥ ५ ॥
पूज्य कहे छती शक्ति में, ऊंतावल करो केम।
सती कहे म्हारो मन उठीयो, महांरे तप करवा अति प्रेम ॥ ६ ॥
अति हठ करि गणपति कनें, आग्या ले तिहवार।
हिवे इह विध करी संलेषणा, कहुं संक्षेप विचार ॥ ७ ॥

कलश

इक मास लग अवमोदरी, दिन पनरे एकांतर भला।
पछे अठम २ पारणे, तप करण लागा गुण निला।
सहु पचास तेला आसरे, तप बीच अठ छठ जाणिये।
वलि पारणे अवमोदरी अति, चौविहार सु माणिये ॥ १ ॥

ढाल

[देशी—यतनी को]

इम तप करी नें सती ताय, खंखरभूत करी निज काय।
हिवे छियासिये मृगसर मांय, दर्शन दिया गणि ऋषिराय ॥ १ ॥
जय सरूप भीम पिण आया, गणि दर्शन करि हुलसाया।
मात कलूजी तिहवार, दर्शण करी लह्यो हर्ष अपार ॥ २ ॥
गणि नित्य दर्शन दे धर चूंप, सीख दिये अमृत रस कूंप।
वलि जय आदि अमृत वर्षावे, सती सुण अति हुलसावे ॥ ३ ॥
दिवस पचीस रही गणिराय, विहार कियो थली दिशि ताय।
जय सरूप गणाधिप साथ, राख्या भीम ने तिहां विख्यात ॥ ४ ॥
लारे पोह बिद में सती सूर, पचख्या दिन पांच पंडूर।
पचख्या पांचा में दस दिन, दस में पनरे किया दृढ़ मन ॥ ५ ॥
पनरा में पचख्यो एक मास, जल आसरे अध सेर विमास।
कद ही पाव कद ही अध पाव, तिण में सात चोविहार सु भाव ॥ ६ ॥
कह्यो ए सहु तप श्रीकार, कियो उदक तणो आगार।
हिवे इग्यार नो थोकड़ो एक, करी अठाई एक सुविशेष ॥ ७ ॥
वलि अठम भक्त इक ताहि, अल्प आछ लिवी तिण मांहि।
वलि त्रिण मास एकंतर ताय, बहु दिन उणोदरी अधिकाय ॥ ८ ॥
दियो तप सूं तन सूकाय, खंखरभूत थई तव काय।
पछे श्रावण शुक्ल तेरस रे दिन, पाछली पोहर असाता उत्पन्न ॥ ९ ॥
तिणे मुख सूं बोल्यो नवि जायो, सत्यां सागारी संथारो करायो।
अणसण आयो पोहर उनमान, संवत अठारे सित्यासी जान ॥ १० ॥

साढ़ा सतरे वर्ष उनमान, सती पाल्यो चरण निधान ॥ ११ ॥
कहि ए तेरमी ढाल विख्यात, कार्य सार्या कलूजी मात।
जय जश कहुं हिवे आगे, सुणतां अति वल्लभ लागे ॥ १२ ॥

●

ढाल : १४

दोहा

गणपति संगे विहार करि, आया थली रे मांय।
ठाम २ मुनि थट्ट प्रगट, गह गट्ट अति अधिकाय ॥ १ ॥

किंयो चोमास गणाधिपति, वीदासर सुख वास।
भोलावियो जय मुनि भणी, चुरू शहर चोमास ॥ २ ॥

ढाल

[रातरा अमला में होको गहरो गूंजे जी राज— ए देशी]

वर्ष सत्यासीये जय मुनिवर, चुरू शहर मझार।
पंच मुनि संग प्रगट चौमासो, अधिक कियो उपगार रा॥
मुनि जीत विनीत सु वल्लभ लागे हो लाल।
सुगणा नीतिवान गुण खान, वान सुण वोधी सुजागे हो लाल॥ १ ॥
चन्द्रभाण जी शिवजीराम तणी तिहां, सरधा हुंति तिह काल।
त्यांने भिखु कृत लिखित रास विविध बताया, समजावण सुविशाल रा॥ मु० २॥
सिरदांरा जी आदि वहु बायां भाया, तिहां पुछ्या विविध पर बोल।
वहु दिन लग चरचा करी समज्या, सुण जय जाव अमोल रा॥ मु० ३॥
वहु वाया भाया गुरू धारणा कीधी, तिहां थी क्षेत्र थयो श्रीकार।
ठाम २ तिण वर्ष थली में, थयो घणो उपगार रा॥ मु० ४॥
वर्ष अठ्यासीये कियो चोमासो, वीकानेर गुणकार।
श्रमण पंच सूं वोधी व्रत दे, तास्या घणा नर नार रा॥ मु० ५॥
तिहां मुमनचन्द नें गुलहजारी, हरियाणा देश ना दोय।
जय दर्शन कर दिली नी अर्जी, किधी युक्ति विनय करी जोय रा॥ मु० ६॥
जद कोदरजी तपसी नें मेल्या, ऋषिराय समीपे सुजोय।
दिल्ली चोमासा री आग्या लेवा नें, देश मेवाड़ में अवलोय रा॥ मु० ७॥
ऋषि जीत चुरू आय मृगसर सुद में, वारू दशम दिन अवधार।
गुलहजारी नें दिक्षा दीधी, धुर शिष्य थया श्रीकार रा॥ मु० ८॥
पछे विहार करी ने विसाउ आया, इतले कोदरजी अवलोय।
दिल्ली की तरफ नी आग्या लेई नें, आया जीत समीपे सुजोय रा॥ मु० ९॥
विसाउ शहर सूं विहार करी नें, आया राजगढ़ अभिराम।
तिहां कालवादी नों श्रावक पको, वालकराम तसु नाम रा॥ मु० १०॥
ते निज मत नी वहु धारणा वालो, तिण सुं किधी चरचा विशेष।
उत्तर पडुत्तर थया अति वहुला, आगम पाठ वताय अनेक रा॥ मु० ११॥
नेहनो विस्तार घणो छै ते सुण ने, राजी हुवो अति ताम।
आठ दिवस राजगढ़ रहि आया, उंबरे ग्राम अभिराम रा॥ मु० १२॥

दिवस चतुर्दश रही उंबरा में, आया हांसी शहर गुण हीर।
दिवस एकादश त्यां रही जय मुनि, विचरत जेम समीर रा ॥ मु० १३ ॥
जमालपुर मांहि सात दिवस रहि, आया शहर भिवानी मांहि।
दिवस त्रयोदश त्यां रही आया, दादरी धर उछाह रा ॥ मु० १४ ॥
तिहां तीन दिवस थइ जभा थइ ने, आया फरकनगर सुविचार।
तिहां तीन दीवस रही गढ़ी में आया, तिहां तीन दिवस रह्या धार रा ॥ मु० १५ ॥
पछे दिल्ली सूं एक कोस नें आसरे, पहाड़ी गाम में आय।
तिन रात्रि तिहां रही जय मुनिवर, हिवे आवे दिल्ली रे मांय रा ॥ मु० १६ ॥
ए च्यार अने दशमी ढाल मांही, जबरा जीत मुनि जयकार।
हरियाणे उपगार करी आवे, दिल्ली शहर उदार रा ॥ मु० १७ ॥

●

ढाल : १५

दोहा

हिवे दिल्ली शहर मांहि तदा, कृष्णचन्द लघु होय।
जात तणो ते महेसरी, जाणवीण बहु जोय ॥ १ ॥
वलि संसार मांहि दीपतो, पढ़चो फारसी फेर।
श्रद्धा वावीस टोलां तणी, कांइ मंदिर नी लहर ॥ २ ॥
वावीस टोला में पको, चतुरभुज ओसवाल।
संवत अठारे इक्यासीये, विहुं जयपुर आया चाल ॥ ३ ॥
तिहां हेम जीत मुनि सात ना, दर्शन करी तिह काल।
हेम मुख आगल जय थकी, चरचा करी विशाल ॥ ४ ॥
भीना २ वहु समय ना, सूक्ष्म प्रश्न विचार।
पूछ्या जय उत्तर दिया, छै तसु वहु विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल

[सयणा थइ एजी रे—ए देशी]

कृष्णचन्द ने चतुर्भुज विहुं, निर्णय करी सुविचारी जी रे।
इक्यासीये जयपुर चौमासे, शुद्ध श्रद्धा दिल धारी रे।
भवि जन सुणिये जी रे।
जय उपगार किया अति जवरा, तास सुयश गुण थुणिये जी रे ॥ भ० १ ॥

पछे दिली जाय ने किता वर्ष तो, श्रद्धा में रह्यो सेंठोजी रे।
पछे ओसवाल पुजेरा में अगवाणी, किशनचन्द जे जेठो रे॥ भ० २॥
ते धूता नो धूत ने अति कुबुद्धि, तसु संगत क़र वैठोजी रे।
तिण विविध कुयुक्ति सूं श्रद्धा फेरी, लग्यो कुसंगत लेठो रे॥ भ० ३॥
बहु जन वृन्द सू मंदिर लेग्यो, कृष्णचन्द तो आगे जी रे।
इक पसवाड़े चनुर्भुज ने, द्वितीय सरदारमल सागे रे॥ भ० ४॥
गाजा बाजा करी चले जाणिजे, द्रव्य सहित थाल कर में जी रे।
बाजार में थानक पासे थइ, इम लेइ गया मंदिर में रे॥ भ० ५॥
प्रतिमा ने नमस्कार करायो, कहे आज मित्थात वोसरायो जी रे।
इण रीते लघु किसनचन्द ने, बड़े किसन भरमायो रे॥ भ० ६॥
आगे बाइसटोला नें पूजेरां रे, श्रावक रे माहो मांह्योजी रे।
बहु द्वेष हुंतो फुन एह देख ने, दोरी लागी अति ताह्यो रे॥ भ० ७॥
देहरापंथी थयो किसनचन्द, पिण जय मुनि सूं ताह्यो जी रे।
अंतरंग री प्रीत मिटी नहीं, जे जयपुर में समझायो रे॥ भ० ८॥
पाहड़ी में रह्या तीन रात्रि जय, जब लगतो ते नायो जी रे।
अने तुर्य दिवस प्रभात नी वेलां, नव जन संग ले आयो रे॥ भ० ९॥
देहरा पंथ्यां में थयो अति पको, तिणे कर तो जोड़्या नाहीं जी रे।
पिण दोनुं हाथ वरोबर सम कर, नमस्कार भूलायो रे॥ भ० १०॥
वलि विकसायमान मुख करी ने, बोल्यो इह विध वायो जी रे।
अहो जिस दिन देख्या हुंता उवा, सूर्ती बसी हिय मांह्यो रे॥ भ० ११॥
सो अव शहर में आप पवारो, तव ऋषि जीतमल्ल कह्यूं ताह्यो जी रे।
उतरवा: ने किसी जायगां, तब कह्यो जायगां पिण होय जायो रे॥ भ० १२॥
इम कही ते भाया लेइ साथे, दिल्ली मांहि लायो जी रे।
वजार में दुकान ऊपर, जागां बताई जायो रे॥ भ० १३॥
ऋषि जीत कहे ए जागां जोड़े, कंचनीया रहे ताह्यो जी रे।
तिण कारण मुनि ने जोग्य नहीं ए, तव किसनचन्द कहे वायो रे॥ भ० १४॥
जोगराज जी रा तो साधु, इहां रहिता अवलोयो जी रे।
जय कहे उवे रहिता पिण म्हारे, तोल न आई कोयो रे॥ भ० १५॥
जद उपगरण संता ने तिहां राखी, ऋषि कोदर ने संग लेइ जी रे।
जागां दूजी वताइ ते देखी पिण, तोल में नांइ तेहि रे॥ भ० १६॥
जद किशनचन्द कहै तीजी जायगां, रोशनपुर में देखो जी रे।
गंगाराम कशमीरी नी हिवे, मोटी श्रेष्ट विशेपो रे॥ भ० १७॥

ऊपर हेठे अति विस्तीर्ण, वलि रमणिक सु वारू जी रे।
पेखत पाण दाय आइ पिण, आज्ञा किण री चारू रे॥ भ० १८॥
जद .किशन कहै हुं आज्ञा दिरावूं, जद कह्यो ऋषि जीत विचारो जी रे।
इहां कोइ सचित बिखेर देवे, वा जड़ देवे कोइ दुवारो रे॥ भ० १६॥
तो ए जायगां काम आवै नहीं, जद पोते तो रह्या ज्यांहि जी रे।
ऋषि कोदर ने सागे मेल्या, आग्या लेवण तांई रे॥ भ० २०॥
जिण ओसवाल ने हुंती भोलावन, तसु आग्या लेइ आया जी रे।
पछे समण भणी बोलाय ने जायगां, उपगरण तुरत जमाया रे॥ भ० २१॥
पनरमी ढाले श्री जय मुनिवर, दिली शहर पधास्या जी रे।
कहुँ हिवे दिली शहर मांहि बहु, जिह विध भवि जन तास्या रे॥ भ० २२॥

●

ढाल : १६

: दोहा :

कृष्णचंद छोटो हिवे, सुणे वखाण प्रभात।
कने आवे पिण नहीं करे, मुनि नें उंचो हाथ॥ १॥
वलि नमस्कार पिण नहीं करे, कहे तुझ म्हारे जोय।
श्रद्धा रो अंतर बहुत, सो मिले नहीं अवलोय॥ २॥
पिण तुमने बहु धारणा, अन्य बोल समय नी जेह।
तेह धारवाने अर्थ, मुझ आणो ह्वै एह॥ ३॥
लघु किशन ए वात कही, पिण तिण रे अवधार।
कृष्णचंद जे जेष्ट थी, हेत घणो तिहवार॥ ४॥

ढाल

[अमड़ भड़ रावणो इन्दां सूं अड़ियो रे—२ देशी]

लघु किसन ने निज मते राखवा, बड़ो कृणचन्द जिहवार।
प्रश्न पुछ्यो स्वाम पे आय ने, किता मानो आगम अवधार।
सुगुण जन सांभलो, वारू स्वाम तणो हद जाव॥ १॥
जद पाछो उत्तर दियो तेहनें, आगम मानां म्है तीन प्रकार।
सूत्रागम नें अर्थागम वलि, तीजो तदुभयागम धार॥ सु० २॥

जद पिण पूछ्यो सूत्रागम किसो, तव उत्तर दीधो एम।
सूत्रागम ते पाठ ज सूत्र नो, जद कहे अर्थागम कहो केम ॥ सु० ३ ॥
जद जय स्वाम उत्तर दियो एहवो, वारू टीका टव्वा में जोय।
सूत्र सूं मिलती कही वार्ता, ते अर्थागम अवलोय ॥ सु० ४ ॥
तदुभयागम ते सूत्रार्थ बिहुं, जद किशनचन्द कह्यो आम।
जद तो आगम च्यार कहो तुमे, कांई मिलतागम तूर्य नाम ॥ सु० ५ ॥
जद जय मुनिवर कहे तेहने जी, आगम तीनोंइ छे तेह।
अण मिलतागम नहीं एक ही, सहु मिलतागम है एह ॥ सु० ६ ॥
बड़ो किशनचन्द नित्य आय नें, घणुं मधुर बोले कहे जेह।
जांणे तुमने देखुं जब मांहरे, जागे पूर्व भव नो नेह ॥ सु० ७ ॥
वलि कृष्णचन्दजी आदि दे, बहु पुजेरा थी जिह वार।
धर्म चरचा तो हुई घणी, पिण कहुं संक्षेप विचार ॥ सु० ८ ॥
प्रथम तो मिथ्याती तणी, कांई निरवद्य करणी सार।
आज्ञा बारे कहे तिण उपरे, कांई चरचा हुई श्रीकार ॥ सु० ९ ॥
जय कह्यो मेघ कुमार नों, जीव गज भव में सुविचार।
मिथ्याती छते सुसला नी दया करी, तिणे कियो परित संसार ॥ सु० १० ॥
वलि मनुष्य नुं आयु बांधीयो, अने समदृष्टी जो थाय।
तो मनुष्य तिर्यंच रे वैमानिक बिना, और गति नो बंध नांय ॥ सु० ११ ॥
अने हाथी बांध्यो आयुषो मनुष्य नों, ते माटे मिथ्याती थो तेह।
परित संसार कियो सुसला री दयाकरी, तिण सूं करणी आग्या में एह ॥ सु० १२ ॥
प्रथमचर्चा वलि भगवती अष्टम शतकमें, कांइ दशमें उद्देशे देख।
ग्यान रहित अने क्रिया सहित जे, कांइ बाल तपस्वी ने पेख ॥ सु० १३ ॥
देश आराधक आखीयो जी, देश ने थोड़ो जोय।
आराधक पणुं ते आग्या मांही छै, ए द्वितीय चरचा अवलोय ॥ सु० १४ ॥

सोरठा

महा नशीथ देखाय रे, दीर्घ कृष्णचन्द लघु भणी।
श्रद्धा भ्रष्ट कियो ताहि रे, तिण सूं जय मुनिवर तदा ॥ सु० १५ ॥
महा निशीथ में जोय रे, पंचम अध्ययन नो पाठ ए।
कह्यु कमलप्रभा अवलोय रे, जो मानो महा निशीथ ने ॥ सु० १६ ॥

ढाल

महा निशीथ में हिंसाधर्मा भणी, कही कमलप्रभा गणि वान।
छे जिता जिणालय देहरा, ते सावद्य आरम्भ ना स्थान॥ सु० १७॥
तिके वचन मात्र पिण नहीं आचरूं, इम कह्यां हिंसाधर्मी जेह।
ते ताली देइ ने बोलिया, छे सावद्यीयो आचार्य एह॥ सु० १८॥
इम अवज्ञा करवा लागा बहु, पिण कमलप्रभा समभाव।
राख्या तिण सूं तीर्थंकर गोतना, दलिया बांध्या तिण प्रस्ताव॥ सु० १९॥
ढाल भली ए सोलमी, वारू चरचा नो अधिकार।
अल्प सुचि मात्र इहां आखियो, पिण छे घणुं तसु विस्तार॥ सु० २०॥

●

ढाल : १७

दोहा

वलि चरचा बहु विध करी, पूजेरा थकी पेख।
आगम पेंताली जे कहे, वलि चोरासी देख॥ १॥
तास विरुद्ध वतायवा, स्वामी जय जिह वार।
प्रश्न पूछ्यो तव तेह नें, ते सुणज्यो सुविचार॥ २॥

ढाल

[रुड़ा चंद निहाले रे नव रंग नारी चेष्टा— ए देशी]

पूजेरा ने पूछ्यो जय मुनिवर, थे आगम पेंताली थापो।
ते चोरासी मांहिला छे के अनेरा, वारूं उत्तर एह नो आपो।
समचित भवि जन सुणिये रे, वारू समय न्याय अति सखरा॥ १॥
तिमंतर समय ना तो नाम नंदी में, बाकी रह्या ज्यांरा नाम।
ववहार अने ठाणांग मांहि छे विवरो, सुणो राख चित्त ठाम॥ स० २॥
जे पेंतालीस माने ते मांहिला, गुणचालीस नाम तो ताही।
चोरासी आगम मांही छे, अने छः ना नाम चोरासी में नाहीं॥ स० ३॥
ते भणी चोरासी आगम मानो तो, चोरासी मांहिला तो न्हाली।
पेंतालीसां में गुणचालीस नाम छै, तो तमु मानेवा गुणचाली॥ स० ४॥

पेंतालीस मान्या नहीं चाहिये, षट सूत्र ना नाम विचार।
चोरासी में नहीं ते माटे, जोवो अंतर आँख उघाड़ ॥ स० ५ ॥
वलि जो ए पेंतालीस मानो तो, तुझ ने नेऊ सूत्र मान्या चहिये।
चोरासी तो ए ने षट ना, नाम पेंतालीस में लहिये ॥ स० ६ ॥
अने चोरासी में नाम कह्या नहीं, ते षट सूत्र सवाय।
पेंतालीस मांहिला चोरासी में घाल्या, सहु नेऊ सूत्र इम थाय ॥ स० ७ ॥
इम चोरासी मान्या पेंताली उठे, पेंताली मान्या चोरासी ऊठे।
जे न्याय मारग तो कठे न अटके, भटके अन्यायी पग छूटे ॥ स० ८ ॥
इत्यादिक चरचा हुई बहु विध, जद जय स्वाम विचार्यो।
वड़ो किस्न तो समझतो न दिसो, छोटो समझे जिसो मन धार्यो ॥ स० ९ ॥
पिण इण रे दीर्घ किस्नचंद सूं, है प्रीत अत्यंत सु हेर।
हेत तुट्यां विण समझनो दुक्कर, हेत तुटे श्रद्धा में पड़्यां फेर ॥ स० १० ॥
इम चितव लघु किस्नचंद ने, देश आरावक नुं पाठ देखायो।
चले गज भव में मेघ सुसा नी दया करी, परित संसार करी थयो ताह्यो ॥ स० ११ ॥
वलि मनुष्य गति नो आयु बांध्यो, प्रगट ए पाठ बतायो।
मिथ्याती री शुद्ध करनी अग्या में, ए श्रद्धा पकी जमी हिया मांह्यो ॥ स० १२ ॥
जब ए दीर्घ कृष्णचंद सूं चरचा, करे देख्यो प्रभु भाख्यो।
ए धुर गुण स्थानक ना धणी नें, देश आराधक दाख्यो ॥ स० १३ ॥
तो तसु शील संतोष दया क्षमा, आग्या मांहि कहो धर धीर।
जद दीर्घ कृष्ण शशि कहे ए तो, छै ए तो भंगी ना घर नी खीर ॥ स० १४ ॥
जद ऋषि जीत कह्यूं ए भंगी ना, घरनी खीर नहीं ताहि।
भंगी ना घर नो ए छै रुपैयो, सो कठेई अटके नांहि ॥ स० १५ ॥
जब यांरे माहो मांही श्रद्धा रो, अंतरो पड्यां हेत तूट्यो।
मुनि सूं प्रीत बंधी दीर्घ कृष्ण नी, पक्ष तणो फंद छूट्यो ॥ स० १६ ॥
सतरमी ढाल मांही जय स्वामी, चरचा करी विविध प्रकार।
शेषे काल सतरे रात्रि रहि तिहां, वारूं कियो घणुं उपगार ॥ स० १७ ॥



ढाल : १८

दोहा

मुनि पंच सूं विहार करि, दिल्ली चोखले जाण।
विचरी सेखे काल हिवे, करे चतुर्मास मंडाण ॥ १ ॥
संवत अठारे नयासीये, दिल्ली शहर उदार।
आग्या ले तिंण जायगां, कियो चतुर्मास सुविचार ॥ २ ॥

ढाल

[शिवगत गामी जीवड़ा—ए देशी]

श्रमण पंच साथे भला, श्री जय दिल्ली शहर।
धर्मोपदेश वहु विध दियो, करी भविक पर महर।
जग जशधारी जय मुनी जी, उपगारी शिरमोड़।
वहु मुनिवर गणि आगले जी, पिण कवण करे तसु होड ॥ ज० १ ॥
वहु लोक आवण लागा कनें जी, पूजेरां ना अवधार।
वले बाइस टोला तणा जी, सुणे वखाण वाणी सुविचार ॥ ज० २ ॥
दान दयादिक उपरे जी, समय न्याय श्रीकार ॥
भिन्न २ करि दर्शाय ने जी, ताख्या वहु नर नार ॥ ज० ३ ॥
वावीस टोला में श्रावक वड़ो जी, खंडेराय तिण स्थान।
तिण सूं चर्चा वहु थई जी, ते धुर गुणठाणे कहे वे ध्यान ॥ ज० ४ ॥
ते धर्मध्यान न कहे धुर गुणे जी, तिण उपर दिया जाव विशेष।
पूर्ण तामली वाल तपसी तणे जी, कही अनित्य चिंतवणा जिनेश ॥ ज० ५ ॥
अनित्य चिंतवणा भेद धर्मध्यान नो जी, कह्यो सूत्र उववाई मांही।
तिण सूं धर्मध्यान रा धुर गुणे जी, देखो सूत्र नें न्याय ॥ ज० ६ ॥
जद लोक मांहो मां इम भणे जी, खंडेराय तणा दोय ध्यान।
अने तीन ध्यान जय मुनि तणा जी, सूत्र मांही नहीं किण स्थान ॥ ज० ७ ॥
न्याय थकी वेहुं कहे जी, कुण साचो कुण ओर।
यथातथ्य समझ पड़े नहीं जी, इम करवा लागा झोड़ ॥ ज० ८ ॥
तसु प्रगट पणे समझायवा जी, जय वर स्वाम जिवार।
देखायुं पाठ भगवती तणों जी, असोच्चा नों अविकार ॥ ज० ९ ॥
तप करता वाल तपस्वी तणो जी, अन्यदा किवारे जेह।
शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या करी जी, कर्म तणे क्षयोपसमेह ॥ ज० १० ॥

इहा अपोह करतां थकां जी, इहा सद्धर्म चेष्टा जाण।
अपोह अन्य पक्ष रहित दी जी, अर्थ मांही कह्यूं धर्मध्यान ॥ ज० ११ ॥
मार्गण गवेषणा करता थकां जी, तसु उपनुं विभंग अग्यान।
तिण सूं ए छै धुर गुणे जी, ए प्रगट दिखो धर्मध्यान ॥ ज० १२ ॥
जद घणा लोक धर्मध्यान ना जी, अक्षर देख उदार।
जाण्या साचा जय मुनि जी, जीत फते हुइ जिह वार ॥ ज० १३ ॥
विस्तार चरचा नो छै बहु जी, इहां कह्यो अल्प अधिकार।
घणां लोक समझ्या तदा जी, ए श्रद्धा ग्रही तंत सार ॥ ज० १४ ॥
लघु कृष्ण ने तदा जी, कर्मग्रन्थ ने टीका मांही।
बहु विरुद्ध बात बतावता जी, तसु आसता उतरी ताहि ॥ ज० १५ ॥
तब वृत्ति तणां कर्ता भणी जी, जाण्या खोटा जिह वार।
हिवे बैठी आसता सूत्र नी जी, पको थयुं समजे श्रीकार ॥ ज० १६ ॥
करवा लागो सामायिक भणी जी, पछे आयो मन वैराग।
दिक्षा ने त्यारी थयो जी, हाड मींजा रंगी धर्म राग ॥ ज० १७ ॥
ए संसार माहिं पिण दीपतो जी, वे गुमास्ता आप प्रसिद्ध।
एक पुत्र ने पुत्र बहु परहरी जी, वलि छांडी बहु ऋद्ध ॥ ज० १८ ॥
बहु खप करने पुत्र नी जी, आग्या लेइ कृष्णचंद।
मृगसर विद एकम दिने जी, धर मन में आनन्द ॥ ज० १९ ॥
गाजा बाजा सूं दिल्ली थकी जी, एक कोस उनमान।
पाहड़ी तिहां दिक्षा देई जी, एक रात्रि रह्या तिण स्थान ॥ ज० २० ॥
ए अष्टादशमी ढाल में जी, कह्यूं धर्म चरचा अधिकार।
बहु जन ने समझाय नें जी, कियो दिल्ली से विहार ॥ ज० २१ ॥

●

ढाल : १९

दोहा

मुनि छः संगे विहार करि, मृगसर विद पक्ष मांहि।
तेरस दिन जयपुर मझे, आया जय मुनिराय ॥ १ ॥
रात्रि अठारे त्यां रही, देश मेवाड़े आय।
शहर गोगुन्दे स्वाम ना, वलि रावलीयां मांह ॥ २ ॥

दर्शन करी हर्षित हुवा, दिल्ली नो अवदात।
जिम उपगार कियो जिका, कही यथार्थ बात ॥ ३ ॥
सुण आनन्द लही कह्यो, ऋषिराय वचन अभिराम।
हिवे जाणो गुजरात में, जद अर्ज करी जय स्वाम ॥ ४ ॥
हेम तणा दर्शन कियां, वर्ष आसरे दोय।
थया हिवे दिन लागे अधिक, ते पिण खबर न कोय ॥ ५ ॥
तिण सूं जो आग्या हुवे, तो मारवाड़ में जाय।
स्वामी हेम तणा दर्शन करी, सामिल होउं भट आय ॥ ६ ॥
तुरत आज्ञा दीधी तदा, तिहां थी करी विहार।
षट रात्रि वासे आविया, सरीयारी सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल

[देशी—जकड़ी नी]

तिहां हेम तणी सेवा करी, दश दिवस आसरे चित धरी।
चित धरी सेवा करी पाछा, देश मेवाड़ पधारिया।
कांकड़ोली में सुखांजी तब, कहे वयण सुखकारिया।
पंच रात्री आप जो इहां रहो, तो हुं संजम लेस्यूं सही।
जय कहे पंच रात्री नी तो, हिवड़ां थिरता मुझ नहीं ॥ १ ॥
इम कही रात्री एक त्यां रही, श्रीजीद्वारे आया जय सही।
सही आया तव सुखांजी नां, हुंता जेठ जेठाणी तिहां।
भाया नें समभाय ने जय, रात्री एक रहिने जिहां।
विच एक रात्री रही ओढण, खमणोर आया गुण नीला।
तिहां सुखांजी नें वलि त्यांरा, जेठ जेठाणी भला ॥ २ ॥
त्यां आया था नाथदुवारा ना भाया वलि, इक रात्री रह्या त्यां रंगरली।
रंगरली तिहां सुखांजी ने, चारित्र रत्न दे उमही।
वृद्ध चंदणांजी प्रते सूंपी, गोगुन्दे आया सही।
तिहां सरूप शशी प्रते स्वामी, ऋषिराय पुस्तक भोलाय नें।
दश ठाणे गुजरात कानी, विहार कियो थो शुभ मने ॥ ३ ॥
तिहां सरूपचन्दजी स्वाम ना, दर्शन करी जय शुभ मना।
शुभ मना जय रात्री इक रही, थया दोय भाया साथे जिहां।
छः मुनिवर संग विहार कर नें, भारोल में आया तिहां।

जीवो मुनि ने जवान स्वामी, हुंता त्यां कने उमही।
रामसुख मुनि कह्यं हुं पिण, तुझ संगे आवूं सही ॥ ४ ॥
हिवे सप्त ठाणे जय महा मुनि, गुर्जर देश दिशि चाल्या गुणी।
गुणी मुनि अति गहन अटवी, बिहुं पास मग डूंगर घणां।
उत्तंग अति फुन भील्ल तस्कर, स्वापद शब्द बिहामणा।
पिण साहसीक मन लंघे मारग, संग वे श्रावक सेवा करे।
वे चावड़ी थई इडर आया, पछे अैमनगर आया तरे ॥ ५ ॥
हिवे मोती आदि पंच मुनिवर भणी, कह्योथेतोधीरे२आइज्यो गुणी।
गुणी थे भलाइ धीरे आवो, हूंतो आगल जावसूं।
इक्ज कोदरजी ने साथ लेई, गुरु संगे सुख पावसूं।
इम कही दांती होय ने भट, अमदाबाद आया तहां।
बिहुं ठाणे स्वामी नारायण नी, जायगां में उतर्या जिहां ॥ ६ ॥
लोक बोल्या अठा सुं आज ही, थारे गुरु विहार कीवो सही।
सही कीधो विहार तुझ गुरु, सुण एक रात्रि तिहां रही।
बीजे दिन सानन्द में गुरु, दर्शन कर सुख पावही।
तिहां श्रद्धा में हुंती भत्रू बाई, ते समभाई पारख पुरुषोत्तम।
तिहां स्वामीजी संग रात्री चिहुं रही, हिवे विचरत मुनिपति अनुक्रने ॥ ७ ॥
शहर नीबडी में आया तिहां, पुरुषोत्तम ना समझाया जिहां।
जिहां समझाया हुंता श्रावक, तेरे इण श्रद्धा तणा।
दश रात्रि रही उपगार कर, हिवे वढवाण आया शुभ मना।
शंकर ऋषि दरियापुरी तिहां, करी रहिवा नी हठ अधिक ही।
जद पूज्य कहे कच्छ जावणो मुझ सो, ऋण में जल आयां जवाये नहीं ॥ ८ ॥
इम कही रात्री इक त्यां रही, गणि घ्रांगधरे आया सही।
सही आया उतरी ऋण, कच्छ वागड़ में वेले आय ने।
तिहां हुंती टीकम तणी श्रद्धा, घणा लोकां नें समझायनें।
दश रात्री रही अंजार थइ नें, मंदरे आया वही।
तिहां जेठो भाई दीपतो अति, टीकम री श्रद्धा मही ॥ ६ ॥
तिण भाव भक्ति कीवी घणी, तिहा तीन रात्रि रह्या महामुनि।
महामुनि ऋषिराय ने जय, आयां मांडवी बंदर मझे।
त्यां पुरुषोत्तम नां समझाविया बहु, श्रावक अति सेवा सझे।
तिहां चरचा वारता हुइ बहु विध, अन्य श्रद्धा ना पिण बहु जणा।
अति दीपता गणि दर्शने आवे, सुणे व्याख्याणादि शुभ मना ॥ १० ॥

हठ तो चोमासा नी बहु करी, पिण गणि विनती चित नहीं धरी।
नहीं धरी चित्त चउमास मन, मारवाड़ करवा तणो।
षट रात्रि रही तिहां देख, उदधी समीप नगर सुहामणो।
वलि जलधि नी पिण देख रचना, नालिकेरादिक बन वलि।
तिहां थकि हिवे विहार करनें, ली देश मरुधर दिशि भली॥ ११ ॥

बेला सूं थोड़ी छोटी रही जाम हे, तब आडे सर आया ताम हे।
ताम आडे सर स्वाम आया, जब बेलां ना भाया भणी।
खबर पड़्यां करी आयने झट, अर्ज चोमासा तणी।
जद कर्मचंद ने संत मोती, वलि कृष्णचंदजी ने तदा।
ए तीनूं ने चोमास वेले, ठहराय नें गणपति मुदा॥ १२ ॥

अने ईसर आदि मुनि मतिवंत हे, रह्या गुजरात में त्रिहुं संत हे।
संत त्रिहुं त्यां ग्राम वीरम, कियो चोमास सुहामणो।
बहु लोक तिहाँ थोक समझ्या, हुओ उपगार तो ज्यां अति घणो।
हिवे पूज्य तो पाली पधास्या, चउमास नेंउए त्यां कियो।
ऋषि जीत ने चउमास नेउवे, बालोतरे भोलावियो॥ १३ ॥

कच्छ सूं जय शीतल वाणे है करी, गुडे नगर अने थइ सणदरी।
सणदरी थइ जसोल आया, पछे चोमास बालोतरे ठाव ही।
वर्ष में आसरे सप्त सत कोस, विचस्या तिण प्रस्ताव ही।
उगणीसमी ढाले दिली सुं लेइ, जैपुर मेवाड़ में जइ करी।
गुजरात कच्छ में उपगार करी जय, चोमास आया चित्त धरी॥ १४ ॥

●

ढाल : २०

दोहा

संवत अठारे नेउए करी, बालोतरे चौमास।
पंच मुनि सुं प्रगट जश, थयो अति धर्म उजास॥ १ ॥
घणां लोक समझ्या तिहां, थयो अधिक उपगार।
चरचा पिण बहुली थई, कहुं संक्षेप विचार॥ २ ॥

ढाल

[एक दिवस रूक्मण०—ए देशी]

जन भ्रम मेटण जय स्वामी, श्री पुज्य रे उपासरे जायो रे।
असंयती ने दियां एकन्त पाप नो, पाठ प्रगट देखायो रे।
धन्य २ जीत ऋषिश्वर जग में, धन्य २ ग्यान रसालो रे।
हेतु युक्ति दृष्टान्त देइ बहु, तार्‍या जीव विशालो रे॥ १॥
कुल गण संग अनें सावर्मी, साधू भणी हिज कहीये रे।
सूत्र उववाइ नो पाठ बतायो, इण में श्रावक नें नहीं लहीये रे॥ ध० २॥
कह्यो आचारंग में धर्म मांहरो, छै आग्या मांहिज जानो रे।
वहु जन नें ए पाठ बताइ, कराइ गुरु धारणा सुविवानो रे॥ ध० ३॥
पछे चोमास उतर्‍यां जय मुनिवर, सखर फलवधी शहर पधार्‍या रे।
एक मास रह्या उपदेश देइ नें, वहु जन तिहां त्यार्‍या रे॥ ध० ४॥
पछे विहार करी कांठा री कोर आया, गणि दर्शन करि सुख पायो रे।
श्री ऋषिराय माहराज कह्यो तब, लुणीया मालीराम कने ताह्यो रे॥ ध० ५॥
चंदपन्नंती हे जयपुर में, कोइ ल्यावो तो लेवां लिखायो रे।
जद कोदर कह्यूं छठो जय पास, मेलो मुझ तो हुं ल्यावूं तिहां जायो रे॥ ध० ६॥
गणपति तुरंत दीधी तब आज्ञा, तपस्वी कोदर जैंपुर कानी रे।
विहार कियो चित्त हर्ष लह्यो अति, मन चिंतित काम थयुं जानी रे॥ ध० ७॥
हिवे स्वामीजी साथ आया जय पाली, पछै पाली सूं ऋषिरायो रे।
देश मेवाड़ पधारने जय नें, चोमास फलवधी भोलायो रे॥ ध० ८॥
हिवै चैत्र शुक्ल एकम सूं एकान्तर, करवा लागा गुणकारो रे।
पछे विहार करी जोधपुर में पधार्‍या, सतरे रात्रि रह्या सुविचारो रे॥ ध० ९॥
हिवे विचरत २ काणाणे आया, आखा तीज दिने उपवासो रे।
आठ कोसना हाल्या आथण नी वेला, हेम दर्शण किया हुलासो रे॥ ध० १०॥
पछे सुवर्णराज जी स्वामी संगे, जसोल वालोतरे जाई रे।
तिहां थी पंचपदरे वाघावास थइ, आया स्वाम आगोलाइ रे॥ ध० ११॥
तिहां पंच रात्री रही ढूंढीया सेती, चरचा करी जन तार्‍या रे।
त्यां गुरु धारणा कराइ वहु जन नें, विहार करी फलोधी पधार्‍या रे॥ ध० १२॥
वर्ष इकाणवे षट मुनिवर सूं, कीयो फलवधी चोमास उदारो रे।
बहु स्त्री नर समज्या करी गुरु धारणा, त्यां थी क्षेत्र थयो श्रीकारो रे॥ ध० १३॥
जग जशधारी पर उपगारी, मिथ्या तिमिर विडारी रे।
घणां क्षेत्र सर किया मुनि जय, भव्य बोधि दातारी रे॥ ध० १४॥

तिहां बीकानेर ना कागद आया, फतेचंद जी रो चउमासो रे।
देशणोक छै सो चोमास उतस्यां, इहां आवतो दिसे विमासो रे॥ ध० १५॥
तिण सूं आप अठे पधारज्यो बेगां, जद चोमासो उतस्यां जाणो रे।
विहार करी जय मुनिवर बेगा, आया बीकानेर गुणखाणो रे॥ ध० १६॥
तिहां फतेहचंदजी लोकां रे मन, घालतो थो तब संका रे।
जय हेतु युक्ति समय न्याय बतावी, पाछा किया तेह नीसंका रे॥ ध० १७॥
तिहां फतेचंद संग उदेचंद थो, ते तसु छोड़ नें तिहवारो रे।
श्री जय पास आवी ली दिक्षा, जद पाम्या जन चिमत्कारो रे॥ ध०॥
ए बीसमी ढाल मांहे जय स्वामी, चोमास बालोतरे कीधो रे।
वलि फलवधी चोमास करी नें, बीकाणे आया जश लीधो रे॥ ध० २०॥

ढाल : २१

दोहा

हिवे फतेचन्दजी विहार करि, नागोर आयो ताम।
जद तिण केड़े नागोर में, आया जय गुण धाम॥ १॥
पनरे रात्रि नें आसरे, रह्या नागोर में ताम।
तसु विहार कियो जाण नें, आया भदाणे स्वाम॥ २॥
ते उतस्यो थो जिण पोल में, तिण पोल में उभा आय।
तसु पूछ्यो पहिला तुम्हें, सात दोषण गण मांहि॥ ३॥
काढ्या था फुन सुण्या पछै, आसरे दोष बतीस।
अबै बतावो अधिक फुन, सो किम वात कहीस॥ ४॥
जब ते बोल्या जय भणी, ज्यूं देखतो जावूं जास।
ज्यूं उतारतो जावूं तसु, कोइ बात पुछी फुन तास॥ ५॥
जद तिण कह्यो मुझ भाव नहीं, पछे दूजे दिन तेह।
डेह आयो तसु केड़ ही, आया जीत गुण गेह॥ ६॥
पछे वो तो डेह मांहि रह्यो, जय मुनि बुद्धि विशाल।
लाडणुं पधास्या वांदवा, पाणी पहिली पाल॥ ७॥

ढाल

[सुण २ रे सीख सयाणा—ए देशी]

लाडणूं शहर मझार, चन्द्रभाणजी री तिहवार।
केइ भायां तणे हुंती पक्ष, त्यांने सरधता साध सुदक्ष।
सुण २ रे श्रोता सुखकारी, जय सुयश सुधा रस भारी।
जय सुयश अमृत रस आगे, षट रस थी श्रेष्ट ए लागे॥ १॥
लालचन्दजी पाटणी आदि, जिके श्रद्धता था त्यानें साध।
ते भायां नें जय गुणधाम, समझाया विविध पर ताम॥ सु० २॥
तब त्यां अर्ज करी तिहवारो, अबके चोमासा री अवधारो।
आप म्हांने वंदणा देवो कराय, तो म्हे चन्द्रभाण नें द्यां वोसराय॥ सु० ३॥
जब गणि अग्यारी बात न्यारी रखाय, चोमासा री वंदणा कराई ताय।
तब ते भाया नम्यां जय पाय, आगला गुरु ने दियो वोसिराय॥ सु० ४॥
त्यां सतगुरु नो सिक्को धास्यो ताम, पछे फतेचंदजी आयो तिण ठाम।
पिण ते पहिला समझ गया लोक ताहि, तिण सूं तिणरी टीप्प न लागी कांय॥ सु० ५॥
पूछ्यो लालचन्दजी पाटणी ने जाई, आगला गुरु ने श्रद्धो थे कांई।
जद लालचन्दजी बोल्या वाय, जय श्रद्धै ज्यूं श्रद्धां म्है ताय॥ सु० ६॥
जद तसु आशा तुटी भायां री ताम, दोय रात्रि रहि तिण ठाम।
पछै चुरू कानी विहार तिण कीधो, तिणरो वंछित काम नहीं सिद्धो॥ सु० ७॥
जय स्वाम वुद्धि भंडारो, आगुंच आय कियो उपगारो।
तिण सूं खंडीरो जोर न लागो, वारू वुद्धि उत्पात अथागो॥ सु० ८॥
पछे जय पिण चुरू कानी सुविचार, तुरंत विहार कियो तिहवार।
तसु चुरू मांहि जइ ओलखाय, पाछा आया लाडणूं मांहि॥ सु० ९॥
पछे वोरावड़ में दर्शण दे ताहि, ऋषिराय नी आज्ञा मंगाय।
षट ठाणे लाडणूं सुविमास, कियो वाणुवे वर्ष चोमास॥ सु० १०॥
हिवे चउमासो उतर्‍यां चित्त धार, विदासर में आया सुविचार।
तिहां खालड़ सूं जीवोजी आय, मृगसर कृष्ण छठ तिथि ताहि॥ सु० ११॥
जीवाजी ने देइ संयम भार, वीदासर सूं करी नें विहार।
हरि दुर्ग मांहि मुनि आया, त्यां गणि दर्शन करि सुख पाया॥ सु० १२॥
वोरावड़ तार गणाधिप साथ सुजान, रह्या उगणीश रात्रि उनमान।
हेम दर्शन करि आज्ञा लेइ ताम, विहार कियो जयपुर कानी जाम॥ सु० १३॥
जयपुर एक मास रहि जिहवार, तिहां केइ भाया रे शंका थी तिवार।
तसु संक मेट विहार करी ताहि, हरिगढ़ थी मेड़ता मांहि॥ सु० १४॥

तिहां हेम दर्शन करी त्यांरे संग, अठाइस रात्रि रह्या मन रंग।
तिहां थी विहार करी पादु आय, कालु में हेम दर्शन कर बलि ताहि॥ सु० १५॥
पछे दोय साधां सु खेरवा मांही, स्वामीजी रा दर्शन किया सुखदाय।
इकवीसमी ढाल मझारो, कह्यो बाणुवे वर्ष तणो उपगारो॥ सु० १६॥

ढाल : २२

दोहा

त्यां अमीचन्दजी तिह समे, सात संत सूं जोय।
नाथद्वारे चोमास करी, जिहां आया अवलोय॥ १॥
इकतालीस बोलां तणी, गुलाबजी रे मन मांही।
संक पड़ी ते बोल सहु, लिख्या पत्र में ताहि॥ २॥
तास जाव जय दे करी, संक मेटी तिह ठाम।
प्रायछित दे तेह नूं, लिखत करायो ताम॥ ३॥
तिण में संत सतीयां तणी, जेह उतरती बात।
करवा जाव जीव लग, त्याग किया विख्यात॥ ४॥
पछे गणाधिप संग ही, आया सरीयारी मांही।
चोमास भोलायु जीत नें, बीकाणे ऋषिराय॥ ५॥
सिरीयारी सूं विहार करी, बीदासर में आय।
बीकानेर पधारिया, असाढ़ सित पख मांहि॥ ६॥

ढाल

[आश फली रे मेरी आश फली—ए देशी]

संवत अठारे त्राणू वर्षे, श्री जय बीकानेर चौमास।
मेरे स्वाम भला।
पट मुनिवर संगे सु विमास, थयुं त्यां अधिक सुवर्म उज्झास। मे०
स्वाम भला गुण ग्यान निला, तसु तप जप क्रिया गुण अधिक भिला॥ मे० १॥
तिहां रामसुख तपस्वी सुप्रसिद्ध, तेसठ दिन तप थोकड़ो कीध।
तपसी संत भला।
तिण द्वादश दिन पीयो उन्हो जल सार, शेष इक्यावन दिन चोविहार। त०
तपसी संत भला गुण सघन निला, सोहे तप जप क्रिया गुण अधिक भिला॥ त० २॥

वले कोदरजी तपसी तिहवार, छठ २ तप करतो इकधार। त०
करी गोचरी बहु संता नें सुजाण, एकलो असन जल देवे आण॥ त० ३॥
इस्या व्यावचिया मुनि जय संग, ज्यांरे कर्म काटण रो अधिक उमंग। त०
वलि जय वान सुधा रस धार, सघन झड़ी सम हिय धर सार।
ग्यानी संत भला॥ ४॥
नथमलजी बेद मुंहता आदि, बहु समज्या जन धर अहलाद। ग्या०
त्यां थी क्षेत्र थयो ए तंत, बहु जन जय गुण जश गावंत॥ ग्या० ५॥
हिवे चोमासो उतर्‍यां करी नें विहार, थली मांही कियो उपगार। ग्या०
खंडी थली में रहितो थो ताम, तिण सुं ऋषिराय आणां सु स्वाम॥ ग्या० ६॥
थली देश मांही रही ताय, भिन्न २ तिण नें दियो ओलखाय। ग्या०
तिण अवसरे मेवाड़ मझार, श्रीजीदुवारे गणि गुणधार॥ ग्या० ७॥
आसाढ़ मास ऋषिराय विशाल, श्री जय पर शुभ दृष्टि निहाल। ग्या०
परम वनीत हद नित विचार, जाणी गण वच्छल गुणकार॥ ग्या० ८॥
आचार संजम में कुशल अति जाण, प्रवचन में अति निपुण पिछाण। ग्या०
प्रग्यप्ति जे गणनी संभाल, करवा में अति निपुण निहाल॥ ग्या० ९॥
वलि संग्रह उपग्रह करवा प्रवीण, फुन चरण करण गुण में लहलीन। ग्या०
वलि धीर वीर अति जाण गंभीर, फुन गण प्रतिपाल विमल गुण हीर॥ ग्या० १०॥
इत्यादिक गुण जय में जाण गणिंद, लिखि निज कर अक्खर सुखकंद। ग्या०
स्वरूप शशी ने सूप्यां ताम, ते अक्खर इण विध अभिराम॥ ग्या० ११॥

युवराज पदवी नो पत्र

ढाल

[कलूजी के सुत प्यारो—ए देशी]

ॐ नमो सिद्ध सुख करणं, गुरु भिक्खू भारीमाल ताको सरणं।
गणीश्वर वच प्यारे।
ऋषि भिक्खु पाट भारीमालं, ऋषिराय पाट गुण मालं। ग०
वच प्यारे शासन सिणगारे, गणाधिप वच प्यारे॥ १॥
ऋषि जीतमल गुण वन्नं, युवराज पदवी स्थापनं। ग०
विनयवंत जाव जीव जाणं, चालसी ऋषिराय आज्ञा प्रमाणं॥ ग० २॥
बहु हरष स्वमत थी ए काम कीधो, बीजा नो जश इण में नही लीधो। ग०
एहवा अक्षर ऋषिराय गणनाथं, एक लघु पत्र लिखी निज हाथं॥ ग० ३॥

सूंप्या सरूप शशी ने स्वामी, कह्यूं चोमास उतर्यां हित कामी । ग०
ऋषि जीत मिल्या गुण गेहो, जद बात प्रगट करांला एहो ॥ ग० ४ ॥

ढाल

इम कहीनें ऋषिराय चोमास, श्रीजीदुवारे कियो विमास । ग्या०
जय मुनि थली सुं करीनें विहार, आया आसाढ़ में पाली गुणधार ॥ ग्या० १६ ॥
ए बावीसमी ढाल उदार, तिण में त्राणुंवे वर्ष नुं कह्यं अधिकार । ग्या०
करता मुनिवर अति उपगार, धरता गुण गण सघन अपार ॥ ग्या० १७ ॥

●

ढाल : २३

दोहा

पिण ऋषि जीत भणी जदा, दीधो पद युवराज ।
खबर नहीं इण वात नी, कियो प्रच्छन्न गणि ए काज ॥ १ ॥

ढाल

[म्हारा सासुजी रे पांच पुत्र कांइ दोय देवर दोय जेठ—ए देशी]

संवत् अठारे चोराणुवे जी कांई, पाली शहर सुप्रसिद्ध ।
पंच श्रमण सुं जय मुनि जी कांई, चउमासे जश लीध जी कांई ।
मुनिवर सिरमणी शोभता जी कांई, वारू जीत मुनि जयकार ।
वर ग्यान ध्यान वर रयण ना जी कांई, भरिया जसु भंडार जी कांई ॥ मु० १ ॥
तिहां रामसुखजी तपस्वी तदा जी कांई, कियो अडसठ दिन तप सार ।
तिण में एकादश दिन जल पीयो जी कांई, शेष सतावन दिन चौविहार जी कांई ॥ मु० २ ॥
त्यांरो दुक्कर तप अति देखनें जी कांई, अन्य मति स्वमति ताम ।
आश्चर्य चित पाया घणा जी कांई, करता अति गुणग्राम जी कांई ॥ मु० ३ ॥
विच में इकवार द्वादश दिन लगे जी कांई, जल नहीं पीव जिवार ।
द्वेषी श्रावक बाइस टोला तणा जी, ते पिण आय बैठा तिणवार जी कांई ॥ मु० ४ ॥
ने कहे हिवे पाणी पावो एहने जी कांई, एहवो तपसी दुक्कर कार ।
नहिं तुज मत ने मुज मत विषै जी कांई. यांरा तप ने करां नमस्कारजी कांई ॥ मु० ५ ॥

इम घणी हठ कीधी तदा जी कांई, जद तेरमें दिन जल पीध।
तिण चौमासे जिन धर्म नों बहुजी कांई, उद्योत थयो सु प्रसिद्ध जी कांई ॥ मु० ६ ॥
तिहां बे पूज्य बावीस टोला तणा जी कांई, त्यां सू चरचा थइ तिहवार।
तिहां फते थई जिन मार्ग नी जी कांई, छै तिणरो बहु विस्तार जी कांई ॥ मु० ७ ॥
हिवे चोमासो उतर्‍यां जी कांई, खेरवे आया स्वाम।
रामसुखजी रो शरीर तप जोग सुं जी कांई, कचो थो तिण सूं ताम जी कांई ॥ मु० ८ ॥
तिहां दोय साधां नै थापने जी कांई, जय तीन ठाणे तिहवार।
फलवधी बड़ी आय नें जी कांई, बाई सिरदारां ने जिहवार जी कांई ॥ मु० ९ ॥
दिक्षारी बात कढाई तदा जी कांई, साहाज देई श्रीकार।
पछे खीचन मे आया तिहां जी, आवे पदवी ना समाचार जी कांई ॥ मु० १० ॥

ढाल

[अलवेली गुजरी—ए देशी]

इह समय मुनि युग आवे, समाचार श्रेष्ट अति लावे ॥ इ० १ ॥
देश मेवाड़ में शोभावें, ऋषिराय तणे प्रस्तावें ॥ इ० २ ॥
पद युवराज तणो सुप्रभावें, कागद मुनि संग में लावें ॥ इ० ३ ॥
वलि गणपति इम फुरमावे, ए कागद इण प्रस्तावे ॥ इ० ४ ॥
तुझ बांचण आण नहीं थावे, जय ने सूंपीज्यो शुभ भावे ॥ इ० ५ ॥
इम कही वे मुनि ने पठावे, खास रुको खीचन में ल्यावे ॥ इ० ६ ॥
सूप्यों जय ने शुभ भावे, वलि मुख सूं समाचार कहावे ॥ इ० ७ ॥
गोचरी में आहार जे आवे, तसु पांती बगसीस करावे ॥ इ० ८ ॥
करो पांती बिना आहार जे भावे, तसु ए अभिप्राय जणावे ॥ इ० ९ ॥

ढाल

[म्हारा सासुजी रे पांच पुत्र कांई दोय देवर दोय जेठ—ए देशी]

अने छोटो कागद जय वांचनें जी कांई, जाण्यो युवराज पद मुझ दीध।
वले बड़ो कागद गणि हाथो रो जी, मेल्यो श्रमण साथ सुप्रसिद्ध जी कांई ॥ मु० २० ॥
तिण समाचार लिख्या इह विधे जी कांई, शिष्य जीतमल्ल सूं जान।
म्हारी सुखसाता वंचावज्यो जी कांई, थां उपर मुज सुविधान जी कांई ॥ मु० २१ ॥
दिन २ हेत विशेष घणुं घणुं जी कांई, छे जाणसी मन सुप्रसन्न।
पिण ताकिद सूं वेगो आवेजे जी, कीजे शरीर का अधिक सुयत्न जी कांई ॥ मु० २२ ॥

थां आयां काम काज होसी भलाजी कांई, आसी रसायण अधिक विशेष।
कसर नहीं छै किण ही बात री जी कांई, थारी म्हांरी सला छै एक जी कांई ॥ मु० २३ ॥
बाकी समाचार लघु कागद विषें जी कांई, तिके जाण लिजे मन मांही।
पिण अति ही वेगो आवज्यो जी कांई, ढील म कीजो काय जी कांई ॥ मु० २४ ॥
सरूप उपर म्हारी मरजी घणी जी कांई, सती दीपां जी नो जान।
थां सूं मन राजी छै घणो जी कांई, यां री वंछणा लीज्यो मान जी कांई ॥ मु० २५ ॥
उदेपुर उपगार कियो मोकलो जी, म्हांरे सहु जिन मग नो भार।
थां उपर छे एहवो जी, लिखी कागद अति श्रीकार जी कांई ॥ मु० २६ ॥
साधां रे साथ मेल्यो तिको जी, ते पिण बांच्यो जय मुनिराय।
पछे विहार करी खीचन थकी जी कांई, आया लोहावट रे मांही जी कांई ॥ मु० २७ ॥
तिहां त्रिण मुनि ने तो जय कह्यो जी कांई, थे तो घिरे २ आयजो ताम।
पोते विहार कियो वे मुनि थकी जी कांई, एहवो अभिग्रह कियो तिण ठाम जी कांई ॥ मु० २८ ॥
स्वामीजी रा दर्शन हुवै जीते जी, जिके ग्राम आवे इण माग।
दूजे दिन रही तिण ग्राम में जी, च्यारूं आहार भोगवणरा त्याग जी कांई ॥ मु० २९ ॥
एहवो अभिग्रह धारने जी कांई, जोधपुर थई पाली आय।
पछे खेरवे वांते होय नें जी कांई, दायलाणे रात्रि रह्या ताहि जी कांई ॥ मु० ३० ॥
जीलवाड़े केलवे इक २ निशा जी, रहि राजनगर करी आहार।
पछे श्रीजीदुवारे इक निशि रही जी, विहार करि आया शहर वाहर जी कांई ॥ मु० ३१ ॥
इतरे उदैपुर सूं पधारिया जी, ऋषिराय महाराज मुणिंद।
नगर समीप जय दर्शन करी जी, पाया अधिक हर्ष आनन्द जी कांई ॥ मु० ३२ ॥
पछे गणपति संगे आविया जी कांई, श्रीजीदुवारे मांही विख्यात।
पद युवराज दीधी तिका जी कांई, प्रसिद्ध करी तिहां वात जी कांई ॥ मु० ३३ ॥
ए ढाल भली तेवीसमी जी, तिण में पाया पद युवराज।
मुनि दिग्गावान अति दीपतां जी कांई, ज्यांरे मनवांछित हुवे काज जी कांई ॥ मु० ३४ ॥

कलश

द्वितीय खंड सुमण्ड मुनिवर, जीत कीर्त सुहामणी।
वर रीत समय सुन्याय विध २, वताय नें गुणी जन भणी।
मेवाड़ मरुधर दिल्ली मंडल, कच्छ गुजरात मालव थली।
वहु देश में वहु जन भणी, समजाविया जय मन रली ॥ १ ॥

यथा २ विहार करणेन भव्य जनानां प्रतिवोधिर्दत्ता यथा २ चतुर्मासाः कृताः यथा २ जिनमार्गस्योन्नति विधाय भव्यानां वैराग्यं उत्पाद्य चरित्र रत्नं दत्तं तद्गुण वर्णनो नाम द्वितीयः खंड समाप्तः

तृतीय खण्ड

ढाल : २४

दोहा

अरिहंत सिद्ध साधु भणी, विधि पूर्वक नमस्कार ।
चिहुँ नें करी दाख्यूं हिवे, तृतीय खंड अधिकार ॥ १ ॥
ग्यान दर्शन सम खंड वे, कह्या संक्षेप विचार ।
चारित्र सम हिवे तृतीय खंड, सुणो भविक सुखकार ॥ २ ॥
पद युवराज लह्यां पछै, विचर्‍या जिण २ देश ।
कियो उद्योत जिन धर्म नो, कहुं वात लव लेश ॥ ३ ॥
दिशावान पुन्यवान पोरसा, ऋषिराय गण इन्द ।
सुगुरु शिष्य जोड़ी भली, दीपे जीम रवि चंद ॥ ४ ॥
तिण अवसर मेवाड़ में, पुर मांहि मुनि पंच ।
रहितां गुलावजी रे शंका पड़ी, मोह उदे मन खंच ॥ ५ ॥
भीलाड़ा थी भोप जी, सिंघ करी मंडाण ।
दर्शन कीधा तेहनां, करे सेव गुण जाण ॥ ६ ॥
गुलाव तणी तप योग सूं, महिमा तिहां अत्यन्त ।
पिण दर्शन मोह उदे दियो, अजोग एक दृष्टंत ॥ ७ ॥
जिम कोइ साहुकार रे, घर में घाटो ह्वै ताम ।
उपर सूं काम चलाव ही, ते चले किता दिन काम ॥ ८ ॥
जाव दियो जव भोप जी, घाटो जाणे जेह ।
भेलो रहे नित्य तेह नें, स्यूं कहिणो कहो तेह ॥ ९ ॥

ढाल

[लाल हजारो को जामो विराजे चढ़वा तुरंगी घोड़ा रे ए—देशी]

एह वचन सुण गुलाव तणे भट, मोह उदय तव आयो रे ।
गणनां अवगुण बोलवा लागो, मन मांने ज्यूं वदे वायो रे ।
जोयज्यो रे मोह कर्म मयमंतो, करत जीवां प्रति जोरो रे ।
सम्यक्त चरण सु रयण अमोल, गमाय रुलावे घणेरो रे ॥ ज० १ ॥

भाई ईसर ऋषि गल गला थइ नें, घणुं वरज्यां रह्या बोलता तामो रे।
दूजे दिन वलि तिम हिज बोल्या, तब त्यांनें छोड़ी नें ऋषि रामो रे॥ ज० २॥
विहार करी ने श्रीजीदुवारे, पूज्य दर्शन करी सुविचारो रे।
गुलाब तणा समाचार सुणाया, जद ऋषिराय जीत गुणकारो रे॥ ज० ३॥
गणि युवराज सु अतिशय धारी, पर उपगारी भारी रे।
संदेह तिमिर घन पटल भवि कहिये, मेट करत उजियारी रे॥ ज० ४॥
आठ श्रमण संग विहार करी नें, कांकडोली गंगापुर होई रे।
कारोही आया सु बोल घणा तब, गुलाब संकोच्या सु जोई रे॥ ज० ५॥
तिहां भोपजी सिंघी पूज्य तणा तब, दर्शन करी कहे वायो रे।
गुलाब कहे मुझ च्यार बोलां री, संका है मन मांह्यो रे॥ ज० ६॥
सो हेमराज जी स्वामी पासे, समाचार मंगाय लो सोई रे।
ते कहे सो म्हारे कबूल है जद, उत्तर जय दियो जोई रे॥ ज० ७॥
थेटका है ए बोल च्यारूंई, कांइ समाचार मंगावां थांरो रे।
पछे बीजे दिन पुर में आवंता, ऋषि गुलाब कहवायो तिवारो रे॥ ज० ८॥
श्रमण एक जो आय कहे मुझ, म्हांरे स्वामी जी री सारी रे।
मर्य्यादा कबूल है तो स्हामा, पगां आय पड़ां इह वारी रे॥ ज० ९॥
जद जय कह्यो स्वामीजी री म्हांरे तो, कबूल छै मर्य्याद सदाई रे।
हिवे नवेसरु साधु मेल नें, यांने समाचार कहावां कांई रे॥ ज० १०॥
ऋषिराय महाराज ने कह्यू युवराजा, यांसूं आहार पाणी न्हाखणो तोड़ी रे।
जो इतरी करे तो बात है न्यारी, साहमा पगां पड़े मान मोडी रे॥ ज० ११॥
लोकां साधु मेलण री अर्ज करी अति, पिण मेल्यो नहीं मुनि तायो रे।
जद च्यारूं मांही एक साव तो, जीवराज मुनिरायो रे॥ ज० १२॥
एक कोस आसरे स्हामो, आई ने पगां लागो रे।
चोवीस मी ढाले पूज्य परम गुरु, पुर में आया महाभागो रे॥ ज० १३॥

●

ढाल : २५

दोहा

दुकानां में उतरथा, गणपति ने युवराज।
गुलाब प्रमुख नें नजीक ही, पूज्य भलो दवि पाज॥ १॥

ढाल

[सीता वभिखण नें कहे ए—देशी]

हिवे जय महाराज लोकां रा वृन्द में, वे वर्ष पहिला रो ताह्यो रे।
अवगुण बोलण रा त्याग किया ते, लिखत देखायो लोकां मांह्यो रे।
ए तो चरचा करवा जय अति सूरा, वलि कुमति करे चकचूरा रे।
समय धारणा बुद्धि बल पूरा, त्यांरा वाजे महि जश तूरा रे॥ १ ॥
गुलाबजी आय कहे जब जय ने, हुँ स्वाम भिक्षु ने सारो रे।
देव तीर्थंकर समान जाणु छुं, इम बोले वचन उदारो रे॥ ए० २॥
जब रास मांहिली गाथा घणेरी, संभलाई जय स्वामी रे।
अनेक दिवस नां दोष कहे तसु, इम निषेध्यो अंतरजामी रे॥ ए० ३॥

वार्त्तिका

घणा दिन पछे दोष कहे अवगुण बोले, तिण ने भिखणजी स्वामी कह्यो—
तिण नें इण विध घालणो कूड़ो, घणां बैठां देणी मुख धूड़ो।

ढाल

तव बहु रीस में आय बोल्यो, थे मुझ मुख धूल देण रो दाख्यो रे।
जद जय कह्यो थे ज्यांने तीर्थंकर सरिखा, जाणो त्यांहिज इम भाख्यो रे॥ ए० ४॥
जद कह्यो पहिलां तो हुवे, सांकड़ो मारग जेहो रे।
पाछे जो ढीलो पड़ जावे, तो किम माने मर्यादा तेहो रे।
जोयज्यो रे मोहकर्म अति जबरो, जीव भणी झखझोले रे।
तास उदय थी सतगुरु ने पिण, मन माने तिम बोले रे॥ ए० ॥ ५॥
जद जय दाख्यो वे वर्ष पहिलां थे, लिखत कियो इह रीतो रे।
तिण में अवगुणवाद बोलण रा, त्याग किया धर प्रीतो रे॥ ए० ॥ ६॥
जद तो कांई सांकड़ो हुंतो, हिवे ढिलो पड़ियो कांई रे।
जद कह्यो अवगुण बोलण रो डंड मुझ आसी, पिण माथो तो कटे नाहीं रे॥ ए० ७॥
तव बोल्या ऋषिराय इता वर्ष, थे भेला रही क्यूं कीधी ठगाई रे।
जद रीस में आय ने उचे शब्दे, उंधो अवलो बोल्यो घणो ताहिरे॥ ए० ८॥
पछे त्यां थी उठ ने चाल्यो ठिकाने, बीजे दिन फेर बोलवा लागो रे।
आयण रा ऋषि जीत भणी कह्यो, हूं गला तांइ भरियो अथागो रे॥ ए० ९॥
पिण म्हांरी कोइ श्रवण वालो नहीं, जद जय महाराज विचार्‌यो रे।
इण ने चिहुं चोड़े जाण लियो, हिवे समेटुं वात इहवारो रे॥ ए० १०॥

इम विचार संध्या प्रतिक्रमण, करी नें गणि आग्या लेई रे।
नेवां हेठे थइ गुलाब कने जय, तसु बात सुणी चित्त देई रे॥ ए० ११॥
न्यारा २ संता रा नाम लेइ ने, अवगुण बोल्यो अनेको रे।
पिण थांरी मुज ने खबर पड़ी नहीं, थांरे कपटाइ के संवेग विशेषो रे॥ ए० १२॥
इम दोय अढाई मुहर्त आसरे, मन री धाप काढी धारो रे।
जद समय देख जय मीठा वचन सूं, ठंडो पाड्यो तिहवारो रे॥ ए० १३॥
वलि च्यार बोलां रा जाब दिया, जद राजी हुवो तामो रे।
थे म्हारी सहु बात सुणी पण, न करी रीस इण ठामो रे॥ ए० १४॥
वलि विविध प्रकारे लेखो बतायो, दंड छः मासी लग थी धारो रे।
आहार पाणी तो तुटे नाहीं, दोष री थाप कियां तुटे आहारो रे॥ ए० १५॥
ए बात तणो विस्तार घणो छै, पिण संक्षेप थी इहां आखी रे।
पछे गणपति पे युवराज आवी, विबरा सुध सहु भाषी रे॥ ए० १६॥
पछे तीजे दिन व्यावचीयो अति, उदेचन्दजी तपस्वी ताह्यो रे।
तेह भणी विविध प्रकारे, एकांते समझायो रे॥ ए० १७॥
जद ते गुलाबजी थी फिर मंड्यो, जद पख तुटां ढीलो पड्यो ता ह्यो रे।
वलि जय विविध पणे समझायो, जद बोल्यो इम वायो रे॥ ए० १८॥
थारी प्रतीत है मुझ मन में, आराधक मुज कर देवो रे।
जद कहै प्रायछित किण उपर थापै, जद जय उपर थाप्यो ततखेवो रे॥ ए० १९॥
थे देवो सो कबूल है म्हारे, जद कहै पूज कने जाई रे।
वंदणा करनें प्रायछित मांगो, जद तीनूं जय संग आई रे॥ ए० २०॥
तद तिक्खुत्ता रो पाठ गुणी नें, बहु लोकां रा वृन्द मांयो रे।
वंदणा करी नें प्रायछित मांग्यो, जब जन बहु आश्चर्य पायो रे॥ ए० २१॥
सुमति सुधारी बुद्धि बल भारी, पद युवराज उदारी रे।
चक्रवर्ती रे सेन्यापति जिम, पूज्य रे जीत जयकारी रे॥ ए० २२॥
पछे तपस्वी गुलाब प्रमुख नें, दंड देई सुविशालो रे।
गणपति नें जय विहार कियो तब, कह्यो चोराणुंवे रो शेषे कालो रे॥ ए० २३॥
पणबीसमी ढाले पुर में पधास्या, ऋषिराय जीत मुनिराया रे।
तपस्वी गुलाब प्रमुख नी संका, मेट प्रमोद सु पाया रे।
जग जशधारी गणपति वंदो, वलि जय स्वाम मुनिन्दो रे।
आप तिरे वलि पर नें तारें, देइ ग्यान चरण सुखकंदो रे॥ ए० २४॥

ढाल : २६

: दोहा :

संवत अठारे पिचाणुंवे, कियो चोमास सुचंग।
सात श्रमण सूं लाडणूं, त्यां सरूप शशि पिण संग ॥ १ ॥
चतुर मास उतर्‌यां पछे, चुरू शहर मझार।
श्री जय स्वाम पधारिया, करता उग्र विहार ॥ २ ॥

ढाल

[कोरो कलसो जल भरयो—ए देशी]

कोदरजी रे पग रो कारण, पड़ियो जिन सूं पेख।
रहिणो विशेष हुवो जिहां, तिण उष्ण काल में देख।
सुगण भवि प्राणी रे वाणी, कांई जय मुनिवर गुण खाणी।
ज्यां रे जश अति महि में रे जाणी, मुनि मति श्रुति विमल सु नाणी।
भवि भाग्य दिशा थी रे आणी, कांई प्रगट्या उत्तम प्राणी ॥ १ ॥
रामसुख तपसी तिहां कांई, उदक तणे आगार।
दिवस पेंताली तप कियो वलि, आतापना अवधार ॥ सु० २ ॥
आषाढ़ सुध तिथि तीज नें कांई, तपसी पारणो कीध।
शुक्ल अष्टमी चलता रह्या, मुनि जश नगारो दीध ॥ सु० ३ ॥
कोदर तपस्वी पिण तदा, तप अठम २ अवधार।
करता आंबिल पारणे, बे द्रव्य तणो लिये आहार ॥ सु० ४ ॥
कहै म्हां पहिलां चलतो रह्यो, रामसुख अणगार।
इम कही अठम पारणे, करी सेर आसरे आहार ॥ सु० ५ ॥
सित दशम जन वृन्द में कांई, छती शक्ति तिहवार।
अति हठ करी जय मुनि कनें, कियो जाव जीव संथार।
अति पुन्यवंता रे प्राणी, कांई तपसी गुण मणि खाणी।
ज्यांरे जय मुनिवर सूं रे जाणी, कांई परम प्रीत पहिछाणी।
तो अंत समे लग रे आणी, तसु साहाज दियो सुखदाणी ॥ ६ ॥
श्रावण विद एकम दिने, सीझ्यो तपसी नों अनसन।
चवदे वरस रे आसरे, तप कियो तीन सहस्र दोय दिन ॥ अ० ७ ॥
काकड़ाभूत तपस्वी बिहुं, त्यांने ठेठ उतारया पार।
चुरू चोमासो छिन्नूए, कियो चिहुं ठाणे गुणकार ॥ सु० ८ ॥

चोमासो उतर्‌यां हिवे कांई, शहर रामगढ़ होय।
वीदासर थई लाडणूं कांई, आया जय अवलोय ॥ सु० ९ ॥
ऋषिराय महाराज जय कनें, मेल्या कृपा करी वे संत।
हिवे विहार करी लाडणूं थकी, आया मारवाड़ मतिवंत ॥ सु० १० ॥
पूज्य महाराज नां पाली मझै कांई, दर्शन करी सुविचार।
पछे पिपाड़ तांई गणिराज रे कांई, साथ रही श्रीकार ॥ सु० ११ ॥
पछै आग्या ले गणपति तणी, आया सोजत होय मेवाड़।
बोध पमाय भव्य जीव नां, दे अन्तर नयन उघाड़ ॥ सु० १२ ॥
ऋषि कर्मचन्द राम ने कांई, आंबावती चौमास।
भोलाय मुनि चिहुं संग ले, आया चंदेरे सुविमास ॥ सु० १३ ॥
तिहां लालजी ने दिक्षा भली, किया देवा तणो उपाय।
स्त्री कहे चोमासो उतर्‌यां, आग्या देसूं ताहि ॥ सु० १४ ॥
उदियापुर तब आविया, आगे चनणांजी तिण ठाम।
हुंता गोघुन्दे जाय, कियो चोमास सुधाम ॥ सु० १५ ॥
ए छवीसमी ढाल में कांई, सास्या वे तपस्यां रा काम।
चुरु चोमासो कर आवीया, जय उदियापुर गुण धाम ॥ सु० १६ ॥



ढाल : २७

दोहा

संवत अठारे सत्ताणूवे, अधिको धर्म उझास।
उदियापुर जय महा मुनि, चिहुँ ठाणे चोमास ॥ १ ॥
मंदिर पंथी त्यां हुंता, मोतीचन्दजी आदि।
चरचा थई त्यां सु तदा, सुणो तास संवाद ॥ २ ॥

ढाल

[स्वामी सरूप सुखकारी—ए देशी]

जय पूछ्यो महावीर स्वामी रो, देवानंदा री जाग।
कुक्षि मांहि सुं साहरण कियो त्यां, कल्पसूत्रे कहि दाग रे।
स्वामी जीत मुनि जग धागे रे।
त्यांरी बुद्धि उत्पात उदारी रे, मेल्या समय न्याय सुविचारी रे ॥ स्वा० १ ॥

साहारण कियां पहिल प्रभू जाण्यो, मुज साहरण हुस्यै जेहो।
साहरण कियां पछै जाण्यो मुज, साहरण हुवो एहो ॥ स्वा० २ ॥
अने साहरण वेला नवि जाण्यो, मुझ साहरण हिवड़ा ह्वै छै।
कल्पसूत्र मांहि इम आख्यूं, हिवे धूर अंग में जिन कहे छै रे ॥ स्वा० ३ ॥
कह्यूं द्वितीय स्कंध पनर में अध्ययने, साहरण हुवा पहिला पहिछाण्यो।
साहरण हुवा पछे ने साहरती वेलां, ए तीनूं काल में जाण्यो रे ॥ स्वा० ४ ॥
इम आचारंग में तो वर्तमान काले, जाण्यो कह्यो उदारो।
अनें कल्पसूत्र में वर्तमान काले, न जाण्यो कह्यो विचारो रे ॥ स्वा० ५ ॥
ते माटे कल्पसूत्र में कही ते, बात साची के नाहीं।
जद मोतीचन्दजी देहरा पंथी, बोल्यो इह विव त्यांहि रे ॥ स्वा० ६ ॥

यतनी

इम तो सूत्र मांहि पिण ताम, वातां विषंवाद बहु ठाम।
समवायंग में अवलोय, आवती चोवीसी मांही जोय ॥ ७ ॥
कृष्णना पाछिल भवना नाम मांहि, तेरमो नाम कह्यो छै ताहि।
अने किण ही सूत्र में कह्यो आम, ते होसी बारमो अमम जिन नाम ॥ ८ ॥
जद जय समवायंग खोल्यो ताम, जद देख्यो कृष्ण नो तेरमो नाम।
मोतीचन्द कहे कृष्ण नो पेख, ए तेरमो नाम कह्यो ल्यो देख ॥ ९ ॥
जद ऋषि जय कह्युं जिहवार, कृष्ण नाम कह्यूं ते आगे अवधार।
नाम द्वादश छै के इग्यार, इम कही नाम गिण्या तिहवार ॥ १० ॥
सो आगे वारे निकल्या नाम, इम पणवीस नाम थया ताम।
चोबिस जिनना पूर्व भव ना जोय, नाम में पणवीस नाम किम होय ॥ ११ ॥
जीव तो चोबीस जगीस, अने ए नाम थया पणवीस।
ते भणी एकण रा बे नाम, जद मोतीचन्दजी बोल्यो ताम ॥ १२ ॥
किण जिन नां इहां बे नाम, जद उत्तर दियो जय स्वाम।
अंतगढ़ में श्री नेमीनाथ, कह्यो कृष्ण भणी सुविख्यात ॥ १३ ॥
थासी आवती चोविसी मांय, बारमो अमम नाम जिनराय।
ते भणी अमम नाम रे स्थान, कृष्ण नाम हुवे सुविधान ॥ १४ ॥
ते माटे कृष्ण नाम थी धुर जोय, शेप नाम विषे अवलोय।
संभवे एक जीवरा बे नाम, तिण सुं कृष्ण होसी बारमां जिन ताम ॥ १५ ॥
जिम लोगस्स में अवलोय, नवमा जिनवर ना नाम दोय।
तिम अमम पहिला नाम में जोय, एकण का नाम बे होय ॥ १६ ॥

ए उत्तर सुण ने ताहि, मोतीचन्द नें जाब आयो नांहि।
ज्यां त्यारां मत रा अठिरा बहु जन, सुण पाया चिमत्कार अति मन ॥ १७ ॥
तब मोतीचन्दजी तिह ठाम, नरमाइ करी बोल्यो ताम।
तेरे नामा में किणरा बे नाम, जद उत्तर दियो जय स्वाम ॥ १८ ॥
इसी विगत सूत्र में नांही, वलि ते बोल्यो कर नरमाइ।
आपरे धारणा ह्वै जो कोय, हिवड़ा सोइ बतावो मोय ॥ १९ ॥
जद उत्तर दियो जय स्वाम, आनंद ने सुनंद बे नाम।
ए एक जीवरा हुवै एहवी, बडेरां री धारणा ए लेवी ॥ २० ॥

ढाल

पछे उठनें गयो ठिकाणे, ते मोतीचंद विख्यातो रे।
कष्ट हुवो ते शहर में, ठाम २ विस्तरी बातो रे ॥ स्वा० २१ ॥
जिन मार्ग नो उद्योत हुवो बहु, अति उद्यमी आप उदारो।
वखाण वाणी तप जप करी, तारे बहु नर नारो रे ॥ स्वा० २२ ॥
ढाल भली ए बीस सप्तमी, तिण में कही चरचा री बातो रे।
हिवे सरदारां जी चरण लेण ने, आवे ते सुणो उदातो रे ॥ स्वा० २३ ॥

●

ढाल : २८

दोहा

सिरदारां जी इह समे,, अति हठ करि अवलोय।
फलवधी सूं आग्या लेइ, सासरियां री जोय ॥ १ ॥
चुरू जइ नें आविया, उदियापुर अवधार।
काती विद पंचम आसरे, चरण लेण श्रीकार ॥ २ ॥

ढाल

[नारगढ़ ले चालो वनांजी अव तो जयपुर देखालो जी कांई अ० २—ए देशी]

हिवे उतर्यां चौमास मुनिवर, मृगसर विद एकम धारी जी कांई। मृ०।
शहर बाहिर रह्या विहार करी जय, महियल भाग्य दिशा भारी जी कांई। म०।
पद युवराज उदारी २, मुनि जय चरण करण गुण बलिहारी जी कांई। च०।
शासन भार धुरा दृढ दहिवा, धोरी जिन जसधारी ॥ १ ॥

बीज दिवस रह्या कोस दिवाणी, मेल्या सती चनणा त्यां सुखकारी जी कांई । स० ।
गोघुन्दा थी दोय आर्या नें, तीज थेट आया धारी जी कांई २ ॥ प० २ ॥
सेठ जोरावरमल जी नी बाड़ी में, रह्या तीज दिवस जय जशधारी जी कांई । ती० ।
सिरदारांजी नी हिवे भवियण, कहूं संक्षेप कथा भारी जी कांई । क० ।
चरण महोछब भारी २, सतीय सिरदार तणो अति श्रीकारी जी कांई । स० ।
अधिक हगामे परम हरष मन, करता जन घर हुंसियारी ॥ प० ३ ॥
सुलतानचन्द जी सेठ ढढा घर, सासरो फलववी श्रीकारी जी कांई । सा०
चुरू पिहर जेतरूप घर, प्रवर जाति जसु कोठारी जी कांई ॥ प० ४ ॥
वहु ऋधि बहु परिवार छांड़ सती, परम वैराग्य हिये धारी जी कांई । प०
जय मुनि पे चारित्र लेवा, सेवा सखर करी भारी जी कांई ॥ प० ५ ॥
उदयापुर में उमंग धरी जन, एक मास लग अवधारी जी कांई । ए०
अति हठ नित्य जिमावत घर २, थइ चोथ दिवस दिक्षा त्यारी जी कांई ॥ प० ६ ॥
पवर पालकी मांहि वैसाण्या, शिवका नें अति सिणगारी जी कांई । शि०
गज सिणगार्या आगल चाले, वलि पल्टन हय कोतल भारी जी कांई ॥ प० ७ ॥
स्वमति अन्यमति मिनष हजारां, वलि गावत गीत सुहव नारी जी कांई । गा०
संग विविध बाजित्र नी ध्वनि अति उठत, होवत शब्द मनोहारी जी कांई ॥ प० ८ ॥
सती विहुं पास चामर विजंता, माणकचन्द जी भंडारी जी कांई । मा०
फोजमल ऋषभदास प्रमुख बहु, होडा होड सूं तिहवारी जी कांई ॥ प० ९ ॥
वहु मंडाण पुला के मारग, तरु अंब पंच तिहां भारी जी काई । त०
तेह तरु तल चोथ दिवस जय, दिक्षा दीवी जयकारी जी कांई ॥ प० १० ॥
लाडू अने नारेल पतासी, वांट्या हे बहु तिहवारी जी कांई । बां०
ए सावद्य कार्य उमंग धरी जन, करता मोछव्र धर प्यारी जी कांई ॥ प० ११ ॥
दिक्षा दे हिवे विहार करी पंचम, गाम चंदेरे गुणकारी जी कांई । गा०
आवी मुनि दियो लालजी नें तव, चरण रयण महा यशधारी जी कांई ॥ प० १२ ॥
दोय पुत्र नें दोय बंधव फुन, तज दिवी मुनि वलि नारी जी कांई । त०
विद छठ चरण देइ पछे आया, गोघुन्दे जय जशधारी जी कांई ॥ प० १३ ॥
त्यां चनणाजी ने दर्शन देने, दिवस आठमें अवधारी जी कांई । दि०
वड़ी दिक्षा सिरदारां भणी दे, आया श्रीजीद्वारे श्रीकारी जी कांई ॥ प० १४ ॥
पछे घाटे उतर नागोर शहर में, किया गुरु दर्शन जय गुणकारी जी कांई । कि०
सतिया संग सिरदार विजे दिन, दर्शन कर लह्या सुख भारी जी कांई ॥ प० १५ ॥
तिहां रूप कुंवर ने चरण देइ, ऋषिराय गणि अतिशय जशधारी जी कांई । ऋ०
डीडवाणे आय कियो सिघाड़ो, सिरदारां नो सुखकारी जी कांई ॥ प० १६ ॥

सुखांजी कनला ले ऋद्धुजी, वलि जेतांजी नें जिहवारी जी कांई। ब०
दीपांजी कनें लेनें सूंप्या, सिरदार ने सुखकारी जी कांई॥ प० १७॥
कल्प नावे त्यां लग सिंघाड़ो, कियो ऋधू नामे अवधारी जी कांई। कि०
यां ने कल्प आयां सिंघाड़ो, सिरदार तणो है सुखकारी जी कांई॥ प० १८॥
सिरदारांजी नें चोमासो, भोलायो डीडवाने धारी जी कांई। भो०
युवपद नें जयपुर चोमास भोलायो, अठाणुंवे वर्ष नो भारी जी कांई॥ प० १९॥
आप चोमास कियो लाडणूं, ए ढाल अठाबीसमी भारी जी कांई। ए०
सतीय सिरदार तणी कही दिक्षा, वलि विचरया जय जशधारी जी कांई॥ प० २०॥



ढाल : २९

दोहा

समत अठारे अठाणुंवे, जयपुर शहर चोमास।
व्याख्यानादि उद्यम बहु, षट मुनिवर जय पास॥ १॥
वासी फलवधी ना तिहां, नवलां नें सु विचार।
विविध उपदेश देई करी, किया संजम नें त्यार॥ २॥
भागचंद जंवरी भणी, वलि हीरालाल नें ताहि।
उपदेश दियो ऋषिराय ना, करो दर्शन सुखदाय॥ ३॥
विनती अर्ज कियां इहां, पधार जाय जो स्वाम।
तो श्रमण सत्यां ना मास इक, हुवै जयपुर मांहि हगाम॥ ४॥
पछै उणां दर्शन किया, लाडणुं शहर मझार।
अर्ज करी जयपुर तणी, विविध पणे सु विचार॥ ५॥
चोमासो उतरयां पूज्य नां, दर्शन सिरदारां कीध।
जेतांजी ने तो तदा, दीपांजी ले लीध॥ ६॥

ढाल

[पारसदेव तुम्हारा दर्शन भाग्य भला सोही पावे हो—ए देशी]

हिवे ऋषिराय महाराज गणाधिप, बहु मुनि संग उदारो हो।
दीपांजी सिरदारां प्रमुख, बहु सतियां परिवारो हो।

श्री ऋषिराय गणीश्वर गिरवा, सुरगिरि जेम सधीरा हो।
सुरगिरि जेम सधीरा मैं वारी जाउं, गुण उज्वल जिम हीरा हो॥ श्री० १॥
गणपति जयपुर शहर पधारे, ए खबर पड़्यां अवधार हो।
सांगानेर थी जय तव आवी, किया दर्शन जयपुर वार हो॥ श्री० २॥
आया गणपति नें जय शहर में साथे, पछे मृग सित चोथ गणिराय हो।
बहु मोछव नवलां ने चारित्र, दियो मोहनवाड़ी मांही हो॥ श्री० ३॥
तिहाँ दिक्षा दे ऋषिराय गणाधिप, नवलां ने तिहवारो हो।
सिरदारां नें सूंपी जयपुर में, रह्या एक मास अवधारो हो॥ श्री० ४॥
पछे गणपति नें युवराज प्रमुख, जयपुर सूं करी विहार हो।
सिकर शहर फतेपुर थइ नें, आया चुरु में सुविचार हो॥ श्री० ५॥
गणि चुरू में रही दिवस कितायक, करता बहु उपगार हो।
बीदासर नें लाडणूं कानी, कियो विहार गुणकार हो॥ श्री० ६॥
पछे संवत अठारे निन्नाणुंवे वर्षे, बीदासर चौमास हो।
श्री ऋषिराय महाराज रे साथे, इग्यारे संत गुण राश हो।
श्री ऋषिराय महाराज तणी जय, करता तव पर्युंपासं हो।
करता तव पर्युंपासं म्है वारी जाउं, आणी चित्त हुलासं हो॥ श्री० ७॥
श्रमणी बड़ रंगु सिरदारां, प्रमुख आठ सुविमासं हो।
जव कुंवारी कन्या हरखु सीखी, जाणपणो जय पासं हो॥ श्री० ८॥
मास आसोजे हरखु नें गणि, संजम दे सुविमासं हो।
सती सिरदारां ने सूंप्या हिवे, उतरीयां चउमासं हो॥ श्री० ९॥
हरखुजी नां मा सिणगारां, तेहने मृगसर मासं हो।
गणपति दिक्षा देइ करी, सूंपी सिरदार भणी सुविमासं हो॥ श्री० १०॥
फिर सुखां भणी सूप्या ऋधू जी, तब सिरदारां सुविमासं हो।
नवलां नें सिणगारां हरखू, रह्या चिहुं ठाणे गुण रासं हो॥ श्री० ११॥
हिवे उगणीसे सईके चौमासो, लाडणूं शहरं मझार हो।
युवराजा जय पट मुनिवर सूं, त्यां कियो सखर उपगारं हो।
परम विनीत जीत नीत हद, युवराजा जयकारं हो।
युवराजा जयकारं म्है वारी जाउं, गुणमणि रयण भंडारं हो॥ श्री० १२॥
तिहां जाति गोलछा तेजपाल नें, कियो संजम ने त्यारं हो।
बहु ग्यान भणाय मृगसिर विद एकम, जय दियो संजम भारं हो॥ श्री० १३॥
हिवे उगणीसे एक चौमासो, शहर जयपुर श्रीकारं हो।
आसरे मुनि पट अति ही ओपे, सेवा करता सारं हो॥ श्री० १४॥

चोमास उतर्ख्यां हरिगढ़ मांहिं, बाजोली रा सुविचारं हो।
मा सहित वींजराज बालक वय, लियो जय पे संयम भारं हो ॥ श्री० १५ ॥
पछे मेवाड़ में गणपति नां जय, करी दर्शन दीदारं हो।
सुप्रसन्न चित्त अति सेवा करता, बरवा शिव वध्रु सारं हो ॥ श्री० १६ ॥
उणतीसमी ढाले तीन चोमासा, आख्या अधिक उदारं हो।
वलि शेषे काल तणो संक्षेपे, कह्यो संबंध विचारं हो ॥ श्री० १७ ॥

ढाल : ३०

दोहा

उगणीसे बीये वर्ष, साथ मुमुक्षु सात।
कृष्णगढ़ मांहे कियो, चतुरमास विख्यात ॥ १ ॥
त्यां चउमासे लघु नेमजी, कोड़ीमाल थी आय।
वनिता तज जय मुनि कनें, लियो चरण सुखदाय ॥ २ ॥
तिहां संचेती तेजमल्ल, पालेचा जेठमल।
प्रमुख केयक समभिया, छोड़ मिथ्यात नो सल्य ॥ ३ ॥
हिवे चोमासो उतर्ख्यां, दिक्षा ग्रही हमीर।
युवराजा जय मुनि कनें, तिरण अथग भव नीर ॥ ४ ॥
हिवे दर्शन गणपति तणां, किया धामली मांहि।
पछे शहर पाली मझे, आया अति ओछाह ॥ ५ ॥
शहर बाहिर गणिराज संग, मशीत पे मुनिराज।
सप्त वीस मुनि पूर्व्व उत्तर, दिशि ले रह्या विराज ॥ ६ ॥
गुमानजी रे गण मांहिलो, कनीराम कहिवाय।
अण सहितो जिन मग सुजश, आयो तिहां चलाय ॥ ७ ॥
चरचा करवा कारणे, जय मुनिवर जिहवार।
कष्ट कियो जन वृन्द में, तेहनो बहु विस्तार ॥ ८ ॥

ढाल

[निकी सिलड़ली रे लएहि—ए देशी]

संवत उगणीसे वर्ष तीये, श्रीजीद्वारे स्वाम।
हेमराज मुनि संग चौमासो, द्वादश मुनि गुणधाम।
सुणता जबर गुणी जय स्वाम।

जवर गुणी जय स्वाम, ज्यांरा नित्य करिये गुणग्राम।
तो लहे अविचल सुख आराम, वारूं चिंतामणी सम नाम ॥ सु० १ ॥
तिहां श्री भिक्षु महा मुनिंद नां, दृष्टांत अति अभिराम।
हेम ऋषि रे हिवे धारणां, ते निशि याद करावे ताम ॥ सु० २ ॥
हेम ऋषि रे पास जय दिन रा, लिखीया पत्र मझार।
अति सुंदर अक्षर सुघड़ पणो वर, वचन कला सुविचार ॥ सु० ३ ॥
जय मुनि उद्यम करी चौमासे, चीज करी हद त्यार।
समण सत्यां रे काम आवे बहु, सुण पावे जन चमत्कार ॥ सु० ४ ॥
तिण ही वर्ष ऋषिराय गणाधिप, जयपुर शहर चोमास।
अश्व की जाति चोट लगायां, उतर गयो कर तास ॥ सु० ५ ॥
साहसीक पणे सही वेदनां, मुनि कीधा बहु उपचार।
चैत्र शुक्ल चउदश लगे, गणि नो रहिणो हुवो सुविचार ॥ सु० ६ ॥
तिहां जय आदि बहु समण, किया दर्शण जयपुर मांहि।
दीपांजी आदि चोमासे था भेला, ते पिण रह्या चेत लग ताहि ॥ सु० ७ ॥
चैत्री पूनम विहार कियो गणि, पछे श्रमण सत्यां नो विहार।
चोके वर्ष चौमास करायो जयनो, जयपुर शहर मझार ॥ सु० ८ ॥
सप्त मुनि सूं चोमास जयपुर में, त्यां छोटूजी मोटे मंडाण।
मोहनवाड़ी मुनि जय पे लियो, संजम उद्यम आण ॥ सु० ९ ॥
तिहां धुर अंग ना प्रथम श्रुतस्कंध नी, करी जोड़ आधी उनमान।
पछै चोमास उतर्‌यां गणपति नां, किया दर्शन जय गुण खाण ॥ सु० १० ॥
पछै संवत उगणीसे वर्ष पांचे, कियो उदियापुर चोमास।
आसरे षट मुनिवर सु जय अति, करता ग्यान अभ्यास ॥ सु० ११ ॥
त्यां प्रथम स्कंध नी जोड़ करी पूर्ण, वलि उद्यम विविध प्रकार।
हिवे चोमासो उतर्‌यां विहार करी, आया वड़े गाम सुविचार ॥ सु० १२ ॥
त्यां नाथुजी ना माता वनिता ने, समझावी विविध पर स्वाम।
बहु हेतु युक्ति करी नें दिक्षा री, आग्या लेई गुणधाम ॥ सु० १३ ॥
पछै पदराड़े ग्राम आया जय स्वामी, नाथुजी नें तिहवार।
दिक्षा देइ राणपुरे थइ, आया मरुधर देश मझार ॥ सु० १४ ॥
नाथांजी रे गुढे गणपति नां, दर्शन किया जय स्वाम।
पछे गणाधिप साथे मुनि जय, आया थली देश गुणधाम ॥ सु० १५ ॥
ढाल भली ए तीसमी तिण में, दाख्या तीन चोमास।
हिवे देश थली उपगार कियो ते, सांभलो आण हुलास ॥ सु० १६ ॥

ढाल : ३१

दोहा

उगणीसे छके वर्ष, षट ठाणे गुणखाण ।
बीकानेर मुनि जय कियो, अधिको धर्म मंडाण ॥ १ ॥
सघन झड़ी सम स्वाम नी, सुणी वान सुखकंद ।
जाति राखेचा अति जबर, मदनचंद गुण वृन्द ॥ २ ॥
तसु लघु बंधु फकीरचन्द, ए राज्य मान अवधार ।
संसार में अति दीपता, समझ्या अति श्रीकार ॥ ३ ॥
वलि समझ्या केई अवर, थयो अधिक उपगार ।
चोमासो उतस्यां किया, दर्शन जय गुणकार ॥ ४ ॥

ढाल

[भलां नें पधारचा हो पार्श्व संतानिया जी—ए देशी]

दर्शन करी विचस्या थली देश में रे, पछे ऋषिराय महाराज ।
चोमास करण पधास्या जयपुर रे, गणि तरण तारण गुण जाज ।
धन्य २ जय मुनि ग्यान गुणोदधि रे, सुरगिर जेम सधीर ।
अथग भवोदधि पार उतारवा रे, उद्यमी अति सूरवीर ॥ ध० १ ॥
ऋषि जीत भणी चोमास भोलावियो रे, बीदासर सुख वास ।
जद असाढ़ बीदासर आविया रे, करवा नें चोमास ॥ ध० २ ॥
बीकानेर थकी इह अवसरे रे, मदनचंदजी जोय ।
ऋषिराय समीपे कराई विनती रे, ऋषि जीत भणी अवलोय ॥ ध० ३ ॥
बीकानेर चोमास कराविये रे, अवरके अवलोय ।
इसो ही अवसर छै तेह थी इहां रे, ए अर्ज मानीजे मोय ॥ ध० ४ ॥
जद गणिराज हुक्म दियो जय भणी रे, सरूपचंद मुविमास ।
दिक्षा मांहि वड़ा ज्यांरे साथ ही रे, कल्पै तिहां चोमास ॥ ध० ५ ॥
ए समाचार आया बीदासर में जय पे जदा रे, जद विहार करण थया त्यार ।
असाढ़ मास लुवां अति आकरी रे, तपे तावड़ो अति तिह्वार ॥ ध० ६ ॥
और साधां रो मन नहीं विहार थी रे, अति तप्त देख असराल ।
बीदासर रा श्रावक पिण तिह अवसरे रे, बहु कीधी अरज मुविशाल ॥ ध० ७ ॥
छै स्वामीजी री आग्या बीकानेर की रे, पिण काढो गलि इहां कोय ।
जद ऋषि जीत कह्यो गली तो इहां रे, कोइ हाथी काढे अवलोय ॥ ध० ८ ॥

जवर गुणी जय स्वाम, ज्यांरा नित्य करिये गुणग्राम।
तो लहे अविचल सुख आराम, वारूं चिंतामणी सम नाम ॥ सु० १ ॥
तिहां श्री भिक्षु महा मुनिंद नां, दृष्टांत अति अभिराम।
हेम ऋषि रे हिवे धारणां, ते निशि याद करावे ताम ॥ सु० २ ॥
हेम ऋषि रे पास जय दिन रा, लिखीया पत्र मझार।
अति सुंदर अक्षर सुघड़ पणो वर, वचन कला सुविचार ॥ सु० ३ ॥
जय मुनि उद्यम करी चौमासे, चीज करी हद त्यार।
समण सत्यां रे काम आवे बहु, सुण पावे जन चमत्कार ॥ सु० ४ ॥
तिण ही वर्ष ऋषिराय गणाधिप, जयपुर शहर चोमास।
अश्व की जाति चोट लगायां, उतर गयो कर तास ॥ सु० ५ ॥
साहसीक पणे सही वेदनां, मुनि कीधा बहु उपचार।
चैत्र शुक्ल चउदश लगे, गणि नो रहिणो हुवो सुविचार ॥ सु० ६ ॥
तिहां जय आदि बहु समण, किया दर्शण जयपुर मांहि।
दीपांजी आदि चोमासे था भेला, ते पिण रह्या चेत लग ताहि ॥ सु० ७ ॥
चैत्री पूनम विहार कियो गणि, पछे श्रमण सत्यां नो विहार।
चोके वर्ष चौमास करायो जयनो, जयपुर शहर मझार ॥ सु० ८ ॥
सप्त मुनि सूं चोमास जयपुर में, त्यां छोटूजी मोटे मंडाण।
मोहनवाड़ी मुनि जय पे लियो, संजम उद्यम आण ॥ सु० ९ ॥
तिहां धुर अंग ना प्रथम श्रुतस्कंध नी, करी जोड़ आधी उनमान।
पछै चोमास उतस्यां गणपति नां, किया दर्शन जय गुण खाण ॥ सु० १० ॥
पछै संवत उगणीसे वर्ष पांचे, कियो उदियापुर चोमास।
आसरे षट मुनिवर सु जय अति, करता ग्यान अभ्यास ॥ सु० ११ ॥
त्यां प्रथम स्कंध नी जोड़ करी पूर्ण, वलि उद्यम विविध प्रकार।
हिवे चोमासो उतस्यां विहार करी, आया बड़े गाम सुविचार ॥ सु० १२ ॥
त्यां नाथुजी ना माता वनिता ने, समझावी विविध पर स्वाम।
वहु हेतु युक्ति करी नें दिक्षा री, आग्या लेई गुणधाम ॥ सु० १३ ॥
पछै पदराड़े ग्राम आया जय स्वामी, नाथुजी नें तिहवार।
दिक्षा देइ राणपुरे थइ, आया मरुधर देश मझार ॥ सु० १४ ॥
नाथांजी रे गुढे गणपति नां, दर्शन किया जय स्वाम।
पछे गणाधिप साथे मुनि जय, आया थली देश गुणधाम ॥ सु० १५ ॥
ढाल भली ए तीसमी तिण में, दाख्या तीन चोमास।
हिवे देश थली उपगार कियो ते, सांभलो आण हुलास ॥ सु० १६ ॥

ढाल : ३१

दोहा

उगणीसे छके वर्ष, षट ठाणे गुणखाण।
बीकानेर मुनि जय कियो, अधिको धर्म मंडाण ॥ १ ॥
सघन झड़ी सम स्वाम नी, सुणी वान सुखकंद।
जाति राखेचा अति जबर, मदनचंद गुण वृन्द ॥ २ ॥
तसु लघु बंधु फकीरचन्द, ए राज्य मान अवधार।
संसार में अति दीपता, समझ्या अति श्रीकार ॥ ३ ॥
वलि समझ्या केई अवर, थयो अधिक उपगार।
चोमासो उतर्‍यां किया, दर्शन जय गुणकार ॥ ४ ॥

ढाल

[भलां नें पधार्‍या हो पार्श्व संतानिया जी—ए देशी]

दर्शन करी विचर्‍या थली देश में रे, पछे ऋषिराय महाराज।
चोमास करण पधार्‍या जयपुर रे, गणि तरण तारण गुण जाज।
धन्य २ जय मुनि ग्यान गुणोदधि रे, सुरगिर जेम सधीर।
अथग भवोदधि पार उतारवा रे, उद्यमी अति सूरवीर ॥ ध० १ ॥
ऋषि जीत भणी चोमास भोलावियो रे, बीदासर सुख वास।
जद असाढ़ बीदासर आविया रे, करवा नें चोमास ॥ ध० २ ॥
बीकानेर थकी इह अवसरे रे, मदनचंदजी जोय।
ऋषिराय समीपे कराई विनती रे, ऋषि जीत भणी अवलोय ॥ ध० ३ ॥
बीकानेर चोमास कराविये रे, अवरके अवलोय।
इसो ही अवसर छै तेह थी इहां रे, ए अर्ज मानीजे मोय ॥ ध० ४ ॥
जद गणिराज हुक्म दियो जय भणी रे, सरूपचंद सुविमास।
दिक्षा मांहि वड़ा ज्यांरे साथ ही रे, कल्पै तिहां चोमास ॥ ध० ५ ॥
ए समाचार आया बीदासर में जय पे जदा रे, जद विहार करण थया त्यार।
असाढ़ मास लुवां अति आकरी रे, तपे तावड़ो अति तिहवार ॥ ध० ६ ॥
और सावां रो मन नहीं विहार थी रे, अति तप्त देख असराल।
बीदासर रा श्रावक पिण तिह अवसरे रे, वहु कीधी अरज सुविशाल ॥ ध० ७ ॥
छै स्वामीजी री आग्या बीकानेर की रे, पिण काढो गलि इहां कोय।
जद ऋषि जीत कह्यो गली तो इहां रे, कोइ हाली काढ़े अवलोय ॥ ध० ८ ॥

यां सतगुरु नी मुरजी उपरंत ही रे, कोइ करणी नावे काम।
लोकां हठ अति कीधी पिण मानि नहीं रे, जद उदास थया अति ताम ॥ ध० ९ ॥
तब जय सरूपचंदजी स्वाम नें रे, साथे लेइ सुविचार।
बलि आहार लेई नें विहार लंबो कियो रे, सह्यो तृषा परिसह अपार ॥ ध० १० ॥
मरणांत सदृश कष्ट सह्यो तिण दिने रे, रस्ते तावड़ो अति तिहवेर।
असाढ़ सित बीज विहार करी आसरे रे, दसमी पुगा बीकानेर ॥ ध० ११ ॥
अति सुवनीत जीत हद महामुनी रे, गुरु आज्ञा पर बहु नीत।
परम प्रतीत रीत मुनि मार्ग नी रे, धारक जग सुवदीत ॥ ध० १२ ॥
गृष्म ऋतु अति कष्ट सही करी रे, आया बीकानेर गुणरास।
साते वर्ष सरूप शशी आदि दे रे, दस मुनि संग चोमास ॥ ध० १३ ॥
धर्म उद्योत थयो त्यां अति घणो रे, बलि अधिक थयो उपगार।
ए इकतीसमी हिवे मुनिराज नी रे, सांभलो चरचा सार ॥ ध० १४ ॥

ढाल : ३२

दोहा

तब संवेगी त्यां हुंतो, तसु वंदन नें काम।
आया लोक नागोर नां, स्वामी वच्छल थयो ताम ॥ १ ॥
प्रभात समय जय महामुनि, दिसा जावतां जाम।
वड़े उपाश्रय पास मिल्यो, ढढो भैरूंदान नाम ॥ २ ॥
तेहनें कह्यो जय वर मुनि, स्वामी वच्छल रे मांही।
सीरो कियो तिण में केइ, धर्म श्रद्धे छै ताहि ॥ ३ ॥
तिण उपर कहि वारता, सेर सीरा थी सोय।
दस सेर का सीरा मझे, धर्म घणेरो होय ॥ ४ ॥
तेह थी मण ना सीरा मझे, धर्म घणेरो थाय।
इम घणो आरंभ ज्यूं २ धर्म बहु, तुझ लेखे कहिवाय ॥ ५ ॥

ढाल

[आसण रा रे जोगी—ए देशी]

जद भैरूंदान जी बोल्या वायो, संघ व्यावच कही सूत्र मांह्यो रे।
श्रोता जन सुणिये।
जद ऋषि जीत बोल्या तिणवार, इहां व्यावच को अविकार रे ॥ श्रो० १ ॥

संघ ते चउ विध संघ छै ताम, एहवो अर्थ नहीं इह ठाम रे।
इहां गणना समुदाय नें संघ कहिजे, पिण श्रावक श्राविका नहीं लिजे रे॥ श्रो० २॥
अने साधर्मी ते साधु साध्वी कहिये, वेयावच्च ठाम अर्थ इम लहिये रे।
तव तिणे कह्यो घणो खेंच कर ताह्यो, संघ ते चउ विध संघ कहायो रे॥ श्रो० ३॥
वलि कह्यो आप उपाश्रे पधारो, जद उपाश्रय दिशि अवधारो रे।
किता पांवडा चाल्या जय स्वामो, पछै उभा रही त्यांने कह्यो तामो रे॥ श्रो० ४॥
हूं कहूं ज्यूं निकले ला सूत्र मांह्यो, तो मानणो पड़ेला तुज ताह्यो रे।
जद त्यां वात करी अंगीकारो, जद उपाश्रय आया अणगारो रे॥ श्रो० ५॥
त्यां श्री पुज्यजी तिण वेल्यां नहीं हुंतो, पिण त्यांरे मुंहढे जे मानीतो रे।
जती हंसराजजी बैठो तिह बेला, जीते लोक थया बहु भेला रे॥ श्रो० ६॥
वलि बावीस टोलां रा श्रावक अगवानी, ते पिण आय बैठो तिहां जाणी रे।
वले हीराचंदजी डागो आदि घणेरा, सुणता जय स्वाम भलेरा रे॥ श्रो० ७॥
कह्यो उवाई री टीका छै इह ठामो, जद जती काढ़ नें सूंपी तामो रे।
जद मुनि जय लेई निज हाथो, बांची उवाई वृत्ति विख्यातो रे॥ श्रो० ८॥

कलश

कुल वियावच्च ते गच्छ नुं, समुदाय कुल सु कहिजीये।
अरु कुल तणो समुदाय ते, गण वियावच्च लहिजीये।
अरु गण तणो समुदाय तेहने, संघ वियावच्च आखिये।
साहमी ते साधू अथवा, साध्वी बेहुं दाखीये॥ १॥

ढाल

इम सुण वहु जन इचरज पाया, वलि वोल्या जीत ऋषिराया रे।
इहां श्रावक श्राविका नें थापे केई, ते किहां गया अर्थ तेही रे॥ श्रो० ९॥
ते जती नें क्यूं ही जाव न आयो, तव ढढानें कह्यो जय ऋषिरायो रे।
ये कहिता जो निकले सूत्र मांह्यो, तो अंगीकार करस्यूं ताह्यो रे॥ श्रो० १०॥
सो अब मानणी पड़ेला ए धारो, तव ते वोल्यो वयण उदारो रे।
इसो किणरो लोह सूं जड़चो माथो, जे उत्थापे ए वचन विख्यातो रे॥ श्रो० ११॥
तव जिन-मगनी थइ शोभा सवाई, जय महिमा थइ अधिकाई रे।
जन चमत्कार पाया मन मांह्यो, हिवे कोठारी निज हवेली आयो रे॥ श्रो० १२॥

किण ही पुछ्यो आज चरचा थइ कांई, जद रावतमलजी बोल्या हित ल्याई।
इण चरचा में तो उणा कह्यो तामो, तिम निकल्यो अर्थ इह ठामो रे ॥ श्रो० १३ ॥
इसा चरचावादी जय महामुनि रायो, त्यां तो जिनमग अधिक दीपायो रे।
ए ढाल बत्तीसमी सुविचारो, कह्यो चरचा नों अधिकारो रे ॥ श्रो० १४ ॥



ढाल : ३३

दोहा

एक दिवस जय महा मुनि, दिसा जावता जाम।
कोठारी प्रति पंथ में, प्रश्न पुछ्यो तिह ठाम ॥ १ ॥
तृषित देख अनुकंपा करी, काचो पाणी को पाय।
तिण माहीं कहो स्यूं थयो, तब बोल्यो ते ताहि ॥ २ ॥
नहीं जाब देवण रा भाव मुझ, वलि स्वामी वच्छल नें जोय।
बावीस टोंलां रा साधु फुन, श्रावक निन्दे सोय ॥ ३ ॥
तिण उपर जय स्वाम इम, कह्यो जाब सुविचार।
ए सांड ने घास न्हखावियां, पुन्य कहे अवधार ॥ ४ ॥
ते स्वामी वच्छल भणी, निन्दे क्युं अवलोय।
इण में तो ए मनुष्य नें, जीमावे छै जोय ॥ ५ ॥
इम अनेक चरचा थई, दिया विविध पर जाब।
कहां तक ते वर्णन करूं, तसु गुण सघन सताब ॥ ६ ॥

ढाल

[महिलां में बैठी राणी कमलावती—ए देशी]

हिवे चोमासो उतर्यां बीकानेर थी, आया हरिगढ़ शहर रे मांहि।
गणपति नां दर्शन करी अति हर्ष थी, बहु दिवस सेवा करी ताहि।
सांभल हो भविजन, शिवपद दायक श्री जय महामुनि ॥ १ ॥
पछै अजमेर शहर रह्या गणि साथ ही, अति सुवनीत उदार।
पछै ऋषिराय महाराज मेवाड़ नी, दिशि कानी कियो विहार ॥ सां० २ ॥
ऋषि जीत आज्ञा लेइ जयपुर आविया, तिहां कोठारीजी रामचन्द।
तिण वनणा छोड़ी थी मुनि सतियां भणी, तिण नें समझायो जय गुण वृन्द ॥ सां० ३ ॥

तब ते बोल्यो दोषण वाला बोल नें, खांच करी साधू कहे एम।
इण बोल मांही कहो क्यांरो दोष छै, तिण ने वनणा करूं हूं केम॥ सां० ४॥
तिणनें तब मुनिवर उत्तर इम दियो, कह्यो भगवती सूत्र मझार।
धुर पुलाक निग्रन्थ तणा पांच भेद छै, इक नाण पुलाक विचार॥ सां० ५॥
दर्शण पुलाक चरित पुलाक ही, वलि लिंग पुलाक सुजोय।
वलि आहा सुहम पुलाक भेद ए पांचमो, ए पंच भेद इम होय।
सांभल हो सुगणा, वारू तो उत्तर श्री जय स्वाम नां॥ सां० ६॥
यां दंशण ते शुद्ध श्रद्धे छै तेहने, पुलाक ते करे रे असार।
तो सम्यक्त गयां थी चारित्र किम रहे, वलि किम रहे नियंठो विचार॥ सां० ७॥
तेहनों इम उत्तर सम्यक्त में तिको, लगावे अतिचार उपाधी।
तथा रीस थी कहे हूं थानें साधु श्रद्धूं नहीं, पिण मन में तो श्रद्धे साध॥ सां० ८॥
पिण वचन द्वार करी दर्शन प्रते, कीधो कहिए असार।
ते पिण वाह्यपणे जे कहिणो वचन सूं, ते योग आश्रव अवधार॥ सां० ९॥
अने मन में तो साधु सरधे तेह थी, तसु मिथ्यात आश्रव न कहाय।
वचन नो जोग ते आश्रव अशुभ जोग छै, तिणरो प्रायछित लियां सुख थाय॥ सां० १०॥
इम उंधो श्रद्धयां बिन बोल्या वचन थी, तसु सम्यक्त तो नहीं जाय।
जद कोठारी ए उत्तर श्रवने सांभली, अति राजी थइ बोल्यो वाय॥ सां० ११॥
दोष नें दोष नहीं इम दाखिया, मुनि तो दंड लेइ शुद्ध थाय।
पिण बीजो तो डूब जाय ए वचन थी, तिणनें तो उणरा मनरी खबर न काय॥ सां० १२॥
पछै और ही बोल पुछ्या तिण मोकला, तसु उत्तर हिये अवधार।
ग्यान थी समझ थयो दृढ़ अधिक ही, तिहां एक मास रह्या अणगार॥ सां० १३॥
हिवे विहार करी नें जयपुर शहर थी, आया कुचामण ताहि।
तिहां सेठ जी नो सुत हुँतो दीपतो, ते बावीस टोलां री श्रद्धा मांही॥ सां० १४॥
ते शोभा तो सुण नें श्री जय स्वामी नी, तिहां आयो मुनि पे चलाय।
वहु लोक सुणतां हो प्रश्न पुछीयो, कोई कहे आप नें आय॥ सां० १५॥
कहो तो हूं त्याग करूं मृग मारण तणा, कहो तो मूला खावणरा करूं त्याग।
तो आप किणरा तो हो त्याग करावो तेहने, जब बोल्या जय महा भाग॥ सां० १६॥
म्है तो तसु भाखां हो त्याग दोनुं करो, जद सेठ सुतन बोलंत।
ओ कहे विहुं तो त्याग करण मुझ मन नहीं, एकण रा त्याग करावो तंत॥ सां० १७॥
तव उत्तर इम आख्यो जय महामुनि, तुझ मन हुवे सो इक त्याग करेह।
वलि वीजी वार पूछ्यो विहुं मांहिलो, आप कहो ते त्याग करूं एह॥ सां० १८॥

जद जय तो पाछो जाब युं ही दियो, म्है कहां दोनूं ही कर लेह।
जद ओ बोल्यो इक त्याग करावो मो भणी, म्है कहां तुझ मन हुवै सो इक लेह ॥ सां० १९ ॥
इम बहु वार प्रश्न तिण पूछियो, जद ऊ को ऊ ही दियो जाब।
इम प्रश्नोत्तर तर्क सहित ही, सुणी जन समझ्या सताव ॥ सां० २० ॥
मुनि बुद्धि अति भारी हो उपगारी घणा, जन हितकारी जोय।
मिथ्यात बिमारी हो भरत में मानुसां, मुनि अतिशय धर अवलोय ॥ सां० २१ ॥
इम चरचा तो कीधी हो मुनिवर अति घणी, तसु कह्यो संक्षेप विचार।
ए ढाल तेतीसमी श्री जय महामुनि, कियो शेषे काल उपगार ॥ सां० २२ ॥

●

ढाल : ३४

दोहा

वलि कुचामन शहर में, श्रावग्यां सूं हुई वात।
श्री जय पासे आयनें, त्यां पूछयो प्रश्न सुजात ॥ १ ॥
आप महाजन विण ओर नें, नहीं द्यो चरण विख्यात।
ते तो रीति वहु ठीक है, पिण अन्न जल ल्यो अन्य हाथ ॥ २ ॥
जद त्यांनें श्री जय मुनी, दियो युक्ति सूं जाब।
सांभलतां भव्य जीव नें, उपजे प्रेम सताव ॥ ३ ॥

ढाल

[दूजो मंगल सिद्ध नें—ए देशी]

श्री जय मुनिवर उत्तर आख्यो, म्है लेवां ओसवाल रो आहार जी।
अनें ओसवाल रे रसोइ करे छै, वडारणीया सुविचार जी।
श्री जय जाब सुणो भव जीवां, पीवो ग्यान जल पूर जी।
ज्यूं सम्यक्त दीवो गुल न होवे, सींच्यो वैराग तेल सनूर जी ॥ श्री० १ ॥
वलि ओसवाल नाई के हाथां री, करी रसोइ पिण खाय जी।
जो ओर जाति रो आहार न लेवां, तो ओसवाल रो पिण छोड़णो थाय जी ॥ श्री० २ ॥
वलि कह्यो लाडणूं नागोर पाली रा, श्रावगियां सुं संबंध तुझ हुंत जी।
त्यांने वेटी देवो लेवो छो, ते श्रावगी ओसवाल भेला जीमंत जी ॥ श्री० ३ ॥

ते श्रावगिया री बेटी ओसवाल तणे घर, बडारण की करी रोटियां खाय जी।
तिण नें थे परणीज ल्यावो छो, इण लेखे थारें पिण टालो रह्यो नाहीं जी ॥ श्री० ४ ॥
थे तो सगपण करता नहीं संको, उवा पीहर जाय जद जाम जी।
ओसवाल रे घरे जीमवा रो, टालो करे नहीं ताम जी ॥ श्री० ५ ॥
अनें सासरे आवे जद जीमवा रो, टालो करे इण टेव जी।
थांरे पिण टालो रह्यो नाहीं, थे पिण समझो देख न्याय नेत जी ॥ श्री० ६ ॥
जद उणां पिण मन में जाणे लीधो, पाछो उत्तर दीधो नांहि जी।
हिवे त्यां थी विहार करी नें विचरत, आया थली देश रे मांहि जी ॥ श्री० ७ ॥
हिवे संवत उगणीसे वर्ष आठे, कियो बीदासर चउमास जी।
स्वरूपचंद जी स्वामी पिण साथे, द्वादश मुनि गुणरास जी ॥ श्री० ८ ॥
बिहुं टंक आप वखाण बाचंता, सघन झड़ी सम सार जी।
अनुयोग द्वार समय वलि वारूं, वाणी अमृत धार जी ॥ श्री० ९ ॥
वलि विविध हेतु दृष्टांत देइ मुनि, कीधो बहु उपगार जी।
मुज नें पिण वैराग्य वधाय नें, कियो दिक्षा नें त्यार जी ॥ श्री० १० ॥
संसार लेखे मुज मात बन्नां जी, त्यांरे हुंतो पहिला ही वैराग जी।
कर्मचूर प्रमुख बहुलो, कीधो धर धर्मराग जी ॥ श्री० ११ ॥
किता मास पहिला महा सतियां, सिरदारांजी सुखकंद जी।
आग्या मांग जायगां में उतर्या, मुज तारण सती वृन्द जी ॥ श्री० १२ ॥
कथा हेतु दृष्टांत विविध पर, संभलावी गुण धाम जी।
वनांजी रे वैराग्य वधायो, हुवा चरण लेण परिणाम जी ॥ श्री० १३ ॥
वलि म्हारा पिण चारित्र लेवा रा, कांइएक भाव हुवा तिण वेर जी।
पछे शेषे काल अनें चोमासे, करी जय महाराज बहु महर जी ॥ श्री० १४ ॥
जाणपणो सीखायो स्वामी, विविध प्रकारे ताम जी।
गुलवांजी नां पिण लेवा सूं, थया तव दृढ़ परिणाम जी ॥ श्री० १५ ॥
जय वचनामृत जल पीवंता, थया तीन नां दृढ़ परिणाम जी।
भेला रमता बहुला बालक मुझ नें, कहता तमासा में वच ताम जी ॥ श्री० १६ ॥
मघजी स्वामी करां वंदना, वलि निज मन थी कहे जीय जी।
थांरां पात्रा में घी इम कहि वे कहे, बैठो २ ठंडो पानी पीय जी ॥ श्री० १७ ॥
श्री जय स्वाम वचन सुण जाण्यो, छे तो ए वाक्य श्रीकार जी।
पछै युवराज पद दीधां जय भाख्यो, फल्यो वचन छोरां नो विचार जी ॥ श्री० १८ ॥
पछै चोमासो उतर्यां मुज नें, रह्या दिक्षा देवा महाराज जी।
छो मृगसर विद पंचम नों मुहूर्त्त, आप पधार्या दिक्षा देवा काज जी ॥ श्री० १९ ॥

पंचम दिन पहिला पोहर मांहे, थयो दिक्षा मोछ्छव मंडाण जी।
काके भेला वेस नें जीम्या, पछै टीको काढ्यो गुण जाण जी ॥ श्री० २० ॥
हिवे जीम नें अश्व नी जाती नें उपरे, चढ़ता चित्त ओछाह जी।
किण ही लोकां रा कहण सूं काको, उठाय लेग्यो रावला मांही जी ॥ श्री० २१ ॥
उण दिन तो दिक्षा नहीं आई, तब श्री जय महाराज जी।
दड़ीबे रात्री रही लाडणूं आया, जसु हृदय गंभीर अग्राह्य जी ॥ श्री० २२ ॥
पछे राजवाला सूं पडुत्तर करनें, घर आय काका नें जणाय जी।
मात बहिन सहित हूं तीनूं, आया लाडणूं शहर रे मांह जी ॥ श्री० २३ ॥
श्री जय स्वामी तणा किया दर्शन, प्रसन्न थया तन मन्न जी।
तब कर जोड़ी नें अर्ज करी म्हे, हिवे दिजे चरण रत्न जी ॥ श्री० २४ ॥
मृगसिर बिद बारस तिथि स्वामी, पुर बाहिर पीरांजी रे स्थान जी।
सईकड़ां जन-वृन्द मांहि सामायिक, उचरायो चरण निधान जी ॥ श्री० २५ ॥
धन्य २ मात बनां जी धर्मिणी, भलो लियो आग्या नो लाह जी।
हिवे सुता भणी संजम दिवरावा, पोते रह्या संसार रे मांहि जी ॥ श्री० २६ ॥
महा बिद में बीदासर आया, पछै महा सित अष्टम धार जी।
मेवाड़ देश थी कागद आया, तिण में ए समाचार जी ॥ श्री० २७ ॥
माघ कृष्ण चउदश नी तिथि, लघु रावलिया में जोय जी।
ऋषिरायमाहाराजपरलोकपउधास्या, वारूं गणि अतिशय धर अवलोय जी ॥ श्री० २८ ॥
ए समाचार सुण च्यार तीर्थ नें, घणी दोरी लागी ताम जी।
पिण काल सूं जोर कोइ नही चाले, इम भाख्यो त्रिभुवन स्वाम जी ॥ श्री० २९ ॥
इम जाणी मुनि मन दृढ़ करी नें, तिण दिन कियो उपवास जी।
हिवे पट्ट महोछ्छव नों वर्णन प्राणी, सांभलो आण हुलास जी ॥ श्री० ३० ॥
ढाल भणी ए चार तीसमी, कह्यो आठे तांइ अधिकार जी।
पद युवराज पणे जय स्वामी, तास्या बहु नर नार जी ॥ श्री० ३१ ॥

कलश

युवराज पद पणे खंड तृतीय, चउमास किया जय जिह विधे।
जिन मारग नों उद्योत अति फुन, कीध मुनिवर मन शुद्धे।
जिह रीत जीत सु वदीत समकित, चरण दे जन तारिया।
तिह रीत गुण संक्षेप थी, म्है ढाल कर सुविचारिया ॥ १ ॥

इति श्री जय सुजश रसायणे जय मुनिनां युवराज पदतया यथा चतुर्मासः कृतः यथा जिन मार्गस्योन्नतिं विधाय भव्य जनाः प्रतिबोधिताः यथा २ जनानां वैराग्य विधाय चारित्र रत्न दत्तं तद्गुण वर्णनो नाम तृतीय खंड समाप्तः सं० १९४५ चेत सुद ११ लाडणूं में संत २५ सत्यां ७२ आसरे।

चतुर्थ खण्ड

ढाल : ३५

दोहा

अर्हन सिद्ध मुनि जिन धर्म, लोगुत्तम मंगलीक।
चिहुं शरणा चित धर कहूं, तूर्य खंड तहतीक ॥ १ ॥
दान शील तप तीन सम, कह्या तीन वर खंड।
भाव समो खंड तूर्य हिवे, दाखूं घणे घमंड ॥ २ ॥
ग्यान दर्शन चारित्र त्रिहुं, शिव मग साधक सार।
पिण तप थी कर्म दूर करि, पांमे जन भव पार ॥ ३ ॥
तप समान हिवे सांभलो, तूर्य खंड अवदात।
पाट विराज जय गणपति, पायो सुयश विख्यात ॥ ४ ॥
विचरया जिम जन पद विषे, कीयो जिम उपगार।
जिम २ भव्य जन तारिया, दियो ग्यान चरण गुणकार ॥ ५ ॥
जिन सादश था जय गणि, तारण भवोदधि पोत।
जिन मारग नों जिह विधे, कियो अधिक उद्योत ॥ ६ ॥
चउमासा जिह विध किया, संलेषण सुखकंद।
अणसण जिह विध आवियो, कहुं संक्षेप संबंध ॥ ७ ॥

ढाल

[महाराजा थारी निरखण द्यो असवारी—ए देशी]

संवत उगणीसे वर्ष आठे, माघ शुक्ल सुखकारी।
पूनम तिथि गुरु पुष्प नें जोगे, विष्टि करन सुविचारी जी।
महाराजा थारे पाट महोछव भारी।
च्यार तीर्थ ना थाट संपदा, अति गहघाट उदारी जी।
महाराजा जय पाट मोछव छवि प्यारी ॥ १ ॥
जय २ नंदा जय २ भद्दा, इम वोले शव्द सुखकारी।
हे अण जीत्यां नें जीत जीत्यां री, रक्षा कीज्यो गणधारी जी ॥ म० २ ॥
इत्यादिक मंगलीक शव्द मुनि, स्तवना करी अति भारी।
वलि दिदासर वस्ती नों नायक, ते पिण आयो मोछव में तिवारी जी ॥ म० ३ ॥

रामो तपसी पिण तिह वेलां, जाव जीव सुविचारी।
छठ २ तप निरंतर धार्यो, अति उचरंग उदारी जी ॥ म० ४ ॥
बहु त्याग वैराग्य थयो तिण वेलां, थइ रंगरेला अति भारी।
है अतिशय धारी पर उपगारी, उठ्या गोचरी शहर मझारी जी ॥ म० ५ ॥
तब जन मन हरष आनन्द लह्यो अति, आया देख आंगण धारी।
असन वसन बहु वैहर नें ल्याया, पाया चमत्कार नर नारी जी ॥ म० ६ ॥
ओपे गणपति नी अष्ट सम्पदा, गुण छतीस उदारी।
बहुश्रुति नी उपम हद सोले, शोभ लहे श्रीकारी जी।
गणाधिप चरण करण गुण भारी।
ज्यांरी सुरत मुद्रा प्यारी जी, गणीश्वर वान सुधा सुखकारी।
हे श्रवण कियां भव्य जीव हृदय विच, उगे बोधि अंकुर उदारी जी ॥ म० ७ ॥
है विविध मर्यादा बांधी हद गणपति, अति सुमति देइ श्रीकारी।
संपति चार तीर्थ नी सखरी, वृद्धि करण सुविचारी जी ॥ म० ८ ॥
गणि मुख आगल मुनि अति गहरा, जेष्ट वंधु जशधारी।
उपाध्याय सम अति ओपता, अति शांति श्रीकारी ॥ म० ९ ॥
सतियां नी पिण संपदा सखरी, वर सतिय सिरदार उदारी।
वीर तणे जिम चन्दनबाला, तिम आपरे ए गुणकारी जी ॥ म० १० ॥
ज्यां विनय भक्ति करी विध २ सूं, सुप्रसन्न किया गणि भारी।
तिण सुं गणाधिप कुर्व बधायो, किया सतियां में अधिकारी जी ॥ म० ११ ॥
है अतिशय धर मुनिराज तणे हिव, पट्ट वेसत ही श्रीकारी।
फागण विद छठ तीन दिक्षा नों, थयो महोच्छव अधिक उदारी जी ॥ म० १२ ॥
संसार लेखे मुझ सगी सहोदरा, गुलाबांजी अकन कुंवारी।
गर्भ सहित नवमां वर्ष मांहि, वले मात बनां गुण भारी जी ॥ म० १३ ॥
वलि तीजी हस्तु वृद्ध वय मांही, ए तीन दीक्षा तंतसारी।
वहु मोच्छव इक साथ उचराइ, स्वहस्ते सुखकारी जी ॥ म० १४ ॥
हिवे दिशावान गणि पट वैठा, झट थइ धुर शिष्यणी अति भारी।
कुंवारी कन्या अति वुधिवंती, वहु विनय विवेक विचारी जी ॥ म० १५ ॥
है ढाल भली ए पांच तीसमी, तिण में श्री जय गण शृङ्गारी।
तसु पटोत्सव विस्तार कर्यो फुन, करी तीन दिक्षा गुणकारी जी ॥ म० १६ ॥

ढाल : ३६

दोहा

बिदासर एक मास रही, विहार करी गण इंद।
लाडणूं पधास्या आविया, बहु मुनि धर आनन्द ॥ १ ॥
दर्शन करवा कारणे, सतीदासजी आदि।
वलि श्रमण्यां दर्शन निमते, आया धर अह्लाद ॥ २ ॥
संमण चालीस सहु थया, समण्यां चमालीस।
एक मास तिहां रही, विहार करी गण ईश ॥ ३ ॥
पेंतीस मुनि साथे पवर, सुजानगढ़ वर शहर।
रह्या दिवस बहु त्यां गणि, करी भविक पर महर ॥ ४ ॥
शोभाचंदजी तिह समें, विनती करी विशेष।
इक मेलो बिदासरे, कीजे वली गणेश ॥ ५ ॥

ढाल

[नवली चंद नो हे क साजन विन ऋतु वरसे मेह—ए देशी]

तव मानी विनती मुनिपति हे, आया बीदासर महाराज।
त्यां चिहुं वायां वीकानेर थी हे, आई चारित्र लेवा काज क।
गुणीजन सांभलो हो सुगणां, श्री जय सुयश रसाल।
जे गणपति गुण ओलख जपे हो, तिणरे फले मनोरथ माल क ॥ गु० १ ॥
गोलेछा हस्तीमलजी हे गु०, तसु वनिता सुविचार।
वरजू जी नामे भली हे गु०, दोय सुता तसु लार क ॥ गु० २ ॥
चांद कुंवर नामे वड़ी हे गु०, शील सत्तम सुविचार।
पनरे वर्ष नी वय मझे हे, थइ मा साथ चरण नें त्यार क ॥ गु० ३ ॥
आठम शीलव्रत आदस्यो हे गु०, नवमी दिन अवधार।
पिउ परदेशे परभव गयो हो, सुणिया तीज दिवस समाचार ॥ गु० ४ ॥
लोक तदा धिन २ कहे हो०, सती नें आगुंच सुज्यो एह।
पछे बहु हठ सूं सासरीया तणी हो गु०, आग्या ले गुण गेह क ॥ गु० ५ ॥
कुंवारी कन्या लघु सुता हो गु०, हरखु पिण मा संग।
बांठिया सिरदारसिंह नी सुत-वहु हे गु०, चोथी मोतां पिण उछरंग क ॥ गु० ६ ॥
ए चिहुं नें चारित्र दियो हे गु०, एक साथ गणि निज हाथ।

वैसाख बिद सप्तम दिने हे, गणपति सुजश जगत विख्यात क ॥ गु० ७ ॥
सहु ठाणा तियांसी त्यां थया हे गु०, इक मास रही गणनाथ।
लाडणूं डिडवाने होय नें हो, आया बोरावड़ विख्यात क ॥ गु० ८ ॥
तिहां ठाकुर मंगलसिंहजी हो गु०, कुंवर भंवर ले संग।
गणपति सन्मुख आविया हे गु०, करि सेवा धर उछरंग क ॥ गु० ९ ॥
वखाण वाणी विध २ करी रे गु०, वांचत आप गणिंद।
बहु सुमति सुधा रस पावता हे गु०, करी मर्याद सुखकंद क ॥ गु० १० ॥
तिहां सिंघाड़ा बंध सतीयां कनें हो गु०, अक्षर लिखाया ताही।
सूंप्या पाडियारा पुस्तक सत्यां हे गु०, छे गणपति नेश्राय क ॥ गु० ११ ॥
ते चतुर्मास उतर्‍यां छतां हे, सतीयां दर्शन करें जिवार।
सूंप देणा पुस्तक सत्यां हे, तिणरी ममत्व न करणी लिगार क ॥ गु० १२ ॥
वलि तिण वर्षे मेरा बहु हे गु०, तनु कारण में संच।
आथण उष्ण मंगावियां हे, मुनिवर विगय न लेणी पंच क ॥ गु० १३ ॥
इत्यादिक सीमा बहु हे गु०, तेहनो बहु विस्तार।
संवत उगणिसे आठे आदि की हे, जय कृत बड़ी मर्याद मझार क ॥ गु० १४ ॥
ते देखी भवी जांणज्यो हो गु०, बड़ी तणी अपेक्षाय।
लघु मेरा लकारादि नी हो, गणपति करि बंदोवस्त सवाय क ॥ गु० १५ ॥
त्यां निरणो जुदा २ वर्ष नो हो गु०, तिण थी जाण लिज्यो सुविचार।
ठाम २ वर्णन कियां हो गु०, वधे ग्रन्थ विस्तार क ॥ गु० १६ ॥
हरिगढ़ होय पधारिया हो गु०, जोबनेर गण इन्द।
तब भोलायो सती सिरदार ने हो गु०, तिहां चतुर्मास सुखकंद क ॥ गु० १७ ॥
उगणीसे नवके समे हो गु०, जयपुर में चोमास।
चउ दश मुनि थी गणपति हो गु०, कीधो धर्म उजास क ॥ गु० ॥ १८ ॥
त्यां उपगार थयो घणो हो गु०, हरियाणा थी आय।
श्री जय वचनामृत सुणी हो, पायो वैराग्य अधिक मन मांही क ॥ गु० १९ ॥
रामदत्त सुत पोतादिक तजी हे गु०, थयो चारित्र लेवन त्यार।
बहु मोछव मोहनवाड़ी मझे हे गु०, गणि आप्यो चरण उदार क ॥ गु० २० ॥
ए ढाल छतीसमी में हो गु०, सेखे काल विचरे गणिराय।
जयपुर चोमासे धर्म नो हो, गणि उद्योत कियो अधिकाय क ॥ गु० २१ ॥

ढाल : ३७

दोहा

मृगसिर विद एकम दिने, विहार करी रही वाग।
भूठवाड़े बीजे दिने, रह्या गणि महाभाग ॥ १ ॥
बीकानेर थी तिह समे, बाई मघु गुण माल।
समय सतावीस संग ले, आवी चारित्र लेवा चाल ॥ २ ॥
तसु दिक्षा देवा तुरत, भूठवाड़ा थी जोय।
जयपुर शहर पधारिया, स्वाम समय अवलोय ॥ ३ ॥
जोवनेर थी जिह समय, सती सिरदारां आदि।
दर्शन करन गनेश नां, आया घर अहलाद ॥ ४ ॥
मृगसर विद पंचम दिनें, मघूजी नें जाण।
दिक्षा नां मोच्छब तणो, मांड्यो बहु मंडाण ॥ ५ ॥

ढाल

[मोजी तुरा रा रे—ए देशी]

मोहनवाड़ी में महामुनि गुणधारी रे, तिहां मघुजी नें सुविचार।
स्वाम सुखकारी रे।
सामायिक चरण समापीयो गु०, थयो ओच्छब अधिक उदार।
गणि जशधारी रे।
जशधारी महिमा निला गु०, मुनिपति मुक्ति दातार ग०।
भवि जन्म मरण दुःख मेट नें गु०, गणि उतारे भव पार ॥ ग० १ ॥
महासती सिरदार नें सूप्यां गु०, मघुजी नें सुखकार ग०।
हिवे जयपुर थी जय गणपति गु०, कियो जोवनेर दिशि विहार ॥ ग० २ ॥
रह्या एक मास जोवनेर में गु०, तिहां आया समाचार ग०।
मुनि सतीदास गुण सागरू गु०, अति सौम्य प्रकृति सुखकार ॥ ग० ३ ॥
सखर बीदासर शहर में गु०, कियो अचानक काल ग०।
तब सरूप शशि तिण अवसरे गु०, बहु साहज्य दियो सुविशाल ॥ ग० ४ ॥
ते चल्या सुणी चिहुं तीर्थ नें गु०, अति दोरी लागे मन मांय ग०।
तब ज्येष्ट बंधु थली देश थी गु०, आया गणि पे तुरत चलाय ॥ ग० ५ ॥
तब गणपति मुनि जनवृन्द सूं गु०, दिक्षा-वड़ा जेष्ट बंधु जाण ग०।
सनमुख जइ वंदणा करी गु०, अधिक हरष मन आण ॥ ग० ६ ॥

तव विनय देख गणिराज नो गु०, जन पाम्या चित चमत्कार ग० ।
पछे जेष्ट बंधु संग आविया गु०, वारूं जोवनेर जयकार ॥ ग० ७ ॥
सतसठ ठाणा त्यां थया गु०, हिवे विहार करी गण इन्द ग० ।
हरिगढ़ शहर पउधारिया गु०, पेखी पाम्या जन आनन्द ॥ ग० ८ ॥
तिहां समण सत्यां रे स्वाम जी गु०, बांधी इक मर्याद ग० ।
सतियां नें आहार देवा तणी गु०, कोइ पुष्ट प्रयोजन लाघ ॥ ग० ९ ॥
कह्यो सूत्र में पुरुष नें गु०, बतीस कवल नो आहार ग० ।
स्त्री नों कवल अठावीस नो गु०, ए समय वचन अनुसार ॥ ग० १० ॥
तिण प्रमाण समण्या भणी गु०, आहार देणो ठेराय स्वाम ग० ।
इम आहार लेइ सतियां सहु करे गु०, पांती बड़ां रे ठाम ॥ ग० ११ ॥
तिहां एक मास रह्या गणपति गु०, तव एक बाई गुण रास ग० ।
दिक्षा लेवा देशणोक थी गु०, आइ नाम जसोदा जास ॥ ग० १२ ॥
बहु मोछव संजम आदर्यो गु०, सती जसोदा जयकार ग० ।
अति थाट देख मालव तणा गु०, जन अर्ज करे जिहवार ॥ ग० १३ ॥
जाति कांकरीया उजीण ना गु०, वासी मोतीचंद ग० ।
कहे मालव धरा कृपा करी गु०, दर्शन द्यो गण इंद ॥ ग० १४ ॥
विविध अर्ज वच सांभली गु०, थया दर्शण देवा रा भाव ग० ।
जिम चक्री साधे देश नें गु०, तिम कियो विहार तिणे प्रस्ताव ॥ ग० १५ ॥
हरिगढ़ थी मारग पाधरे गु०, आया वणेरा स्वाम ।
पूज्य सुखकारी रे ।
तिहां राजाजी दर्शण करी गु०, पाया गणि वच सुण आराम ॥ पू० १६ ॥
तिहां षट दिन रही नें आविया गु०, भीलाड़े गणनाथ पू० ।
त्यां ठाणा छयांसी छाजता गु०, तब जोगीदास कहे जोड़ी हाथ ॥ पू० १७ ॥
मोखणुंदे मुझ ग्राम में गु०, मुज पुत्री खेमां नाम पू० ।
गुणवंती वैरागण तेहनें गु०, द्यो स्व हत्थ संजम स्वाम ॥ पू० १८ ॥
तव कृपा करी स्वाम सरूप नें गु०, मेल्या संजम देवा काज पू० ।
वलि समणी नवलां जी भणी गु०, गणि तरण तिरण जिहाज ॥ पू० १९ ॥
शीघ्र चरण देइ खेमां भणी गु०, ल्याया गणपति पे गुणखाण पू० ।
सती सिरदारां नें स्वाम जी गु०, सूंपी सती खेमां सुखदान ॥ पू० २० ॥
हिवे विहार करी भिलाड़ा थकी गु० पुर में पधार्या स्वाम पू० ।
ठाणा इक सो वीस नें आसरे गु०, थया नित्य प्रति पवर हगाम ॥ पू० २१ ॥

ए ढाल भली सेंतीसमी गु०, तिण में पूज्य भवोदधि पाज।
वर देश मेवाड़ पउधारिया गु०, जयपुर हरिगढ़ साज।
स्वाम सुखकारी रे ॥ २२ ॥



ढाल : ३८

दोहा

तिहां दर्शन करवा पूज्य नां, आया ग्राम २ ना लोक।
दर्शन करि हर्षित हुवा, जिम रवि दर्शन कोक ॥ १ ॥
केइ आवता केइ जावता, केइ हर्षित हिलोला खात।
केइ भणता गुणता विधे २, के गुण स्तव करता विख्यात ॥ २ ॥
उदैपुर श्रीजीदुवार नां, वलि राजनगर विख्यात।
गंगापुर प्रमुख बहु, कहे मिल श्रावक साथ ॥ ३ ॥
अवके देश मेवाड़ पर, कृपा करी गणिराज।
दर्शन दे पावन सुजन, करो गणि गुण जाझ ॥ ४ ॥
दर्शण दे मेवाड़ में, चतुर्मास उतरेह।
महिमा धर मालव जना, पवित्र करो गुण गेह ॥ ५ ॥
ऋषभदास फोजमलजी, आदि श्रावक अरदास।
सांभल गणि मेवाड़ में, रह्या अधिक हुल्लास ॥ ६ ॥

ढाल

[नदी जमुना के तीर—ए देशी]

पुर में रही इक मास, विहार कियो गणी।
करता धर्म उजास, प्रगट जिम दिनमणी।
वागोर वावलास होय, आंवली आविया।
पछे गंगापुर गणि आय, वचनामृत पाविया ॥ १ ॥
त्यां जंवरी मेरुलाल, दर्शन किया पूज्य ना।
त्यां थी कोशीथल सुविशाल, आया गणि शुभ मनां।
त्यां ठाकुर ले जन वृन्द, दर्शण करवा आविया।
पाया परमानंद, गणि गुण गाविया ॥ २ ॥

त्यां तपसी अनोप सु तंत, आय अरज करी।
दिन इकसो इकाणू भदंत, पच्चखावो हित धरी।
जल आछण आगार, रीत मुनिवर तणी।
पचखायो तप सार, मनुहार कर गणधणी ॥ ३ ॥
त्यां थी रायपुर ताम, स्वाम आया जिहां।
लाडणूं थी गुणधाम, बाई इक आई तिहां।
दूगड़ शिवजीराम, तास बहु दीपती।
अति अभिराम सु नाम, गुलाबां गुणवती ॥ ४ ॥
तिण धार्‌यो अठंतरे शील, जाणपणो दिल घणो।
बहु परिवार सामिल, तजी उमाहो व्रत तणो।
नृपपुर मोखणंदे आय, लाभ धर्म नों अति।
लियो लावारे मांही, परम गुण गणपति ॥ ५ ॥
पछे आंबावती जन तार, आगरीये आविया।
करी ठाकुर मनुहार, गणी रिझाविया।
त्यां बे दिन रही गणनाथ, पधार्‌या केलवे।
त्यां ठाकुर पुरजन साथ, भक्ति कर इम लवे ॥ ६ ॥
धुर सु चरण चोमास, गणाधिप इहां किया।
तिण सुं आप सुविमास, कृपा बहु राखिया।
तब गुलाबांजी गुणवंत, अरज विध २ करी।
लियो चरण रयण कर खंत, आत्म निज उधरी ॥ ७ ॥
तज बहु ऋध भरतार, परिवार फुन महासती।
श्री जय कर व्रत धार, हर्ष पायो अति।
महासती सिरदार, भणी गणी सूंपीया।
तब लह्यो हर्ष अपार, गणि वच अमृत ज्यूं पीया ॥ ८ ॥
हिवे राजनगर रे मांही, पूज्य पधारिया।
वर वयण अमि रस पाय, भविक बहु तारिया।
कांकड़ोली धोइंदै होय, कोठ्यां रे कृपा करी।
पछे श्रीजीद्वारे सुजोय, रह्या चित्त हित धरी ॥ ९ ॥
तब देश मेवाड़ मझार, उपगार घणो थयो।
केई लिया व्रत बार, सार धर्म केइ ग्रह्यो।
श्री जय स्वाम दयाल, विशाल गुणोदधि।
तसु वच अधिक रसाल, सुण्यां होय मन शुद्धि ॥ १० ॥

ए तीस ने अठमी ढाल, कृपाल जय गणपति।
मेवाड़ में गुण माल, नाल गुण मुनि सती।
बहु परिवार सहित, सचेत संजम गुणे।
सहु पर जसु सम नेत, चउमास कियो महामुने॥ ११ ॥

ढाल : ३९

दोहा

उगणीसे दश के वर्ष, श्रीजीद्वारे शहर।
द्वादश मुनि चउमास में, राख्या कर बहु महर॥ १ ॥
सिरदारांजी आदि दे, पनरे सत्यां गुण पूर।
करे सेव गणपति तणी, दिन २ चढ़त सनूर॥ २ ॥

ढाल

[वारी रे जाउं म्हांरे०—ए देशी]

जग सिणगारी पर उपगारी, महिमा गर गुण भारी।
बोधी चरण बिहुं वस्तु अमोलक, दायक जन जशधारी।
वारी रे जाउं म्हारा सदगुरु की।
म्हांरे सतगुरु महा उपगारी, वलिहारी जय मुनिवर की।
ग्यान चरण जे दे भवि तारे, भीम भवोदधि भारी॥ वा० १ ॥
त्यां दर्शन करवा देश देश नां, आया बहु नर नारी।
दर्शन कर अति प्रसन्न हुवा, देख २ सदगुरु दीदारी॥ वा० २ ॥
फुन देश मेवाड़ जन उलट घर अति, आया दर्शण करण उदारी।
लोक बोल्या इहां आया यात्री, वे सहस्र अधिक सुविचारी॥ वा० ३ ॥
दीपमालिका रे दिन गणपति, त्यां समण सत्यां रे सारी।
पांती आहार नी सहु नें बरावर, ए रीत ठहराई भारी॥ वा० ४ ॥
करणी ते मुनिवर नें ठिकाणें, पांती सखर श्रीकारी।
अठाइस बतीस कवल नां राख्या, अवसर देख उदारी॥ वा० ५ ॥
हिवे चोमासो उतर्‍यां आया, थड़ गोघुन्दे गुणधारी।
ऋषिराय महाराज रे जन्म भूमि हद, गाम रावलीयां गुणकारी॥ वा० ६ ॥

तिहां पोह विद नवमी दिन प्रभाते, भिक्षुस्वाम लिखत अति भारी।
मुनि उभा थइ नें नित्य सुणवा री, करि स्थापन अति गुणकारी ॥ वा० ७ ॥
तसु गण विशुद्ध करण हाजरी, दियो गुण निपन्न नाम भारी।
गण अति निर्मल करण गणाधिप, बांधीं मर्याद उदारी ॥ वा० ८ ॥
थयो इक मास आसरे हाजरी, उभा सुणता मुनि सुविचारी।
जयाचार्य नें स्वप्न आयो तब, सांभलज्यो सुखकारी ॥ वा० ९ ॥
मुनि उभा हाजरी सुणता जन नें, दर्शन न हुवे धारी।
तिण सूं बैठा सुणे तो ठीक है, तठा थी बैठा सुणे श्रीकारी ॥ वा० १० ॥
पछै लघु रावलीयां नांनेस में, पदरारें सेमल सुविचारी।
सायरें सेलानला में विचरी आया, उदयापुर उपगारी ॥ वा० ११ ॥
शहर थी बे कोस आसरे, आया वेदले गाम मझारी।
रात रह्या त्यां प्रात रावजी, कुंवर प्रमुख ले लारी ॥ वा० १२ ॥
लोक समुह सूं सुण वचनामृत, पाया चित्त चमत्कारी।
धर्म देशन दे विहार करी गणी, आया उदयापुर उपगारी ॥ वा० १३ ॥
पछें तलेसरा ऋषभदास नोहरा में, मुनि रह्या इकतालीस उदारी।
फुन तास हवेली में रह्या समण्यां, इक सो तीन विचारी ॥ वा० १४ ॥
इकसो चमाली मुनि अज्या नी, पांती आहार नी सारी।
मुनि नें ठिकाणे करता मुनिवर, वर चोक अधिक हुंसियारी ॥ वा० १५ ॥
राणाजी रे पिण गणि त्यां रहितां, थई धर्म रुचि भारी।
असवारी में देख मुनिस्वर, कियो नमस्कार सुविचारी ॥ वा० १६ ॥
उणचालीसमी ढाल विषे गणि, विचरी मेवाड़ मझारी।
लघु मास खमण उदयापुर रहि करि, मालव जावा नी त्यारी ॥ वा० १७ ॥



ढाल : ४०

दोहा

हिवे गणि महिमां निला, मालव नीं मन धार।
बहु मुनिवर परिवार सूं, विहार कियो सुविचार ॥ १ ॥
शहर कानोड पधारतां, वड़ा मोती मुनि लार।
गांव डबोक में डूबीया, तीन मुनि भव वार ॥ २ ॥

थयो जीवराज लघु कर्म वश, कर्म जबर जोधार।
धनजी नें दिधो धक्को, हमीर गयो भव हार ॥ ३ ॥
राजनगर वासी जबर, लिखमीचंद जई लार।
दंड दराय समझाय नें, लियो लघु जीव नें तार ॥ ४ ॥
दोय जणा समझ्या नहीं, वदता अवर्णवाद।
जबर कर्म जिण जीव नें, ते किम लहे समाध ॥ ५ ॥
सुखे २ गणिराज हिवे, आया शहर कानोड।
भाया बायां बहु ग्राम नां, सेव करे धर कोड ॥ ६ ॥
बयालीस सतीयां तिहां, वाचंयम बतीस।
ठाणा चिहोत्तर ठाट अति, रह्या रात्रि इकवीस ॥ ७ ॥

ढाल

[हुं बलिहारी हो जादवां—ए देशी]

तिहां शहर कानोड में स्वाम जी, अति बहुलो हो कीधो उपगार क।
जन सुलभ बोधी बहुला थया, केइ करता हो जन भव निस्तार क।
नित्य वंदो पूज्य महिमा निला, भवि तारक हो भल भरत मझार क।
जसु ग्यान चरण गुण उजला, कला चढ़ती हो दिन २ श्रीकार क।
नित्य वंदो स्वाम महिमा निला ॥ १ ॥
तिहां मालव देश थी आविया, मयाचंदजी हो अग्रवाला जाति क।
वले भेरजी गांधी भाव सूं, सेवा करवा हो विहुं गणपति साथ क ॥ नि० २ ॥
हिवे विहार कियो कानोड थी, दिधी देशन हो गणि अमृतवाण क।
तिहां भिलाड़ा थी आवियो, गंभीरमलजी हो सिंघी गुणखान क ॥ ३ ॥
हिवे चिताखेड़ा में आय नें, समझाया हो तिहां बहुं जन जान क।
विहार करने अंब तरु तले, दिधी देशन हो भवि अमिय समान क ॥ ४ ॥
हिवे मंदसोर शहर पधारिया, तव सहु ठाणा हो थया अडतालीस क।
त्यां बादरमलजी वांठिये, किधी सेवा हो मन अधिक जगीस क ॥ ५ ॥
तिहां दर्शन करवा जन उमट्या, वहु आवे हो थइ झूलरा जेह क।
गणि वयण सुणी विकसित हुवे, गुण गावे हो पाछा जाता गेह क ॥ ६ ॥
हिवे रतलाम थी तिहां आविया, गणि वंदण हो मन आण ओछाह क।
जणा पचास रे आसरे, देखी पाम्यां हो जन इचरज ताहि क ॥ ७ ॥

हिवे त्रिण रात्री मंदसोर रही करी, रत्नपुरी नें हो गणि कीध विहार क ।
मंजले २ जावर थई करी हो, रतनपुरी में गणि आया जिहवार क ।
तदा श्रावक नं बहु श्राविका, सामा आया हो गुरू करवा सेव क ।
सप्त वीस संग मुनी परवस्या, जन तारक हो जिन जिम गुरु देव क ॥ ८ ॥
पछै सरूप शशि पिण आविया, सन्मुख पधास्या हो पुज्य पुन्यवान क ।
सती सिरदारां आदि दे, थया ठाणा हो पेंसठ गुणखाण क ॥ ९ ॥
तिहां दर्शन करवा बहु आविया, उज्जेणी नगरी हो इन्दोर नां ताम क ।
बखतगढ़ प्रमुख बहु गाम नां, विनती करता हो दर्शन दिजे स्वाम क ॥ १० ॥
तब सतीय गुलाबां भणी तिहां, निकली माता हो स्वामी तिण परजोग क ।
सतीय सिरदारां भणी तिहां राख नें, आप तारे हो हिवे जनपद लोक क ॥ ११ ॥
ए चालीसमी ढाल में, मालव देशे हो गणपति मतिवंत क ।
भवि भाग्य दिशा थी पधारिया, जंगम तीर्थ हो देशक शिव पंथ क ॥ १२ ॥

दोहा

रह्या रात रतलाम में, सप्तवीस जय स्वाम ।
विहार करी वदनावरें, गणि आया गुणधाम ॥

कपूरजी कृत महाराजाधिराज री ढाल

[देशी—सावराजो]

पूज्य वांदीने पाछा गयाजी कांई, रतलाम ना नर वृन्द ।
बखतगढ़ ना श्रावक भला जी, आई भेट्या भांजण भव फंद ।
सांवलाजी आइज्यो म्हारे शहर ।
पूज्यजी पधारो म्हारे शहर, दिज्यो सुख सायर नी लहर ॥ सां० १ ॥
ऋषभदास मोदी ने रंग सूं जी, स्वाम कहै संता धारी सीख ।
ऋषभ दाखे दयानिधि रे, एक दृष्टांत राजा नों ठीक ॥ सां० २ ॥
संभू चाकर सुण उंदरा रे, तूं हिवे दिजे समझाय ।
मोहरां कोलां खावे नहीं, पदमसिंघ पाट पाय ॥ सा० ३ ॥

ढाल : ४१

दोहा

बखतगढ़ गुण दृढ़ गणी, ठाणा थया सेंतीस।
त्यां सरूपचन्दजी स्वामी नें, चतुरमास गण ईस ॥ १ ॥
बखतगढ़ भोलाय नें, वलि शिव ऋषि कर्मचंद।
अनोपचंद सेरा भणी, जूजूए गाम गणिंद ॥ २ ॥
चतुर्मास भोलाय नें, विहार करी गणिराज।
रत्नपुरी हिवे समवसर्‍या, जन तारक जिम जाज ॥ ३ ॥

ढाल

[राघव आवीयो हो—ए देशी]

संवत उगणीसे इग्यारे, वर्ष पुरी रतलाम।
पनरे मुनिवर सूं चोमासो, कियो स्वाम गुणधाम।
गणि गुण सागरू हो ॥ १ ॥
सिरदारांजी आदि देइ, सतीयां तीस उदार।
वलि चरचा वारता करी बहु विध, थयो अति उपगार ॥ ग० २ ॥
देहरापंथी बांवीस टोला, तणा श्रावक बहु ताम।
प्रश्न पूछ थया चित्त प्रसन्न बहु, करत जन गुणग्राम ॥ ग० ३ ॥
त्यां मेवाड़ मालव फुन थली नां, दर्शन जन बहु कीध।
अन्यमति पिण चित लह्या आश्चर्य, अति देख जय समृद्ध ॥ ग० ४ ॥
एक दिवस विभूतसिंह जी, पटवा आदि पिछाण।
मंदिर पंथी जनवृन्द सुणतां, पुछ्यो प्रश्न इक द्विज ताण ॥ ग० ५ ॥
कने बैठ्या मुनि देख पुछ्यो, कांइ सरधों छो यानें आप।
जब जयाचार्य मन विचार जाण्यो, इणरे दिसे मन कपट कलाप ॥ ग० ६ ॥
यां ने हूं साधु श्रद्धूं इम कहे मुझ, कदा ओ कहेला एम।
यां मांहि कोइ अभव्य हुवे तो, थे साधु कहो छो केम ॥ ग० ७ ॥
यांरा मन री कांई खबर तुझ नें, इणरा दीखे ए अभिप्राय।
तो हिवड़ां इणरो जाव एहने, नहीं देवणो इण ठाय ॥ ग० ८ ॥
इम विचार तर्क कह्यो इण नें, कोइ किण नें पुछ्यो ताम।
कहे तुझ जनक रो नाम कांई, तो ओ किण रो बतावे नाम ॥ ग० ९ ॥

तव तो धर्म द्वेषी न दियो उत्तर, रह्या ताम चुपचाप।
जद विभूतसिंहजी, जवाव दीधो, मात जाणे सो वाप ॥ ग० १० ॥
जद जयाचार्य कह्यो उत्तर, कहे निज जनक रो नाम।
तेहनो पिता तेहिज छै के, अन्य जनक है ताम ॥ ग० ११ ॥
तिण रे पिता री खवर निश्चै, अवर ने किम होय।
पिण व्यवहार में जसु सुतन वाजै, कहे नाम तेहनो अवलोय ॥ ग० १२ ॥
तिम म्है यां ने साध कहां, ते व्यवहार में कहां जोय।
निश्चय तो केवली ज़िनवर, कहे ते सत्य होय ॥ ग० १३ ॥
इम जाव सुण नें लोक वहुला, पाया चित चमत्कार।
गणपति नां गुणग्राम वहुला, करत वहु नर नार ॥ ग० १४ ॥
वलि देहरापंथी जन वहु, पुछया प्रश्न विविध प्रकार।
सघन झड़ी सम जाव सुण ने, कइ सुलभ वोधी थया सार ॥ ग० १५ ॥
तव माधोपुर पास हुंतो, सूरवाल इक ग्राम।
त्यां चिमनऋषि नी सुता भतीजी, कुंवारी कन्या ताम ॥ ग० १६ ॥
श्री जयाचार्य पास आवी, अर्ज करी आम।
हरवगसा ने वृधु कहे विहुं, मुझ तारो गणि गुणधाम ॥ ग० १७ ॥
आसोज विद छठ गाम वारें, मोछव वहु मंडाण।
म्यानां वैठी चमर ढुलता, गज कोतल निस्साण ॥ ग० १८ ॥
जयाचार्य हाथ संजम, लीधो धर उछरंग।
थयो धर्म नो उद्योत अत ही, जन लह्यो अधिक उमंग ॥ ग० १९ ॥
एक चालीसमी ढाल मांही, कही रत्नपुरी नीं वात।
वलि मालव में थई धर्म महिमा, निसुणे ते अवदात ॥ २० ॥

दोहा

वलि चोमासा में आविया, फोजमल जी आदि।
हिवे उतरियो चोमास पिण, गणि सेव करे अह्लाद ॥ १ ॥
दर्शन देई वखतगढ़, रह्या तिहां गणिराज।
तपसी रामा नें दियो, सखरो अणसण साज ॥ २ ॥
तप त्यां वहुलो कियो, दोढ़ मास इक वार।
दिन इकतालीस वार वे, तप छुटकर वहु धार ॥ ३ ॥

कलश

बहु तप तणो अधिकार, वार इग्यार मास किया भला।
आठे लगे एकाणवा थी, नित एकंतर निर्मला।
आठे वर्ष जय पाट मोछ्छव, छठ २ तप नित धारीतं।
बखतगढ़ ग्यारे मृग बिदे, जय पास कारज सारितं॥ १॥

ढाल : ४२

दोहा

विहार करी हिवे आविया, झकणावद में आप।
विविध प्रकार उपदेश दे, मेटत भवि संताप॥ १॥
पटलावद दिया पूज्य जी, दर्शण मृग सित मांह।
मेवाड़ नां फोजमल प्रमुख, करे बहु सेव सोछाह॥ २॥
हिवे पोह बिद पंचम दिने, झखणावदे गण इंद।
आछ आगार षट मास नो, स्व हथ धर आनन्द॥ ३॥
ऋषि अनोपम अणगार ने, कराय पारणो आप।
लाभ लियो अति धर्म नो, जसु रह्यो जगत जश व्याप॥ ४॥

ढाल

[हो म्हारा तारण तरण—ए देशी]

हिवे झखणावद सूं विहार करी ने, शहर पटलावद श्रीकार।
पाछा पधास्या पूज्य परम गुरु, करवा भविक निस्तार।
हो म्हारा तारण तरण गुण जाज गणाधिप, मालव देश तणा जन तास्या॥ १॥
पटलावद थी विहार करी नें पधास्या, थाट थांदले धर्म नों कीधो।
समय न्याय चरचा विविध पणे करी, वारू लाभ अधिक गणि लीधो।
हो म्हारा तारण तरण गुण जाज गणाधिप, मालव देश में धर्म दीपायो॥ २॥
त्यां दर्शन करवा इंदोर थी आया, खुबचन्द जी श्रावक भारी।
हिवे झाड़ीवके झावूवे जावा ने, जन तारण थया त्यारी॥ हो० ३॥
श्रावक साथे इंदोर आदि नां, हिवे झावूवे शहर मझारी।
जिन धर्म नो उद्योत कियो अति, त्यां चमत्कार लह्यो नर नारी॥ हो० ४॥

त्यां खुबचन्दजी करी अति अरजी, हिवे मरजी कर आप पधारो।
शहर इंदोर में दर्शण दिजे, किजे भविक जीव निस्तारो ॥ हो० ५ ॥
इह अवसर हिव राणपुर ना भाया, अर्ज करी अधिकेरी।
आगे त्यां मुनि नो पधारणो न हुवो, थास्यै धर्म वृद्धि वहुतेरी ॥ हो० ६ ॥
तब वहु उपगार विचार गणाधिप, स्वाम स्वरूप भणी तिहां राखी।
त्यां थी पंच कोस राणपुर में पधास्या, भल देशन अमृत भाखी ॥ हो० ७ ॥
त्यां साधु नो आचार विध २ ओलखायो, वलि सरधा नी रहस्य वताई।
तब घणा जणा गुरु धारणा कीधी, वारू जिन धर्म ज्योत जगाई ॥ हो० ८ ॥
तिहां दोय रात्रि रही फिर, आया पाछा भावुवे शहर मझारं।
बहु उपगार करी विहार कीधूं, इंदोर दिशि सुखकारं ॥ हो० ९ ॥
त्यां थी दत्ती ग्राम राजगढ़ ने खिलोड़ी, थइ नागद ने केसूर।
शहर इन्दोर हिवे पूज्य पधास्या, प्रगट्यो भविजन आनन्द पूर ॥ हो० १० ॥
अन्यमति स्वमति लोक बहु आवे, वाणी सुण नें हर्ष वहु पावे।
ठाणा वहोतर थया तिहां भेला, गुरु दर्शन चित्त हुलसावे ॥ हो० ११ ॥
त्यां माहा सुद पूनम वहु मुनिवर समणी, ढालां जोड़ गुणा री गाई।
ते वर्ष थी पाट महोछव रीत ठहरी, प्रगट वर्षो वर्ष सुखदाई ॥ हो० १२ ॥
मोतीझरो मुजने त्यां निकल्यो, थइ खांसी अति तिहवारी।
मास खमण रही विहार करी नें, पधास्या बे कोस सुविचारी ॥ हो० १३ ॥
तव मैं मुनि संग अरज कराई, मुज ने साथे ले चालो स्वामी।
आप विनां मुझ रहिणो न हुवे, दर्शन द्यो हिवे अंतरजामी।
हो म्हारा तरण तारण गणिराज, कृपाकर दर्शन दिजे के संग लिजे ॥ हो० १४ ॥
तव उठाय नें संग लेवण रो कियो मन, तव लालचन्द वोरड वैद्यराज।
खुबचन्दजी प्रमुख शक्त अर्ज कीधी, स्वाम सुणो गरीब निवाज।
हो म्हारा तारण तरण गुण जाज गणाधिप, पाछा इंदोर में दर्शन दीजे ॥ १५ ॥
हाल पाणीझरा ने सप्त विस दिन न हुवा, पहिलां उठाय ल्यो संग केमो।
मार्ग में रखो रहणो है अति दुक्कर, तिण सूं दर्शण देइ करो शिष्य खेमो ॥ हो० १६ ॥
इम अर्ज सुणी गणि पाछा पधास्या, ए ढाल वियांलीसमी कही तंतो।
मालव देशे जिन मार्ग जमायो, जय स्वाम जबर जशवंतो ॥ हो० १७ ॥

ढाल : ४३

दोहा

दिवस कितायक त्यां रही, मुझ नें पाणीझरो पिछाण।
ढलियां थी गणिराज हिवे, विहार कियो गुणखान ॥ १ ॥
बालक वय मुझ नें तदा, ऊंचाय नें अणगार।
गणि हुकमे निज साथ मुझ, ल्याया उजैण मझार ॥ २ ॥
हिवे पूज्य उज्जैन पुरी, कीधो अधिक उपगार।
मुज तनु पिण ओषध कियां, थयो करार तिवार ॥ ३ ॥
विहार करी हिवे गणपति, बड़नगर बड़ भाग।
केइक दिन त्यां रही लियो, रत्नपुरी नो माग ॥ ४ ॥
दिवस किता रतलाम रही, खाचरोद धर खंत।
समण सत्यां परिवार सूं, आया गणी महंत ॥ ५ ॥

ढाल

[हिंडे हालो रे—ए देशी]

खाचरोद में दिवस किता रही, कर उपगार सु भारी रे।
मालव देश नां बहु जन तारी, आवे देश मेवाड़ मझारी रे।
गणि गुण धारी रे।
ग० चिहुं तीर्थ संपती, पुन्य दिशा हद भारी रे। ग०।
ग० वर अति जश महिमा, फेली मुलक मजारी रे। ग०।
ग० म्हारे परम पूज्य नी, मुद्रा भवियण प्यारी रे॥ ग० १ ॥
मंदसोर थइ जावद शहर में, आया जय जशधारी रे।
अन्यमति स्वमति लोक बहु मिल, पूछ्या प्रश्न धर प्यारी रे॥ ग० २ ॥
विहार करी चितोड़ मेवाड़े, आया गणि मणधारी रे।
वखाण वाणी गण सम्पति देख जन, पाया चित्त चिमत्कारी रे॥ ग० ३ ॥
त्यां थी पहुनें पूज्य पधास्या, तव मेवाड़ नां नर नारी रे।
बहु वंदण आया हिये हुलसाया, मेला मंड्या तिहां भारी रे॥ ग० ४ ॥
पुर गंगापुर थइ गणाधिप आया, आंवावती गुणधारी रे।
ले आगरीये लावे धर्म लाहो, केलवे कला विस्तारी रे॥ ग० ५ ॥
राजनगर कांकडोली रही रे, आया श्रीजीदुवारी रे।

त्यां ग्राम २ में मनुष्य सैंकड़ा, थया मंडाण सु भारी रे ॥ ग० ६ ॥
हिवे उदयापुर अधिक हगामें, परम पूज्य जशधारी रे।
कियो उगणीसे बार चोमासो, त्यां तेरे संत तंतसारी रे ॥ ग० ७ ॥
सिरदारांजी श्रमणी गुणमणि, आदि बतीस उदारी रे।
चतुर्मास में सेवा साझै, सतीयां महा सुखकारी रे ॥ ग० ८ ॥
धर्म उद्योत अधिक जश परिमल, फेल्यो नगर मझारी रे।
गणि वच पियूष पीय नागर जन, करे प्रफुल्ल गुणबाड़ी रे ॥ ग० ६ ॥
राणा तिहां सरूपसिंहजी वारूं, अति बुधवंत उदारी रे। ग०
मोखजी खिवेसरा नें साथे, प्रश्न पुछाया भारी रे। ग०
ग० वर हेतु युक्ति वर, उत्तर दिया उदारी रे। ग०
ग० उत्पात तणी हद, बुद्धि नों बहु विस्तारी रे। ग०
ग० जय जाब सुणी लहे, चित मांही चमत्कारी रे ॥ ग० १० ॥
मोखा ए मुनि रात्रि विषे तो, राखे नहीं उदक लिगारी रे।
कदाच दस्त नों काम पड़े तो, किम करे कर निरधारी रे ॥ ग० ११ ॥
मोखजी आय नें पुछ्यो जद जय नें, तब भाखे गणधारी रे।
निर्जला एकादशी यांरे, कोइ करे निगोट उदारी रे ॥ ग० १२ ॥
रात्रि विषै ज्यो वमन हुवें तो, कांई करे सुविचारी रे।
जल तो जिण वेलां मुंढा में, घालणो नहीं लिगारी रे ॥ ग० १३ ॥
ए पेट माहिली वस्तु है तेही, निकली है मुख द्वारी रे।
ते पिण प्रात थयां थाय शुद्ध तो, ए द्वार ही अवर विचारी रे ॥ ग० १४ ॥
रात्रि विषै तो समय विषै जिन, भाख्यो जिम करे धारी रे।
पिण अशुचि थकां सूत्र नहीं वांचे, प्राते जाचे वारी रे ॥ ग० १५ ॥
जे करणो हुवे ते कार्य करे वलि, अवर प्रश्न उदारी रे।
पूछ्यां तसु उत्तर सुण पृथ्वीपति, थया राजी रुचि थइ भारी रे ॥ ग० १६ ॥
हिवे जय गणपति विहार टांकड़े, कह्यो मोखजी नें सुविचारी रे।
हाथी लड़वा नो पुर वाहिर छै, दिवानखानो अति भारी रे ॥ ग० १७ ॥
तिहां रात्रि रहां तो दरबार नी, स्यूं मरजी है सारी रे।
जद मोखजी जाय कह्यो हिवे काल्हे, करसी विहार गणधारी रे ॥ ग० १८ ॥

कलश

मुनि वात करता गज-युद्ध होवे, जे दिवानखानो है तिहां।
दरबार नी मुरजी किस्यूं, जे रात्रि रहिणो ह्वै जिहां।

जब हिन्दुपति इम वचन आख्यो, इक मास रहे तो मुज रजा।
फुन जदि आवे जद रहे तो, रजा है निसुणो प्रजा॥ १॥
फुन प्रात वेलां बेग आवे, इम कहि दीधी सीख ही।
जद मोखजी गणि पास बतका, जिम हुइ ते आवी कही।
वलि गयो प्रात दरवार पे जद, च्यार वच आख्या तदा।
प्रथम मुज दंडोत कहिजे, वलि द्वितीय वच सुणिये मुदा॥ २॥
पधारज्यो वलि बेग पाछा, कृपा म्हां पर राखजे।
वलि तुझ कृपा सूं है भलो, एम जइ तुं दाखजे।
ए समाचार तब मोखजी, जय पास आवी नें कह्या।
चिहुं वाक्य सुणी करी तीर्थ च्यारूं, हृदय बिच अति गहगह्या॥ ३॥

ढाल

चोमास उतर्‍यां हिव गणि रह्या, विहार करी सुविचारी रे।
दिवानखाने त्यां लालसिंघ जी, किया दर्शन हुँसियारी रे॥ ग० १६॥
गणि विचरत २ गाम पहुने, आया उद्यम आणी रे।
त्यां रंभा सती आछ आगारे करी, षट मासी गुणखाणी रे।
सतीयां स्याणी रे।
स० इह अरक सु दुक्कर, तप कियो उद्यम आणी रे। स०।
स० षट मासी पारणो करे, गुरु दत्त हर्ष भराणी रे॥ स० २०॥
पारणो त्यां नें पूज्य करायो, पछे पुर आया गुरु ग्यानी रे।
त्यां आछ आगार हस्तु षट महिना, पचख्या पहिला जाणी रे॥ स० २१॥
हिवे पूज्य आयां दिन तेरे उपर, पचख्या उद्यम आणी रे।
वलि ग्यानांजी जेतां विहुं करी, षट मासी गुणखाणी रे॥ स० २२॥
पारणो तो ए त्रिहुं ने पोते, परम पूज्य सुखदानी रे।
स्व हथ कराय लियो धर्म लाहो, जग महिमा जबर फेलाणी रे॥ स० २३॥
हिवे मोखणदे आया मुनिपति, आछ आगार सु भारी रे।
मोटजी तपसी नो छःमासी नो, पारणो परम उदारी रे।
मुनि जशधारी रे।
मु० वर षट मासी तप, कीधो धर हुंसियारी रे। मु०
मु० ए तप असी कर ग्रही, जीपे अघरिपू भारी रे। मु०
मु० तमु दीपे किरिया, विमल ज्यूं गंगा वारी रे॥ मु० २४॥

स्व हथ आप करायो स्वामी, वलि खुमजी मुनि तप भारी रे।
तप षट मासी उपर तुररो, दिन तेरे अधिक उदारी रे॥ मु० २५ ॥
दिन इक सो त्राणुमो मोखणदे, तप कियो आछ आगारी रे।
पारणो खुम ऋषि नें पिण तव, कराविो गुणकारी रे॥ मु० २६ ॥
हिवे विहार करी नें श्रीजीदुवारे, आया गणि उपगारी रे।
त्यां तपसी अनोप तप आछ आगारे, किया दिन वेसोअठारे सु भारी रे। मु०
मु० तप सवा सत मासी, कीधो धर हुंसियारी रे॥ मु० २७ ॥
त्यां नें पिण स्वहथ जय स्वामी, गुणधामी गुणकारी रे।
पारणो करायो अति सुखदायो, जग जश पायो भारी रे॥ मु० २८ ॥
चिहुं षट मासी ना सतीयां नें, वलि वे संता ने सारी रे।
सवा सप्त मास ए सात पारणा, कराया गणि गुणकारी रे॥ मु० २९ ॥
हिवे विहार करी गोघुन्दे आया, खींवेसरो सुखकारी रे।
दर्शण कर नें कह्या मोखजी, समाचार सुविचारी रे॥ मु० ३० ॥
दरबार कह्यो गोघुन्दे तो, आप पधास्या धारी रे।
तो उदयपुर चोरी करी कांई, इम कह्यो वच अति भारी रे॥ मु० ३१ ॥
तीन चालीसमी ढाल विषे गणि, देश मेवाड़ मभारी रे।
विचस्या अरु तपस्यां तप कीधो, ते कही बात सुविचारी रे॥ मु० ३२ ॥



ढाल : ४४

दोहा

वड़ागाम सुं विहार करि, रावलीया ऋषिराज।
नानेस में रह्या महामुनि, भविजन तारण काज॥ १ ॥
पदराड़ा नें सायरे थइ, भाणपुरे गुणखाण।
राणपुरजी रात्रि रह्या, त्यां मंड्या वहु मंडाण॥ २ ॥
घाटे उतरतां घणा, मेवाड़ नां महाजन्न।
पहुंचावण साथे हुवा, मुनि सेवा में मन्न॥ ३ ॥
उदयापुर चितोड़ नां, नाथद्वारा नां साथ।
कांकड़ोली वड़ग्राम नां, राजनगर विख्यात॥ ४ ॥
इत्यादिक वहु ग्राम नां, भाया पिण हा साथ।
अने वायां पिण सेवा मझे, रही राणपुरे रात॥ ५ ॥

अनें लाला भैरूलालजी, मोखणुदा रे मांहि।
मुनि पारण दिन थी तदा, करता सेव सवाय॥ ६॥
त्यां थी आया सादड़ी, गणिवर गुण गंभीर।
त्यां भाया वाया पाली तणा, स्हामा आया धर धीर॥ ७॥

ढाल

[भाभीजी हो डूंगरिया—ए देशी]

सुणो सुगण जन हो।
हिवे पाली में पूज्य पधारिया, तिहां रह्या इक मास।
मुनिपतिजी हो।
व्याख्यान वाणी विध २ करी, कीधो धर्म उजास।
सुगणा भवि प्राणी हो।
जीत गणि जिनवर समा, करवा धर्म उद्योत। सु०
भवदधि थी भव्य जीव नें, प्रगट्या ज्यूं तारक पोत॥ सु० १॥
त्यां तुलछी वाई सोनारी श्राविका, करती पारण तप सात २। सु०
पछे पेंतीस दिन तिण पचखिया, किता दिवस गया सुविख्यात॥ सु० २॥
पाली पधास्या पूज्य जी, दिया दर्शन पैंतीस मांही। सु०
विविध वैराग्य नी देशना, ते सुण लहे हर्ष सवाय॥ सु० ३॥
तिणरे साठ वर्ष आयां पछे, हुंता तीन आहार ना त्याग। सु०
हिवे गणपति वचन सुणिया घणा, वध्यो चित अति वैराग।
सुगणी बाई हो॥ ४॥
तुलछी अरज करी स्वाम सूं, हिवे मुझ त्याग मांहि अवधार।
गणपतिजी हो।
साठ वर्ष में दिन इक वे घटे, करावो जाव जीव संथार।
सुगणी बाई हो॥ ५॥
पेतीस दिवस नें पारणे, वहु हठ सूं करी सुविचार। सु०
अणसण मांग्यो उचरंग सूं, तत्र पचखायो गुणवार॥ सु० ६॥
अधिक उद्योत थयो धर्म नो, अन्यमति स्वमति ताय। सु०
जन चमत्कार बहु पामीया, हिवे विहार करी गणिराय॥ सु० ७॥
खेरवे शहर पधारिया, हिवे तुलछी नें पाली मांही। सु०
तिविहार दिन इकतीस नो, आयो संथारो सुखदाय॥ सु० ८॥

वारूं सेंठी रही व्रत में तदा, तसु महिमा थइ पुर मांय। सु०
धिन २ जन बहु उचरे, गाता गुण अधिकाय ॥ सु० ६ ॥
पछे कांठारी कोर में महामुनि, विचरी जय गण इन्द। सु०
सुरगढ़ शहर पधारिया, तारण मेदपाट जन वृन्द ॥ सु० १० ॥
त्यां हाजरी में अन्यमती स्वमती, सैंकड़ा मनु समुदाय। सु०
गणि वच सुणी हिवे धारता, प्रफुल्ल थई मन मांय ॥ सु० ११ ॥
हिवे घाटे उतरनें पधारिया, पाली शहर चोमास। सु०
उगणीसे तेरे समें, संग तेरे संत गुणरास ॥ सु० १२ ॥
सती सिरदारांजी आदि दे, सतियां सहु चोतीस। सु०
गणि वच अमि जल पीयनें, जीते राग नें रीस ॥ सु० १३ ॥
थली देश थी आयनें, घणा मास सेवा कर ताय। सु०
मोतीजी आग्या लेइ मात नी, वारूं नव वर्ष नी वय मांय ॥ सु० १४ ॥
जाति डागा गणि हाथ सूं, मोछव अति मंडाण। सु०
आसोज सित तिथि बीज नें, लियो चरण रयण गुणखाण ॥ सु० १५ ॥
वलि शहर फलोधी सूं आयनें, चूनां जड़ावजी दोय। सु०
जाति गोलेछा दिक्षा जय हाथ सूं, ली काती सित इग्यारस जोय ॥ सु० १६ ॥
किण ही अन्यमती इम पूछियो, किता मुनि अज्जा इह वार। सु०
जद उत्तर दियो चवदे मुनि, समण्यां छतीस विचार ॥ सु० १७ ॥
जद ओ बोल्यो हजार २ ही। दीठ आया एक एक। सु०
ज्यूं प्रभु रे चवदे छतीस हजार तिम, ए चवदे छतीस संपेख ॥ सु० १८ ॥
ए चमालीसमी ढाल में, मरुधर देश रे मांह। सु०
बहु भव्य जीव प्रतिबोध नें, लियो अति धर्म नो लाह ॥ सु० १६ ॥

●

ढाल : ४५

दोहा

हिवे चोमासो उतस्यां, विहार करी गणनाथ।
खेरवे शहर आया तिहां, श्रमण सत्यां बहु साथ ॥ १ ॥
मोतीझरो त्यां निकल्यो, सती सिरदार नें तन।
मास खमण इक तिण मुदे, रह्याज रूड़े मन ॥ २ ॥

त्यां सेरा नवे शहर का, गजमलजी मुणोत।
तसु बहु पति ऋद्धि तजि लियो, चरण करण उद्योत ॥ ३ ॥
हिवे कांठारी कोर में, आया जय महाराज।
चिरपटीये दर्शण दिया, भविक जीव हित काज ॥ ४ ॥
त्यां मोतीजी मुनि भणी, माता नें गण इन्द।
स्व हत्थ समाप्यो स्वामजी, चरण रयण सुखकंद ॥ ५ ॥
मांडे आय हिवे महामुनि, स्त्री सुता बहिन सहित।
चरण देवा छजमल भणी, त्यार कियो सुवदीत ॥ ६ ॥

ढाल

[उभय मेख तिहाँ आवड़िया—ए देश]

हिवे विचरत २ गणधारी, आया शहर कंटाले गुणकारी।
किया पूनम पट मोच्छव भारी
हो गणिराजा।
भव्य जन तारण आप लियो अवतारो, अतिशय गुण जाझा।
बोधि चरन दायक अति श्रीकारो ॥ १ ॥
सुधरी चंडावल थइ स्वामी, जेतारण होय अंतरयामी।
आया वलुंदे कालू शिव कामी ॥ हो० २ ॥
हिवे तुठी कालु में मुझ माता, लघु मास रह्या त्यां मुनि-त्राता।
कियो विहार थयां मुज सुखसाता
हो मुनि राजा।
सुखै २ विचरंता देश थली विषै आवै, लहे सुख जाझा।
भविजन सुण मन हर्ष प्रमोद सु पावे ॥ ३ ॥
आया पाडु महुड़े मणिधारी, त्यां श्रावक लाडणू नां भारी।
किया दर्शण घर हुंसियारी ॥ हो० ४ ॥
शिवजीराम दुगड़ अति श्रीकारी, वेद गुलाव शशि गुणधारी।
प्रमुख श्रावक अरज करी भारी ॥ हो० ५ ॥
पूज्य थली देश पगला कीजे, म्हारे लाडणूं प्रमुख दर्शण दीजे।
त्यां लाभ धर्म नों बहु लीजे, हो गण इन्दा।
कृपा करी हिवे देश थली में पधारो, ले मुनि वृन्दा।
गुणीजन सघन व्रत बोधि देइ हिवे तारो ॥ ६ ॥

इड़वे बाजोली थइ आया, पछै शहर लाडणूं गणिराया।
दिवस बहु थली देश डेरा थाया ॥ हो० ७ ॥
हिवे सुजानगढ़ थइ सुविचारी, आया शहर बिदासर सुखकारी।
कियो वर्ष चवदे चोमासो चित धारी ॥ हो० ८ ॥
त्यां चउदश मुनिवर गुण मालं, सिरदार प्रमुख सती सुविशालं।
सहु समणी संख्या अड़तालं ॥ हो० ९ ॥
त्यां गाम माढ़ा नां गुणखाणी, छजमलजी भंडारी सुखदाणी।
सित भादवे दशम सुविहाणी ॥ हो० १० ॥
वारूं स्त्री उमेदां लइ साथं, वलि सुता केशर पिण गणि हाथं।
लियो चरण वरन सहु शिव आथं ॥ हो० ११ ॥
वलि भगिनी कुनणां पिण भारी, लियो चरण चिहुं भव निस्तारी।
दियो संजम जय गणि गुणधारी ॥ हो० १२ ॥
चरण महोच्छव थयो अति भारी, पर गामां नां सैंकड़ां नर नारी।
आया दर्शण ओछव नी दिल धारी ॥ हो० १३ ॥
थयो घणो हगाम सूं चौमासो, हुवो श्रावक भवि मन हुलासो।
वारूं बिदासर मुनि सुखवासो ॥ हो० १४ ॥
त्यांथी करी विहार मृगसर मासं, गणि शहर लाडणूं सुविमासं।
करे लोक घणा गणि पर्यूपासं ॥ हो० १५ ॥
त्यां जाति श्रावगी जसवंती, मृगां पति तज चारित्र पुन्यवंती।
लियो गणपति कर अति गुणवंती ॥ हो० १६ ॥
वलि बीकानेर तणा वासी, रतनगढ़ पिहर गुण रासी।
वारूं कुनणांजी अति सुविमासी ॥ हो० १७ ॥
सुता कुंवारी कन्या साथं, लेवा सिरेकुंवरजी शिव आथं।
लियो लाडणूं चरण गणी हाथं ॥ हो० १८ ॥
कही पंच चालीसमी ढालो, गणि जश उज्वल मोक्तिक मालो।
कियो थाट थली में सुविशालो ॥ हो० १० ॥

●

ढाल : ४६

दोहा

उगणीसे पनरे वर्ष, लाडणूं में चोमास।
जयाचार्य प्रमुख सहु, सतरे मुनि गुण रास ॥ १ ॥

सिरदारांजी आदि सहु, सतीयां पेंतालीस।
ग्यान ध्यान व्याख्यान करि, धर्मोद्यम निशि दीश ॥ २ ॥
जल आगार छतीस दिन, कियो तप मुनि दीपचंद।
बीस दिवस बन्नां सती, फत्तु इक मास सोहंद ॥ ३ ॥
देशनोक थी आय नें, सेरांजी गणि हाथ।
सावण में संजम लियो, लघु छोग सुत साथ ॥ ४ ॥
चारित्र लीधो चूंप सूं, मास भाद्रवा मांहि।
चूनांजी चुरू तणां, शहर लाडणूं आय ॥ ५ ॥
रामलाल दुगड़ सुता, बखतावर सुविचार।
कुंवारी कन्या पूज्य पे, थइ संजम नें त्यार ॥ ६ ॥
भातृ भूवा मा तात तज, सज संजम सिणगार।
मृग बिद पंचम स्वाम कर, लियो चरण हितकार ॥ ७ ॥

ढाल

[वार चालणहार—ए देशी]

होजी सोले वर्ष श्रीकार, सुजाणगढ़ में सही हो लाल। सु०।
होजी गणपति आदि उदार, अठार मुनि उमही हो लाल। अ०।
होजी सिरदारांजी आदि, सत्यां चोमास में हो लाल। स०।
चालीस इक सु समाधि, रहें हुलास में हो लाल ॥ र० १ ॥
होजी फतुजी दिन सेंतीस, कियो तप उजलो हो लाल। कि०।
होजी बनांजी इक मास, इकतीसो अति भलो हो लाल। इ०।
होजी अन्य तप विविध प्रकार, कियो साधु सती हो लाल। कि०।
होजी दोय दिक्षा चोमास, मांहि थई दीपती हो लाल ॥ मां० २ ॥
होजी अमरचंद सुखदाय, वेगवाणी भलो हो लाल। वे०।
होजी बीकानेर सूं आय, चरण लियो गुणनिलो हो लाल। च०।
होजी सुजानगढ़ सुवास, नाम तीजां सही हो लाल। ना०।
होजी चरण लियो सुविमास, स्वाम कर उमही हो लाल ॥ स्वा० ३ ॥
होजी उगणीसे सतरे वास, चोमास बिदासरें हो लाल। चो०।
होजी चउदस मुनि गुण रास, सखर सेवा करें हो लाल। स०।
होजी आप सहित सहु पनरे, सिरदारां आदि ही हो लाल। सि०।
होजी बावन समणी सेव, करे अहलाद ही हो लाल ॥ क० ४ ॥

होजी फत्तु तप चालीस, मोतां चूनां वलि किया हो लाल । मो० ।
होजी बिहुं तप दिन इकवीस, पख २ बहु फुन पचखिया हो लाल । प० ।
होजी बिदासर जसु वास, पीहर सेखाण्यां तणे हो लाल । पी० ।
होजी मोतां मृग बिद चोथ, चरण उचरंग घणे हो लाल ॥ च० ५ ॥
पछै लाडणूं थइ गणिराज, विहार जैपुर भणी हो लाल । वि० ।
होजी पूज्य भवोदधी पाज, जाज जिम जय गणि हो लाल । जा० ।
होजी डीडवाणे गणिराय, आया उचरंग घणे हो लाल । आ० ।
होजी त्यां कोहाथल थी आय, रतनजी ततक्षिणे हो लाल ॥ र० ६ ॥
होजी चरण लियो गणि हाथ, हिवे साथ सेवा करी हो लाल । हि० ।
होजी लालांजी सुविख्यात, थेट तांई खरी हो लाल । थे० ।
होजी वलि फोफलिया जाति, छजमल महादेवजी हो लाल । छ० ।
होजी प्रमुख भाया बाया साथ, करी गणि सेव जी हो लाल ॥ क० ७ ॥
होजी कुचामण नावें होय, जोबनेर आविया हो लाल । जो० ।
होजी तब जयपुर नां जन जोय, हरष बहु पाविया हो लाल । ह० ।
होजी जयपुर शहर रे मांहि के, पूज्य पधारिया हो लाल । पू० ।
होजी सरस सुमति जल पाय, भविक बहु तारिया हो लाल ॥ भ० ८ ॥
होजी पाट महोछब नों थाट, कियो जयपुर शहर में हो लाल । कि० ।
होजी च्यार तीर्थ गहघाट, सुगण मन अति गमे हो लाल । सु० ।
होजी इण अवसर अवलोय, हरियाणां थी तदा हो लाल । ह० ।
होजी गुलहजारी जोय, तपसी आर्य अति मुदा हो लाल ॥ त० ९ ॥
होजी दशन करण विख्यात, साथ श्रावक घणां हो लाल । सा० ।
होजी वलि वैरागी रामनाथ, भाव दिक्षा लेवा तणा हो लाल । भा० ।
होजी तसु चरण देण गण इंद, रह्या बाहिर तदा हो लाल । र० ।
होजी गोलेछा मानकचंद नां, वाग मांहे जदा हो लाल ॥ वा० १० ॥
होजी फागण विद पख मांही, चरण उचरावियो हो लाल । च० ।
होजी रामनाथ देइ चरण लाह, परम सुख पावियो हो लाल । प० ।
होजी जोवनेर कुचामण होय, डीडवाणे आविया हो लाल । डी० ।
होजी थली देश में थाट, अधिक जमाविया हो लाल ॥ अ० ११ ॥
होजी सूरवाल थी आय, विदासर में कह्यूं हो लाल । वि० ।
होजी वृद्धिचंद भूरा ओछाह, सजोड़े पति स्त्री विहुं हो लाल । स० ।
होजी विद चोथ आसाढ़ न ताहि, चरण गणि आपीयो हो लाल । च० ।
होजी जगवारी गणिराय, जग जश व्यापियो हो लाल ॥ ज० १२ ॥

होजी उगणीसे अठारे वास, चोमास गणपति तणो हो लाल। चो०।
होजी वीस मुनि गुणरास, लाडणूं जश घणो हो लाल। ला०।
होजी सिरदारांजी आदि, पणतालीस महासती हो लाल। प०।
होजी कर तप जप ग्यान ध्यान, कर्म रिपु त्रासती हो लाल॥ क० १३॥
होजी भाद्रवे मास विख्यात, वासी सूरवाल ना हो लाल। वा०।
होजी कन्या पारवती साथ, नोहंदाजी शुभ मना हो लाल। नो०।
होजी चरण लियो जय हाथ, तिरण भव सागरू हो लाल। ति०।
होजी मा बेटी बिहुं साथ, थई गुण आगरू हो लाल॥ थ० १४॥
होजी कार्तिक बिद पक्ष मांहि, ईड़वा सूं आय नें हो लाल। ई०।
होजी उत्तमचन्द सुहाय, चारित्र चित्त लाय ने हो लाल। चा०।
होजी पुत्र त्रियादिक ताहि, छांड संजम लियो हो लाल। छां०।
होजी वृद्ध अवस्था मांहिं, साहज्य तसु बहु दियो हो लाल॥ सा० १५॥
होजी माघ मास गुणसिंधूने, सुख चूंप सूं हो लाल। सु०।
होजी चिमन मुनि वड वन्धु, तिस्या भव कूप सूं हो लाल। ति०।
होजी तसु साथे पुन्यवंत, शहर चुरू नां सही हो लाल। श०।
होजी गुलाव सती गुणवंत, चरण लियो उमही हो लाल॥ च० १६॥
होजी माधोपुर सुरवाल, वासी इक घर तणा हो लाल। वा०।
होजी वे बंधव परिवार, चारित्र लीधो घणा हो लाल। चा०।
होजी रामसुख प्रमुह चिहुं वंधु, चिमन चेन सुख सही हो लाल। चि०।
होजी सुत त्रिय पुत्री पमुह, चरण लियो सोलही हो लाल॥ च० १७॥
होजी केइक लीधो चरण, ऋषिराय हाथ ही हो लाल। ऋ०।
होजी केयक श्री जय हाथ, कही चैन प्रसंग ए वात ही हो लाल। क०।
होजी छव चालिसमी पेख, ढाल ए अति भली हो लाल। ढा०।
होजी चिहुं वर्ष वात संक्षेप, कही मन नी रली हो लाल॥ क० १८॥

●

ढाल : ४७

दोहा

हिवे उगणीसे वर्ष कियो, सुजानगढ़ चोमास।
ज्याचार्य प्रमुख सह, सोल संत गुणरास॥ १॥

सिरदारांजी आदि दे, सतियां चमालीस।
गणी आण गलतान सहु, सुख मानें निशि दीस ॥ २ ॥
शहर फलवधी सूं तदा, जोतां जी जय पाहि।
संजम लीधो आय नें, काती सुध पख मांहि ॥ ३ ॥
मोखणदे थी अति मुदा, जोगीदास सु विचार।
सती हस्तु खेमा पिता, लीधो चरण तिवार ॥ ४ ॥
जाति भंडारी जोरजी, माढ़े नां मतिवंत।
छजमल मुनि बंधव बड़ा, तजि सुत आदि सुतंत ॥ ५ ॥
आउवा नो वासी अवल, रूपचंद सुविख्यात।
आयो चारित्र लेण कूं, तज त्रिया अरु भ्रात।
रूप जोरजी ए बिहुं, बीदासर वर शहर।
गणपति कर साथे बिहुं, लियो चरण गुण गहर ॥ ७ ॥

ढाल

[धिन २ भिक्षु स्वाम दिपाई दान दया—ए देशी]

हिवे करवा चोमास, पूज्य महाराज सही।
वर चुरू शहर विमास, पधार्‌या चित उमही।
चित उमही वीसे वर्ष वही, बहु श्रमण सत्यां नें संग लही।
ए तो धन्य २ श्री जय स्वाम, कीर्ति किम जाय कही ॥ १ ॥
त्यां शेषे काल सुविचार, जेठांजी चरण लियो।
तज बंधु परिवार, सुमती रस सरस पीयो।
सरस पीयो जी धन्य तास जीयो, सुण सुगण तणो विकसे जु हियो।
हिवे गणपति वीसे वास, चुरू चोमास कियो ॥ २ ॥
गणपति आदि सु साध, शील तप सुमति धरे।
सिरदारां जी आद, सत्यां छतीस सिरे।
छतीस सिरेजी गणि सेव करे, वचनामृत हिये पूर भरे।
जिके शिव रमणी सुख वेग वरे।
भवि जय गणि पद जाज, ग्रह्यां भव उदधि तरे ॥ ३ ॥
हिवे जयपुर सुं आय, छोटांजी श्रीकारी।
चेनसुख बांठिया ताहि, वेन अति गुणधारी।

गुणधारी महिमा भारी, श्रावण सित षट सुखकारी।
लियो चरण स्वाम कर सुविचारी।
ए तो धिन २ श्री जय स्वाम, करे भव निस्तारी॥ ४॥
हिवे मास आसोज अमंद, तेरस बिद अति भारी।
सइकड़ां लोकां रा वृन्द, देखतां सुविचारी।
सुविचारी गणि जशधारी, बलि सिरदारांजी श्रीकारी।
वलि वनां गुलाब पिण तिहवारी, चिहुं तीर्थ पेखत मिणधारी।
दियो मुझ नें पद युवराज, गणाधिप गुणकारी॥ ५॥
निज कर श्री गणिराय, पछेवड़ी आप तणी।
दीधी मुझ ओढाय, महर अतिहिज घणी।
अतिहिज घणी गण मुकुट मणि, मर्याद गुणसठे वर्ष तणी।
ते लिखाय निज हाथ गणी।
लिख्यूं भारीमाल सु ठाम, नाम मुज महामुणी॥ ६॥

कलश

तिण लिखत में मर्याद ए सहु, संत नें समणी सही।
मघराजजी आग्या मझे नित, चालवो चित उमही।
ऋतुबंद काल चोमास करणा, तेह आग्या ले करी।
आग्या विन रहिणो नहीं क्यां, मेर ए महाराज री॥ १॥
किण ही भणी जे देणी दिक्षा, तेह पिण तसु नाम ही।
चरण देई आण तेहनें, सूंपणां ते ताम ही।
इत्यादिक मेरा लिख मुनि नां, लिखत हेठे गणि यदा।
अक्षर कराय ते काम पाखर, तुल्य कीधो गणि तदा॥ २॥

ढाल

इसा उजागर आप, गणी गुणवंत भला।
दियो पद युवराज सु स्थाप, आप गुण ग्यान निला।
ग्यान निलाजी अति ही उजला, गंगा जल सम शुचि विमला।
ए तो धिन २ श्री जय स्वाम, रह्यो जश छाइ इला॥ ७॥
हिवे जयपुर शहर थी आय, मुनिपति लघु वय मन रंगे।
आग्या लेइ माता नी ताहि, चरण लियो चित चंगे।

चित चंगे जिम जल गंगे, वलि जड़ाव जोतांजी विहुं संगे।
आमेट वासी अति उमंगे।
त्रिहुं मृग विद प्रतिपद चरण, लियो अति उछरंगे॥ ८॥

सोरठा

जड़ावजी अवलोय रे, सुता जू ओटा साह नी।
अमरचंदजी जोय रे, वहिन पिउ तज चरण लियो॥ ९॥
संवेग्यां थी आय रे, चूनीलाल लेइ चरण।
अल्प दिवस रही मांह रे, ज्यां थी आयो त्यां गयो॥ १०॥

ढाल

हिवे एकम नी रात, शहर बारे स्वामी।
रह्या ते दिवस विख्यात, रीणी थी गुणधामी।
गुणधामी संजम कामी, नाम मुलतानां शिरनामी।
कहे मुझ संजम द्यो स्वामी।
तसु मृग बिद बीज सुचरण, दियो अंतरजामी॥ ११॥
इम चुरू शहर रे मांही, उद्योत हुवो अति भारी।
वलि पद युवराज ओच्छाह, थयो अति श्रीकारी।
श्रीकारीजी गणि यशधारी, तसु दर्शन करवा नर नारी।
इक वे सहस्र लग सुविचारी।
ए तो आया धर आनन्द, अधिक मन हुंसियारी॥ १२॥
हिवे चुरू शहर सुं विहार, करी नें ऋषि राया।
लाडणूं नी दिशि धार, सुजानगढ़ में आया।
गढ़ में आया अति हुलसाया, त्यां सरूप शशि दर्शन पाया।
ए सात चालीसमी ढाल, गणाधिप गुण गाया॥ १३॥

●

ढाल : ४८

दोहा

हिवे कसुंवी के दिवस रही, विहार करी कर महर।
महा सित पुष्प दिन पूज्य जी, आया लाडणूं शहर॥ १॥

कपूर जीवोजी संतजी, लघु छोग पिण लार।
तिण दिन छानें निकल्या, ए च्यारूं अविचार ॥ २ ॥
आथण लग आया नहीं, जब जाण्यो मुनिराय।
पूठे रहिवा नुं नहीं पूछियो, निकल्या एह जणाय ॥ ३ ॥

ढाल

[राजग्रही नगरी भली—ए देशी]

हिवे महा सित पूनम दिने, नवी ढालां मुनिराय।
जोड़ गाइ तव चतुरभुज, गाई नवीन बनाय।
सुगण नर सांभलो रे ॥ १ ॥
चतुरभुज पिण ते चिहुं, सामिल हुंतो सोय।
गणपति सुं इह अवसरे, अर्ज करी अवलोय ॥ सु० २ ॥
लघु छोग पत्र मुज, लेइ गयो गण बार।
हुक्म हुवे जो आपरो, तो ल्यावूं जइ लार ॥ सु० ३ ॥
जय कहै जाण्यो पत्र नो, लेइ गयो जो जेह।
तव कहे समजें जीव को, अधिक लाभ है एह ॥ सु० ४ ॥
इम सुण भाषे स्वाम जय, बड़ा छोग प्रति जेह।
म्हेलां मरुधर देश में, तिण मार्ग है तेह ॥ सु० ५ ॥
जो अवसर देखो तुमे, हंस भणी लेइ साथ।
जाज्यो इम कही छोग संग, मेल्या तव गणिनाथ ॥ सु० ६ ॥
गया गाम मा था सुखे, हंस चतुरभुज दोय।
चतुरभुज तव तेह थी, सामिल हुवो सुजोय ॥ सु० ७ ॥
जिलो बांध पांचूं जणा, बोल्या अवर्णवाद।
फिर आया फिर निकल्या, तेहनो बहु संवाद ॥ सु० ८ ॥
ग्रन्थ वधतो जाणनें, संकोच्यो सुविचार।
बात विस्तार छै तिहां, जयकृत रास मझार ॥ सु० ९ ॥
मुनिपति मुनिवर नों पिता, तसु खोले थो ताय।
तिण लेखे दादो तिको, थानजी नाम कहाय ॥ सु० १० ॥
द्वेष्यां नीं संगत करी, तिण दिधी अरजी ताम।
तव भंडारी अति जबर, बादरमलजी नाम ॥ सु० ११ ॥
मुनिपति नी आज्ञा मुदे, करी मदत अधिकाय।
समझावी तसु मेलियो, गणपति केरे पाय ॥ सु० १२ ॥

तिण सूं गणपतिजी तदा, सुप्रसन्न हुवा विशेष।
भंडारीजी ऊपरे, ते कहुं वात लवलेस ॥ सु० १३ ॥
ए आठ चालीसमी ढाल में, कह्यो संक्षेप प्रवंध।
हिवे दर्शण दे किण विधे, सुणज्यो ते संवंध ॥ सु० १४ ॥

●

ढाल : ४६

दोहा

हिवे जोधपुर चोमास नों, मतो कियो मुनिराज।
भंडारी श्रावक भणी, दर्शन देवा काज ॥ १ ॥
चेत्र शुक्ल पक्ष में सही, लाडणूं थी गण इन्द।
खाटु चांदारूण थइ, विहार कियो सुखकंद ॥ २ ॥
हिवे बाजोली ईड़वे थइ, आया पादु शहर।
सती चनणां तपसण भणी, दिया दर्शण कर महर ॥ ३ ॥
वलि कालू उपगार कर, बलूंदे सुविचार।
लोटोती थइ गणपति, आया शहर पिपाड़ ॥ ४ ॥

ढाल

[स्वामी रायचन्द राजा रे—ए देशी]

मुनिपति मुनिवर नी मात त्यां, हरकुंवर हुंसियारी।
वैशाख सित छठ चरण लियो वर, तिरवा भव भारी।
गणाधिप जबर ग्यानधारी रे२।
उद्योत करण वर सहस्र किरण सम, भरम हरण भारी ॥ १ ॥
हिवे त्यां रहितां जोधाणै सूं, भंडारीजी भारी।
आसरे तीनसे नर स्त्रियां साथे, किया दर्शण गुणकारी ॥ ग० २ ॥
अर्ज करी दर्शण हिवे दिज्ये, कीजे कृपा भारी।
महर करी हिवे मुनिपति दर्शन, दीधा जशधारी ॥ ग० ३ ॥
ज्येष्ट मास में रही किता दिन, तारी नर नारी।
उदय मंदिर रही शहर पधार्या, गणपति गुण कारी ॥ ग० ४ ॥

वर्ष इकीसे कियो चोमासो, भव्य तारण भारी।
द्वादश मुनि सूं पुर जोधाणे, गणि जय जशधारी ॥ ग० ५ ॥
सतिय सिरदारां आदि दे सहु, सतियां सहु सुखकारी।
पणतीस ठाणे तप जप सेवा, करवा हुँसियारी ॥ ग० ६ ॥
गणि गुण परिमल सुण जन मिल २, धर मन अति हुँसियारी।
अन्यमति स्वमति प्रश्नोत्तर कर, प्रतिबोध लहे भारी ॥ ग० ७ ॥
ग्यान ध्यान व्याख्यान सघन जल, वर्षंत गण धारी।
तृषित भविक अति दृप्ति थइ, हिये हर्ष लहे भारी ॥ ग० ८ ॥
दान दया व्रत अव्रत सावद्य, निरवद्य निरधारी।
हेतु बताय बहु द्वादश व्रत, फुन तास्या नर नारी ॥ ग० ९ ॥
सैंकड़ां पुरुष अनें वलि नारी, गुरु धारणा धारी।
सुलभ बोधी थया जन बहुला, पाया भव पारी ॥ ग० १० ॥
गाम ईड़वा नों जे वासी, तज माता नारी।
महरकरणजी संजम लेवा, थइ आयो त्यारी ॥ ग० ११ ॥
मात तात अरु भ्रात तजी नें, मालव थी धारी।
दुलीचंदजी दिक्षा लेवा, आया सुविचारी ॥ ग० १२ ॥
ए विहुं नें इक साथे संजम, दीधो गणधारी।
भैरू बाग कार्तिक सुध सातम, थयो मोच्छव भारी ॥ ग० १३ ॥
वलि दर्शन करवा देश देश नां, आया नर नारी।
तसु भक्ति जलुस देखी जन केई, लह्युं विस्मय भारी ॥ ग० १४ ॥
हिवे विहार कियो चोमास उतर्‍यां, गणपति गुणकारी।
चांदपोल वारे परिषद नीं, देखी छिव भारी ॥ ग० १५ ॥

यतनी

वावीसटोलां रो श्रावक एक, द्वेषी धर्म तणो सुविशेष।
ते पिण साथ पहुंचावा आयो, परिषद देख वोल्यो इम वायो ॥ १ ॥
आज मनुष्य वे सहस्र रे मांय, अठारे सो उपर देखाय।
एसा गणपति अति गुणवंत, ज्यांरे सेवा में परिषद शोभंत ॥ २ ॥

ढाल

ए उगपचासमी ढाल विषै गणि, श्री जय जशधारी।
जोधाणै उद्योत धर्म नों, कीयो अति भारी ॥ ग० १६ ॥

ढाल : ५०

दोहा

जोधाणा थी विहार कर, आगोलाई होय।
कोरणे बाघावास में, दर्शण दे अवलोय ॥ १ ॥
थोब पाटोदी दर्श दे, गणी किया तव त्याग।
गण थी निकल नें रह्या, टलकर जेह कुमाग ॥ २ ॥
ते टालोकर नें तदा, थया छः मास उपरंत।
ते माटे हिवे तेहने, दंड दियो ए तंत ॥ ३ ॥
नवि दिक्षा लियां विनां, मांहि लेवा रा त्याग।
पंचपदरे दर्शण हिवे, दिया गणि महाभाग ॥ ४ ॥
पछे दर्शन बालोतरे, जशोल मांही गण इन्द।
दर्शन दे भव्य जीव नें, मेटत भ्रम तम फंद ॥ ५ ॥
सित सप्तम दिन मोछबे, बालोतरे जन वृन्द।
ग्राम परगाम तणा थया, सहस्र गमे सोहंद ॥ ६ ॥
इकवीसे बालोतरे, महा सित सातम जाण।
मर्यादा मोछब करी, ते थइ पूनम मोछव स्थान ॥ ७ ॥
पंचपदरे पूनम तणो, ओछब करी गनेश।
टालोकरां प्रति विध विधे, ओलखाया सुविशेष ॥ ८ ॥
पछै बिठोजे कोरणे, पाडलावु पहिछाण।
समदरड़ी थइ जोधपुर, कियो मास मंडाण ॥ ९ ॥
झालामंड में रात रहि, विचरत रोयट मांह।
तीन दिवस गणपति तदा, दिया दर्श ओछाह ॥ १० ॥

ढाल

[इण स्वार्थसिद्ध रे चंद्रवे—ए देशी]

हिवे वर्ष बाइसे प्रगट पाली, श्री जय गणि चउमासो जी।
वर चउदश वाचयम वारू, लहे गणि आण हुलासो जी।
गणि संयम तप जप विमल सुकिरिया, गुण रत्नाकर भरीया जी ॥ १ ॥
सती सिरदारां प्रमुख शोभंती, सतियां सहु इकतीसो जी।
अट दिक्षा वर थई दीपती, थयो मोच्छव सखर सजगीसो जी ॥ ग० २ ॥

चूनां उदयकुंवर बिहुं साथें, तीजां गोरां गोरखां जेठां जी।
ए चिहुं साथ फुन वरजू हस्तु बिहुं, परिणाम सहु नां सेंठा जी॥ ग० ३॥

सोरठा

पटलावद ना सोय रे, जाती नेहर चूनां सती।
उदै कुंवर अवलोय रे, सुता कुंवारी साथ बिहुं॥ १॥
पाली शहर सुहाय रे, भाद्रव शुक्ल तेरस दिनें।
जय गणि मोच्छब मांही रे, बिहुं नें चरण समापीयो॥ २॥
बीदासर वसिवान रे, जाति भंडारी सासस्या।
पिउ तज चरण प्रधान रे, लियो तीजांजी तिह समय॥ ३॥
गोरांजी गुणवान रे, फलवधी वासी सासस्या।
लूंकड़ जाति सुजान रे, दोय सुता साथे करी॥ ४॥
कन्यां कुंवारी एह रे, गोरखां जी जेठां युगल।
सगाई तज गुण गेह रे, पाली में गणपति कनें॥ ५॥
ग्यारस बिद आसोज रे, घणे हगाम आडम्बरे।
दिक्षा धर चिहुं मोज रे, तीजां सहितज ए चिहूं॥ ६॥
वरजूजी सुविचार रे, वासी उदयपुर शहर ना।
साथे बहु परिवार रे, संजम लेवा संचरी॥ ७॥
फुन हस्तु अकनकुवार रे, मोखणुंदा थी मन धरी।
गणपति पे गुणधार रे, बिहुं आय ग्रहे संजम सिरी॥ ८॥
पालीं शहर मझार रे, ए आठ दीक्षा सतियां तणी।
इम अवर ही उपगार रे, धर्म उद्योत हुवो घणो॥ ९॥

ढाल

उपगार थयो त्यां अतही मोकलो, वलि परभव गइ वे अज्जा जी।
चोमासी चउदश वेसत उतरते, वगतावर मोतां सुलज्जा जी॥ ग० ४॥
हिवे चोमासो उतस्यां खेरवे थइ, कोर कांठारी आया जी।
सुखे २ विचरता स्वामी, वचनामृत प्याला पाया जी॥ ग० ५॥
लाडणूं में रह्या सरूप शशि स्वामी, अल्प शक्ति वृद्ध वयनां जी।
त्यांरा जोग सूं पूज्य कियो हिवे, विहार लाडणू कानी जी॥ ग० ६॥
सरियारी कंटाल्यैं र बगड़ी, दर्शण दे गण इन्दो जी।
पछे रामपुरे मुनिदर नें राते, आपे सीख अमंदो जी॥ ग० ७॥

जयाचार्यकृत सीखरूप सोरठा

वर उपयोग सु वृद्धि, चित्त में अति राखो चटक।
शासन बूझ समृद्ध, रत्न जत मघराज इम ॥ १ ॥
वारूं समय विनोद, कीधो चित्त अति हितकरी।
मन में परम प्रमोद, सखरो राखे कर्मसी ॥ २ ॥
दिन २ विनय दिनेश, अंतर उजुवालो अधिक।
वाधे सुयश विशेष, ताजक सीख तिलेसरा ॥ ३ ॥
सुवनितां रो संग, परम प्रीत गणपति थकी।
अलगो तज खल अंग, महिमा वाधे मोतिया ॥ ४ ॥
मत दे निद्रा मान, ग्यान ध्यान उद्यम गुणी।
सखर संग सुविधान, निरखी रहिजे निमल चित्त ॥ ५ ॥
चारित्र सुं चित्त चंग, नरक निगोद पड़ें नहीं।
अमल चित्त उचरंग, हृदय सीख वर रत्नसी ॥ ६ ॥
चरचा सूं चित चूंप, प्रकृति वश कर प्रेम सूं।
आदर विनय विवेक, मान वचे इम मुनियां ॥ ७ ॥
सखरी मुनिवर सेव, पुद्गल प्यासा परहरी।
भण नव तत्व सु भेव, वर समत्तूवर बींजीया ॥ ८ ॥

ढाल

पछे जेतारण वलि बलूंदे, फुन कालू थइ सुखकंदो जी।
वलि पादु थइ ईड़वे गणपति, आया धरी आनंदो जी ॥ ग० ८ ॥
तिहां टालोकर संतजी आवी, प्रश्न पूछ संसय मन टाली जी।
नवी दिक्षा ले गण में आई, निज आत्म उजवाली जी ॥ ग० ९ ॥
पछे वाजोली पूज्य पधार्या, त्यां टालोकर किस्तुरो जी।
पगां पड्यो निज आत्म निंदी, नवी दिक्षा ली थइ सूरो जी ॥ ग० १० ॥
हिवे चांदारूण खाटु थइ आया, लाडणूं शहर मझारो जी।
जन हजारां स्हामा आया, वलि ठाकुर बहु परिवारो जी ॥ ग० ११ ॥
वलि सरूप शशि पिण स्हामा आया, पुर बाहिर दर्शन पाया जी।
जबर मेलो मुनिजन नो मंड्यो, तव गुणीजन अति हुलसाया जी ॥ ग० १२ ॥
बड़ बंधव नी वृद्ध वय जानी, गणपति नों गुणकारो जी।
विशेष रहिणो थलि देश में थयां, थयो बहु जन उपगारो जी ॥ ग० १३ ॥

पछै विहार करी पूज्य पधास्या, शहर बिदासर मांह्यो जी।
त्यां देशनोक नो लघु छोगजी, नवी दिक्षा लेइ मांहि आयो जी ॥ ग० १४ ॥

यतनी

पछे जयाचार्य कह्यो एह, हिवे बाकी रह्या टालोकर जेह।
त्यांने दिक्षा तो देणी ताय, तिणरो इतरो डंड फेर सवाय ॥ १ ॥
पहिला आर्यां नें अवलोय, वंदण करायां विण जोय।
यांने मांहि लेवण रा त्याग, एसा गणपति महा बड़भाग ॥ २ ॥
पछे पाली की तरफ पिछाण, तेजपाल मुनि गुणखाण।
त्यां पासे जीवोजी आय, आर्यां नें वंदणा करी ताय ॥ ३ ॥
मुज नें मांही लीजे, छेदोस्थापनी चारित्र दीजे।
तब तेजपाल ऋषिराय, नवि दिक्षा देइ लियो मांही ॥ ४ ॥

ढाल

पछे हुक्मचंदजी थोभ रो वासी, तज स्त्री पुत्र पोता ली दिक्षा जी।
प्रथम जेठ विद दशम लाडणूं, धारी जय गणि पे सिख्या जी ॥ ग० १५ ॥
वलि लाडणूं शहर तणा ते वासी, ऋधूजी मतिवंती जी।
प्रथम जेठ सित बीज चरण लियो, गणपति पे गुणवंती जी ॥ ग० १६ ॥
त्यां उदेराज तपसी तप जवरो, दिन वावीस में सुविचारो जी।
अति हठ करनें सरूप शशि पे, पचख्यो जावजीव संथारो जी ॥ ग० १७ ॥
त्यां उदेराज नें दर्शन देवा, हिवे लाडणूं स्वाम पधास्या जी।
विविध प्रकार समय रस पावी, तपसी नां काज सुधास्या जी ॥ ग० १८ ॥
तव विविध त्याग वैराग किया जन, वलि छजमल मुनि गुणधारो जी।
तीन आहार ना त्याग किया त्यां, सिझे ज्यां लग संथारो जी ॥ ग० १६ ॥
त्यां दर्शण करवा वहु जन आवे, मंडे जवरा मेला जी।
त्याग वैराग कर गाम प्रगाम नां, गुण गावे जन थइ भेला जी ॥ ग० २० ॥
द्वितीय जेठ विद पंचम सिझ्यो, दिन पेंसठ में संथारो जी।
लघु मास थी छजमल मुनि नों, फल्यो अभिग्रह सारो जी ॥ ग० २१ ॥
ए पचासमी ढाल में आख्यो, पाली शहर चोमासो जी।
करी शेषे काल विचर कियो गणी, अधिको धर्म उजासो जी ॥ ग० २२ ॥

ढाल : ५१

दोहा

उगणीसे तेवीस नों, वीदासर चोमास।
गणि प्रमुख सतरे मुनि, करता ग्यान प्रकाश ॥ १ ॥
सिरदारांजी आदि दे, समणी सेंतालीस।
गणि आण तप जप सखर, करती धर सुजगीस ॥ २ ॥
अनोपचन्द तपसी अमल, थोकड़ो तप पणतीस।
उदक आगार चउविहार के, वर तप वीसवावीस ॥ ३ ॥
सेखे काल हिवे चोखले, दर्शन दे गुणरास।
ग्यान ध्यान व्याख्यान कर, करता अति सुप्रकाश ॥ ४ ॥

ढाल

[ले गागर भरवा कुंचाली छला—ए देशी [

वर्ष चोविसे श्री जय स्वामी, सुजानगढ़ चोमासो।
गणपति प्रमुख चतुर्दश मुनिवर, अधिको धर्म उजासो।
सुगणां स्वामजी, भारी भवदधि तारे।
सेवे सिरनाम जी, ते सुजश लहे सारे ॥ १ ॥
सिरदारांजी आदि सत्यां सहु, बयालीस गुण वृन्दो।
सती चूनांजी देश मालवा नां, कियो तप मास अमंदो।
सुगणी महासती, तप करने अघ तोड़े।
गणि विश्वास थी, कर्म कटक दल मोड़े ॥ २ ॥
सतिये तीजांजी रतनगढ़ ना, तप इकतीसो मासं।
उदक आगारे ए बिहुं समण्यां, कियो तप आण हुलासं ॥ ३ ॥
इम मुनि अज्जा तप बहु कीधो, लीधो लाभ सु सारं।
ग्यान रयण वर गणपति देवे, जिम उतरे भव पारं।
सुगणां सजनां, गणि चरण कमल सेवो।
तो मतो कर शुभ मनां, सुख मुक्ति तणा लेवो ॥ ४ ॥
तिहां महतावजी आय चुरू सूं, कार्तिक विद सुविमासो।
अष्टम तिथि गणपति पे संजम, लीवो आण हुलासो।
गणि सतियां शोभती, वारूं चरण रयण लेवें।
गुण रस लोभ थी, चरण कमल सेवे ॥ ५ ॥

वलि सिरदारां हीरांजी आई, चुरू सुं सुविचारो।
कार्तिक बिद तेरस बिहुँ गणि कर, लियो चरण गुणकारो ॥ ६ ॥
हिवे विहार करी चोमास उतर्‍यां, लाडणूं पूज्य पधार्‍या।
त्यां झूमांजी ने मृग सित एकम, चरण देइनें तार्‍या ॥ ७ ॥
पछै बिदासर विहार कियो तब, टमकोर सेती आई।
चरण सिणगारां पोही पूनम, लियो गाम बेनाथा मांही ॥ ८ ॥
सुजानगढ़ में वलि सिणगारां, आडसर सेती आई।
माह सित बारस गणि कर संजम, लीधो अति हित लाई ॥ ९ ॥
जाति श्रावगी सती भूरां जी, लाडणूं नां गुणधारी।
कन्या कुंवारी तजी सगाई, थइ संजम नें त्यारी ॥ १० ॥
मांगोत्तर नी तरफ सूं मेझर, कियो ठाकुर प्रमुख तिहवारी।
तसु आग्या पर करी मदत अति, भंडारीजी भारी ॥ ११ ॥
वड़ा साहिब लग बात थइ, पिण शासन दिशा सु भारी।
लाडणूं ठाकुर प्रमुखजन सन्मुख थया, चरण देण हितकारी ॥ १२ ॥
मात तात नीं आग्या ले, गणि पाबोलाव सुविचारी।
फागण विद छठ चरण दियो तब, थयो मोच्छब अति भारी ॥ १३ ॥
दिक्षा दे लाडणूं दर्श दे, बिदासर गणि आया।
भंडारीजी नां नंदन त्यां, दर्शन कर हुलसाया ॥ १४ ॥
भंडारीजी पर महर करी कियो, विहार जोधपुर कानी।
कृष्णमलजी प्रमुख तणी तव, अरज गणाधिप मानी ॥ १५ ॥
लाडणूं खाटू चांदारूण थइ, बाजोली उमाह्या।
ईड़वे पादु दर्शन दे हिवे, आनन्दपुर गणि आया ॥ १६ ॥
गाम पडियारे थी तिहां आइ, मोतांजी मतिवंती।
वैशाख विद तेरस गणपति कर, लियो चरण गुणवंती ॥ १७ ॥
पछै पीपाड़ में पूज्य पधार्‍या, घणा जीवां नें तार्‍या।
विविध प्रकार नी धर्म देशना, दे बहु भविक उवार्‍या ॥ १८ ॥
भंडारीजी बहु हगामे, त्यां दर्शन कीधा तामो।
शहर जोधाणे करण चोमासो, गणिवर विहार कियो गुणधामो ॥ १९ ॥
एक्यावनमी ढाल में आख्या, चारू दोय चोमासा।
सम्यक्तव चरण गुण दे जयस्वामी, पूरे भविक मन आशा ॥ २० ॥

ढाल : ५२

दोहा

शहर जोधाणे स्वाम जय, आया मास आसाढ़।
समझाया जन अति सघन, ग्यान देइ अति गाढ़॥ १॥
वर्ष पचीसे हिवे कियो, जोधाणे चोमास।
द्वादश मुनि महिमा निला, त्यां गणी सहित गुणरास॥ २॥
सिरदारांजी आदि सहु, समण्यां गुणचालीस।
ग्यान ध्यान तप सेव गणि, करती धर मुजगीश॥ ३॥

ढाल

[सल्य कोई मत राखज्यो—ए देशी]

शहर जोधाणें स्वामजी, कियो गणि अति उपगारो जी।
त्यां लोक समज्या बहु धर्म में, चित मांही लह्या चमत्कारो रे।
श्री जय गणि गुण सागरू, उजागर गणिराया रे।
प्रवोध दिवाकर देखनें, भव्य हृदय-कमल हुलसाया रे॥ १॥

त्यां श्रावन बिद अष्टम दिने, बहु मोछब मंडाणो रे।
बैठा जुहार भोप विहुं पालखी, आगे वे गज नगी निसाणो रे॥ २॥
आया भैरू वाग बहु थाट सूं, तब दोयां नें गण इंदो रे।
इक साथे संजम दियो, लह्यो चमत्कार जन वृन्दो रे॥ ३॥
जुहारजी श्रावगी जाति पाटणी, तजि षट बंधु परिवारो रे।
बारू वासी लाडणूं शहर नां, लियो लघु वय संजम भारो रे॥ ४॥
भल श्रीश्रीमाल जाति भोपजी, तज्या दोय पुत्र विख्यातो रे।
वासी लोटोती नो लाभ चरण नों, लियो जोधाणे बिहुं इक साथो रे॥ ५॥
त्यां धर्म उद्योत थयो घणो, थयो तप पिण अति सुविशालो रे।
समणी मोतां विकानेर नां, किया तप दिन सखर तयालो रे॥ ६॥
गोघुन्दा नी रंभा सती, किया पैंतीस दिवस उदारो रे।
मासखमण चम्पा सती, वलि किया दिवस इग्यारो रे॥ ७॥
चूनां जी मालव तणा, कियो सैंतीस दिन तप सारो रे।
विदासर नां तीजां वलि, कियो दोड़ मास श्रीकारो रे॥ ८॥
ए उदक अगारे महा सती, कियो तप आण हुलासो रे।
अवर मुनि सतियां वलि किया, थोकड़ा वहु सुविमासो रे॥ ९॥

हिवे चोमासो उतस्यां, विहार करी गणि राया रे।
कालू पादु ईड़वे थई, शहर लाडणूं आया रे॥ १० ॥
त्यां स्वरूपचन्दजी स्वामी नां, किया दर्शन घर आनन्दो रे।
पछै सुजानगढ़ बिदासर थई, आया लाडणूं जय गण इन्दो रे॥ ११ ॥
श्री जय गणि गुण सागरू, वारूं वाग्रत वाण उदारो रे।
ते सुणियां थकां भव्य जीव नें, हुवे हृदय अधिक चमत्कारो रे॥ १२ ॥
द्वितीय वैशाख लाडणूं मझे, बिद पख में सुविचारो रे।
सतीय बनां नां शरीर में, उपनो दस्त कारण अवधारो रे॥ १३ ॥
तब गणपति सरूप शशि वले, सुत मघराज तिवारी रे।
सिरदार सती गुलाबां वलि, दियो सती नें साहज्य सु भारी रे॥ १४ ॥
गणि महाव्रत तब आरोपावीया, आलोवाया पाप अठारो रे।
सुमति गुप्ति महाव्रत तणां, फुन आलोवाया अतिचारो रे॥ १५ ॥
गणि ग्यान सुणायो अति घणूं, वलि सती गुणा नी गाहो रे।
नवी जोड़ २ तिण अवसरे, बहु सुणाई आण उच्छाहो रे॥ १६ ॥
अणसण सागारी उचरावियो, तेरस सांझ श्रीकारो रे।
उंचे स्वर त्याग किया सती, हर्ष सहित सुविचारो रे।
धिन २ श्री जय गणपति, जसु संपति श्रीकारो रे।
वारू समण सत्यां नें स्वामजी, दियो संजम साहज्य उदारो रे॥ १७ ॥
बिद चवदश तिथि पाछली, सीझ्यो सती नों संथारो रे।
इग्यारे पहर नों आसरे, आयो अणसण अधिक उदारो रे॥ १८ ॥
साढ़ा सतरे वर्ष जाझो सती, पाल्यो संजम सुविमासो रे।
प्रथम चरम चोमास विना, करी गणपति नी पर्युपासो रे॥ १९ ॥

कलश

तप चोथ छठ अठम भक्त फुन, दशम द्वादश भक्त ही।
दिन पंच सात नव दश द्वादश, तेरे चवदे दिन सही।
पख अठारे इकवीस दिन नों, थोकड़ो इक २ भलो।
इक मास सहु तप जल आगारे, कियो बन्ना अति उजलो॥ १ ॥

ढाल

पछे सरूपचन्दजी स्वाम नें, शहर लाडणूं माह्यो रे।
सहाय पंडित मृत्यु तणो, दियो गणि अधिक सवायो रे॥ २० ॥

तास संबंध अति ही कह्यु, सरूप नवरसा मांहि रे।
पिण प्रसंगे संक्षेप थी, सुणो इहां सुखदाई रे ॥ २१ ॥

सोरठा

सरूप शशि गुणधाम रे, जेष्ट सहोदर स्वाम नां।
मुनिजन अति विश्राम रे, चित आरामकारक बहु ॥ १ ॥
जबर शासन नीं दृष्टि रे, विमल नीति अति प्रीति जय।
कीर्ति जग में श्रेष्ट रे, मिष्ट वयण गुण गरिष्ट अति ॥ २ ॥
झीणी रहस्य सुजाण रे, चरचावादी अति चतुर।
मधुर सुधा सम वान रे, उपाध्याय सम ओपता ॥ ३ ॥
तास वृद्ध वय जान रे, वलि तनु कारण देखनें।
गणपति जय गुणखान रे, मास अधिक रह्या लाडणूं ॥ ४ ॥
जेठ कृष्ण तिथि तीज रे, कारण अचिंत्यो उपनो।
अणशण सागारीज रे, महुर्त निशि गयां आसरे ॥ ५ ॥
उचरायो अवलोय रे, जोय कारण अनशन जिसो।
जबर दृष्टि गणि होय रे, साहज्य दियो अति तिण समें ॥ ६ ॥
विविध वैराग्य नी बात रे, तिण रात विषे जय गणपति।
उपदेश शरण साख्यात रे, विविध पणे गणपति दियो ॥ ७ ॥
हूं अनें अवलोय रे, कालू भवान प्रमुख ही।
रह्या जागता सोय रे, सेवा में बहु मुनि तदा ॥ ८ ॥
च्यार प्रहर उनमान रे, अनशन चोथ दिन सिझीयो।
मांडी अधिक मंडाण रे, सांसारिक मोच्छव बहु ॥ ९ ॥

ढाल

इम जबर गुणी जय महा मुनि, दियो साहज्य घणा नें साख्यातो रे।
ए बावनमी ढाल में कही, पचीसा नी बातो रे ॥ २२ ॥



ढाल : ५३

दोहा

किये छाइसे गणपति, बीदासर चोमास।
पूज्य प्रमुख सोले मुनि, करता धर्म उजास ॥ १ ॥
सिरदारांजी आदि दे, समणी अड़तालीस।
तप जप उद्यम कर सत्यां, सेव करे गण ईश ॥ २ ॥

ढाल

[जगत गुरु त्रिशलानन्दन वीर—ए देशी]

त्यां वासी मालव देशनां जी, गुंदेचा मुंहता मयाचन्द।
संजम ले सेवा करे, साथे त्रिया जड़ाव सोहंद।
सुगण जन गणपति जय जशधार।
चरण रयण देई करी, ज्यां तास्या बहु नर नार। सु०
सरस संवेग रसे भरी जी, सुणी गणपति वाण विशाल।
थया जड़ाव तणा पिण तिण समें, भाव चरण लेण उजमाल ॥ सु० १ ॥
मयाचन्द जड़ाव जी वारूं, बीदासर सुविमास।
संजोड़े बिहुं संयम लियो, सित बारस सावन मास ॥ सु० २ ॥
राजलदेसर थी आविया कांई, तीजां बिदामां जी तंत।
ए बिहुँ नें साथे संजम दियो कांई, श्री जय स्वाम महंत ॥ सु० ३ ॥
त्यां लाडूंण सेती आय नें, दादी राजाजी दीपंत।
पोती कुंवारी कन्या सगाई तजी, वारूं मखतुलां गुणवंत ॥ सु० ४ ॥
भाद्र शुक्ल तेरस दिने कांई, शहर बीदासर मांहि।
दादी पोती संजम लियो कांई, श्री जय कर सोछाहि ॥ सु० ५ ॥
वलि ईड़वा गाम थी आयनें जी, सदांजी सुत भरतार।
छोड़ आसोज विद तेरस, लियो जय कर संजम भार ॥ सु० ६ ॥
जाति डागा ईसरदास जी कांई, तास त्रिया गुणवान।
नाम चांदां बीदासर तणा, वय सोल्ह वर्ष उनमान ॥ सु० ७ ॥
छति ऋध पति छोड़ नें, थया चरण लेण परिणाम।
त्रिया दूजी त्याग परणवा, पति आग्या दी हर्ष मन ताम ॥ सु० ८ ॥
कियो मोछव पति हर्ष सूं, नानी गुमानां बाई नाम।
रुपया बारेसैं आसरे, खरच्या सूत्रादिक मोछव काम ॥ सु० ९ ॥

घणे हगाम दिक्षा ग्रही जी, चांदांजी धर चूंप।
कार्तिक दिन पड़वा दिने, धर सीख अमि रस कूप ॥ सु० १० ॥
फुन राजलदेसर शहर थी, उमांजी जेतांजी आय।
काती सुद त्रयोदशी, चरण लियो विदासर मांहि ॥ सु० ११ ॥
ए नव दिक्षा बिदासर थई कांई, छाइसे वर्ष चोमास।
पछै लाडनूं शहर पधारनें, कियो गणपति धर्म उजास ॥ सु० १२ ॥
त्यां वासी लाडणूं शहर नां कांई, नानूजी चांदांजी दोय।
श्री जय हाथ संजम लियो कांई, मृगसर सित चोथ सुजोय ॥ सु० १३ ॥
हिवे सुजानगढ़ संजम लियो कांई, जाति श्रावगी जास।
जसरासर नां रामसुखजी कांई, सित पंचम पोष मास ॥ सु० १४ ॥
वासी सिरदारशहर नां कांई, बरजूजी सुविचार।
इक्षु तीज दिन संजम लियो, पछे छतीसे निकली वार ॥ सु० १५ ॥
वासी वीदासर तणा, त्यां किस्तुरा संजम लीध।
जेष्ट कृष्ण बारस दिने, पछै पूनम आयु पुरो कीध ॥ सु० १६ ॥
हिवे वर्ष सताइसे लाडणूं जी, गणि प्रमुख सोले संत।
सिरदारांजी आदि चोमास में, पचास सत्यां मतिवंत ॥ सु० १७ ॥
त्यां ग्यान ध्यान तप जप तणोजी, उद्यम थयो विख्यात।
पनरे पंचरंगी पारणा, बायां मांहि थया इक साथ ॥ सु० १८ ॥
हिवे चोमासो उतर्यां जी, विहार करी गण इन्द।
पनरे रात सुजानगढ़ रही, आया बीदासर आनन्द ॥ सु० १९ ॥
सतिय सिरदारां शरीर में, तिहां कारण उपनों ताहि।
अन्न अरुचि थी तनु तणी जी, शक्ति घटी अधिकाय ॥ सु० २० ॥
पोह सुदी एकम दिन लगे जी, अल्प मात्र लियो अन्न।
पछै अन्न लियो नहीं, सती कियो अधिक दृढ़ मन ॥ सु० २१ ॥
आछी विध आलोयणां जी, कराई जय गणी आप।
महाव्रत आरोपाविया, पचखाया अठारे पाप ॥ सु० २२ ॥
ठाम २ मिच्छामि दुक्कडं दिया, स्व मुख सती सिरदार।
निसल्य थइ गणि राजना, सुणता वचनामृत श्रीकार ॥ सु० २३ ॥
पछे पोह सुदी चोथ प्रहर आसरे, कांई रात्रि गई तिहवार।
जल ओषध उपरान्त करावियो, सत्यां सागारी संथार ॥ सु० २४ ॥
दिन २ शक्ति घट्यां अष्टम दिने, सवा पोहर तणे उनमान।
दिवस रह्यां पचखाविया, अणसण जाव जीव सुविधान ॥ सु० २५ ॥

विविध वैराग्य सुणावतां, बे महुरत आसरे रात।
रह्यां अणसण सिझीयो, थयो मोच्छव नवमी प्रात ॥ सु० २६ ॥

कलश

पवित्रणी सम इह आर पंचम, सार गुण अति साहिका।
अन्न पान वस्थ रु पात्र, बहु विध वस्तु नी अति दायका।
वृद्ध बाल ग्लान महान मुनिवर, अर्जिका नें फुन सती।
ओषध्य पथ्य रु साहज्य विध २, देय लाभ दियो अति ॥ १ ॥
वलि सीख विध २ वचन रचनां, करी चिहुं तीरथ भणी।
सुमति अमिरस पायनें, कर प्रफुल जन मुनि साहुनी।
गंभीर धीर सुवीर प्रभु रे, चंदना जिम गणि तणे।
सिरदार संजम पाल कारज, साजिया गहघट घणे ॥ २ ॥
लारे काज सहु गणिराज साज, सिरदार नो जिम छो सही।
तिमहिज कुर्ब सहु रीत गणपति, गुलाब नों कीधो मही।
महाराज जय गुण जाज सम इह, आर पंचम में भला।
तसु शिष्य शिष्यणी सार गुणमणि, शोभता अति गुण निला ॥ ३ ॥

ढाल

हिवे बीदासर थी जय गणि जी, विहार करी सुविचार।
सुजानगढ़ पधारिया, कियो लिखत सत्यां नो सार ॥ सु० २७ ॥
त्यां चेत कृष्ण वारस दिनें कांई, दीर्घ छोग हंसराज।
गण वाहिर विहुं निसरया, करी ताण गमाई लाज ॥ सु० २८ ॥
सात प्रहर नें आसरे कांई, रहिनें विहुं गण वार।
तेरस दिन प्रभात रा, गणि चरण लागा सुविचार ॥ सु० २९ ॥
निज अपराध खमायनें कांई, दंड करी अंगीकार।
बड़े छोगजी निज हाथ सूं कांई, लिखत लिख्यो तिणवार ॥ सु० ३० ॥

छोगजी लिख्या ते अक्षर

आगा थी दोलां आश्री आचार्यां सूं खांच करवारा जाव जीव त्याग छै। मघराजजी महाराज फुरमावे तो होये वेसाय लेणी। साधुपणा ज्यूं ए त्याग छै। सं० १९२७ चेत विद १३ लिखंतु ऋषि छोग लिख्यो सही छै।

ढाल

ए लिखत लिखी दिन रा कह्यो कांई, छोरु कुछोरु होय।
पिण माइत कुमाइत हुवै नहीं, जग में ओखाणो कहे ए जोय ॥ सु० ३१ ॥
ओखाणो आप सांचो कियो, गुण किया एम अनेक।
अगंज गणाधिप एहवा, ज्यांरा अतिशय अधिक विशेष ॥ सु० ३२ ॥
ए तेपनमी ढाल में कांई, वर्ष छाइसा नी वात।
वलि चोमास सतावीस नों, कितो शेषे काल अवदात ॥ सु० ३३ ॥



ढाल : ५४

दोहा

लाला भैरूलालजी, त्यां हुंता सेवा मांय।
अर्ज अधिक जयपुर तणी, कस्यां मानी गणिराय ॥ १ ॥
लाडणूं दर्शन दे करी, सित पक्षी नवमी चैत।
विहार कियो जयपुर दिशा, करी थली में जैत ॥ २ ॥
श्रमण अठारे परिषद सघन, लाडणूं ठाकुर लार।
पहुंचावण नें आविया, वाग तांई सुविचार ॥ ३ ॥
डीडवाणे में आवतां, हाकम कर मंडाण।
स्हामों आयो स्वाम रे, उद्यम अधिक सुजाण ॥ ४ ॥
दर्शण मोता नें दिया, तिहां रही त्रिण रात।
दोलतपुर दर्शन दिया, एक रजनी गणिनाथ ॥ ५ ॥
कुचामण नावें थई, जोवनेर गणिराय।
आया वे रजनी रह्या, ठाणे गुणसठ ताहि ॥ ६ ॥

ढाल

[लिखमीधर तिण अवसरे वाणोत्तर—ए देशी]

आया वैसाख अमावसे, सिरदारमल नें वागो जी कांई।
त्यां सात मुनि दर्शन किया, हीरालाल आदि अनुरागो जी कांई।
धन्य २ जय गणपती, धन्य २ मुनि गुणधारो जी कांई।
सतीय गुलाबां आदि दे, साजे सेव श्रीकारो जी कांई ॥ ध० १ ॥

हिवे बैशाख सित एकम दिने, गणि आदि समण पणवीसो जी कांई ।
समणी गुलाब आदि दे, सतियां सखर छतीसो जी कांई ॥ ध० २ ॥
जयपुर शहर पधारिया, जिन मग जबर दीपायो जी कांई ।
बैशाख सित पख त्यां रही, जेठ मास रह्या घाट मांह्यो जी कांई ।
धन्य २ श्री जय महा मुनि ॥ ३ ॥
लूणीयां सिरदारमल नां, बाग मांही रहि त्रिण रातो जी कांई ।
जयपुर शहर पधारिया, चउमास करण सुविख्यातो जी कांई ॥ ध० ४ ॥
हीरालाल मुनिवर तणे, अपनो कारण अचिंत्यो आयो जी कांई ।
असाढ़ सित तेरस चल्या, दियो साहज्य सखर गणिरायो जी कांई ॥ ध० ५ ॥
वर्ष अठाइसे गणपति, उगणीस मुनि सूं चोमासो जी कांई ।
समणी गुलाबां आदि दे, छतीस सत्यां गुणरासो जी कांई ॥ ध० ६ ॥
वासी डेगानां ग्राम नां, नंदराम ओस्तवाल जातो जी कांई ।
पिता मातादिक छोड़ नें, दिक्षा लेवा गणि पे आतो जी कांई ॥ ध० ७ ॥
बिचे नानगजी रा टोला तणां, दिक्षा दिवी कर ठागो जी कांई ।
हीणाचारी तसु जाणनें, आयो जयपुर धर अनुरागो जी कांई ॥ ध० ८ ॥
धुर भाद्रव सुध तेरसी, नंदरामजी नें जाणी जी कांई ।
दादावाड़ी पासे दिक्षा दीवी, जनवृन्द में गुणखाणी जी कांई ॥ ध० ९ ॥
हिवे वासी सिरदारगढ़ शहर नी, जीउजी अति स्याणी जी कांई ।
गोलेछा इन्द्रचन्दजी, सुत नी वहु सुखदाणी जी कांई ॥ ध० १० ॥
राजलदेसर सासरो, वैरागण वीरां वाई जी कांई ।
सरदारशहर पिहर विहुं, दिक्षा लेवा जयपुर आई जी कांई ॥ ध० ११ ॥
द्वितीय भाद्रव विद प्रतिपदा, वीरा पींजस जीउ सिविका मांहिजी कांई ।
चमर ढाले मोच्छव वहु, दिक्षा लेवा मोहनवाड़ी आई जी कांई ॥ ध० १२ ॥
चरण देई वीरां जीउ भणी, सूंपी गुलाब भणी गणिरायो जी कांई ।
गुलाब हाथ धुर विहु अज्जा, थई अधिक सुखदायो जी कांई ॥ ध० १३ ॥
वलि वासी जयपुर नी हिवे, सामसुखा नी वेटी जी कांई ।
संतोष वैद सुत नी वहु, जड़ाव नाम गुण पेटी जी कांई ॥ ध० १४ ॥
द्वितीय भाद्रव विद सप्तमी, सदासुख ढढ्ढा नें वागो जी कांई ।
वहु मोछव संजम दियो, श्री जय गणि महाभागो जी कांई ॥ ध० १५ ॥
द्वितीय भाद्रव सित छठ दिनें, सुजानगढ़ थी आई जी कांई ।
वहु मोच्छव संयम लियो, लिछमां ढढ्ढाजी रे वाग मांही जी कांई ॥ ध० १६ ॥

दर्शन कर देश २ नां, आया हजारां लोगो जी कांई।
दर्शन कर प्रसन्न हुआ, जिम रवि दर्शन कोको जी कांई ॥ ध० १७ ॥
सेठ अनन्तराम दिवान नों, वगतावरमल नन्दो जी कांई।
तसु वृद्ध सुत चल्यो जल में पड़ी, तिण सूं पड़्यो मोह फंदो जी कांई ॥ ध० १८ ॥
तिण अर्ज कराई स्वाम नें, मुज दिजे दर्शन मुनिन्दोजी कांई।
गणपति तसु दर्शन दिया, जद पाम्यो परमानंदो जी कांई ॥ ध० १९ ॥
दर्शण षट वेलां दिया, विविध वैराग्य सुणायो जी कांई।
सुण २ ने ते शेठजी, प्रमोद हिये अति पायो जी कांई ॥ ध० २० ॥
वार २ विनती करे, इक मास हिवे इहां कीजे जी कांई।
गणि कहे चोमास हिवे उतरे, हिवे इहां कहो किम रहीजे जी कांई ॥ ध० २१ ॥

कलश

इक मास घाट में थाट कर रहो, वाग मांही मांहरे।
इक मास लूणीयां नीं बगीची, रहो आप पुर वाहिरे।
माघ मास मंड सुझंड मुनि नर, समणी नां अहो गणधणी।
मुझ हवेली नोहरे करो, हिवे विनती म्हारी सुणी ॥ १ ॥

ढाल

इम विविध पर विनती करी, तसु मुनिपति विनती मानी जी कांई।
विहार करी मुनि वीस थी, आया घाट नें वाग सु ध्यानी जी कांई ॥ ध० २२ ॥
त्यां सिरदारशहर सूं आयनें, हीर कणी सम हीरां जी कांई।
दुधोर नां वासी जोरजी, लेवे चरण तिरण भव तीरां जी कांई ॥ ध० २३ ॥
मृगसर विद पक्ष चोथ नें, बिहुं नें एक साथो जी कांई।
गोलेछा नां वाग में गणी, चरण दियो निज हाथो जी कांई ॥ ध० २४ ॥
मासखमण कारक मुनि, पन्नालाल पहिछाणी जी कांई।
मृग विद चवदस नें चल्या, गणि चरण सरण गुणखाणी जी कांई ॥ ध० २५ ॥
एक मास घाट माहें रही, आया सिरदारमल नें वागो जी कांई।
हिवे एक मास रह्या तिहां, अर्ज करवा सेठ हिवे लागो जी कांई ॥ ध० २६ ॥
माघ मास जायगां मांहरी, संत सत्यानां मेला जी कांई।
कीजे पूज्य कृपा करी, गणि विहार कियो तिण वेलां जी कांई ॥ ध० २७ ॥
मुनि श्रावक श्राविका झुंड सूं, आवता मध्य वजारो जी कांई।
पादरी साहिव स्हामो मिल्यो, वोल्यो हम आयेंगे इक वारो जी कांई ॥ ध० २८ ॥

यतनी

सेठजी नीं हवेली मांय, केइ दिवस रही गणिराय।
लालाजी री जायगां स्वाम, मन कियो पुस्तक मेल्या ताम॥ १॥
पड़ी सेठ ने खबर जिवार, करी विनती अधिक उदार।
एक मास तांई अवलोय, आपने जावा देवूं नहीं जोय॥ २॥
स्वाम कहें दिसा जाणो दूर, वलि गोचरी जाणो दूर जरूर।
सेठ कहे दूर है एह, तोही कृपा करो गुणगेह॥ ३॥
जो जावो तो आडो सुई रहिसूं, आपनें जावा नहीं देंसू।
कती कर जावो जोई, तो आप सूं जोर नहीं कोई॥ ४॥
वलि अर्ज विविध पर करतो, युव नृप पाये पड़तो।
सिर उघाड़े सेठ तिह ठाम, पग पकड्या छोड़े नहीं ताम॥ ५॥
करे विनती बारूंबार, नैणां नीर झरे तिणवार।
सुणनें अनुकम्पा अति आई, गणि गाथा ए फुरमाई॥ ६॥

[धर्म अराधीये ए : ए—देशी]

म्है तो श्रावक घणा देखिया ए, ओ हठ नें ओ झोड़।
कठेई दीठो नहीं ए, दिठो इणहिज ठोड़ क॥ ध० १॥

यतनी

चिहुं तीर्थ नुं तिण ठाम, मन हुवो रहिवा सूं ताम।
करे अर्ज सेठ नें तारो, जव भरियो पूज्य हुंकारो॥ १॥
रह्या नवी हवेली स्वाम, जूनी हवेली सत्यां सहु ताम।
सुण इचरज लोक अनड़ पायो, इन अनड़ नें आप नमायो॥ २॥
वारूं वालटेण जसु नाम, आयो पादरी साहिव ताम।
करी चरचा बात तिहां वारूं, चिमत्कार लह्यो चित्त चारू॥ ३॥
इसा जवर गणि जशधारी, ज्यांरी महिमा जग में भारी।
अन्यमती स्वमती गुण गावे, छिव देख हरष अति पावे॥ ४॥

ढाल

हिवे मर्यादा मोछव दिने, ठाणा इक्सो सत्तावीस मेलां जी कांई।
नव काव्य छंद ढालां जोड़ नें, गाया गुणीजन थया अति भेलाजी कांई॥ ध० २६॥

वासी मुसाल्या गाम नां, दोलांजी दीपंती जी कांई।
सुत छबील साथे ग्रही, आया चरण लेण कर खंतीजी कांई॥ ध० ३०॥
माघ शुक्ल दशमी दिनें, वहु मोच्छव मंडाणो जी कांई।
बैठी मा पींजस सुत पालखी, आगे हय गय तुर्य निसाणो जी कांई॥ ध० ३१॥
गोविंदराम नां वाग में, मा सुत नें इक साथो जी कांई।
सामायक संजम दियो गणी, वरण अमर पद आथो जी कांई॥ ध० ३२॥
हिवे फागन बिद एकम दिने, विहार कियो गणीरायो जी कांई।
पहुँचावण सेठजी आवियो, साथे लवाजमो वहु लायो जी कांई॥ ध० ३३॥

कलश

सेठ भणी मुनि कह्यो धारिये, सिर सिको हिवे सदगुरु तणो।
तब सुत नें सुत-बहु प्रमुख नें सिर, धरावियो हिवे कहें सुणो।
मुज गुरु तणा गुरु आप हैं, स्यूं सिको धारूं हुँ सही।
मुनि कहे चांदी निरमली पिण, विण छाप रुपइया में नहीं॥ १॥
तब सेठ कहे मुझ तंतु है, वहु सूझतो मुनि जोग्य ही।
ल्यो चिहुं २ पछेवड़ी सर्व ही जे, अज्जा नें मुनि लोक ही।
तो सिको धारूं एम सुण कह्यो, इति चावना छें नहीं।
तब कहे इक २ लीजिये मुझ, कीजीए कृपा सही॥ २॥
तसु तारवाने तंतु कितनो, लियो जय कृपा करी।
पछे सेठजी गुरु धारना कर, भक्ति विध २ आचरी।
अति हर्ष उमंग हृदय धार मुनि नी, सेव विध २ से करी।
अन्यमति पिण देख रचना, लह्या विस्मय फिरी फिरी॥ ३॥

ढाल

आशा घोटा वलमा छड़ी, लावाजमो ले थयो आगे जी।
जय कहे यांरो कांई काम है, सेठ कहे लवाजमो मुज सागे जी कांई॥ ध० ३४॥
विहार कियो अति झंड सूं, वहु श्रावक श्रावका लारे जी कांई।
गणी प्रमुख मुनि सैंतीस ही, आया गलि थइ मध्य वाजारे जी कांई॥ ध० ३५॥
एक रात्रि रह्या वारे वाग में, जयपुर संतजी री सेवा मांही जी कांई।
नाथू प्रमुख मुनि चिहुं राखनें, आप विहार कियो सुखदाई जी कांई॥ ध० ३६॥
जोवनेर में आविया, स्हामा आया ठाकुर नर नारी जी कांई।
थली देश तणां जन आविया, च्यार रात्रि रह्या गणधारी जी कांई॥ ध० ३७॥

हिवे नांवे कुचामण थइ करी, डीडवाने गणि आया जी कांई।
हाकम आदि लोक स्हामा आविया, तीन रात रह्या गणिराया जी कांई॥ ध० ३८॥
ए चोपनमी ढाल में, कह्यो सत्ताबीस नो उन्हालो जी कांई।
संबंध जयपुर शहर नों कह्यो, अष्टविस नो भालो जी कांई॥ ध० ३९॥

●

ढाल : ५५

दोहा

बाकलीये हिवे आंवता, भंडारी बहु भाव।
कृष्णमलजी आदि बहु, आया तिह प्रस्ताव॥ १॥
लाडणूं ठाकुर नां कुंवर, पृथ्वीसिंघ जी पेख।
लाडणूं वासी लोक बहु, आया हर्ष विशेष॥ २॥

ढाल

[आधाकर्मी थानक में साधु रहे तो—ए देशी]

हिवे लाडणूं शहर में आंवता, लाडणूं ठाकर बहु थाटो।
बादरसिंघजी स्हामा आया, लागो लोका नें अति गहघाटो रे।
गुणीजन पूज्य समो कुण होई, इण पंचम आरे जिन जिम तारे।
सुधारे भव दोई रे, सूरीजन स्वाम समो कुण होई॥ १॥
इण अवसर जयपुर नों वासी, हुकमचन्द लाला नो पूतो।
लछमणदास लाला नों भतीजो, ओ तो माणक नाम अदभुतो रे॥ २॥
आयो बहु मोच्छव चारित्र लेवा नें, चमर वींजी पालखी बैठो।
पीरांजी पासे कहे चरण दीजें, मिटे जन्म मरण दुख लेठो रे॥ ३॥
सित ग्यारस फागण पुष्परिक्खै, लियो जय कर संजम भारो।
नव योवन वय भाई प्रमुख जे, छांड़ी बहु परिवारो रे॥ ४॥
माणकचन्द भणी चरण देइ आई, शहर में बहु मुनि सायो।
जनवृन्द ठाकुर सहित सूं, ए तो नोहरे आया गणिनायो रे॥ ५॥
हिवे लाडणूं शहर में रहिनें आया, सुजानगढ़े गण इन्दो।
त्यां दर्शन देने पाछा आया, गणि लाडणूं घर आनन्दो रे॥ ६॥

त्यां भीमजी नां लघु बंधव मांडा ना, फोजमल तज फंदो ।
बालक वय जेष्ट कृष्ण बीज दिन, लियो चरण रयण सुखकंदो रे ॥ ७ ॥
पछै बिद सातम दिन कन्हैयालालजी, गर्ग गोती अग्रवालो ।
हांसी वासी चरण लियो हद, तज त्रिय बंधु विशालो रे ॥ ८ ॥
हिवे शहर बीदासर वर्ष गुणतीसे, चोमासो जय ठायो ।
गणपति सहित उगणीस मुनि हद, कियो तप जप सखर सवायो रे ॥ ६ ॥
गुलाबकुंवरजी आदि देई, चालीस सत्यां गुणमालो ।
बड़ा जेंताजी तप कियो वारू, मास खमण सुविशालो रे ॥ १० ॥
भीम मुनि तप षट द्वादश भक्त, वलि सातनां थोकड़ा दोय ।
इक चोलो इक छः नो थोकड़ो, किया सप्त चोविहार सुजोय रे ॥ ११ ॥
अग्रवाल उदेरामजी, सिंगल गोती वासी भियानी ।
स्त्री मानकुंवर नें दिक्षा दिरावा, आया बीदासर गुणखाणी रे ॥ १२ ॥
कांइक तो भाव पहिलां ही था, गणि वचनें वैराग्य वहु वाध्यो ।
बिहुं सजोड़े काती सुद दशम, संजम लेइ कार्य निज साध्यो रे ॥ १३ ॥
लूंकड़ जाति सासरीया फलौधी, चिमनांजी मतिवंती ।
मृग बिद बारस लाडणूं लियो, गणपति कर गुणवंती रे ॥ १४ ॥
अग्रवाल बगतुजी दिक्षा, जयपुर शहर नां वासी ।
लीधी पोह सुद चोथ लाडणूं, श्री जय कर सुविमासी रे ॥ १५ ॥
बीकानेर शहर नी वासी, गुलांजी गुणवंती ।
बिदासर में चरण लियो वर, मुनिपति कर मतिवंती रे ॥ १६ ॥
जाति डागा सासरीया चोथांजी, शहर रीणी ना वासी ।
बिद वैसाख ग्यारस नें दिक्षा ली, बीदासर सुविमासी रे ॥ १७ ॥
जाति श्रावगी लाडणूं वासी, वर छगनां गुणधारी ।
पीहर कुचामण चरण बिदासर, लियो आसाड़ बिद सुविचारी रे ॥ १८ ॥
जेठ असाड़ में गणपति तनु में, रह्यो ताव नुं कारण भारी ।
अन्न अरुचि थी शक्ति घटी बहु, पिण हिवे साहसीक श्रीकारी रे ॥ १६ ॥
तिणकारण जोग सूं विहार हुवो नहीं, तिण सूं द्वितीय चोमासो ।
शहर बिदासर कियो गणाधिप, हिवे सुणज्यो तेह समासो रे ॥ २० ॥
ए पिचपनमी ढाल में आख्यो, अठावीसा नो उन्हालो ।
वर्ष गुणतीसा नों पुन वर्णन, संक्षेप थी सुविशालो रे ॥ २१ ॥

ढाल : ५६

दोहा

तीसे वर्ष बिदासरे, द्वितीय कियो चोमास।
गणपति सहित सोले मुनि थया, अति करता ग्यान अभ्यास ॥ १ ॥
सतीय गुलाबां प्रमुख है, समणी गुणचालीस।
ग्यान ध्यान तप सेव नों, लिये लाभ निशि दीस ॥ २ ॥
सात थोकड़ा तप कियो, भीम मुनि चौविहार।
च्यार पंचोला दशम बे, एक सात सुविचार ॥ ३ ॥
छजमल मुनि पिण तप कियो, चोला बे चोविहार।
सप्त तणो इक थोकड़ो, चोविहार सुविचार ॥ ४ ॥
गुलाब दीर्घ इक मास लग, छठ २ तप वर कीन।
पंचोलो नव दशम इक, उदेचंद तप चीन ॥ ५ ॥
मासखमण मोतां सती, जेतांजी अर्द्ध मास।
दिन सतरे तेरे प्रमुख, कीध तप सुविमास ॥ ६ ॥
अवर मुनि समण्यां तणा, थोकड़ा तप अधिकार।
न कहूं कहितां वधे, ग्रंथ अधिक विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[हूं आई छूं देवा ओलंभड़ो सासुजी—ए देशी]

विहार कियो विदासर शहर थी स्वामीजी, पहुँचावण चाल्या ठाकुर जनवृन्द हो।
जशधारी सुखकारी गणि महिमा निला स्वामीजी।
रही सुजानगढ़ लाडणूं वलि स्वा०, आया वीदासर सुखकंद हो।
गुणक्यारी वर वारी सुमति सिचें भला ॥ स्वा० १ ॥
वारू वासी लाटोती गाम नों स्वा०, नेमीचंद श्री श्रीमाल हो। गु०
वले उमरा नों वासी तिहां स्वा०, जोतीराम जाति अग्रवाल हो ॥ ज० २ ॥
दे वेहूं नें दिक्षा पुर वाहिरे स्वा०, महा विद वीज पुष्प रवि दिन हो। गु०
इकावन मुनि संग शोभता स्वा०, आया स्हामा साथ वहु जन हो ॥ ज० ३ ॥
हुवो माह सुद सप्तम नों तिहां स्वा०, मर्याद मोछव श्रीकार हो। गु०
डागा ईसरदास नें तव कियो स्वा०, चारू चरण लेवानें त्यार हो ॥ ज० ४ ॥
ईसर पुत्र डागा अग्रचन्द नों स्वा०, बीकानेर थेट में वास हो। गु०
बीदासर नानाणा रा जोग स्यूं स्वा०, कियो वास धर्म लह्यो ग्वास हो ॥ ज० ५ ॥

वर्ष छाइसे त्रिया चांदां भणी सजनजी, देवाय चरण सुविचार हो। गु०
पछै लघु बंधव परणाय नें स०, हिवे हुवो चरण लेवा न्यार हो॥ ज० ६॥
फागण कृष्ण एकम बहु मोच्छव स०, ईसरदास भणी शहर वार हो। गु०
वलि भियानी नां मुखराम नें स०, विहुं नें चरण दे कियो विहार हो॥ ज० ७॥
वारू गणपति मुकुट सुजय गणि स्वा०, वारू जिन मग मंदिर स्थंभ हो। गु०
समय सज्झाय उद्यमी घणां स्वा०, लियो ग्यान ध्यान अति लंभ हो॥ ज० ८॥
वर उगणीसे तीसा वर्ष सूं स्वा०, चारू ग्यारस सित आसोज हो। गु०
कहुं सझाय मान ते दिवस थी स्वा०, ज्यां तो करी समय रस मोज हो॥ ज० ९॥
दशवैकालिक समय नी स्वा०, वारू उत्तराध्ययन अनूप हो। गु०
सझाय मान विहुं सूत्र नी स्वा०, कहूं आसरे चित धर चूंप हो॥ ज० १०॥

कलश

आसोज सित ग्यारस थकी, असाढ़ी पूनम लग सही।
दशमासमाधिक मांहि निर्मल, समय सझाय करी सही।
चिहुं लक्ष नें फुन सहस्र बासठ, आसरे नव सय वलि।
वलि सखर समय रस लीन गणपति, करण आत्म उजली॥ १॥

ढाल

हिवे इकतीसें वर्ष गणपति स्वा०, कियो सुजानगढ़ चोमास हो। गु०
जय सहित अठारे मुनिवरु स्वा०, करे तप जप ज्ञान अभ्यास हो॥ ज० ११॥
नेमीचंदजी किया पंच थोकड़ा स्वा०, दोय मास एकांतर धार हो। गु०
किया भीम ऋषि षट थोकड़ा स्वा०, अठाई प्रमुख चोविहार हो॥ ज० १२॥
संग सती गुलाबां आदि दे स्वा०, अष्ट वीस अज्जा ओपंत हो। गु०
तप विविध प्रकारे बहु थोकड़ा स्वा०, किया सतियां अति गुणवंत हो॥ ज० १३॥
पछै विहार करी नें आविया स्वा०, शहर लाडणूं अति श्रीकार हो। गु०
त्यां दिक्षा लेवा चुरू शहर थी स्वा०, आई कुनणां नें सिरदार हो॥ ज० १४॥
विहुं जाति पिहरीया बांठिया वारूजी, कुनणां सासरीया हीरावत हो। गु०
सिरदारां सुराणा सासरया वा०, मृग सित दशम गणि हत्थ हो॥ ज० १५॥
वर कुनणांजी ब्राह्मी तणा वा०, पीहर वाघावास हो। गु०
तसु पोस कृष्णा तेरस दिने वा०, दियो चरण रयण गुणरास हो॥ ज० १६॥
दिक्षा तीजांजी खाटु तणा वा०, सित चेत दशम सुविख्यात हो। गु०
वदी तीज वैशाख उदैकुंवरजी वा०, जोधपुर नां दीक्षा जय हाथ हो॥ ज० १७॥

बीकानेर कोठ्यारां रे सासरो वा०, तजी बेटो वधु बहु ऋद्ध हो। गु०
बाइ सुंदर शुक्ल आसाढ़ में वा०, दिक्षा सित छठ गणि कर लीध हो ॥ ज० १८ ॥

कलश

रवि संज्ञ्य निधि मही वर्ष गणपति, समय गाह गुणी भली।
शत सहस्र साड़ा पंच नें फुन, अविक जे कहीये बली।
षट वीस सहस्रज सप्तसय, अठावन नें आसरे।
गाहा प्रमाण सभ्काय करवा, लीन जय निशि वासरे ॥ १ ॥

ढाल

ए छपनमी ढाल में वा०, दाखी दो वर्ष नी बात हो। गु०
तीसा नें इकतीसा तणी वा०, हिवे आगे सुणो अवदात हो ॥ ज० १९ ॥



ढाल : ५७

दोहा

वर्ष बतीसे लाडणूं, चोमासो सुविचार।
श्री जय गणि सहित ही, उगणीस सहु अणगार ॥ १ ॥
सती गुलाब सु आदि दे, समण्यां षट चालीस।
गणि सेवा तप जप सखर, करती धर सुजगीस ॥ २ ॥
छजमल मुनि पनरे किया, तिण में दश चोविहार।
अन्य मुनि समण्या थोकड़ा, तप किया विविध प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल

हिवे शहर लाडणूं नां चोमास में, वींजराज पश्चिम थली वासी रे।
बहिन कसुंबा कुंवारी कन्या, आयो साथ लेइ सुविमासी रे।
जग जशधारी रे, उपगारी घणा।
भवि बोध व्रत दातारी रे, वर गण वाड़ी रे।
गुण जल पाय नें, प्रफुल्ल करी अति भारी रे ॥ १ ॥

कार्तिक कृष्णा अष्टमी, पुष्प नें तजी वींजराज सगाई रे।
बहिन कसुंवा रे द्वादश वर्षनी, लियो साथ चरण वैन भाई रे॥ ज० २॥
हिवे शहर सुजानगढ़ दर्शन दे करी, आया वीदासर गण इन्दो रे।
त्यां समण सत्यांनां रे बहु भेला थया, आया गणि वंदन जन वृन्दो रे॥ ज० ३॥
भंडारी शहर जोधाण सूं, आया दर्शन करन उमंगो रे।
साथ कविला रे श्रावक श्राविका, रथ हय ठाकुर बहु संगो रे॥ ज० ४॥
हिवे गणाधिप फागण मास में, आया सुजानगढ़ मांहि रे।
त्यां नवे शहर थी गजमल मुणोत नी, बहु संजम लेवा आई रे॥ ज० ५॥
पीहर लश्कर जाति गांधी जे, फागण सित तीज उदारो रे।
लियो सुजानगढ़ संजम स्वाम पे, तजी ऋद्धि सुत परिवारो जी॥ ज० ६॥

कलश

कर संज्य निधि महि वर्ष गणी, आसरे समय तणी गुणी।
अठ लक्ष ने फुन कहुँ ऊपर, सहस्र एकादश थुणी।
फुन पवर षट शत सखर समुचित, गाहा गुणी जय महामुनि।
अति जबर मुनिवर पूर्वधर सम, सघन कीर्ति गणी तणी॥ १॥

ढाल

हिवे वर्ष तेतीसे रो वृद्ध वय जोग सूं, कियो लाडणूं द्वितीय चोमासो रे।
गणपति सहित मुनि उगणीस सूं, थयो बहु धर्म उजासो रे॥ ज० ७॥
मासखमण इकतीसो मनोहरू, कियो शिवबगश उदक आगारो रे।
अरू दिन तेह में किया, लगोलग चोविहारो रे॥ ज० ८॥
समणी गुलाबकुंवरजी आदि दे, सहु एकावन सुविचारो रे।
कियो पडियारा नां रे मोतांजी, मासखमण उदक आगारो रे॥ ज० ९॥
वलि पांच थोकड़ा प्रगट किया मुनि, सती ग्यानां दिवस बावीसो रे।
वलि चोला सूं लेइ तेरा लग थोकड़ा, किया सतीयां पवर पेंतीसो रे॥ ज० १०॥
त्यां तिथ त्रयोदशी कार्तिक शुक्ल में, वर सुरगढ़ शहर नों वासी रे।
हुक्मचन्दजी तात वधु तजी, लियो चरण रयण सुविमासो रे॥ ज० ११॥
पछै सुजानगढ़ में रे दर्शन दे करी, कियो मोछव वीदासर मांह्यो रे।
पछै वृद्ध हस्तु कारण सुण तारवा, आया लाडणूं थेट चलायो रे॥ ज० १२॥
थाका आया तो ही दर्शन तिह समें, डोकरी हस्तु नें दीधा रे।
साहज दियो अति तिण रात रा, चाल्या चोला में सुप्रसिद्धा रे॥ ज० १३॥

[illegible]

[illegible]

ढाल

ए सतावनमी ढाल में आखियो, बे वर्ष तणो सुविचारो रे।
बतीस तेतीसा वर्ष तणो कह्यो, कह्यो [illegible] आचारो रे ॥ ध्रु० १७ ॥

ढाल : ५८.

दोहा

[illegible]

ढाल

[आवेरी माइ लवण कुश—ए देशी]

श्रीजिन सादृश्य जयवर गणपति, जिन मग मंडण जाण।
कुमति जू खंडन अघ रिपु दंडन, भर्म विहंडन भाण।
सूरिजन सुणिये जय जशवाद, ज्यूं होवे मन अह्लाद।
उत्कृष्ट रसायन ज्यो चित आवे, तो पावे परम समाधि ॥ सू० १ ॥
उगणीसे चउतीस वरस वर, लाडणूं शहर मझार।
गणपति सहित द्वबीस मुनिवर, करता अति उपगार ॥ सू० २ ॥
शिवबगस तपस्वी तप सखरो, इकवीस उदक आगारो रे।
दुलीचंद ऋषि तप षट थोकड़ा, किया अवर मुनि वलि च्यारो ॥ सू० ३ ॥
समणी गुलाबां आदि देइ सहु, सत्यां छपन्न श्रीकार।
कंकु चल्यां बे चोमासे आया, थया अठावन अवधार ॥ सू० ४ ॥
मोतां वीस अने अवर समण्यां, करती तप सूं किलोल।
छपन्न सत्यां में तेपन थोकड़ा, अठारे लग लगती ओल ॥ सू० ५ ॥
दोलतराम आसोज में दिक्षा, जाति बावेल सुजाणी रे।
अंगना अंगज छोड़ लाडणूं ली, स्वाम हाथ सुखदाणी ॥ सू० ६ ॥
बगतावरजी लाडणूं वासी, फागण बिद पंचमी दिन।
बहु हगामें चरण लाडणूं, लियो छोड़ मात परिजन ॥ सू० ७ ॥
देवीचन्दजी अग्रवालो, उमरा गांव नों वासी।
फागन बिद चवदस दिन लीधो, संजम अति सुविमासी ॥ सू० ८ ॥
पेमांजी जोजावर केरा, देवर सुत छोड़ ली दिक्षा।
पछै न पल्यो तिण सूं निकली, छोड़ संजम वर शिक्षा ॥ सू० ९ ॥
दादरी भियाणी रा रामुजी, नालश गोती रामजश बेटी।
बिद असाढ़ ग्यारस बीदासर, लियो चरण रयण गुण पेटी ॥ सू० १० ॥
संवत उगणीसे पैंतीसे, बीदासर चोमास।
गणपति सहित पनरे मुनि, करे कर्म कटक दल नाश।
गावो रे गुणी गणि गुण जाझा, ज्यांरे बाजे सुयश जग बाजा।
करे ग्यानादिक शिवपुर साजा, सोहे चिहुं तीर्थ नां राजा ॥ सू० ११ ॥
गुलाबकंवरजी समणी प्रमुख, तयालीस वर अज्जा।
गणि सेवा वर तप जप उद्यम, करती सखर सकज्जा ॥ सू० १२ ॥
महरकरण मुनि मासखमण कियो, इकतीस उदक आगारे।
विविध प्रकारे अवर मुनि तप, शिवबगसजी दिवस अठारे ॥ सू० १३ ॥

दिवस बाइस नों थोकड़ो ऋघु, थया थोकड़ा अवर उनतीस ।
अष्टादश लग लगती ओली, करी समण्यां सुजगीश ॥ सू० ॥ १४ ॥
चांदारूण नां रामचन्दजी, जाति लूणीया जोई ।
बिद भाद्रव तेरस जोबन में, सगाइ छोड़ चरण लियो सोई ॥ सू० १५ ॥
सुभांजी देशनोक नां वासी, गोलछा जाति सासरीया ।
विद भाद्रव पंचम जय दीधो, चरण रयण गुण दरिया ॥ तू० १६ ॥
भीयाणी ना सरजां जी भल, अग्रवाला उमंग ।
पोह बिद चोथ बीदासर मांहि, लियो चरण रयण चित्त चंग ॥ सू० १७ ॥
पछे महा सित सप्तम मोछव ने दिन, बीदासर उत्कृष्ट मेला ।
इकसठ मुनि अज्जा इकसो बावन, थया जय बरतारे भेला ॥ सू० १८ ॥
बीदासर वासी छोग जी, सासरीया जाति सेखाणी ।
कृष्ण ज्येष्ट छठ सुजानगढ़ में, लियो चरण रयण गुणखाणी ॥ सू० १९ ॥

कलश

उगणीसय पणतीस वर्ष जय, समय रस गलतान ही ।
शत सहस्र तेरे अनें ऊपर, सहस्र इकसठ मान ही ।
वलि साड़ा षट सै आसरे, गाहा गुणी वर शुभ ध्यान ही ।
अति उद्यमी गण इन्द दीपत, जिनेन्द्र सम इम जान ही ॥ १ ॥

ढाल

अठावनमी ढाल रे मांही, आख्या दोय चोमासा चारू ।
चोतीस पेंतीस वर्ष तणी ए, कही वतका गुण वारू ॥ सू०२० ॥



ढाल : ५९

दोहा

छत्तीसे बीदासरे, वाचयम सहु वीस ।
आप सहित उद्यम अति, करता मुनि निशि दीस ॥ १ ॥
सतिय गुलाबां सहित ही, समण्यां इचालीस ।
तप जप सेवा स्वाम नी, करती धर सुजगीस ॥ २ ॥

कलश

मोतां सती पडियार ना, इक मास तप कीधो भलो।
सहु थोकड़ा समण्यां मझे, चालीस पण तप उजलो।
तेवीस लग वर ओल मांहे, थोकड़ा चिहुं ना भया।
बावीस बार अठार नें फुन, तेर विण सगला थया॥ १॥

ढाल

[आठ कुवा नव वावड़ी हे दरजण—ए देशी]

हिवे सावन बिद एकम दिने, गणि शहर बिदासर मांहि रे।
सुगण प्राणी, लेवो रे शरण जय गणि तणो।
सांडव रो वासी छोगजी भणी, दियो चरण रयण सुखदाय रे।
सुगण प्राणी, लेवो रे शरण जय स्वाम नो॥ १॥
विहार करी बीदासर थकी रे, लिवी शहर लाडणूं वाट रे। सु०
मर्यादा मोच्छव कियो लाडणूं रे, थया समण सत्यां ना थाट रे॥ सु० २॥
तिहां शहर जोधाणां थी आविया रे, भंडारीजी धर भाव रे। सु०
सैंकड़ा जन साथे करी रे, किया दर्शण तिण प्रस्ताव रे॥ सु० ३॥
वलि दर्शन मोच्छव देखवा रे, आया अवर ही बहुजन वृन्द रे। सु०
पछे सुजानगढ़ में पूज्यजी रे, दिया दर्शन धर आनन्द रे॥ सु० ४॥
भैरूंलाल लाला नी विनती रे, मानि कियो जयपुर नें विहार रे। सु०
डीडवाणे दोलतपुरे थइ रे, आया कुचामण बाग मझार रे॥ सु० ५॥
बहु लोक दर्शन नें आवता रे, गावता गणि गुणग्राम रे। सु०
वचनामृत जय पावता रे, जन जाता सुपसन थइ धाम रे॥ सु० ६॥
तीन रात्रि गणि रही तिहां रे, सुखे २ करता विहार रे। सु०
मीठड़ी नांवे गुढ़े थई रे, आया जोबनेर जयकार रे॥ सु० ७॥
जोवनेर दर्शन देइ करी रे, आया जयपुर शहर रे। सु०
पुर बारे भैरूंजी री जायगां रे, इक रात्रि रह्या कर मेहर रे॥ सु० ८॥
मगदुजी जाति त्यां महेसरी रे, देवरीये गाम थी आय रे। सु०
सित चेत अष्टम दिन पुष्प में रे, लियो चरण रयण सुखदाय रे॥ सु० ९॥
चरण देइ पुर में पधारिया रे, गज पल्टन जन बहु साथ रे। सु०
घणे हगाम लालजी री जायगां रे, पगल्या किया गणनाथ रे॥ सु० १०॥

छंद

उगणीस सय षट तीस वर्ष, जय स्वाम सभाय घणी करी।
शत सहस्र चउदश ऊपरे, वलि सहस्र सेंतीस चित धरी।
वलि साढी नव सै आसरे, गणि समय गाह गुणी भली।
इम सज्झाय ध्यान सुग्यान तप करी, आतम कीधी उज्जली ॥ १ ॥

ढाल

ढाल भणी उणसाठमी रे, गणपति जय गुणकार रे। सु०
वर्ष छतीसे पधारिया रे, स्वामी जयपुर शहर मझार रे ॥ सु० ११ ॥

●

ढाल : ६०

दोहा

उगणीसे सेंतीस नुं, जयपुर में चोमास।
गणि सहित गुण आगरू, श्रमण वीस सुविमास ॥ १ ॥
सतिय गुलाब सु आदि दे, समणी षट चालीस।
गणी सेव तप जप करी, सफल करे निशि दीस ॥ २ ॥
श्रावण सित चउदश थकी, मयाचन्द गुण लीन।
एकंतर कार्तिक लगे, बीच छठ चउदे कीन ॥ ३ ॥
भीम एकन्तर मास वे, वलि धनजी अणगार।
दिन चउदश तप थोकड़ो, अन्य मुनि विविध प्रकार ॥ ४ ॥

ढाल

[कसीया नें तंवुड़ा हो०—ए देशी]

हिवे जयपुर शहर मझारो, सुखकारो, सहु मुनि महासती रे, म्हारा स्वाम।
करता गणपति सेव।
केइ ग्यान ध्यान अति करता, अघ हरता बहु तपस्या करी रे। म्हा०।
मुनि अलग करी अहमेव।
धिन २ हो गण इंदा गुण वृन्दा, श्री जय महामुनि रे ॥ म्हा० १ ॥

वलि जन हजारां आवे, वहु भावे दर्शण करण नें रे। म्हा०।
वहु देश २ नां लोक।
गणि वयण सुणी हुलसावे, सुख पावे दर्शन देख नें रे।
गुण गावे मिल जन थोक॥ २॥

वलि सतीयां वहु तप कीधो, जश लीधो गुणीजन लोक में रे। म्हा०।
तप मोतां दिन इकवीस।
वलि थोकड़ा सहु इकताली, सुविशाली ओल लगो लगी रे। म्हा०।
करी सोला लगे सुजगीस।
धिन २ हो गणिराया सुखदाया, श्री जय महामुनि रे॥ ३॥

शिवकरणजी सुखकारी अति भारी, कष्ट सही करी रे।
लेई आग्या गणपति हाथ।
सित आसोज सप्तमी चारू अति वारू, चरण अंगीकस्यो रे।
तजी आथ महेसरी जाति॥ धि० ४॥

वलि आमेट कुहाथल वासी, गुणरासी किस्तुरां कहुँ रे।
वारूं धन तेरस नें दिन।
ले श्री जय गणि शिष्या, वर दिक्षा मुझ हाथे ग्रही रे।
वहु मोछव सती दृढ़ मन॥ धि० ५॥

वृद्धवय हंसराजो तज साहजो, पुत्रादिक तणो रे।
अति जाझो घर वैराग।
शिसोदा गाम नों वासी सुविमासी, धाकड़ जाति जे रे।
आयो चरण लेण धर राग॥ धि० ६॥

वलि जोजावर नों जाणी, सिरदारमलजी आवियो रे।
चरण लेवा मन आण।
ए विहुँ नें इक साथे निज हाथे, महा बिद प्रतिपदा रे।
दियो चारित्र बहु मंडाण॥ धि० ७॥

पछे कागद थलीना आया बहु भाया, मिल विनती लिखी रे।
हिवे पगल्या कीजे थली देश।
है उपगार नों इहां नाको, जे खाखो थो खंड्यां तणो रे।
सो विखरतो दिसे विशेष॥ धि० ८॥

वलि संत कालू सुखकारी, विगत सारी खंड्या तणी रे।
कही थयो त्यांरो अति ही उघाड़॥

वहु लोक सिको तुझ धास्यो, पउधारो आप ज्यो इह समें रे।
तो अतही होवे उपगार ॥ धि० ६ ॥
वलि विदासर नों भायो आयो, जाति बैंगाणी पिण जदा रे।
तिण पिण कह्या समाचार।
सुण स्वामी धरी हुंसियारी, करी त्यारी थली जावा तणी रे।
इखू तीज नों करण विहार ॥ धि० १० ॥
विहार तणी सुण वाणी, सुखदाणी श्रावक शहर नां रे।
वारूं लाला प्रमुख विचार।
करी विविध पर अरजी, कर मरजी चोमास करो इहां रे।
करणो ग्रीष्मे कठिन विहार ॥ धि० ११ ॥
वलि प्रभुदानजी व्यासो सुविमासो, अरज करी इसी रे।
हूं गयो रावलजी रे पास।
त्यां पिण सुण कहिवायो, इहां रहिबो इण खावे भलो रे।
जिण सूं कीजे इहां चोमास ॥ धि० १२ ॥
वलि विविध परे करी अरजी, वर मुरजी देखी नें तदा रे।
वलि अवर मुदो पिण हेर।
रह्या तिहां जय स्वामी, हित कामी जे भव्य जीव नां रे।
करी जयपुर शहर पर मेहर ॥ धि० १३ ॥

दोहा

मास वैशाख मांही विमल, इक लख सात हजार।
वेसय पनरे आसरे, सझ्याय मान सुविचार ॥ १ ॥
जेष्ट मासे जय गणी, सहस्त्र नेऊ गुणी गाह।
साढ़े छः से फुन आसरे, लियो समय रस लाह ॥ २ ॥
मास असाढ़े गणपति, सहस्त्र पीचंतर सार।
सवा साठ से आसरे, गुणी गाह गुणकार ॥ ३ ॥

कलश

उगणीस सय सप्त तीस वर्षे,, जय सझ्याय गुणो गुणी।
गाहा समय उत्तराध्ययन नें वलि, दशवैकालिक नी भणी।
सात सहस्त्र ग्यारे ऊपरे, इकवीस सहस्त्र नें आसरे।
वलि धर्म देशन आदि करणी, उद्यमी निशि वासरे ॥ १ ॥

ढाल

ए साठमी ढालो सुविशालो, वतका वर्णवी रे।
सेंतीसा वर्ष नी जोय।
जैपुर में चोमासो, अधिक उजासो धर्म नों रे।
कियो मिथ्या तम मल धोय ॥ धि० १४ ॥



ढाल : ६१

दोहा

हिवे अड़तीसा वर्ष नों, संक्षेपे सुविचार।
श्रोता चित्त देई सुणो, ह्वै ज्यूं मन चमत्कार ॥ १ ॥
उठी सेती गांठ गल, फूटी मास असाढ़।
तिण जोग सझ्याय न थइ वहु, पिण मन अधिक सुगाढ़ ॥ २ ॥
सोले सहंस नें सात सौ, श्रावण विद पक्ष मांहि।
करी असझाई टाल ने, समचित सखर सझाय ॥ ३ ॥

कलश

उगणीसे सैंतीसे तणा, आसोज सित ग्यारस थकी।
अड़तीस ना श्रावण शुक्ल वर, प्रतिपदा दिन लग जिकी।
गाह लक्ख छयासी अने, वर सहस्र सतसठ मान ही।
वलि साठ चिहुं सै आसरे, जयाचार्य गुणी शुभ ध्यान ही ॥ १ ॥

ढाल

[सुखपाल सिंघासन ल्याजो लाल वालहा—ए देशी]

एहवा गणपति गुणधारी लाल स्वाम जी, ग्यान सझ्याय ध्यान अति भारी जी।
जशधारी जय गण इन्दा लाल स्वाम जी ॥ १ ॥
ल्हलीन समय रस मांही लाल स्वा०, तनु वेदन नी गिणती न कांई जी।
दृढ़ताई अति गुण वृन्दा लाल स्वा० ॥ २ ॥

वलि अड़तीसे जयपुर शहरो लाल स्वा०, चोमासो कियो करी म्हेरो जी।
गुण गेहरो श्री जय स्वामी लाल स्वा० ॥ ३ ॥
सेवा में सतरे सु संतो लाल स्वा०, अठारमा आप महंतो जी।
सुभदंतो गुण गण धामी लाल स्वा० ॥ ४ ॥
सेवा में इक हूं हुंतो लाल स्वा०, वखाण प्रमुख नी सेव करतो जी।
धरतो विनय सुचारू लाल स्वा० ॥ ५ ॥
मोतीलाल मुनि मतिवंतो लाल स्वा०, गणपति नी सेवा करतो जी।
लखासर वासी वारूं लाल स्वा० ॥ ६ ॥
वलि भीम मुनि अति भारी लाल स्वा०, सित आसाढ़ तेरस थी धारी जी।
तप छठ २ निरंतर करतो लाल स्वा० ॥ ७ ॥
बिच एक चउथ दश तेला लाल सुगण जी, इक दशम सर्व सभेला जी।
चउविहार करी अघ हरती लाल स्वा० ॥ ८ ॥
वलि डालचंद बुद्धिवंतो लाल स्वा०, फुन जुहार पाटणी तंतो जी।
सहु संतो करे गणि सेवा लाल स्वा० ॥ ९ ॥
मुनि मयाचंद सुविचारी लाल स्वा०, वर एकंतर तप धारी जी।
करी सेव लहे गुण मेवा लाल स्वा० ॥ १० ॥
वलि नंदराम मुनि नीको लाल स्वा०, वलि कन्हैयालाल अति तीखो जी।
नजिक भक्ति अति करतो लाल स्वा० ॥ ११ ॥
वलि ईसरदास उदारी लाल स्वा०, करी सेवा अधिक सुभारी जी।
व्यावचियो गुण जश वरतो लाल स्वा० ॥ १२ ॥
मुनि कुशाल व्यावच अति करतो लाल०, लघु जुहार आयो त्यां फिरतो जी।
चोमासे टल गण आयो लाल स्वा० ॥ १३ ॥
वलि नवल मुनि गुणधारी लाल स्वा०, खूबचंद बंधव हितकारी जी।
तप धनजी दिन द्वादश ठायो लाल स्वा० ॥ १४ ॥
वलि पृथ्वीराजजी पेखो लाल स्वा०, शिवकरण मुनि फुन देखो जी।
सुविशेष सेव गणि कारक लाल स्वा० ॥ १५ ॥
फोजमल भीम नों भाई लाल स्वा०, ए सतरे मुनि सुखदाई जी।
गुणग्राही सेव गणि सारक लाल स्वा० ॥ १६ ॥
सती गुलाब आदि गुणवंती लाल स्वा०, सतियां पिण तीस सोहंती जी।
गणपति नी अति सेव करंती लाल स्वा० ॥ १७ ॥
सती गुलाब महा सुखकारी लाल स्वा०, करी भक्ति विविध पर भारी जी।
बहु विनय विवेक धरंती लाल स्वा० ॥ १८ ॥

प्रथम चोमास विण पेखो लाल स्वा०, उगणीस नवका थी लेखो जी।
थेट सीम करी गणि भक्ति लाल स्वा० ॥ १९ ॥
कियो लिखणो जोड़नो जाणी लाल स्वा०, वलि दिया विविध वखाण रु वाणी जी।
सुखदाणी जाण बहु युक्ति लाल स्वा० ॥ २० ॥
समणी बड़ जेठां सुखदाणी लाल स्वा०, करी सेव विविध पर जाणी जी।
ओषधी आदि जिके चीज चाहती लाल०, आलस छोड़ तुरंत ले आती जी ॥ २१ ॥
मोतां पडियारा नी मतिवंती लाल स्वा०, करे सेव तंतु सीवंती जी।
करे नान्हूजी चांदा बहू काजै लाल स्वा०, पडिलेवण गोचरी नी सेव साझै जी ॥ २२ ॥
सती ग्यानां जी गुणवंती लाल स्वा०, उदक आदि नों काम करंती जी।
चनणाजी फुन चूनां कुंवारी लाल स्वा०, वलि सुरता चांदु सुखकारी जी ॥ २३ ॥
हरकंवर जैपुर नी वासी लाल स्वा०, उदयकुमर कुवारी विमासी जी।
राजां मखतुलां दादी पोती लाल स्वा०, गणि सेव करी अघ धोती जी ॥ २४ ॥
मोतां बीकानेर नी वासी लाल स्वा०, वलि वगतु ऋधु सुविमासी जी।
श्रीजीद्वार वलि मोतां लाल स्वा०, बाजूजी सेवा में फुन होता लाल स्वा० ॥ २५ ॥
पातावुज कुंवर फुन जाणी लाल स्वा०, कसुमा किस्तुरां गुणखाणी जी।
बगतावर रामुजी राजै लाल स्वा०, चांदा पानकुंवर सेव साझै जी ॥ २६ ॥
जयकुंवर नंदुजी जेह लाल स्वा०, वलि चम्पा सोना गुणगेह जी।
लघु जेठां जड़ावजी जाणी लाल स्वा०, करे गणि सेव सुखदाणी जी ॥ २७ ॥
इंदुजी शिवकुंवर मां बेटी लाल स्वा०, वलि गीगांजी गुण पेटी जी।
समण्यां पेंतीस शोभंती लाल स्वा०, गणि सेव करे गुणवंती जी ॥ २८ ॥
सहु समण सत्यां गुणधारी लाल स्वा०, करी सेव धर हुंसियारी जी।
मुज देख हरष अति धरता लाल स्वा० ॥ २९ ॥
इकसठमी ढाल मझारो लाल स्वा०, कह्या मुनि श्रमणी सुखकारो जी।
चोमास रही सेव करता लाल स्वा० ॥ ३० ॥



ढाल : ६२

दोहा

सावन विद में स्वाम तन, उपनो कारण एह।
दस्त तणो वलि अवर जे, अन्न अरुचि अविकेह ॥ १ ॥

बिद तीज चोथ पंचमी, थयो लंघन ज्यूं ताय।
इक दिन तो जल दाल को, लियो छाण गणिराय ॥ २ ॥
थोड़ी सी पोदीना तणी, चटणी घाली मांय।
पछै दोय दिन प्रभात रा, धरण स्वाम मसलाय ॥ ३ ॥
इक दिन मोई सूंठ री, लीवी अल्पसी जाण।
वले घाट बाजरी तणी, ली पुण कल्प उनमान ॥ ४ ॥
धरण मसलाय तीजे दिने, ली घाट टका उनमान।
मांहि अल्प सो पथ लियो, करी अवमोदरी जाण ॥ ५ ॥
पछे अल्प २ अन्न पिण, लेण लागा गणईश।
किणहिक दिन अन्न ना लियो, पिण धर्मोद्यम सुजगीश ॥ ६ ॥

ढाल

[अंबरीयो तो गाजे हो भटियाणी रा०—ए देशी]

इम अन्न अरूचि थी जाणी हो, सुखदाणी आहार घटावियो।
वलि अवसर जाणी हो आप।
स्वाम सखर सुखदाणी हो, वर वाणी भाषे एहवी।
हिये धरियां कटे भवि पाप।
जय स्वाम जबर गुणधारी हो, जयकारी श्री जिन सारिषा।
वर गुणमणि रयण भंडार।
ज्यां सुमति सखर भव्य आपी हो, गण कापी कुमति वेलड़ी।
जे हुंती दुख दातार ॥ ज० १ ॥
ज्यांरी सीख सखर सुखदाता हो, भवि साता लहे हिये धारियां।
इह भव पर भव मांहि।
वचनामृत जय पाता हो, विख्याता कर्ण पुटै करी।
सुण्यां हृदय शीतल अति थाय ॥ ज० २ ॥
सुण कारण दर्शण करवा हो, कांई श्रावक चुरू शहर नां।
सागरमलजी कोठारी जाति।
वृद्धिचन्दजी सुराणा हो, कांई आया अति उचरंग सूं।
दर्शन करी लह्यू हरष विख्यात ॥ ज० ३ ॥
वलि कारण सुण तिहवारी हो, भंडारी बादरमल्ल जी।
कांई जोधाणे जसू वान।

झट डाक गाड़ी में बेसी हो, सुविशेषी ताकीद सूं आविया।
श्रावण विद में करी पर्युवास ॥ ज० ४ ॥
ज्यांरे प्रीत पूज्य सूं भारी हो, इकतारी गणि वचना तणी।
वलि आसता अधिक उदार।
दर्शन कर हुलसाया हो, थइ साता कांइक स्वाम रे।
सुण लह्यो हर्ष अपार ॥ ज० ५ ॥
त्यांने विविध प्रकार नी बातां हो, विख्याता आप कही भली।
कांई सुण लह्यो हर्ष सवाय।
पछे केइक दिन कर सेवा हो, जिन जेवा श्री जय स्वाम नी।
पाछा गया श्रावण विद मांय ॥ ज० ६ ॥
हिवे श्रावण सित पख मांहि हो, कांई अवर तो साता ही हुंती।
पिण गले गांठ फूटी थी ताहि।
तसु मुख चोड़ो करवा थी हो, रसी असभाइ नां जोग थी।
समय नी न थई सभाय ॥ ज० ७ ॥
पिण शुभजोग ध्यान चित धरता हो, गणि करता उद्यम अह निशे।
वलि देता सुमति अनूप।
जे समण सती हिये धारे हो, त्यांरे इह भव पर भव सुख होवे।
एहवी सीख अमृत रस कूप ॥ ज० ८ ॥
पछे श्रावण सित चउदस दिने हो, कांई आसरे पाछिल पोहर में।
कांई ताव चढ़यो जय तन।
पछे पूनम दिन प्रभाते हो, कांई लाला भैरूंलाल नें।
तनु कारण अधिक उत्पन्न ॥ ज० ९ ॥
सुण गोचरी बेलां स्वामी हो, गुणधामी दर्शन देण नें।
पउधास्या गणधार।
विविध वैराग्य नी वाणी हो, हित आणी अवसर जाण नें।
संभलाई सुविचार ॥ ज० १० ॥
वलि परिणाम अति चढ़ाया हो, गणिराया दर्शन दे करी।
पाछा आया मोती महल मांहि।
पछै उणहिज दिन आथणरा हो, गणिराज वलि दर्शण दिया।
दिया शरण अति सुखदाय ॥ ज० ११ ॥
पछै तिण रात तुरत लालाजी हो, कांई चलिया जाणी गणपति।
विद भादु एकम दिन ताहि।

लूणीया सिरदारमल नी हो, जायगां में पूज्य पधारिया।
निज पगले २ आय ॥ ज० १२ ॥
थी अन्न अरूची तप योगे हो, तिण कारण तिण दिन पय लियो।
त्रिण पइसा भर उनमान।
रह्यो जीवदोरो तिण जोगे हो, कांई चूर्ण प्रमुख ओषधी लियो।
न कियो आहार आथणरा जान ॥ ज० १३ ॥
पछे बीज नें पय टका भर हो, इक मासो सूंठज आसरे।
लियो ओषधी रूप ए आहार।
वलि तीज दिवस प्रभाते हो, पय में सूंठ लीवी सही।
न कियो आथण आहार विचार ॥ ज० १४ ॥
बिद चोथ धरण मसलाई हो, कांई लीधी मोई सूंठ की।
लोक कह्यो बरफी ल्यो सार।
तब आसरे चिहुं पंच मासा हो, ली बरफी धरण मिटायवा।
दसतां लागती बहु तिहवार ॥ ज० १५ ॥
धरण मसलाय पंचम नें हो, ली घाट टका भर आसरे।
लियो पय पइसे भर उनमान।
आथण रा अर्ज बहु कीधी हो, तब लीधी सीत इक मुख मझे।
आयां थूकणी तज्यो अन्न जान ॥ ज० १६ ॥
कहूं पंचम दिन नों अधिकारो हो, सुखकारो श्री जय गणपति।
अन्न अरुचि दस्त तनु जाण।
वृद्ध गांठ प्रमुख थी हो, कांई शक्ति घटी जाणी गणी।
करे आलोयण गुणखाण ॥ ज० १७ ॥
ढाल वासठमी मांहि हो, कांई बतका सावन मास नी।
कहे संक्षेप विचार।
बिद भाद्रव पंचम तांई हो, कांई दाखूं हिवे संलेखणा।
आराधन अधिकार ॥ ज० १८ ॥



ढाल : ६३

दोहा

पंचमी दिन हिवे पूज्य सूं, अर्ज करी म्है एम।
जो इच्छा हुवे आपरी, तो सुणिये धर प्रेम ॥ १ ॥
दश विध आराधन तणी, ढाल दसूं उदार।
जे आप तणी जोड़ी जिके, संभलाउं श्रीकार ॥ २ ॥
आप फूरमायो एह हिवे, संभलावो श्रीकार।
धुर आलोचन ढाल में, वांची तव तिहवार ॥ ३ ॥
ग्यान दर्शन चारित्र नां, तप वीर्य आचार।
विराधना आवे जिहां, ठाम २ सुविचार ॥ ४ ॥
मिच्छामि दुक्कडं जिके, ऊंचे शब्द उचार।
ठाम ठाम दीधा तिहां, कहूं संक्षेप विचार ॥ ५ ॥

ढाल

[सुगुरु की सीख हिये धरणा रे—ए देशी]

गणाधिप परम विमल ध्यानी रे, गणाधिप परम विमल ध्यानी।
कमल जेम निर्पक, आतम निज करत जवर ग्यानी।
काल विनयादिक जे जानी रे, काल विनयादिक जे जानी।
ग्यानाचार है आठ विध तेह में, लागो दोष माणी।
मिथ्या दुष्कृत तसु दाख्यो रे, मिथ्या दुकृत तसु दाख्यो।
वलि दर्शन आचार आठ विध, निशंक ताहि भाख्यो।
तेह में अतिचार थयो कोई रे, तेह में अतिचार थयो कोई।
तेहनों पिण मिथ्या दुष्कृत, निज आतम धोइ।
इसा गणिराज जवर जानी रे, इसा गणिराज जवर जानी।
कमल जेम निर्पंक, आत्म निज करत जवर ग्यानी ॥ १ ॥
चारित आचार विषै जोई रे, चारित आचार विषै जोई।
इर्या भाषादिक पंच सुमति में, दोष लागो कोई।
वलि त्रिण गुप्ति माहीं सोई रे, वलि त्रिण गुप्ति माहीं सोई।
दोष लागो ह्वै तेह तणो मुझ, मिथ्या दुष्कृत होई।
वलि पंच याम विषे जोयो रे, वलि पंच याम विषे जोयो।
रात्रि भोजन प्रमुख व्रत में, दोष लागो कोयो।

मिथ्या दुष्कृत तसु ठानी रे, मिथ्या दुष्कृत तसु ठानी।
इम आलोयण कर गणि आत्म, करे विमल ध्यानी ॥ ग० २ ॥
हिवे द्वादश विध जे ताह्यो रे, हिवे द्वादश विध जे ताह्यो।
तपाचार जे नियमाभिग्रह, हूंता ते मांह्यो।
जे दोष लागो हुवै कोई रे, जे दोष लागो हुवै कोई।
तेहनों पिण मिच्छामि दुक्कडं, दीधो अवलोई।
वलि शिव साधक व्रत में जोयो रे, वलि शिव साधक व्रत में जोयो।
बल वीर्य गोपवियो तेहनो, मिथ्या दुष्कृत होयो।
एम आलोयन गणि ठाणी रे, एम आलोयण गणि ठाणी।
पंचाचार ना दोष आलोय वर, वरन मुक्ति रानी ॥ ग० ३ ॥
आलोयण नी ढाल मोटी मांही रे, आलोयण नी ढाल मोटी मांही।
वे त्रिण आसरे म्है तब गाथा, बांची नहिं त्यांही।
तदा गणी आप एम दाख्यो रे, तदा गणी आप एम दाख्यो।
रही कांई कोइ गाथा यां, तब म्है इम भाख्यो।
छोड़िया बे वा तीन गाहो रे, छोड़िया बे वा तीन गाहो।
उपयोगवंत अति जबर आप, इम लियो ग्यान लाहो।
कही ए पंचम दिन वातो रे, कही ए पंचम दिन वातो।
हिवे छठ दिवस वृतांत आराधन, सुणी सखर ख्यातो।
स्वाम अति समय रीत जानी ॥ क० ४ ॥
छठ दिन टका भर नें उनमानो रे, छठ दिन टका भर नें उनमानो।
बाजरी नी जय घाट, प्रभात समे लीधी जानो।
आथण रा पिण इमहिज जानी रे, आथण रा पिण इमहिज जानी।
लियो पटोलियो टके भर आसरे, अर्ज मुनि मानी।
कियो दिन उद्यम अधिको रे, कियो दिन उद्यम अधिको।
सात ढाल आराधन नी सुणी, वहु तास वेरो।
किया व्रतारोपण वारू रे, किया व्रतारोपण वारू।
खमत खामणादिक यथाविधि, किया अधिक चारू।
गणेश भव उभय सुखदानी ॥ क० ५ ॥
महाव्रत पांचूं उचरिया रे, महाव्रत पांचूं उचरिया।
हिंसा झूठ अदत्त अब्रह्म परिग्रह, त्याग त्रिविध २ करिया।
ए द्वितीय द्वार कह्यो जाणी रे, ए द्वितीय द्वार कह्यो जाणी।
हिवे तृतीय द्वार में लक्ष चोरासी, खमाविया प्राणी।

वलि श्रमण श्रमणी सूं जोई रे, वलि श्रमण श्रमणी सूं जोई।
कलुष भाव आया हुवै, वच कठिन कह्यो कोई।
खमाया इम प्रगट पणे जाणी ॥ ६ ॥

वलि अन्यमति स्वमति नें तामो रे, वलि अन्य मति स्वमति नें तामो।
श्री पूज त्यांने आप खमाया, जूजूवा लेइ नामो।
टालोकर प्रमुख थकी ताह्यो रे, टालोकर प्रमुख थकी ताह्यो।
खमत खामणा किया तिण सूं, कलुप भाव कोई आयो।
वलि चिहुँ तीर्थ थी चारू रे, वलि चिहुँ तीर्थ थी चारू।
खमत खामणा किया गणाधिप, समय रीत सारू।
विमल गणिराज तणी वाणी ॥ ७ ॥

कहूं हिवे तूर्य द्वार धारो रे, कहूं हिवे तूर्य द्वार धारो।
वोसिराया तब पाप अठारे, लेई नाम त्यांरो।
पंचम हिवे द्वार कहूं तामो रे, पंचम हिवे द्वार कहूं तामो।
अर्हन सिद्ध मुनि धर्म तणा, सुण गुणग्राम अधिक स्वामो।
लिया ए शरण चिहुं धारी रे, लिया ए शरण चिहुं धारी।
परम पूज गुण गाहक गिरवा, भव्य जलधि तिरण भारी।
गुण किम कही सकूं एक वानी ॥ ८ ॥

करी वहु दुकृत नी निंदा रे, करी वहु दुकृत नी निंदा।
मिथ्या परूपण शंका कंखादि, कार्य जेह मंदा।
भव भमता जे जे कीधा रे, भव भमता जे जे कीधा।
वलि कराया अनुमोद्या तसु, मिथ्या दुकृत दीधा।
कह्यो ए द्वार छठो गुणधारी रे, कह्यो ए द्वार छठो गुणधारी।
परम धर्म नेतारी स्वामी, वरवा शिव नारी।
करी इम अघ निंदा सुखदानी ॥ ९ ॥

कहूं हिवे सप्तम जे द्वारो रे, कहूं हिवे सप्तम जे द्वारो।
वहु विध सुकृत कार्य किया म्है, ते अनुमोदूं सारो।
ग्यानादि मुक्ति मारग चारू रे, ग्यानादि मुक्ति मारग चारू।
आराध्या फुन पंच पदा नो, धर्‍यो ध्यान वारू।
महाव्रत समित गुप्ति भारी रे, महाव्रत समित गुप्ति भारी।
श्रमण धर्म प्रमुख शुद्ध करणी, अनुमोदूं सारी।
श्रद्धी इम सुकृत जस वानी ॥ १० ॥

भावन वर विमल मुनि भावे रे, भावन वर विमल मुनि भावे ।
ए अष्टम द्वारनी ढाल सुणी अति, विमल भावन ल्यावे ।
कारण सुख दुख ना पुन्य पापो रे, कारण सुख दुख ना पुन्य पापो ।
बंध्या जिसा भोगवणा जाणी, समभाव रहे आपो ।
सह्यो दुख नरके अति भारी रे, सह्यो दुख नरके अति भारी ।
तिण जोता ए अल्प कष्ट, पिण लहे लाभ भारी ।
एम समभाव हिये ल्यावे रे, एम समभाव हिये ल्यावे ।
समचित कष्ट मांहि राख जय, धर्म ध्यान ध्यावे ।
चित विमल जेम गंग पानी रे, चित विमल जेम गंग पानी ।
इम आराधन कर गणी आत्म, करे विमल ध्यानी ॥ ११ ॥
ए सप्त आराधन नीं धारो रे, ए सप्त आराधन नीं धारो ।
छठ दिन सात ढाल सुणी करी, इम आराधन सारो ।
पछै आथण रा जोई रे, पछै आथण रा जोई ।
लालाजी री जायगां मांही, आप आया सोई ।
दसत कारण तिह ठामो रे, दसत कारण तिह ठामो ।
वलि अन्न अरुचि प्रमुखे तनुं नी, शक्ति घटी तामो ।
पिण साहसीक स्वाम जानी ॥ १२ ॥

सोरठा

सप्तम दिन पय जोय रे, लियो टका भर आसरे ।
ओषधि विण अवलोय रे, न लियो दिसे अवर अन्न ॥ १ ॥

ढाल

सप्तम दिन विषे आप स्वामी रे, सप्तम दिन विषे आप स्वामी ।
दोय ढाल आराधन केरी, सुणी सुमति धामी ।
नवमो हिवे द्वार अनशन केरो रे, नवमो हिवे द्वार अनशन केरो ।
अनशन करे अथवा जे कीधा, अणसण गुण मेरो ।
तास गुण ग्राम करें तामो रे, तास गुण ग्राम करें तामो ।
दशमें द्वार नमस्कार मंत्र वर, जपे जाप जामो ।
ढाल ए तेसठमी चारू रे, ढाल ए तेसठमी चारू ।
पंचम छठ अरु सप्तम दिन वानी, कही बात वारू ।
सुणी तसु आराधन सुखदानी ॥ १३ ॥

ढाल : ६४

दोहा

बाबु दुर्गप्रसादजी, नाड़ी देखण काज।
आयो तब गणपति भणी, बतलाया मुनिराज ॥ १ ॥
तब गणपति बोल्या नहीं, जाण्यो मून जिवार।
आई दीसे मींट वा, नींद आई इहवार ॥ २ ॥
थोड़ी वार थया पछे, बोल्या श्री गणनाथ।
ध्यान हुंतो म्हारे तिणे, न दियो उत्तर ख्यात ॥ ३ ॥
सावधान स्वामी इसा, ग्यान ध्यान गलतान।
वेदन में समभाव अति, वाणी अमीय समान ॥ ४ ॥
हिवे भाद्रव बिद अष्टमी, किंचित घाट पय लीध।
ओषधी बिण न लियो क्यूंही, हठ स्यूं पिण सु प्रसिद्ध ॥ ५ ॥
नवमी मुनि अज्जा आहार नी, कीवी बहु मनुहार।
ओषध जल उपरंत जय, न लियो किंचित आहार ॥ ६ ॥
दशमी दिन बे महुर्त लग, तज दीधा चिहुं आहार।
दिन बे महुर्त चढ्यां करी, मुनि समण्यां मनुहार ॥ ७ ॥

ढाल

[राम को सुजश घणो—ए देशी]

तब गणि मुनि समण्यां तणो हो, मन राखण तिहवार।
बैठा थया तिह अवसरे हो, मानी समण तणी मनुहार।
स्वामी को सुजश घणो, इण महि मंडल सुविशाल ॥ स्वा० १ ॥
पतली घाट बाजरी तणी हो, पय आदि धाम्या तिहवार।
पय पइसा भर आसरे हो, लीवी घाट तदा गुणवार ॥ स्वा० २ ॥
दस्तादि कारण योग सूं हो, शक्ति घटी अति ताहि।
पिण समभाव सूरापण घणो हो, सावचेत अधिक मन मांहि ॥ स्वा० ३ ॥
तनुं निबलाई ना जोग सूं हो, कांई मिंट तिण दिनां मांहि।
रहती तो ही अवसर उपरे हो, सावचेत घणा गणिराय ॥ स्वा० ४ ॥
पहिलां ही आहार कियां पछे हो, करता पोहोर महुर्तादि त्याग।
हिवे तो स्वामी नां चित्त में हो, वधियो अधिक वैराग ॥ स्वा० ५ ॥

पिण शक्ति घटी बोलण तणी हो, तिण सूं ओरां नें खबर न काय।
जो त्याग किया हुवै मन मझे हो, ते जाणे श्री जिनराय ॥ स्वा० ६ ॥
हिवे आथणरा दशमी दिने हो, बैठा किया गणि नें तिवार।
आप विराज्या तिण अवसरे हो, तब युवपद अवर अणगार ॥ स्वा० ७ ॥
अर्ज करी महाराज सूं हो, आपरी इच्छा हुवै इहवार।
तो ओषधी जल उपरंत ही हो, उचरावां सागारी संथार ॥ स्वा० ८ ॥
तब गणपति हुंकार भरयो हो, दूजी बार पुछचो म्है फेर।
सागारी संथार कराय द्यां हो, जब हुंकारो भरयो बीजी बेर ॥ स्वा० ९ ॥
ओषध जल उपरंत ही हो, चिहुं आहार नां त्याग उदार।
इसो कारण है ज्यां लगे हो, आप श्रद्धोतो त्याग श्रीकार ॥ स्वा० १० ॥
अणसण सागारी उचरावियो हो, इह रीत तदा युवराज।
बार २ शरणा दिया हो, दियो गुलाब फुन साहज्य ॥ स्वा० ११ ॥
हिवे एकादशी तणे दिने हो, युवराज प्रमुख अणगार।
चिहुं सरणां नाम मुन्यां तणां हो, संभलाय रह्या बारम्बार ॥ स्वा० १२ ॥
गजसुखमाल मुनि भणी हो, आप वेदन में राखज्यो याद।
वलि खंधक मेतार्य याद राखिये हो, हुवे चित में परम समाध ॥ स्वा० १३ ॥
वलि भगवंत श्री महावीर जी हो, अनार्य लोकां मांही जाय।
लियो लाभ कष्ट उदेर ने हो, तो या सहजे निर्जरा थाय ॥ स्वा० १४ ॥
चक्री सनतकुमार जी हो, वलि जिनकल्पी अणगार।
यां कष्ट लियो अघ काटवा हो, तो या सहजे कटे अघ भार ॥ स्वा० १५ ॥
सालभद्र धनो मुनि हो, वलि खंधक मेघकुमार।
पादोगमन मास ना हो, किया अणसण दुक्करकार ॥ स्वा० १६ ॥
मास २ करता पांच पांडवा हो, नेमनाथ नों सुण निरवाण।
पादोगमन अणसण कियो हो, थयो अणसण बे मास प्रमाण ॥ स्वा० १७ ॥
त्यां पुरुषां ने याद राखज्यो हो, वलि खंधक शिष्य सुविमास।
फुन बाहुवल महामुनि हो, ध्यान मांही थया एक वास ॥ स्वा० १८ ॥
तीसक कुरुदत्त महा मुनिवरु हो, काकंदी नों धनो अणगार।
इत्यादिक मुनि अघ काटवा हो, तप कष्ट उदेरी लियो धार ॥ स्वा० १९ ॥
तो सहजे वेदन आवियां हो, त्यां पुरुषां नें राखणा याद।
समभाव सह्यां महा निर्जरा हो, त्यांरा ध्यान थी होय समाध ॥ स्वा० २० ॥
ए चोसठमी ढाल में हो, करायो सागारी संथार।
वले सरणा विविध संभलाविया हो, आख्यो ने अधिकार ॥ स्वा० २१ ॥

ढाल : ६५

दोहा

बारस दिवस तणी हिवे, कहुँ किंचित सी वात।
सावधान श्रोता सुणो, एक चित्त अवदात ॥ १ ॥
सेवा में मुनि महासती, रहिता अधिक हजूर।
चिहुँ तीर्थ फुन अन्यमति, करता सेव सनूर ॥ २ ॥
बार २ दस्तां तणो, पड़तो तिण दिन काम।
पिण सानी कर मुनि भणी, करें बैठा थइ स्वाम ॥ ३ ॥
शहर राजगढ़ नों तिहां, श्रावक सखर सुजोय।
भीमराज नामे भलो, अवसर विंदु अवलोय ॥ ४ ॥
सेवा करण आवियो, पारख जाति पिछाण।
नाड़ि तणी पारिख तसु, तनु चेष्टा पिण जाण ॥ ५ ॥
नाड़ी देख कर अर्ज तिण, अवसर एह उदार।
जावजीव कराविये, संथारो श्रीकार ॥ ६ ॥
अवर श्रावक मुनि पिण तदा, बोल्या इमहिज तिवार।
म्हे पिण जाण्यो छे सही, अवसर ए श्रीकार ॥ ७ ॥

ढाल

[कृष्णा कहे जग मांही—ए देशी]

हिवे बारस अवलोय, ग्यारे बज्यां रे ऊपरे।
पणवीस मिन्ट गया जोय, तिण बेलां आसरे तरे।
पंचमी सुमति नों काज, करण भणी जिहां।
बैठा किया गणिराज नें, अर्ज तब करी तिहां।
तिहां अर्ज में एम कीधी, अवर मुनिवर पिण तदा।
समणी गुलाब प्रमुख शामिल, ए अर्ज करवा में यदा।
महाराज इच्छा हुवे तो, जावजीव लगे सदा।
तिविहार संथारो करावां, वे त्रिण वार कह्यो तदा ॥ १ ॥
भरियो स्वामी हुंकार, बोलण री शक्ति नहीं।
करायो तत्र तिविहार, संथारो म्है सही।
तिण दिन पहेली रात, दस्तां लागी घणी।
पिण सावचेत स्वामीनाथ, सानी कर मुनि भणी।

मुनि भणी तब सेन करने, ऊठ २ नें तिह समें।
पंचमी सुमत काम करता, पिण तिणहिज ठामें नहीं गमें।
इम शक्ति घटी तो ही मन में, सूरापणो गणी नें घणो।
गुणवंत संत अति सेव साझे, बहु सहाज्य मुनि सतियां तणो ॥ २ ॥
वलि समय तणी बहु बात, संभलावी मैं तदा।
ए संग्राम शीर्ष साख्यात, मरणांत वेदन यदा।
काल आयां ऋषिराज, रहे समतापणे।
जिम प्रथम हरष थो ताहि, तिम हिज ऊंते घणे।
घणे हर्ष मुनिराज रहे, जे शीलवता बहु श्रुता।
न करे रोम उभा मरण भय थी, भेद देही नो वांछता।
क्षुधा पिपासा शीत उष्ण, प्रमुख परिसह जे सहे।
देह दुखम महा फल इसो, इम जाण समभावे रहे ॥ ३ ॥
इण खावे जे अनेक, पाठ अर्थ समय नां।
संभलाया सुविशेष, सरण चिहुं अति घणा।
तुझ सरणो श्रीकार कें, होय जो मुझ भणी।
आप ग्यान चरण दातार, जे सार वस्तु अति घणी।
अति घणी जे सार वस्तु, बोधि क्रियादिक भव्य भणी।
देइ २ घट तिमर मेट्यो, भरत में जिम दिनमणी।
इम बोधी चरण वहु लोक नें दे, लियो लाभ अति घणूं।
वलि संजम साहज्य पिण दियो वहुनें, कहां लुं गुण कहूं तुम तणूं ॥ ४ ॥
वलि पंडित मरण नों साहज्य, दियो बहु मुनि भणी।
वलि सतियां नां काज, समारया गण धणी।
फुन सुलभ वोधि वहु जीव, किया आप अति घणा।
लीधो लाभ अतीव, को न राखी मणा।
मणा कोई वात न राखी, श्रावक श्राविका वहु किया।
ग्यान ध्यान अति उद्यम कर २, लाभ आप वहुला लिया।
वलि वाल वृद्ध ग्लान मुनि नें, अति साहज्य दियो संजम तणो।
इक दिने हजारां गाह गुण २, लाहो लियो तुम अति घणो ॥ ५ ॥
आप चरण पाल्यो श्रीकार, वहु वर्षं नहीं।
आगे असंख वर्ष अवधार, वेदन असाता नहीं।
ए अल्प काल ना कष्ट, दुर्गंध तनु छोड़ नें।
पामेसो सुख अति श्रेष्ट, कर्म दल मोड़ नें।

मोड़ ने अघ आप भारी, जाता दिसो सुख मझे।
रतनां तणु उद्योत झिगमिग, अनेक सुर सेवा सझे।
इम अनेक विध गुण स्तवन करता, सतिय गुलावां जी सही।
स्वामी ना गुण स्तवन करी, तिण वेलां गाथा कही ॥ ६ ॥

गुलाबांजी कृत

[देशी—सुण चिरताली]

आप जिन मग जवर दीपायो, जिन शासन कलश चढायो।
प्रबल तेज प्रताप सवायो, इण आरे अवतर आयो।
भिक्षु शिष्य नीको, वारूं च्यार तीर्थ सिर टीको ॥ १ ॥

ढाल

गजसुखमाल सु आदि, नाम मुनि ना जिके।
ते बार बार संवादि, संभलाया फुन तिके।
दशम इग्यारस दिन, वलि वारस दिने।
आया दिसे हजारां जन, करण गणि दर्शनें।
दर्शण करवा आवता, अति लोक अन्यमति स्वमति।
दर्शण देख चित प्रसन्न होता, गाता मुख सुं गुण अति।
केई कहे जिन मारग मांही, आप हैं सूर्य जिसा।
केई कहे म्हारे मते फुन आपरे, पिण होना मुसकिल वलि इसा ॥ ७ ॥
केई कहे गणिराज क, जोति स्वरूप है।
केई कहे ए आज क, ईश्वर रूप है।
केई कहे महाराज, अवतार सु आज है।
कहे २ तारण जाज, वड़ा जोगीराज है।
जोगीराज है अति आज मोटा, साहाज्य धर्म नों दायका।
अन्यमति नें स्वमति फुन, वोलता इम वायका।
दर्शन कर दस्त कारण सुण के, दिगम्वरी जन इम कहे।
अंत समै अटकाव नहीं ए, अतिसार तो मुनिवर चहे ॥ ८ ॥
हिवे दोढ़ महुरत उनमान, रह्यो जव दिन वही।
चोविहार सुविधान, संथारो में सही।

पचक्खायो तिहवार, शरण चिहुं तिण समै।
संभलाया बारूंबार, वलि नवकार म्है।
म्है नवकार सार मंत्र, संभलालियो तिहवार ही।
गजसुखमाल खंधक प्रमुख मुनि, गुण रखिये हिये मझार ही।
वलि कह्यो आप जबर सूरा, बहु कटे समपणे अघ इह समें।
आगे असंख्य वर्षे दुःख नहीं, फुन मुक्ति जाणो अनुक्रमें॥ ९॥
इम कहितां अल्प बार, मांहे झट देखतां।
ली हिचकी बे त्रिण बार, प्रगट ही पेखतां।
व्यवहार में झट जाण, नेत्र नें द्वार ही।
प्रदेश खंच्या पिछाण, आंख उघाड़ी रही।
रही उघाड़ी आंख दिव्य तब, जाण्यो मुनि जिवार ही।
पूज्य तो परभव सिधाया, धृग धृग ए संसार ही।
पंडित मरण देख गणि नों, दोहरी लागी अति घणी।
काल सूं जोर न चाले किण रो, इम जाण सम रहे महामुणी॥ १०॥
आप जिसा गणिराज क, भरत मांहे भला।
अतिशय गुण अग्राह्य, राज जिन सम इला।
धारण समय नी सखर, उद्यमी अति घणा।
अतिशय धर अति जवर, वयण रलियामणा।
रलियामणा वच रहिस ऊंडी, जाण गहरा दधि जिसा।
प्रवल प्रतापी आदेज वच धर, होणा दुक्कर गणि इसा।
पिण काल थी नहीं जोर कोई, दिन अस्त होवे तिण विरयां।
तनु वोसिराय गणि तणो मुनि, चिहुँ लोगस्स नां काउस्सग कर्या॥ ११॥
आप तणा गुण याद, आयां थी मांहरे।
चित मांहि अह्लाद, हर्ष होवे तरे।
अंत समय नी वात, याद आवे तदा।
अहो २ काल नी घात, स्वाम गुण संपदा।
संपदा गुण वचन भारी, स्वाम विव २ वागर्या।
पद आराधक पाय तनु तज, पूज्य परभव पांगर्या।
जगत में ए काल जवरो, इक दिन सहु नें आव है।
मृत्यु देख अति दोहरी लागै, पिण मुमता मन ल्याव है॥ १२॥
तिण रात समे वरसात, आयो अति आकरो।
घोर घमट थयो प्रात, आयो छायो वरो।

मांडी म्हेली आण, जोत झिगामिगे।
जाणक देव विमान, कलश इकावन लगे।
लगे इकावन रूप्य कनक ना, कलश सूर्यमुखी वली।
तुरा धजा पताका युक्त सूं, देख्यां उपजे मनरली।
हिवे गणि तनु सिनांन करावी नें, मुखपति जड़ाव मुख धरी।
केशर चंदन चरच अंतर फुन, तिलक मोत्यां नो करी॥ १३॥

तिण मांडी में वेसाण, लेइ चाल्या जदा।
लोक हजारां लार, वर्षे मही बूंदा तदा।
उपनुं जन नें विचार, विरषा नों मन मंही।
इतले हुवो उघाड़, बूंदा पिण बंध हुई।
बंध हुई बूंदा तदा, उभय पास चामर वींजता।
विविध प्रकार वाजित्र बाजे, जन देख २ नें रीझता।
आयो राज थी लवाजमो इम, वे गज नगी निसाण है।
पल्टन पोहरा अश्व कोतल, प्रमुख बहु मंडाण है॥ १४॥

वैठा काढण री रीत, नहीं जैपुर मही।
ते पिण हुक्म वदीत, दियो नरपति सही।
सिरे बाजार में होय, त्रिपोलिये कनें थई।
सोना रूपा नां जोय, उछालता फूल ही।
फूल ही उछालता तब, रुपैया फुन रोकड़ा।
ले गया दरवाजे अजमेर थइ नें, देखता मिल २ जन थोकड़ा।
सिरदारमलजी लूणीया नां, बाग जा इक देश में।
चन्दन अगर किस्तुरी घृत सूं, दियो दाग तनु नो तेह समें॥ १५॥

रुपैया हजारां लगाया, उच्छाह कियो घणो।
नहीं धर्म पुन्य तिण मांही, ए काम लोकिक तणो।
प्रभु नों चरण कल्याण, सूत्रे भाख्यो सही।
तिम दाख्यो एह मंडाण, पिण धर्म इण में नहीं।
नहीं धर्म नों इण मांही दावो, ए सावद्य कृत संसार ना।
हुई जिसी ए वात दाखी, राखे ग्यानी मन शुद्ध धारणा।
पांच साठमी ए ढाल मांही, अणसण मोछव आखियो।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय शशि फुन, जय प्रसादे म्है भाखियो॥ १६॥

सुखराजजी भंडारी कृत

छंद पद्धरी

भाद्रव बिद द्वादशमी जीत स्वाम, परलोक सिधारे सुरग धाम।
चर्म मोच्छव महिमा कीध दास, वरण जू एम कवियण विमास ॥ १ ॥
बणवाय जबर अत ही विमाण, अरु मंडित करी साटण सुं आण।
जिह ऊपर सुवर्ण कलश जान, तिह सिरे जु तुररा वखाण ॥ २ ॥
सूरजमुखियां पुनि जाण वेस, धर धजा पताका अति विशेष।
पिछवाय चंदवो वर बणाय, मुक्ता झालर लूबां बणाय ॥ ३ ॥
जर किरण कनारी विविध भांत, जिह ठोर २ शोभित ख्यात।
जिह मझ कनकासन धरेय आण, तकिया गादी मखमलियाण ॥ ४ ॥
पुनि लाल दुशालो वर बिछाय, मझ व्राजमान कीय जीतराय।
नग जड़ित कनक मुखपतिय जाण, ओढ़ाय दुशालो श्वेत आण ॥ ५ ॥
इह भांति कासी होत जीत, दरबार हुँते आय पुनीत।
वर छत्र चामर होवत सकाज, पुनि जान विविध वाना सु साज ॥ ६ ॥
हय करी पयादा ही अनेक, वाजित्र वीण अत्यादिके का।
घुरे घोर नगारा फर निसाण, कर अति मसालां चले जाण ॥ ७ ॥
तमाम लवाजमो विविध सोय, छिव अधिक रहे नर नार जोय।
गजराज एक पर होद मांड, धर फूल हेम रूपे सकाज ॥ ८ ॥
पुनि धरे रूपीय अधिक आण, इह भांत भइ जू उछाल जाण ॥
इम होय सिरे वजार मांय, आवंत तठे नर नार आय ॥ ९ ॥
लाखांइ मिल जोवत सकोय, पुनि कहत इसो महोछव सोय।
श्रवणा न सुण्यो दीठो न कोय, पुनि विविध भांति लोकिक होय ॥ १० ॥
जोगेन्द्र जीत सा अवर कोय, दीठा न सुण्या इह समय जोय।
इण भांत लोक जय २ करंत, अणमति आदि दे तिकण तंत ॥ ११ ॥
वर किसनपोल दरवजे होय, राजादि जाति नहीं अवर कोय।
जिह पोल हुंत निकसे गनिंद, पहुंचे जू वाग मझ अति मंद ॥ १२ ॥
वह वाग लूणीया जाति जोय, सिरदारमल को कहत लोय।
जिह वाग मझ संस्कार कीध, वर अगर चंदन बीच दाग दीध ॥ १३ ॥
महा भाग्यवान अतिशय अपार, जूत हुंते जीत अति ही उदार।
जैसो जू महोच्छव चर्म होय, महिमा जग प्रगटी विविध जोय ॥ १४ ॥

ए सकल काम सावद्य सुजान, जिह माझ धर्म नाहन पिछान।
लोकिक शोभ हित करत लोय, जिह माझ प्रभु आग्या न कोय ॥ १५ ॥
गणनाथ अनघ गुणधाम जीत, प्रगट्यो जग उज्वल जश पुनीत।
गुण सुजश पार पावत न कोय, जो कहत देव इन्द्राहि जोय ॥ १६ ॥



ढाल : ६६

दोहा

भविक जीव हित कारणे, जय गणी कृत जे जोड़।
कहूं नाम सम्बन्ध थी, सुणो राख चित ठोड़ ॥ १ ॥

ढाल

[भूमिसर अलवेसरु—ए देशी]

गुणमाला मुनिवर नां गुणनी, जोड़ी प्रथम सु ढाल।
वलि भिक्षु कृत हुण्डी तणी, जोड़ी षट ढाल विशाल ॥ १ ॥
वलि धूर अंग धुर श्रुतस्कंध नी, करी जोड़ सु विशाल।
विविध न्याय ओलखाविया, वारू करीनें अठ्यासी ढाल ॥ २ ॥
वलि सूत्र भगवती नी करी, पाठ टीका देखी जोड़।
वलि अवर समय अर्थ देखी करी, किया विविध परे न्याय निचोड़ ॥ ३ ॥
पंच सो एक ढाल अति भली, वारू किवी अधिक उदार।
मांहि वार्त्तिका यंत्र बहु विधि करी, मेल्या विविध न्याय श्रीकार ॥ ४ ॥
वलि द्वादश अध्यैयन ज्ञाता तणा, जोड्या श्री गण इन्द।
धुर अध्येयन मेघकुमार नो, जोड़ी ढाल सैंताली प्रबंध ॥ ५ ॥
घना सार्थवाह नें मयूर इंड नों, कछप नें तुंबी दृष्टान्त।
उझियादि च्यार बहु नों वलि, शशी नों दृष्टंत सु तंत ॥ ६ ॥
दादवा वृक्ष तणो वली, जीतशत्रु सुबुद्धि प्रधान।
अदये नें वलि नंदी वृक्ष नो, जोड़ी च्यार ढाल सुविधान ॥ ७ ॥
कालीदीप नां केकाण नी, ओपमा सप्त ढाल।
अध्ययन सुसमा चिलाती नो वलि, ए द्वादश अध्ययन विशाल ॥ ८ ॥

जोड्या अध्ययन उत्तराध्ययन नां, पहिला थी लेई अष्टावीस।
गुणतीसमो वलि देश थी, मांहि खोल्या न्याय सुजगीश॥ ९॥
जोड्या विपाक नां दोय अध्येन, उजीयो नें अभ्यंगसेन।
करी अनुयोगद्वार नी देश थी, जोड्यो निशीथ सूत्र अर्थ गहन॥ १०॥
वलि टबो आचारंग सूत्र नों, द्वितीय स्कंध नो कीध।
झीणा अर्थ अति गहन न्याय अति घणा, खोल्या विविध परे सु प्रसिद्ध॥ ११॥
देश्यां राग सहित वदी तसू, जोड्या विविध व्याख्यान।
वारू जयजश करण गणिंद नो, ढाल इक सो इकावन जाण॥ १२॥
जोड़ी ढाल पच्यासी जेह नी, दीपजश रसायण नाम।
व्याख्यान जोड्यो धनजी तणो, अड़तीस ढाल अभिराम॥ १३॥
महिपाल चारित्र महिमा निलो, ढाल सीतंतर सार।
सुरसुंदर दवदंती नी वलि, करी ढाल बावीस विचार॥ १४॥
छोटा वखाण जोड्या वलि, पार्श्व चारित्र पिछाण।
मंगलकलश मोहजीत नो, वलि शीतेंद्र नों सुविधान॥ १५॥
शील मंजरी ब्रह्मदत्त नों, जशोभद्र तणो फुन जाण।
भरत बाहुवल नो देश थी, व्याघ्र क्षत्री नों वलि पिछाण॥ १६॥
भगवती नी जोड़ थकी जुदा, भगोती ना तीन व्याख्यान।
जमाली नें महावल तणो, खंधक सन्यासी गुणखाण॥ १७॥
स्वाम भिक्षु नां गुण तणा, जोड्या श्रमण सत्यां नां व्याख्यान।
नाम कहूं हिवे तेहनां, सुणज्यो थई सावधान॥ १८॥
भिक्षु जश रसायण अति भलो, वारू त्रेसठ ढाल सु तंत।
फुन पंच ढाल भिक्षु जश लघु, जोड्यो जीत गणि जशवंत॥ १९॥
खेतसी चारित्र खंत सूं, ऋषिराय सुजश फुन जोय।
मुनि शांति विलास जोड्यो वलि, तेरे २ ढाल अवलोय॥ २०॥
हेम अरु सरूप नों नवरसो, जोड्यो भीम विलास विचार।
वृद्ध मोती नें उदेराज नी, पंच २ ढाल गुणकार॥ २१॥
ऋषिराय नें सरूप शशि तणा, सुरगढ़ नां शिवजी अणगार।
वलि हर्ष ऋषि नां गुण तणा, जोड्या चोढ़ालिया ए च्यार॥ २२॥
महासती सिरदार नों वारू, सुजश अधिक श्रीकार।
जोड्यो स्वाम अति युक्त सूं, चारू पनरे ढाल सुविचार॥ २३॥
भाद्रव तेरस नां मोछव तणी, जोड़ी ढाल सखर चोवीस।
वलि मर्याद मोछव नी अति भली, जोड़ी सतरे ढाल सुजगीस॥ २४॥

खुली ढालां गणि ना गुण नी, वलि तपस्या नां गुणा री ढाल।
मुनि सतियां ना गुण तणी, जोड़ी सैकड़ां ढाल विशाल ॥ २५ ॥
करी श्रद्धा री चोपी वली, ढाल मोटी २ वतीस।
अंकल्पती व्यावच जिन आगन्या, ओलखावण री चोपी जगीश ॥ २६ ॥
वलि संवत अठारे नेउवे, निकल्या जे गण थी वार।
तेहनी श्रद्धा ओलखायवा, करी चोपी मोटी इकतार ॥ २७ ॥
जोड़ी उपदेश नी चोपइ वलि, मांहे वैराग विविध प्रकार।
वलि सिखामण नी चोपी करी, दी तिण में शिक्षा श्रीकार ॥ २८ ॥
वलि चरचा जोड़ नी चोपई, इकवीस ढाल उदार।
उगणीस ढालां भिक्षु स्वाम नां, करी लिखत जोड़ श्रीकार ॥ २९ ॥
दीर्घ लघु चोवीसी करी, तिणरी चोविस २ ढाल।
जोड्या जिन गुण ने वैराग्य नी, कथी वारू वात विशाल ॥ ३० ॥
मकसुदावाद नां प्रश्न ऊपरे, कियो प्रश्नोत्तर तत्व वोध।
दिया जाब हेतु दुहा करी, वारू न्याय समय ना सोध ॥ ३१ ॥
वलि जोड़ करी नय चक्रनी, पंच संधी ना दुहा कीन।
वलि धातुरूपावलि नां दुहा, जोड्या जय स्वाम सु चीन ॥ ३२ ॥
वलि टालोकर नें उपर, करी ढालां नें लघु रास।
फुन परंपरा नां बोल ऊपरे, करी सप्त ढाल सुविमास ॥ ३३ ॥
वलि शुद्ध किया बहु चरित्र नें, मांहि गाथा देश्यां बहु घाल।
शांति चरित दीर्घ नें लघु, वलि हरिवंश सुविशाल ॥ ३४ ॥
महावल मलयासुन्दरी, फुन पांडूचरित्र पिछाण।
वलि चंद चरित्र मांहि घणो, घाल्यो वैराग विविध विनाण ॥ ३५ ॥
रत्नपाल चरित वलि, धर्म बुद्धि पाप बुद्धि।
मुनिपति चरित सु मोटको, श्रेणिक चरित्र कियो फुन शुद्ध ॥ ३६ ॥
मृगावती लीलावती, हरिवल नें जयसेन।
उत्तमकुमर तणो ए सहु, किया शुद्ध देखी जिन वैन ॥ ३७ ॥
वलि समय न्याय गणि देखी, पेखी रहस्य विशेष।
विविध हेतु युक्ति करी, किया संग्रह रूप ग्रन्थ अनेक ॥ ३८ ॥
भर्म विध्वंसण अति भलो, कांई गुण निपन्न जसु नाम।
कुमतिविहंडन वलि कियो, कुमति जू खंडन काम ॥ ३९ ॥
कियो संदेहविषओषधि नें, वलि जिनाज्ञा मुखमंड।
सार्द्धशतक प्रश्नोत्तर कियो, कुमति कर खंड २ ॥ ४० ॥

चरचा रत्नमाला वलि, रह्यो ग्रन्थ अधूरो एक।
निर्गुण देव प्रतिमा ओलखायता, तिण में मेल्या न्याय अनेक ॥ ४१ ॥
ध्यान छोटो मोटो वलि, झीणी चरचा नें थोकड़ा जाण।
च्यार तीर्थ नां हित भणी, किया स्वामी जय गुणखाण ॥ ४२ ॥
करी इत्यादिक बहु ग्रन्थ नां, पंथ जमायो जाण।
तोड्या कुयुक्ति कुहेतु कुमति नां, कर धरी समय कृपाण ॥ ४३ ॥
पूर्वधर समय युक्ति हेतु अति, बुद्धि उत्पात अत्यंत।
गणि पद जलज लोभे रह्या, वारू भव्य भ्रमर गुणवंत ॥ ४४ ॥
ए छासठमी ढाल में, जोड्या किया ग्रन्थ गणिंद।
तास संबंध संक्षेप थी, कह्यो पटोधर सुखकंद ॥ ४५ ॥



ढाल : ६७

दोहा

अठसठ वर्ष नें ऊपरे, सात मास षट दिन।
चरण रयण आराध जय, तास्या बहु गुणी जन ॥ १ ॥
जबर संघयण सु स्वाम नों, अरु तीखो उपयोग।
सुरत सखर सु स्वाम नी, देखी हरष लहे लोग ॥ २ ॥
सितरे थी अड़तीस लग, चर्म सहित चोमास।
सहु गुणंतर स्वाम नां, सांभलो भवि सुविमास ॥ ३ ॥
किण २ देशे विचरिया, क्यां २ कीध चोमास।
जूजूवा नाम क्षेत्रां तणा, किया जो किण २ वास ॥ ४ ॥

ढाल

[सीता आवै रे धर राग—ए देशी]

सितरे वर्ष धुर चोमासो, देश हाड़ोती मांहि।
शहर इन्द्रगढ़ हेम समीपे, कियो ग्यान ध्यान अधिकाय।
गुणीजन सुणिये जय चोमास ॥ १ ॥
किया पाली में षट प्रगट चोमासा, धुर इकोतरे अवधार।
पिचंतरे अठीए ए चोरानुवे, तेरे [illegible] [illegible] ॥ गु० २ ॥

मरुधर देश ग्राम कंटाल्यो, वोहित्तरे सुविचार।
वर्ष तिमंतरे शहर सरियारी, कियो चोमासो गुणकार ॥ गु० ३ ॥
देश मेवाड़ में शहर गोघूंदे, कियो चिमंतरे चोमास।
सुरगड़ शहर वर्ष छिहंतरे, थयो अधिको धर्म उजास ॥ गु० ४ ॥
कियो उदियापुर में वर्ष सितंतरे, धुर सिंघाड़ो वयासीये कीध।
सताणुवे पांचे फुन वारे, ए पंच चोमास प्रसिद्ध ॥ गु० ५ ॥
अठंतर नों एक चोमासो, कियों आमेट देश मेवाड़।
गुण्यासीये वर्ष कियो चोमासो, मरुधर में शहर पींपाड़ ॥ गु० ६ ॥
नव चोमासा किया जयपुर में, निज दिक्षा नगर उदार।
एक इक्यासीए ए हेम संघाते, पछै पिच्यासीये सुविचार ॥ गु० ७ ॥
अठाणुवे फुन एक चोके, कियो नवके पूज्य पद पाय।
अठवीसे सेंतीसे नें, दियो अड़तीसे अणसण ठाय ॥ सु० ८ ॥
किया श्रीजीद्वारे तीन चोमासा, तयांसीये धुर तंत।
उगणीसे तीये फुन दूजो, कियो दशके पूज्य महंत ॥ गु० ९ ॥
पटलावद में देश मालवो, चोरासीये सुविचार।
ऋषिराय संग कियो चोमासो, तप इकपक्ष आछ आगार ॥ गु० १० ॥
किया तीन चोमासा नग्र जोधाणे, प्रथम छियांसिये वास।
वर्ष इकीसे उपगार कियो अति, वलि पणवीसे सु विमास ॥ गु० ११ ॥
चुरू शहर किया तीन चोमासा, सित्यासीये अति उपगार।
छिन्नूवे नें फुन कियो वीसे, दियो त्यां मुझ नें युवपद सार ॥ गु० १२ ॥
वलि चार चोमासा शहर बीकाणे, अठ्यासीये धुर धार।
फुन त्राणुवे उगणीसे छके, साते सरूप संग सुविचार ॥ गु० १३ ॥
नव्यासीये कियो दिल्ली चोमासो, कुरू देश बहु उपगार।
वहु जन समकित व्रत लिया अति, हुई इक दिक्षा श्रीकार ॥ गु० १४ ॥
पछिम थलि में वर्ष नेउवे, कीयो वालोतरे चउमास।
फलवधी में एकाणुवे इक, कीयो अति धर्म उजास ॥ गु० १५ ॥
नव चोमासा किया लाडणूं, वाणूवे धुर सुविचार।
पिचाणूवे सइके वलि पनरे, अठारे अवधार ॥ गु० १६ ॥
सतावीसे वर्ष कियो वलि, पछै लगता तीन चउमास।
वतीसे तेतीसे चोतीसे, किया वृद्ध वय योग विमास ॥ गु० १७ ॥
दश चोमासा किया विदासर, धुर निनांणुवे गणि संग।
उगणीसे आठे अरु चवदे, वलि सतरे वर्प सुचंग ॥ गु० १८ ॥

वलि तेविसे फुन छाइसे, गुणतीसे गुणकार।
कारण योग कियो फुन तीसे, पणतीसे छतीसे उदार ॥ गु० १९ ॥
कृष्णगढ़ उगणीसे बीये, कियो चोमासो एक।
वर्ष इग्यारे रत्नपुरी में, कियो उपगार विशेष ॥ गु० २० ॥
सुजानगढ़ में च्यार चोमासा, धुर सोले श्रीकार।
उगणीसे वर्ष फुन चोवीसे, इकतीसे अवधार ॥ गु० २१ ॥
तेविस शहर में किया चोमासा, गुणंतर गुणकार।
देश देश में विचरया स्वामी, कियो घणो उपगार ॥ गु० २२ ॥
तेरे चोमासा हेम समीपे, ऋषिराय संग किया दोय।
सिंघाड़वंध चोबिस चोमासा, गणि पद में तीस सुजोय ॥ गु० २३ ॥
श्री जिन शासन शोभ चढ़ाई, गुणग्राही गंभीर।
जिन आणा दिढ़ाइ शिव सुखदाई, त्राता इम गणि गुणहीर ॥ गु० २४ ॥
ज्ञान ध्यान उद्यम बहु कीधो, वर लीधो लाभ अपार।
चरण रयण दीधो बहु भवि नें, सिधो शिव वधु वरण श्रीकार ॥ गु० २५ ॥
वतीस समय वांच्या बहु वेलां, वर केला समय रस कीध।
प्रकरण निर्युक्ति पइना वृत्ति, बांच्या विविध प्रसिद्ध ॥ गु० २६ ॥
आवसग्ग नें दशवैकालिक, उत्तराध्ययन उदार।
आचारंग नो श्रुत खंध दूजो, किया कंठाग्र गुणकार ॥ गु० २७ ॥
पद वलि दशमा लग पन्नवणा, कंठाग्रे वर कीध।
खुला पाठ सूत्रां ना कंठे, ग्रन्थ सहस्रगमे प्रसिद्ध ॥ गु० २८ ॥
पूर्वाद्ध सारस्वत नों सखरो, फुन उत्तार्द्ध अवलोय।
महिभट्टी ने चन्द्रिका नो कियो, कंठ बहु जय जोय ॥ गु० २९ ॥
काव्य अने वलि कोश कितायक, छंद अने अलंकार।
शभा प्रकाश प्रमुख कै साहित्य, देख्या देश थकी अवधार ॥ गु० ३० ॥
जोग शास्त्र तणी कै युक्ति, अति ऊंडी समय रहिस्य।
व्याख्यान हेतु दृष्टान्त युक्ति अति, ज्ञायक सखर गणेश ॥ गु० ३१ ॥
लाखांगमे ग्रन्थ कियो लिखणो, सुंदर अति वर्ण श्रीकार।
सूत्र विना पिण लाखांगमे ग्रन्थ, वांच्या जय जशधार ॥ गु० ३२ ॥
गुण गणधारक भव दधि तारक, कारक वर मर्याद।
सुमति सुधारक दोष निवारक, वर दायक मुक्ति अह्लाद ॥ गु० ३३ ॥
समय सुज्ञाता ध्यान सु ध्याता, अरु त्राता जीव छःकाय।
बोधि सुदाता भव्य ने राख्या, कांई जाता दुर्गति मांहि ॥ गु० ३४ ॥

तिमिर हरण वर सहस्र किरण सम, करण हृदय उजियार।
पिण ते वाह्य तिमिर जन मेटे, तुम्ह दियो अंतर तिमिर निवार॥ गु० ३५॥
गणवाड़ी सींचन गणि धन सम, वर सुमति वेल सु वधार।
व्रत ग्यान वर पुष्प फल करी, प्रफुल करी श्रीकार॥ गु० ३६॥
जैवातृक सम सोम्य वदन जय, पिण शशि वाह्य तप वार।
जय मुख चन्द्र थी झरा सुधा वच, अंतर तप्त निवार॥ गु० ३७॥
भविजन वंछित पूरण भरते, मुनिपति द्रुम मंदार।
पिण ते एक भवे सुख पूरे, आप भव २ सुख दातार॥ गु० ३८॥
गण सिणगारी महिमाधारी, अति भारी उपगार।
कियो जशधारी मुद्रा प्यारी, जन देख लहे चमत्कार॥ गु० ३९॥
करी गण विशुद्ध करण हाजरी, ते आज री वखत मझार।
मुनि अज्जा नें अति हित काज री, महाराजा री बुद्धि उदार॥ गु० ४०॥
वलि लिखत मर्यादा अति ही ज्यादा, करी खलता मेटण काज।
अति शिक्षा आपी कुमति जु कापी, हिये थापी सुमति महाराज॥ गु० ४१॥
सारण वारण कुमति निवारण, करी गण कुनण कीध।
वर सीख अनूपी अमृत कूंपी, चिहुं तीर्थ नें अति दीध॥ गु० ४२॥
पूज्य परम गुरु महिमा मन्दर, गुणदधि गुण नां धाम।
भव्य काज सुधारण विघ्न विडारण, मन्त्राक्षर सम नाम॥ गु० ४३॥
समरण आप तणो जे सावे, तसु वाधे सुमति सवाय।
आराधे वर चरण अमोलक, लाधे सुर शिव सुख अनपाय॥ गु० ४४॥
तुझ शरण लियो मैं तिरण भवोदधि, करण जीव निस्तार।
चरण करण गुण अनघ धस्या फुन, वरण अमर पद नार॥ गु० ४५॥
सखर प्रबंध बान्ध्या जय स्वामी, हितकामी गुण हीर।
धीर वीर गंभीर हृदय गणि, अघ रिपु दल सौडीर॥ गु० ४६॥
श्री जय स्वाम बरतारे मुनि नी, थई दिक्षा इक सौ चार।
सहु छपन दिक्षा आसरे मुनि नी, दी श्री जय निज कर सार॥ गु० ४७॥
समणी नी वे सय छवीस आसरे, थई स्वाम बरतारे दिक्षा।
इक सौ आठ दिक्षा सहु निज कर दे, दीधी स्वाम वर शिक्षा॥ गु० ४८॥
सहु समण एकोतर मेल गणाधिप, वलि वे सय पंच श्रीकार।
समणी सम्पति मेल नें पहुँता, गणि परलोक मझार॥ गु० ४९॥
आप तणा गुण अधिक अनुपम, याद आयां मन मांय।
हृदय कमल हुलसावे पिण गणी, फिर पाछा किम आय॥ गु० ५०॥

मुझ सुं उपकार कियो अति मोटो, कहां तक बात कहाय।
सम्यक चरण ग्यान पद दीधो, वलि विघ २ कुर्ब बधाय॥ गु० ५१॥
नमो २ श्री जीत गणाधिप, भवि बोधि ज्ञान दातार।
चारित्र तप वर शिवमग दे करी, कियो भविक निस्तार॥ गु० ५२॥
अड़सठ बरस नें सात महीना, षट दिन फुन अधिकाय।
चरण पर्याय आराधी नें जय, दियो जिन मग अधिक जमाय॥ गु० ५३॥
आप तणा गुण सघन विमल वर, इक रसना केम कहाय।
स्वयंभू रमण ज्यूं समुद्र तणो जल, भुज करी केम तराय॥ गु० ५४॥
हूंस हुंती मुझ दिवस घणा सुं, आज फली मनोरथ माल।
श्री जय सुजश रसायण नामे, रच्यो ग्रंथ सुविशाल॥ गु० ५५॥
ग्रंथ रच्यो श्री गणपति गुण नों, किती बात लिखाई स्वाम।
कितीयक देखी केयक सुणी फुन, केई मत सूं किया गुणग्राम॥ गु० ५६॥
अधिको ओछो जो इणमें आयो, आयो हुवे विरुद्ध वच कोय।
तो अरिहन्त सिद्ध नी साखे, मिच्छामि दुक्कडं मोय॥ गु० ५७॥
हर नयन युग निधि शशि वर्षे, ऋषि पूनम दिन सार।
शनिश्चर वारे जोड़ रची एह, उदियापुर शहर मझार॥ गु० ५८॥
समण चोवीस सखर शोभता, सतियां त्यां अष्ट वीस।
दिन बावीस किया जेठांजी, चोविहार सुजगीश॥ गु० ५९॥
मास खमण ऋधु कियो पहिलां, वलि ज्ञाना गुणकार।
दिन इकतीस नों कियो पारणो, तिण सावणी पूनम सार॥ गु० ६०॥
ढाल भली एह साठ सातमी, भिक्षु भारीमाल गणधार।
ऋषिराय जय प्रसाद किया जश, जय पाटोधर जयकार॥ गु० ६१॥

कलश

कह्युं तूर्य खण्ड घमण्ड सु वर, ढाल त्रय त्रिंस शतक री।
जय स्वाम गणि पद पणे विचरया, तेह वतका उद्धरी।
वलि ज्ञान ध्यान सज्झाय नें, ग्रंथ जोड़ जिन उद्यम कियो।
व्रत चरण दे जिन भव्य नें, करी संलेषणा कज्ज सारियो॥ १॥
गणी नाम जल अति विमल करण नु, निर्मल आतम निज तणी।
गणिराज गुण ओलख भजे, अघ तजे जु सफलता अति घणी।

अरु सजे गुण गण सघन नें, व्रत मगन रहे नित्य महामुनि ।
तसु दुरित दूर होवे, जसु हर्ष हुवे तुझ गुण सुणी ॥ २ ॥

इति श्री जय सुयश रसायणे। श्री जय गणि पद तया यथा यथा वहु भव्य सत्वोपकार कारणेन पुनः यथा सम्यक्त्व चारित्र दानेन पुनः यथा २ जिन प्रवचन प्रकाशेन मिथ्या तिमिर विध्वंसनेन यथा जयपुर गमन करणेन संलेषणा पण्डित मृत्युत्सवादि वर्णनो नाम चतुर्थ खण्ड समाप्तम्। इति श्री जय सुयश रसायणं सम्पूर्णम्।

आचार्य मघराजजी रो वखाण

ढाल : १

दोहा

अरिहंत सिद्ध आचार्य ते, उपाध्याय अणगार ।
पंच परमेष्टि जपतां थकां, हुवै आनंद हर्ष अपार ॥ १ ॥
वर्द्धमान जिन जगगुरु, तारण तिरण जिहाज ।
तसु तीरथ तारक गणि थया, बड़ा बड़ा ऋषिराज ॥ २ ॥
भिक्षु भानु भरत में, भारीमाल ऋषिराय ।
पाट चतुर्थे जय गणी, वंदूं मन वच काय ॥ ३ ॥
तास प्रसाद करी रचूं, मघवा सुयश विख्यात ।
सरस कथा संकोच नें, वर्णवूं किंचित् बात ॥ ४ ॥
किहां जनम्या किम प्रतिबोधव्या, किम कीधो धर्म उद्योत ।
श्रोता चित दे सांभलो, ज्यूं मिटे कर्मां री छोत ॥ ५ ॥

ढाल

[समझू नर विरला—ए देशी]

जंवू द्वीप दक्षिण भरत जाणों, जिहां मरुथल देश विकाणो हो ।
गणपति जश भारी ॥ १ ॥
मघवा गुण अपरम्पारं, ज्यांरो सुजश सुणो नर नारं हो ।
गणपति जशधारी ॥ २ ॥
रतनसिंघ राय तिहां वीको, जिहां वीदासर अति तीखो हो ।
मुनिपति मणिधारी ॥ ३ ॥
रामसिंघ ठाकुर तिहां राजै, रूड़ी रीते रैत निवाजै हो ।
गणपति जशधारी ॥ ४ ॥
जिहां वसै महाजन सुखकारो, विचरै संयत हुवै उपगारो हो ।
गणपति जशधारी ॥ ५ ॥
पूरणमल वेगवाणी ओसवंसो, वनांदे अंगनां प्रशंसो हो ।
गणपति जशधारी ॥ ६ ॥
जायो पुत्र अधिक महा सूरो, मघवा सम मघव सनूरो हो ।
पूर्ण सुत है प्यारो ॥ ७ ॥

जन प्यारो गुण नों क्यारो, हद सोम मुद्रा दीदारो हो।
पूर्ण सुत है प्यारो ॥ ८ ॥
अठारे सो सताणुंवे ताह्यो, चैत शुक्ल एकादशी आयो हो।
गणपति जशधारी ॥ ९ ॥
मघा नक्षत्र नें रविवारो, जनम्यां हुवो हर्ष अपारो हो।
वर्नां नंद हद प्यारो ॥ १० ॥

कलश

तनु भवन सूर्य अने मंगल, पुत्र भवन केत रु चंद ही।
सप्तम गुरु अष्टम शनीचर, इग्यारमें राहू कही।
द्वादशम शुक्र अनें बुधज, अवर भवनें ग्रह नहीं।
गणिराज मघवा ग्रह उत्तम, पुन्ये शुभ ही आवही ॥ १ ॥

ढाल तेहिज

ज्यांरा थिर जोग सयन गुण धीरा, कुल उद्योतकारक हीरा हो।
गणपति जश भारी ॥ ११ ॥
अनुक्रमें मोटा हुवै ताह्यो, कला कुशल निपुण वय माह्यो हो।
गणपति जश भारी ॥ १२ ॥
उगणीसै एके गुणवंती, सती गुलाबकुंवर पुन्यवंती हो।
गणपति जश भारी ॥ १३ ॥
गणीराज सहोदरी साची, आ तो शील श्रृङ्गारे राची हो।
गणपति जश भारी ॥ १४ ॥
काल कितोएक बीतां ताह्यो, पिता पूरण परभव माह्यो हो।
गणपति जशधारी ॥ १५ ॥
लारै मात सुता सुत नें पालंती, वारूं विविध जतन करंती हो।
मघवा मन भायो ॥ १६ ॥
बालक वय चतुर सुजाणो, कला वधत शशी जिम मानो हो।
गणपति जश भारी ॥ १७ ॥
मघवा नाम मघव गुण जीपंतो, अशुभ कर्म दमण दुरदंतो हो।
गणपति जश भारी ॥ १८ ॥

बनां सती अधिक सनूरी, तप धर्म ध्यान में सूरी हो ।
गणपति जश भारी ॥ १९ ॥
कर्मचूर बेला तेला धारी, करै काटण अघ रिपू भारी हो ।
गणपति जश भारी ॥ २० ॥
सती सिरदार विचरता ताह्यो, बीदासर महर करायो हो ।
गणपति जश भारी ॥ २१ ॥
मघ जागां में उतस्या आयो, सती सेव करे सुखदायो हो ।
गणपति जश भारी ॥ २२ ॥
हेतु दृष्टांत विविध पर भारी, तिण सूं वैराग्य उपजै तिह वारी हो ।
गणपति जश भारी ॥ २३ ॥
जाणपणो सीख्यो चित जोड़ो, थयो संयम लेवा सूं कोडो हो ।
गणपति जश भारी ॥ २४ ॥
बहिन भाई अति सोहंता, सती गुलाब घणा पुन्यवंता हो ।
गणपति जश भारी ॥ २५ ॥
त्यांरे भाग्य थी जोग थयो भारी, सतसंगति अति सुखकारी हो ।
गणपति जश भारी ॥ २६ ॥
ढाल प्रथम गणी जश दाख्यो, पायो जैनधर्म जिन आख्यो हो ।
गणपति जश भारी ॥ २७ ॥
आगै वात सुणो वलि चारू, सुण लहै श्रोता सुख वारू हो ।
गणपति जश भारी ॥ २८ ॥



ढाल : २

दोहा

इण अवसर ऋषिराय गणि, विचरै धरा मझार ।
जिन मग मंडन जिहाज वर, तारै भवि नर नार ॥ १ ॥
तसु पाटोधर श्रेष्ठ वर, जब्बर जीत जयकार ।
थली देश सर कर बहु, भवि मेट्यो मिथ्यात अंधार ॥ २ ॥
जय गणपती सहोदरू, सकल गणी हितकार ।
विहुं बंधव तिहां विचरता, आया बीदासर सुखकार ॥ ३ ॥

ढाल

[जोयज्यो रे पुन्य प्रवल धनजी नां—ए देशी]

उगणीसै आठे चौमासो, वीदासर थयो श्रीकारी।
जय युवराजा जेठ सहोदर, द्वादश मुनि थी शुभकारी।
जोयज्यो रे पुन्य प्रबल मघवा नां, भाग्य थी जोग मिल्यो भारी।
गण सिणगारी भवि नेतारी, त्यांरो सुयश सुणो तुम्हें नरनारी ॥ १ ॥
जय गणपति नीं वाण मनोहर, वरसत जिम भाद्रव वारी।
हेत युक्ति दृष्टान्त कथा सुण, प्रफुल्लित हुवै परिषद सारी ॥ जो० २ ॥
मघवा मात अरु बहिन गुलाबां, सुण सुण वच हिय में धारी।
बध्यो वैराग्य सुधा अति वारू, तरण शीघ्र भवदधि वारी ॥ जो० ३ ॥
बोल थोकड़ा सीख्या चर्चा, चौमासे में हित भारी।
साथे संयम तिहुं जणा लेस्यां, इसी बात दिल में धारी ॥ जो० ४ ॥
वरसां मांहें गुलाबां सती रे, कल्प घटंतो तिहवारी।
तिण सूं यानें अबारूं नहीं देवां, कल्प आयां देस्यां धारी ॥ जो० ५ ॥
मघवा अर्ज करै युवराजा नें, तुरत चरण देवो न्यारी।
भेला रमता बालक बोलै, तमासा में तिहवारी ॥ जो० ६ ॥
मघजी स्वामी करां वंदणा, आप ही कहिता 'जी' जाणी।
तुझ पात्रां में 'घी' इम बालक बोलै, 'बैठो बैठो पी ठंडो पाणी' ॥ जो० ७ ॥
इम सुण चिंतै जय युवराजा, बालक वाक्य है श्रीकारी।
मघव संत मतिवंत सनूरो, हुंतो दीसै हद भारी ॥ जो० ८ ॥
वखाण वाणी तप जप अधिको, दिन दिन थाट लगै भारी।
चौमासो उतस्यां महूर्त दिक्षा नों, देवा पधास्या जयकारी ॥ जो० ९ ॥
मृगसिर बिद पंचम नों महोछव, मेला मंडिया हद भारी।
भेला बैठ जीम्या काका संग, फुन टीको कढायो जशधारी ॥ जो० १० ॥
तन सिणगारी अश्व जाति पर, चढिया वरवा शिव नारी।
लोकिक कहण सूं काको उठाई, रावलै ले गयो तिहवारी ॥ जो० ११ ॥
उण दिन तो नहि हुइ वर दिक्षा, जय दड़ीवै होय लाडणूं आई।
रावलै पडुत्तर कर जणाय काका नें, त्रिहुं आया लाडणूं सुखदाई ॥ जो० १२ ॥
दर्शण करि नें अरजी कीधी, चरण रयण दीजे धारी।
ग्रांम वाहिर पीरांजी स्थाने, चरण सामायिक दियो सारी ॥ जो० १३ ॥
जनवृन्द झंड प्रचंड मोछव में, धन धन कहै तुम वलिहारी।
सोम भद्र हद मघवा मुनिवर, वपु यो रतिपति मनोहारी ॥ जो० १४ ॥

बालक वय में अति बुधवंतो, दिन दिन अतिशय वृद्ध ज्यांरी ।
अति उद्यम यो पढ़ण गुणण रो, हिम्मत किम्मत अति त्यांरी ॥ जो० १५ ॥
शशि जिम नूरो सिंह जिम सूरो, पुन्य नों पूरो अति भारी ।
भलो लाभ लीधो बन्नां जी, ढाल दूजी में दिक्षा प्यारी ॥ जो० १६ ॥
जोयज्यो जबर पुन्याई जय नीं, दिन-दिन सम्पति वृद्ध धारी ।
धर्म मुर्त्ति धरणी पर पुन्ये, शिष्य मघवा मिलिया भारी ॥ जो० १७ ॥



ढाल : ३

दोहा

दिक्षा दे नें विहार करि, आया बीदासर मझार ।
माघ मास मेवाड़ थी, आया इम समाचार ॥ १ ॥
माघ कृष्ण चवदश तिथि, ऋषिराय गणी स्वर्ग पहुंत ।
सांभल चिहुं तीरथ भणी, दोहरी लागी अत्यंत ॥ २ ॥
पिण काल सूं जोर को नहीं, तिण दिन किया उपवास ।
जय पट्टोच्छव दिक्षा तणी, श्रोता सुणो हुलास ॥ ३ ॥

ढाल

[सुगणा साधुजी हो मुनिवर मन चलियो तूं घेर—ए देशी]

उगणीसै आठे समै हो गुणीजन, पूनम पुष्य श्रीकार ।
जय गणी पाट विराजिया हो गु०, वरत्या जय जयकार क ।
सुगणां सांभलो हो भविजन, जय पट उच्छव सार ॥ १ ॥
बड बंधव हद शोभता हो गु०, सरूपचंदजी स्वाम ।
समणी सिरदारां सही हो गु०, फुन बहु संत सती गुणवाम क ॥ सु० २ ॥
चार तीर्थ रा वृन्द में हो गु०, जय गणी बैठा पाट ।
त्याग वैराग वधियो बहु हो गु०, हुवा घणा गहघाट क ॥ सु० ३ ॥
जय जय नन्दा इत्यादिक शब्द ही गु०, है बहुलो विस्तार ।
संक्षेप सम्बन्ध कह्यो इहां हो गु०, बदत ग्रंथ विस्तार क ॥ सु० ४ ॥

पाट बैसत ततक्षण थई हो गु०, तीन दिक्षा तंतसार ।
गणी-मात बहिन हस्तु सती हो गु०, वृद्ध वय दीधी तार क ॥ सु० ५ ॥
इसा गणी पुन्य पोरसा हो गु०, ज्यांरै मघवा शिष्य सुविनीत ।
आसेवन ग्रहणा शिक्षा हो गु०, सीखै सुगुरु संग धर प्रीत क ।
धन धन मुनिवरु हो गु०, धन करणी बलिहार ।
आप तिरै पर तारता हो भविजन, ज्यांरो सुयश सुणो नरनार ॥ ६ ॥
ग्यान ध्यान सीखै गणी हो मघवा, विनय विवेक विचार ।
चातुरता धीरज घणी हो गु०, ज्यांरा अक्षर घणा श्रीकार क ।
सुगणां सांभलो हो भविजन, मघवा सुयश रसाल ।
तन मन थी सुणियां मिटै हो गु०, कर्म भर्म मोह जाल ॥ ७ ॥
इरिया धुन अति ओपती हो गु०, मनोहर मधुरी चाल ।
भाषा एषण आदान में हो गु०, सावधान अति न्हाल क ॥ सु० ८ ॥
प्रीत घणी सतगुरु थकी हो गु०, आराधै रुड़ी रीत ।
वैराग भाव अति ही घणो हो गु०, सतगुरु तणा विनीत क ॥ सु० ९ ॥
त्रिहुं जणी बिकानेर थी हो गु०, आई संयम लेण तिवार ।
वरजू मा चांदकुंवर हर्षू सुता हो गु०, तूर्य मोतां हुंसियार क ।
भविजन सांभलो हो गु०, मघवा सुयश रसाल ॥ १० ॥
बीदासर केई दिन रही हो गणपति, थली से कियो विहार ।
लाडणूं डीडवाणै थई हो गु०, आया बोरावड़ मझार क ॥ सु० ११ ॥
जय गणि सिरदारां सही हो गु०, मघवा मात बहिन फुन लार ।
पढ़ै भणै देशन दीये हो गु०, साथे करै विहार क ॥ सु० १२ ॥
मर्यादा बान्धी बहू हो गु०, आया कृष्णगढ़ जोबनेर ।
तीजी ढाल हगाम नीं हो गु०, सती सिरदार भणी करै महर क ॥ सु० १३ ॥

●

ढाल : ४

दोहा

जोबनेर चोमास गणि, सिरदार भणी भोलाय ।
जयपुर पूज पधारिया, तारण भवदधि न्याव ॥ १ ॥
वाचयम तिहां चतुर्दश, मघवा शिष्य सुविनीत ।
सारै सेव सतगुरु तणी, आराधै धरी प्रीत ॥ २ ॥

ढाल

[राणी कहे नटराज आव्या तुमें किहाँ थको—ए देशी]

उगणीसै नवकै चोमास, जय नगरे जय गणी।
महिमा धर्म नीं अत्यंत, हुई तिहां अति घणी ॥ १ ॥
मघवा संत मतिवंत, सीखै पढ़ै गुणी।
क्रियां आचार विवेक, निर्मलता अति घणी ॥ २ ॥
चोमासो उतर्‍यां भुठवाड़, गणी तिहां आविया।
सिरदार गुलाब करी दर्श, घणा सुख पाविया ॥ ३ ॥
मघु बाई बिकानेर थी, आई संयम लेण ही।
जयपुर पधार्‍या स्वाम, संयम यो देण ही ॥ ४ ॥
मोहनबाड़ी दिक्षा देय, विहार कराविया।
जोबनेर रही दिन केय, हरीगढ़ आविया ॥ ५ ॥
अर्ज करी वहु लोय, मेवाड़ पधारिये।
करी कृपा शुभ दृष्ट, भविक ने तारिये ॥ ६ ॥
भीलाड़ै पुर होय, नाथजीदुवार ही।
ग्राम ग्राम नां लोक, मेला मंडिया सही ॥ ७ ॥
ग्रामां नगरां विचर, चोमास श्रीजीदुवार ही।
द्वादश श्रमण सती पनर, सेवा गणी सार ही ॥ ८ ॥
उतर्‍यां दसकै चोमास, वड़ैग्राम आविया।
वड़ी छोटी रावलियां दर्श, गणेश दिराविया ॥ ९ ॥
सैलेनैले में होय, उदयपुर उद्यम करी।
हिवे मालव पधारण पूज, तारण मनस्या करी ॥ १० ॥
कानोड़ सादड़ी होय, मंदसौर त्रिण दिन रही।
रतलाम पधार्‍या स्वाम, श्रमण संग सार ही ॥ ११ ॥
मघवा गुणी गुरु साथ, ज्ञान लेवा भजै।
सती सिरदार गुलाब, सेवा गणपति सजै ॥ १२ ॥
लघु वय उलटा पत्र, गुलाव सती वांचता।
सुणवा देखण जनवृन्द, झूलरा आवता ॥ १३ ॥
चर्चा प्रश्न पुछंत, गुणी गुण गावता।
पैंसठ ठाणां तंत, भविक मन भावता ॥ १४ ॥
दस वीस दिन विराज, विहार कीयो मुनी।
गुलाब नें माता निकलंत, सती सिरदार भणी सल्यागुणी ॥ १५ ॥

बखतगढ़ गणी विचर, आया रतलाम ही।
दियो चोमासो ठाय, हर्ष्या जन उमही ॥ १६ ॥
संत सती भरपूर, सूर तप में हुवा।
वखाण वाणी हगाम, हुलास नवा नवा ॥ १७ ॥
वृद्धां हरभक्तां दोय, आई माधोपुर थकी।
न्याती नीं लेई आंण, काम करनें नकी ॥ १८ ॥
रतलाम पूज ते आय, अर्जी विच विच करै।
दिक्षा द्यो गणीनाथ, तिण सूं भवदधि तीरै ॥ १९ ॥
नाथोजी मयाचंद, पृथ्वी गुलाव श्रावक घणा।
सारै सेव अतीव, महोछव पिण किया घणा ॥ २० ॥
ग्राम ग्राम नां लोक, थोक वहु आविया।
तिलेसरा फौजमल संग, श्रावक वहु ल्याविया ॥ २१ ॥
पटवा विभूतसिंघ, सेवा स्यूं मन घणो।
अन्यमति आश्चर्य देख, संप ओ गण तणो ॥ २२ ॥
संत पनरे गुण मेर, सेवा गणी सारता।
सिरदार आदि पेंतीस, श्रमणी गुण धारता ॥ २३ ॥
इग्यारा रो चोमास, चोथी ढाले कह्यो।
मुनियां छत्र गणेश, जाभो जग यश लह्यो ॥ २४ ॥



ढाल : ५

दोहा

हिवे चोमासो उतर्‍यां, वखतगढ़ गणी आय।
तपसी रामा नें दियो, पंडित मरण सहाय ॥ १ ॥
पोष मास जखणावद में, तपसी अनोप नें ताम।
आछ आगार पट मास नों, पारणो करायो स्वाम ॥ २ ॥
पटलावद थांदलै भाववै, राणापुर थइ इन्दोर शहर।
गणि संग मघवा आविया, करी भविक पर महर ॥ ३ ॥
मघवा स्वाम रै नीकल्यो, मोतीभरो तिण ठाम।
कृपा पूज तणी इसी, विहारकर फिरपधार्‍यास्वाम ॥ ४ ॥

साता हुवां विहार करि, उजैन बड़नगर बखतगढ़ होय।
रतनपुर खाचरोद विचर, मेवाड़ आवण मन अवलोय ॥ ५ ॥
खाचरोद में मघवा भणी, सिरे पंच दिया ठहराय।
भितर कृपा थी घणी, तिण बाहिर कुरब बधाय ॥ ६ ॥
मंदसौर जावद चित्रकूट, पुर गंगापुर मांय।
राजनगर कांकड़ोली में, दीधा झंड जमाय ॥ ७ ॥
श्रीजीदुवारे होय के, उदैपुर आवंत।
बिचला गांव केई ना कथ्या, बधतो जाणी ग्रन्थ ॥ ८ ॥

ढाल

[कपि रे प्रिया संदेशो कहे—ए देशी]

उगणीसे द्वादश चोमासो, उदियापुर सुख बास।
मघवा आदि संत तेर स्यूं रे, श्रमणी बतीस हुलास।
गुणीजन जवर जीत जयकार।
तसु शिष्य मघवा महा निरमला रे, उजल नाण उदार ॥ गु० १ ॥
गुरु चरण मघवा लीनता रे, करै ग्यान अभ्यास।
दशवैकालिक व्याकरण छंद फुन, सीखै चरण रयण गुरु पास।
धन गणी जीत थांरा शिष्य।
इसी थांरी आण मानै, न करै तिल भर रीस ॥ ध० २ ॥
प्रश्न राणैजी पूछिया रे, खींवसरा मोखजी संग।
जाब सुणी आनन्द लह्यूं रे, सुलभ बोधी पणुं थयुं अंग ॥ ध० ३ ॥
विहार काल्ह होसी कह्यो रे, तब दे छड़ीदार नें साथ।
कहिजे डंडोत मांहरी रे, वेगा पधारज्यो गणीनाथ ॥ ध० ४ ॥
कृपा म्हां पर राखज्यो रे, आपरी कृपा स्यूं भलो जाण।
मोखजी ए शब्द मालुम किया रे, इसो गुणी हिन्दुपति राण ॥ ध० ५ ॥
उपगार उदैपुर करी घणों रे, विचरत पाडनें आय।
पारणो षठ मासी आछनों रे, रम्भा नें करायो गणीराय ॥ ध० ६ ॥
पुर में पारणो करायो पूज जी रे, तिहां षट मासी थई तीन।
जैतां वनां आछ आगार स्यूं रे, हस्तु षट उपर तेरै त्रीन।
धन थांरी सतियां नर में नूर।
कर्म अष्ट हणवा भणी रे, करणी करै करूर ॥ ध० ७ ॥

मोडजी मुनि नें षट मास नों रे, पारणो मोखणूंदै आय।
खूम मुनि षट तेर उपरै रे, करायो जय मघवा मन भाय।
धन गणी थांरा संत तप शूर।
नूर नवले कर्म काटण, ए दियो मिथ्यामत चूर॥ ध० ८॥
श्रीजीद्वार पधारिया रे, तिहां तपसी काकड़ाभूत।
अनोपचंद बे सो अठारा आछनां रे, पारणो करायो अद्भूत।
धन गणी जीत थांरा शिष्य।
इसी थांरी आण मानें, न करै तिल भर रीस॥ ध० ९॥
गोघूंद सैरेनैले थई रे, उतस्या राणपुरजी नाल।
जय मघवा सिरदार गुलाब वारू, ए पांचमी ढाल विशाल॥ ध० १०॥

●

ढाल : ६

दोहा

विचरत गणी पधारिया, पाली शहरे ताम।
भंडारी बादरमलजी, किया दर्शण घणे हगाम॥ १॥
सोनारी त्यां श्राविका, तपसण तुलछी नाम।
पैंतीस दिनां में पचखावियो, संथारो जय स्वाम॥ २॥
दृढ़ताई देखी तेहनीं, लोक करै गुणग्राम।
खैरवे पूज पधारिया, सीझ्यो संथारो ताम॥ ३॥
नेत्र रक्षा नें जय गणी, कच्चा गुल दिवराय।
मघवा नें कह्यो हाजरी, सुणावो संतां ने जाय॥ ४॥
कांठे कानी विचरे गणी, घाली घण घट जोत।
पाली पूज पधारिया, करवा धर्म उद्योत॥ ५॥

ढाल

[हिंडै हालो रे—ए देशी]

उगणीसे तेरे चोमासो, कियो पाली सुखकारो रे।
मघवा आदि संत त्रयोदश, श्रमणी चउतीस उदारो रे।
गणी गुण पूरा रे।

ग० तसु शिष्य मघवा बड़, विनयवंत हद सूरा रे। ग०।
ग० त्यांरो सुयश सुण्यां थी, अघ दल ह्वै चकचूरा रे ॥ ग० १ ॥
सती सिरदार गुलाब गणी नीं, सारै सेव सवायो रे।
माता भामा सुत मोती संगे, लियो चरण रयण सुखदायो रे ॥ ग० २ ॥
किण पूछ्यो अज्जा संत किता है, छतीस चवदै उदारो रे।
भलो जोग ए वीर थकां जिम, एक सहस्र पर एक विचारो रे ॥ ग० ३ ॥
चोमासो उतर्‌यां खैरवे आया, थयो सिरदार सती रे कारण तामो रे।
गणपति कांठै विचर ग्राम भिक्षु रै, महोछव कियो तिण ठामो रे ॥ ग० ४ ॥
सुघरी जैतारण पीपाड़ थइ कालू, आया गणी तिवारो रे।
तिहां मघवा नें माता निकली, रह्या सप्तवीस दिन सारो रे ॥ ग० ५ ॥
महर करीनें गणी विराज्या, तिहां ठाणा थया बहु भेला रे।
बार ग्राम री हुँती गोचरी, त्यां थी विहार कियो शुभ वेला रे ॥ ग० ६ ॥
पादु ईड़वै बाजोली थइ, आया लाडणूं धर उछरंगो रे।
सुजानगढ़ रा तार गुणीजन, चोमास बीदासर चंगो रे ॥ ग० ७ ॥
उगणीसे चवदै वरस किन्हो, संत चवदै सूं तायो रे।
सती सिरदार गुलाब सेवा में, वलि मघवा महा मुनिरायो रे ॥ ग० ८ ॥
ग्राम मांढा थी छजमल स्वामी, त्रिया संगे व्रत धारो रे।
सुता केशर अरु बहिनी कुनणा, एक साथ चरण दिल धारो रे ॥ ग० ९ ॥
पनरै वरस तणो लाडणूं, चोमासो सुखकारो रे।
मघवा आदि तंत संत सतरै, श्रमणी पेंतालीस उदारो रे ॥ ग० १० ॥
इक मुनि अज्जा त्रिहुं संगे, दीयो संयम भारो रे।
सोलै सुजानगढ़ चोमासो, मघवा आदि सोलै अणगारो रे ॥ ग० ११ ॥
सतरै वरस चउमास बीदासर, पनरै संत श्रीकारो रे।
सिरदार गुलाब आदि श्रमणी बावन, जाणै खुल्यो केशर नों क्यारो रे ॥ ग० १२ ॥
मिगसर बिद चौथ दिक्षा थइ मोतां री, आया लाडणूं शहर मझारो रे।
हीरालाल भेरूंलाल अर्ज करी, जैपुर पूज पधारो रे ॥ ग० १३ ॥
मघवा स्वाम गणी गुर संगे, सिरदार गुलाब उदारो रे।
अनुक्रमें आया जयनगरे थयो, पट उच्छव श्रीकारो रे ॥ ग० १४ ॥
गुलहजारी तपसी हरीयाणां थी, दर्शण कर सुख पाया रे।
रामनाथ नें चरण गणी दीधो, पछे पाछा बीदासर आया रे ॥ ग० १५ ॥
वृधिचंद दयिता संगजोड़ें, लियो चरण गणी पै धारो रे।
छठी ढाले पंच चउमासा, दाख्यो संक्षेप विस्तारो रे ॥ ग० १६ ॥

ढाल : ७

दोहा

अठारै चउमासो लाडणूं, मुनि वीस श्रमणी पेंतालीस ।
मघवा स्वाम सेवा मझे, ह्वै तप जप अधिक जगीस ॥ १ ॥
उत्तमचंद चरण लियो, मा बेटी तिणवार ।
लियो नोदा पारवती चरण, तिरवा भवदधि पार ॥ २ ॥
माघ मास में चैनसुख, फुन गुलाब चुरू थी आय ।
चरण लियो जयवर कनैं, संपती बधत सवाय ॥ ३ ॥
उगणीसै सुजानगढ़, जय आदि सोलै अणगार ।
सिरदार गुलाब आदि दे, च्यार चालीस सुखकार ॥ ४ ॥
रंगरली चउमास करि, लाडणूं बीदासर होय ।
राजलदेसर स्वाम जी, पउधास्या अवलोय ॥ ५ ॥
रतलाम नों ओ आवियो, मयाचंद संग लेय ।
गुलाब बाई संग सैंकड़ा, वंदे हर्ष घणेय ॥ ६ ॥
बड़ बंधव पिण था कनैं, जय गणपति अवलोय ।
काम बोझ छोड़ावियो, मघव कुरब बधास्यो जोय ॥ ७ ॥
रत्नगढ़ बहु थाट कर, चुरू शहर पधार ।
वारूं अमृत देशना, बरसावै जगतार ॥ ८ ॥
बड़ जेठां सेखे काल में, संयम लियो सुविशाल ।
तपसी व्यावच में निपुण, करण हद सार संभाल ॥ ९ ॥

ढाल

[म्हांरी सासुजी रे पांच पुत्र कांई दोय देवर दोय जेठ—ए देशी]

उगणीसै वीसे कियो जी कांई, चुरू गणि चोमास ।
मघवा आदि सोलै मुनि जी कांई, श्रमणी छतीस हुलास जी कांई ।
धन २ तुम जयगणी भला जी कांई, धन थारा शिष्य सुविनीत ।
मघवा नाम महिमा निलो जी कांई, पूर्ण गुरां सूं प्रीत जी कांई ॥ ध० १ ॥
छोटांजी चुरू तणा जी कांई, चरण लियो चित चंग ।
युवराज पद मघवा भणी जी आपै, जय गणपति चित उछरंग जी कांई ॥ ध० २ ॥
भिक्षु लिखत में नाम भारीमालरो जी, तिण ठाम करायो स्वाम ।
नवो लिखत करी विस्तारियो जी, तिण में मघवा रो दिरायो नाम जी कांई ॥ ध० ३ ॥

आसोज विद तेरस दिनें जी कांई, लोक सैंकड़ां वृन्द।
सिरदार गुलाब महासती जी कांई, चिहुं तीर्थ सुखकंद जी कांई ॥ ध० ४ ॥
परम महर कृपा करी जी कांई, मघवा गुण अपरंपार।
कृतज्ञ गणी गुण जाणनें जी दियो, पद युगराज श्रीकार जी कांई।
घन घन मघवा स्वाम नें जी कांई, धन थांरो अवतार ॥ ध० ५ ॥

छंद

गुण धीर वीर गंभीर गिरवो, जाण युवपद आपियो।
गण भार धारण वृषभ सो, गणी चिहुं तीर्थ रे सिर थापियो।
विनय विवेक सुगुरु नां देख युव नीं, जयगणी परम सुख आवियो।
मघवा भक्त देख जन एम बोलै, अर्क चतुर्थ विरला पावियो ॥ ध० ६ ॥

ढाल

निज तनु नीं पछेवड़ी जी कांई, मघवा भणी दीध ओढाय
चार तीर्थ आणंद लह्यो जी कांई, थई शासण नींव सवाय जी कांई ॥ ध० ७ ॥
सती गुलाब बन्नां हर्षित थई जी कांई, जाणी महिर जिवार।
जय गणपति पिण इम जाणियो जी, फल्या वालक वाक्य श्रीकार जी कांई ॥ ध० ८ ॥
सम दम खम गुण जाणिया जी कांई, जाण्या चरण करण प्रधान।
विनयवंत भक्त रक्त गुरु आणनें जी इसा, जाण्या गणि पुन्यवान जी कांई ॥ ध० ९ ॥
जयपुर स्यूं आया मुनिपति जी, लघु वय लियो संयम भार।
आमेट स्यूं आय जड़ावजी जी कांई, वड़े चुन्नीलाल व्रत धार जी कांई ॥ ध० १० ॥
रिणी सूं आय मुलतानां लियो जी कांई, चरण रयण सुखकार।
हिवे चउमासो उतर्‍यो जी कांई, विहार करी तिणवार जी कांई ॥ ध० ११ ॥
रतनगढ़ थई आविया जी कांई, सुजानगढ़ अवलोय।
उपाध्याय पद सम सही जी, वड़ बंधव मेलो होय जी कांई ॥ ध० १२ ॥
गणी नें बंधव युव तणो जी कांई, देखी तेज अपार।
लाडणूं आया तिण टाण ही जी कांई, चतुर्भुज आदि[1] निकल्या जिन गण बार जी कांई ॥ ध० १३ ॥

१—वार्त्तिका :

कपूरजी[1] जीवोजी[2] चतुर्भुजजी[3] संतोको[4] कस्तुरजी[5] छोगजी छोटा[6] ए छवां ने जिलो थई निकल्या। तिणमें पांच तो नवी दीक्षा लेई पाछा आया। कस्तुर फेर निकल्यो। चतुर्भुज ६ महिनां पेहला दंड लेई आयो, फेर निकल्यो।

ढाल

भंडारी बादरमलजी विनती जी, सुत दर्श करे करी तिणवार।
मदद करी मुनिपति बात पर, गणी करी जोधाण री त्यार जी कांई ॥ ध० १४ ॥
मुनिपति माता भली जी कांई, हरखु वर हुँशियार।
बैसाख सित छठ चरण लियो जी कांई, तिरवा भवोदधि वार जी कांई ॥ ध० १५ ॥
इकवीसे गणपति कियो जी कांई, चोमास जोधाण मझार।
श्रमणी पैंतीस द्वादश मुनि जी कांई, थयो उद्योत अपार जी कांई ॥ ध० १६ ॥
सहसकरण ईड़वा तणो जी कांई, तजी मात त्रिया संग।
पटलावद रा दुलीचंदजी ही जी कांई, संयम लियो सुरंग जी कांई ॥ ध० १७ ॥
सप्तमी ढाल मघवा स्वाम नों जी कांई, युवपद नों अधिकार।
दोय चोमासा दाखिया जी कांई, चिहुं तीरथ हरख अपार जी कांई ॥ ध० १८ ॥



ढाल : ८

दोहा

जोधपुर थी विहार करि, पश्चिम थली पहिछान।
मघवा संग श्रमण्यां बहु, भवि बोधण ऊगो भाण ॥ १ ॥
वाव तणा त्यां वाणिया, गुलाब वाण सुण सुख पाय।
जय पै आय अर्जी करी, ए देव्यां मेलो मुझ पुर मांय ॥ २ ॥
पंचभद्र बालोतरे, महामोछव सप्तम दिन्न।
त्यां टालोकड़ांने ओलखाविया, जय गणपति भिन भिन्न ॥ ३ ॥
सिवाणची उपगार कर, पाछा सुभटपुर आय।
मास रही ने विहार करि, पछै आया रोयट गणिराय ॥ ४ ॥

१—वार्त्तिका :

मुनिपति मा री आज्ञा स्यूं दीक्षा लीनी। दादो संघ टुट तिण झगड़ो कियो। तिणरो उपाय भंडारीजी कियो, बैदो मिटायो।

ढाल

[सुगरु पिछाणो इण आचारे—ए देशी]

बाइस को चोमासो गणपति, कीधो पाली शहर जी।
मघवा युवपद संग शिरोमण, सती सिरदार गुलाब पर महर जी।
धन धन जय तुम गुणी शिष्य मघवा, गुरु सेवा नों कोड जी।
छटा देख भवी मन मोहै, जाणै वीर गोयम री जोड़ जी॥ ध० १॥
विविध विनय कर सुगुरु रिझावै, ज्यांरो बाधे जग में तोल जी।
इह भव आनंद जश कीर्ति लहै, पर भव सुख अमोल जी॥ ध० २॥
तिहां दिक्षा आठ थई सतियां नीं, उदैकुंवर गोरख जेंठा कुंवारी जाणजी।
तीजां चुनां हस्तु गोरां वरजू जी, गुरु आज्ञा में आगेवाण जी॥ ध० ३॥
चोमासो उतर्‍यां विचरत विचरत, आया लाडणूं शहर मझार जी।
सरूप शशि गणि स्हामा आया, थयो जबर मेलो तिणवार जी॥ ध० ४॥
वड़ बंधव वय वृद्ध जाणी, तिण सूं नजीक रह्या विशेष जी।
त्यां थी बीदासर शहर पधार्‍या, लघु छोग आयो गुण देख जी॥ ध० ५॥
तिणनें नवी दिक्षा दे मांहिनें लीनों, बाकी रह्या टालोकड़ वाहर जी।
आर्या ने वंदणा करायने दिक्षा देणी, इसा त्याग कराया गणी सुविचारजी॥ ध० ६॥
जेठ विद हुकमचंद ऋधु ने, दिक्षा दीधी तिणवार जी।
तिण टाणै उदैचंद तपसी वर पचख्यो, जाव जीव संथार जी॥ ध० ७॥
दर्शण देवा गणि लाडणूं पधार्‍या, चढ़ाय परिणाम तिणवार जी।
मघवा संग सिरदार गुलाब श्रमणी, सीझ्यो पेंसठ दिन में संथार जी॥ ध० ८॥
सतरै मुनि स्यूं चोमास बीदासर, उगणीसै तेवीस जी।
मघवा उद्यम ज्ञान ध्यान नों करता, सती सिरदार गुलाव आदि पेंतालीस जी॥ ध० ९॥
तिहां तप जप उद्यम हुवो अधिकों, सत्यां कीधो आण हुलास जी।
पछै चोखलै विचर वरस चोविसै, सुजाणगढ़ चउमास जी॥ ध० १०॥
मेहताव नें सिरदारां श्रमणी, चुरू थी वेहुँ आय जी।
उज्जल मन स्यूं चारित्र लीधो, तारी श्री गणिराय जी॥ ध० ११॥
चोमासो उतरियां बीदासर गामें, लाडणूं वड़ बंधव पै आय जी।
चित्त समाध उपजाई वहुली, सरस समय रस पाय जी॥ ध० १२॥
शेषे काल मांहें पिण वहुली, दिक्षा थई आण हुलास जी।
लाडणूं रा झूमां अनें सिणगारां, टमकोर आडसर नां तास जी॥ ध० १३॥
अति हठ स्यूं यां वालक वय में, पवर सरावगी जात जी।
भूरां कुंवारी लाडणूं रा सगाई छोड़, संयम लियो माख्यात जी॥ ध० १४॥

मांगोतर तब झगड़ो कीधो, भंडारी मदद करी सवाय जी ।
चोमासा री अर्ज करी तब, ग्रीष्म ऋतु पधास्या गणिराय जी ॥ ध० १५ ॥
उगणीसै पंचवीसै चोमासो, जोधाणा नगर मझार जी ।
मघवा आदि संत द्वादश वर, श्रमणी गुणचालिस तिवार जी ॥ ध० १६ ॥
श्रावण विद आठम जय दीधो, जुहार भोप भणी संयम भार जी ।
बहु उच्छव सूं घणै हगामें, थयो उद्योत अपार जी ॥ ध० १७ ॥
तप जप उद्यम थयो अधिको, हिव उतस्यां चोमास जी ।
पाछा लाडणूं शहर पधास्या, आठमीं ढाल चोमास जी ॥ ध० १८ ॥

●

ढाल : ६

दोहा

हिवै चोखलै विचर गणि, द्वितीय बैसाख गणिराज ।
कारण सुण बन्नां जी तणे, आया सुधारण काज ॥ १ ॥
विविध उपदेश सुणावियो, सरूप शशि पिण संग ।
मघवा स्वाम पिण मात नें, देता साज सुरंग ॥ २ ॥
सिरदार सती गुलाब पिण, देती साज उदार ।
सती गुण नीं गाथा जोड़ नें, सम्भलाई तिणवार ॥ ३ ॥
आलोयण निन्दन करी, कियो तेरस सागारी संथार ।
विद चउदस पाछली रात रा, सीझ्यो अणसण पौर इग्यार ॥ ४ ॥
जाझी साडी सतरा वरस नों, सती पाल्यो संयम भार ।
तप जप लाभ लेई करी, कींवो खेवो पार ॥ ५ ॥
जेठ सहोदर गणि तणो, सरूप शशि तिणवार ।
आयो जेठ कृष्ण तिथ चौथ नें, सागारी चार याम संथार ॥ ६ ॥
उपाध्याय सम अति जबर, गणी सहोदर सुखदाय ।
लघु बंधव साझ दियो घणो, चरम महोछव लाडणूं मांय ॥ ७ ॥

ढाल

[इण सरवरिया री पाल उभा दोय रावळा हो लाल उभा दोय रावळा—ए देशी]

वावीस को चोमास, बीदासर गणि कियो हो लाल ।
बीदासर गणि कियो ।

मघवा आदि संत सोल, सती सिरदार गुलाबां यश लियो हो लाल।
गुलाबां यश लियो ॥ १ ॥

प्रभात शास्त्र व्याख्यान, युवपद दिरावता हो लाल। यु०।
हेतु दृष्टान्त अनेक, सुण भवि हुलसावता हो लाल ॥ सु० २ ॥

हिवै मालव थी आया मयाचंद, त्रिया संग व्रत लियो हो लाल। त्रि०।
लाडणूं री दादी पोती दोय, राजां मखतुलां नें चरण दियो हो लाल ॥ रा० ३ ॥

भरतार भणी यां छोड़, सदांजी संयम लियो हो लाल। स०।
चांदांजी तज भरतार, संयम ले सुख कियो हो लाल ॥ सं० ४ ॥

तीजां विदामां जैतां जाण, राजलदेसर ना सही हो लाल। रा०।
हद जय गणी रे हाथ, चरण चित उमही हो लाल ॥ च० ५ ॥

चोमासो उतर्‌यां शेषे काल, रामसुख नें दिक्षा देई करी हो लाल। रा०।
जाति श्रावगी बाकलीवाल, सूरता चित धरी हो लाल ॥ सू० ६ ॥

नानूं वरजू आ जाण, बड़ी किस्तुरां सती हो लाल। व०।
चरण दियो जय स्वाम, ताम अधिकी रती हो लाल ॥ ता० ७ ॥

ग्राम ग्राम में हगाम, स्वाम कर नें फिरी हो लाल। स्वा०।
सप्त वीस को चोमास, लाडणूं कृपा करी हो लाल ॥ ला० ८ ॥

युवपद आदि संत सु सोल, समणी पचास सेवा सजै हो लाल। स०।
सिरदार गुलाव प्रमुख भक्त, भज दुःकृत तजै हो लाल ॥ भ० ९ ॥

तिण चोमासे मांहि, तप बहुला थया हो लाल। त०।
पनरै पचरंगी हुई साथ, वायां में थोकड़ा बहु भया हो लाल ॥ वा० १० ॥

उतर्‌यां हिवै चोमास, सुजानगढ़ आविया हो लाल। सु०।
त्यां थी आया बीदासर शहर, श्रमण श्रमण्यां संग ल्याविया हो लाल ॥ श्र० ११ ॥

सिरदार सती तनु मांहि, कारण उपनों सही हो लाल। का०।
शक्ति घटी अधिकाय, अन्न नीं रुचि नहीं हो लाल ॥ अ० १२ ॥

पोह बिद एकम तांई, अल्प सो अन्न लियो हो लाल। अ०।
पछे अन्न न लीधो कोय, सती मन दृढ़ कियो हो लाल ॥ स० १३ ॥

आलोयण विध विध स्वाम, कही ते सरवियै हो लाल। क०।
सावचेत थई स्वमुख, मिथ्या दुःकृत दियै हो लाल ॥ मि० १४ ॥

सुद चोथ सागारी संथार, रात्रि सत्यां पचखावियो हो लाल। रा०।
आठम सीझ्यो संथार, संक्षेप विस्तार वखाणियो हो लाल ॥ स० १५ ॥

कलश

पवित्रणी सम आर पंचम, प्रगट सिरदारां सती।
जय आण आराधी अधिक साधी, सूरवीर चढ़ती रती।
अन्न पान नें अरु वस्त्र पात्र, रोगी बाल वृद्ध सुखदायिका।
वीर रै जिम बाल चन्दन, तिम पूज मुख आगै साहिका ॥ १६ ॥
सिरदारां नों जिम कुर्व हुंतो, गुलाब नें गणी आपियो।
सार संभाल करण सत्यां री, महर करि गणी स्थापियो।
इसा गुण जय जाण गिरवा, आगम दृष्टि सूं अति भला।
तसु शिष्य शिष्यणी आण मानै, ज्ञान गुण शोभै निला ॥ १७ ॥

ढाल

जाणी गहर गंभीर, सिरदारां नों काम भोलावियो हो लाल। सि०।
विनयवंत आज्ञा पर दृष्ट क, कुर्व वधावियो हो लाल ॥ कु० १८ ॥
गुरु रीझायां तोल क, अधिको वाधसी हो लाल। अ०।
इह भव परम आणंद, मुक्त पद साधसी हो लाल ॥ मु० १९ ॥
बीदासर स्यूं करी विहार, सुजानगढ़ आविया हो लाल। सु०।
दीर्घ छोग हंसराज, निकल दुःख पाविया हो लाल ॥ नि० २० ॥
गण बारै निकल्या कर ताण, सप्त पोहर आसरे बाहिर रह्या हो लाल। स०।
पाछा पगां पड़िया खमाय, आया दंड आरे कर सही हो लाल ॥ आ० २१ ॥

ढाल

ए लिखत[1] लिखी तिणवार, मुख स्यूं वली इम कही हो लाल। मु०।
छोरु कुछोरु होय, माइत कुमाइत नहीं हो लाल ॥ मा० २२ ॥
ए ओखाणो आप, साचो कीयो सही हो लाल। सा०।
आख्या दोय चोमास, नवमीं ढाले कही हो लाल ॥ न० २३ ॥

१—नीचे दिया हुआ लिखत :

आगां थी बोल आश्री आचार्य सूं खांच करणै रा जावजीव त्याग छे। मघराजजी महाराज फुरमावै सो हिये वैसाय लेणी। साधपणा ज्यूं ए त्याग छै। संवत् १९२७ रा चैत विद ११ लिखंतु छोग। उपर लिख्यो ते सही।

ढाल : १०

दोहा

लाला भैरूंलालजी, अर्ज करी बहु आय।
जयपुर पूज पधारिये, देवो दर्श सोच्छाह ॥ १ ॥
मानी विनती गणि तदा, जयपुर पधारै ताम।
डीडवाणै जोबनेर थई करी, संग परवरिया मघवा स्वाम ॥ २ ॥
भूठवाड़े थई आया बाग में, दर्शण किया हीरालाल।
साथे भेटणो ल्याविया, बालक गणेशमाल ॥ ३ ॥

ढाल

[सिंहल नृप कहे चंद नें राजंद मोरा सुत लाडकड़ा ऊठ हो—ए देशी]

उगणीसै अठवीस में गुणीजन, युवपद आदि श्रमण पणवीस हो।
चोमासो जय नगरे थयो गु०, श्रमण्यां गुलाब आदि छतीस हो।
सखर शिरोमणी तेज दिनोमणी शोभतो, गणिंद मोरा।
जय शिष्यजवर जयकार हो ॥ १ ॥
ज्ञान ध्यान उद्यम घणो गणिंद म्हारा, वेहुं टंक देत व्याख्यान हो।
हाजरी बांचण विचार में ग०, सुगुरु सेव घणा सावधान हो।
गुणीजन प्यारो ओतो सुयश नों क्यारो, मोरा स्वाम जी गणिंद वारूं।
जय शिष्य सुयश रसाल हो ॥ २ ॥
तिण चोमास हुवो घणो ग०, धर्म तणो उपगार हो।
नन्दरामजी डेगाणै तणा मुणिंद मोरा, लियो जय कर संयम भार हो ॥ गु० ३ ॥
जीउं वीरां थली देश सूं आय नें मु०, जय पै लियो संयम भार हो।
मोहनबाड़ी दिक्षा थई मु०, मोच्छव मंडिया अपार हो।
पुन्य नों पूरो ओतो सत्य नों शूरो मोरा स्वामजी, मुणिंद मोरा।
सुरगिर जिम सिरमोड़ हो ॥ ४ ॥
वासी जयपुर शहर नीं ग०, जड़ावजी संयम लियो जाम हो।
वलि लिछमा सुजानगढ़ नीं ग०, संयम दे सूंपी गुलाब नें स्वाम हो ॥ पु० ५ ॥
जोरजी वासी इन्दोर नों ग०, हीरांजी सिरदारगढ़ सूं आय हो।
मृगसिर माणकचंदजी वाग में मु०, इक दिन संयम दिराय हो ॥ पु० ६ ॥

सेठ बखतावरमल सुत अछै ग०, अनंतराम दीवाण नों ताहि हो।
तसु पुत्र चल्यां मोह फंद में पड़्यो मु०, गणी दर्श दियां सुख थाय हो ॥ पु० ७ ॥
एक मास सिरदारमल बाग में ग०, एक मास घाट श्रीकार हो।
एक मास सेठ हवेली मझै मु०, जय सुयश में बहु विस्तार हो ॥ पु० ८ ॥
माह सुद दशम नें दिनै ग०, छब्रील मात दोलां संग हो।
बहु मोच्छव गोविंदराम बाग में मु०, दिक्षा थई बहु उच्छरंग हो।
प्रबल प्रतापी ओ तो जग जश व्यापी मोरा स्वामजी, गणिंद म्हारा।
सम्यक्त चरण दातार हो ॥ ९ ॥

विहार करी जयपुर थकी ग०, जोबनेर थई कुचामण आय हो।
मुझ ताऊ लाला लिछ्मणदासजीमु०, हुंता गणी सेवा रे मांय हो।
मिथ्यामत चूरो ओ तो भान ज्यूं सूरो म्हारो स्वामजी, गणिंद म्हारा।
कल्पतरु शिव देन हो ॥ १० ॥

लिछ्मणदास लाला भणी ग०, वारूं जय वच एम वदंत हो।
दिक्षा दियै माणकलाल नें मु०, तो संत हुवै मतिवंत हो ॥ मि० ११ ॥
तब लाला जय स्वाम सूं ग०, अर्ज करी तिणवार हो।
बोझ भार तणो हद काम छै मु०, तब जय कहै वच श्रीकारहो ॥ मि० १२ ॥
रजुहरणो खांधै करी लालाजी, चालणी आवै जगीश हो।
लारै चाहिजै मघवा तणै लालाजी, भार लायक ह्वैको शिष्य हो।
सरूप में सूरो ओ तो पुन्य में पूरो, ए तो समदम सूरो नंद तांहरो।
लालाजी अनुमत दीजै जरूर हो ॥ १३ ॥

लिछ्मणदास लाला भणै ग०, जो एहना हुवै परिणाम हो।
तो आज्ञा हूं देऊं सही मु०, आगम दृष्टि घणा जयस्वाम हो ॥ स० १४ ॥
नांवा में आज्ञा देई करी ग०, लाला पाछा गया तिवार हो।
डीडवाणै थई आया वाकल्यै ग०, बिंदोरी निकली जिवार हो ॥ स० १५ ॥
लाडणूं सूं दिक्षा मोच्छव करी ग०, पालखी में बैसी नगी निसाण हो।
पीरांजी कनैं जयगणी पचखावियो मु०, मघवा युवपद बहु मंडाण हो।
मिथ्यामत चूरो ए तो भान ज्यूं भूरो मोरा स्वामजी, मुणिन्द मोरा।
मुनियां छत्र महाराज हो ॥ १६ ॥

ठाकुर साहमा आविया ग०, दिक्षा दे आया लाडणूं मांय हो।
पछै फोजमल चारित्र लियो मु०, कनयालाल तिरिया तज तायहो ॥ मु० १७ ॥
दशमीं ढाल विषै कह्यो ग०, अठाईसा नों अधिकार हो।
गुरु संग मघवा विचरता मु०, तारण भवि नर नार हो ॥ मु० १८ ॥

ढाल : ११

दोहा

गुणतीसै बीदासर कियो, गणि युवपद संत उगणीस।
गुलाबकुंवर सति आदि दे, सारै सेव चालीस ॥ १ ॥
उदैराम भियाणी तणो, त्रिया संग व्रत लीध।
वृद्ध वय अति विचार नें, जय गणि वचनामृत पीध ॥ २ ॥
शेषेकाल चिमनां बगतु लियो, गुलां चोथां रीणी री जाण।
लाडणूं री छगनां भली, संयम लियो सुजाण ॥ ३ ॥
जेठ आषाढ़ बीदासरै, रह्यो गणि रै कारण विसवावीस।
तीसै चोमासो वलि थयो, संत सोलै सतियां गुणचालीस ॥ ४ ॥
शेषेकाल नेमीचंद जोतराम नें, दिक्षा दी बीदाण मझार।
ईसरदासजी मुखां भणी, दिक्षा दे कियो विहार ॥ ५ ॥

ढाल

[सोई रे सयाणा अवसर साधै—ए देशी]

इकतीसै सुजाणगढ़ चउमासो, अठारा संत युवपद गणी पासो।
गुलावकुंवर आदि श्रमणी जगीस, तप जप सेव सु सारै जगीस ॥
धन धन जय शिष्य मघवा स्वामी, त्यांरो सुयश सुणो भवियण सुखकामी ॥ १ ॥
आचारंग उतराध्ययन कंठ धरता, दशवैकालिक आवश्यक गुणता।
व्याकरण छंद षट भाषा रा जाण, इसड़ा पंडित मघवा महिराण ॥ ध० २ ॥
मघवा बहिन सहोदर सूरी, सती गुलाब ज्ञानादिक पूरी।
मुख आगै वांचण लिखण हुँशियारी, सार संभाल चिहुं तीर्थ हितकारी ॥ ध० ३ ॥
कुनणां सिरदारां, ब्राह्मीनीं कुनणा खाटूनीं तीजां गुणकारां।
जोधाणै नां उदैकुंवर सु आय, बीकाणै रा सुन्दर ने चरण दियो ताय ॥ ध० ४ ॥
लाडणूं चोमासो कियो बतीसै, सेवा सारै संत उगणीसै।
मघवा विनयवंत गुरु हद शिष्य, गुलाब प्रमुख श्रमणी चालीस ॥ ध० ५ ॥
पंचभद्र नीं कसुंबां बाई भाई बींजराज, सगाई तज आयो व्रत लेवा काज।
जय कर लीधो संयम भारो, नवैशहर नीं किस्तुरां धारो ॥ ध० ६ ॥
वृद्ध वय जोग त्रियो गुण गणी जाणी, चोमासो तेतीस को तिमरिज ठाणी।
मघवा आदि सेव में संत उगणीस, गुलाब प्रमुख श्रमणी इकावन जगीस ॥ ध० ७ ॥

सुरगढ़ नों हुकमचंद व्रत लियो तास, बीदासर आया गणी उतर्या चउमास ।
लाडणूं हस्तु कारण तनु मांहीं, दर्श दिया काल कीयो ताहि ॥ ध० ८ ॥
कारण जोगसूं लाडणूं चोमासो चोतीसै, गणि युवपद आदि संत बावीस ।
गुलाब प्रमुख श्रमण्यां छपन्न, क्रिया तप जप करता छै तन्न ॥ ध० ९ ॥
दोलतराम त्रिये पुत्र तज व्रत लीवो, शेषेकाल बगतावर चरण रस पीवो ।
अगरवाला देवीचंद प्रेमां जाण, भियाणी रा रामूं गणि पै चरण लियो आण ॥ध० १०॥
पैंतीसे चोमासो बीदासर गण इंदा, पनरै मुनि युवपद गुण वृन्दा ।
सतियां तैंयालिस गुलाब सुखकंदा, सारै सेव लेण मुक्ति आनंदा ॥ ध० ११ ॥
चांदारूण थी रामचंदजी आयो, सगाई छांड लिया व्रत उमायो ।
देशनोक रा भूरा व्रत लियो तास, भियाणी रा सरजा चरण लियो आण हुलास ॥ध० १२॥
बीदासर ना छोगजी व्रत गणी पास, तज सुत बहु आण हुलास ।
जयकुंवर सुरवाल री जाणी, जय पै चरण लियो मति सयाणी ॥ ध० १३ ॥
जय गणी चढ़तो तेज पंडूर, वलि मघवा युवपद नवले नूर ।
ग्यारमीं ढाल चोमासा कह्या सात, ग्रन्थ बधंतो अल्प रची वात ॥ ध० १४ ॥

●

ढाल : १२

दोहा

वृद्ध वय जोग बीदासरै, छतीसै मुनि वीस ।
सती गुलाब सेवा मझै, सतियां द्व चालीस ॥ १ ॥
श्रावण में लीयो चरण, छोटांजी सुविचार ।
विहार करी बीदासर थकी, गगी चोखलै विचर तिवार ॥ २ ॥
जयपुर केरी विनती, करी लाला भैरूंलाल ।
कृपा करी पूज पधारिया, ले संत सत्यां गुणमाल ॥ ३ ॥
मगदू देवरिया तणी, जाति मेसरी जाण ।
बहु मोच्छव दिक्षा दे करी, आया जयनगरे जबर मंडाण ॥ ४ ॥

ढाल

[लालहजारी रो जामो विराजे चढ़वा तुरंगी घोड़ा रे—ए देशी]

उगणीसे संतीसे गणपति, जयनगरे चोमासो रे ।
युवपद आदि वीस श्रमण सेवा में, सु सती गुलाब प्रमुख छयाल हुलासो रे ।

धन धन जय गणपति जयवंता, तुम शिष्य मघवा नीका रे।
ज्ञान ध्यान लहलीन रहे नित्य, दिनमणी तेज ज्यूं तीखा रे॥ ध० १॥
व्याख्यान वाण हेतु दृष्टान्त करी, मघवा मृगपति सम गुंजै रे।
भवि चात्रक वाण सुण प्रतिबूझै, पाखंड अज्जा सुण धुजै रे॥ ध० २॥
गणी दर्शन नें जन हजारां, देश देशनां वृन्दो रे।
शिवकरण त्यांरी जात मेसरी, दियो चरण रयण गण इन्दो रे॥ ध० ३॥
आमेट नें कुवाथल नी किस्तुरां, चरण लियो युवपद हाथो रे।
हंसराज सिरदार भणी, दियो चरण बिहूं भणी साथो रे॥ ध० ४॥
शेषे काल में मघवा युवपद, बाहिर भूम पधारत ताह्यो रे।
तिण अवसर ऋद्धसागर संवेगी, चरचा करण नें आयो रे॥ ध० ५॥
सम्यक्त नां आचार केतला, तिण पूछ्यो इम वायो रे।
युवपद कहै अठ आचार है, निःशंकतादिक फुरमायो रे॥ ध० ६॥
वली कह्यो एहनों अर्थ बतावो, जब जूदो जूदो अर्थ बतायो रे।
स्वामीवच्छलनोंअर्थ कह्योजब बोल्यो, स्वामी वच्छल सूं पुष्ट सम्यक्त थायो रे॥ ध० ७॥
वच्छल नाम स्वामी वच्छल नोंनहीं छै, युवपद इम फुरमायो रे।
वच्छल नों जो ए अर्थ करो तो, छठे गुणठाणे वच्छल ए किम थायो रे॥ ध० ८॥
पांचमां गुण थी तो छठा री, सम्यक्त पुष्ट घणी थायो रे।
स्वामी वच्छल तो ते नहीं करता, त्यांरे सम्यक्त पुष्ट किम आयो रे॥ ध० ९॥
वले कह्यो टीका मांहें दिखावो, स्वामी वच्छल अर्थ न कियो तायो रे।
जीतफतै हुई मघवा नीं, संवेगी कष्ट घणो थायो रे॥ ध० १०॥
छोगजी हरषूजी निकल थली में आया, भाई सूं मिल फिर संयम पचखायो रे।
जय जाव सुणी नें न्यारा हुआ जब, खंड्यां रो खाको खिडायो रे॥ ध० ११॥
इसा हा जबर जीत जयवंता, त्यांरा अदिठचक्र चलायो रे।
इहां पधार्‍यां उपगार होसी, विनती थली नीं इम आयो रे॥ ध० १२॥
जब थली जावा री त्यारी कीधी, वैसाख सुद में गणीरायो रे।
भैंरुंलाल आदि श्रावकां अर्ज कीधी, ए ऋतु अति कठिन कहवायो रे॥ ध० १३॥
मानी वात तब श्रावकां केरी, द्वितीय चोमास वली ठायो रे।
वखाण वाण हेतु दृष्टान्त करी, युवपद वाण अमृत बरसायो रे॥ ध० १४॥
श्रावण सुद पुनम लालाजी नें, ऊंचा चढ़ दर्शन दिया गणीरायो रे।
विविध उपदेश दियो जब गणपति, त्याग वैराग बहु करायो रे॥ ध० १५॥
काल कियो लालाजी रात रा, प्रात हुवां निज पगले नायो रे।
सिरदारमल लूणिया री जायगां में, पधार्‍या गणीरायो रे॥ ध० १६॥

अन्न अरुचि दस्त रो कारण, तो पिण सूरवीर अधिकायो रे।
पंच ढाल आरावन सुण दिये मिथ्या दुःकृत, छठ पाछा आया हवेली मांह्यो रे ॥घ० १७॥
दशम दिन बैठा करी गणी नें, युवपद अर्ज करी तिणवारो रे।
मुरजी हुवै तो संथारो करावां, तब भरीयो हुँकारो रे ॥ घ० १८ ॥
संथारो सुण दर्शण करवा, जन हजारां आयो रे।
केई कहै सूर्य जिन मग में, साख्यात ईश्वर कहवायो रे ॥ घ० १९ ॥
शरणा गाहा सुणावत सुणावत, भठ प्रदेश खंच्या तिणवारो रे।
बारस आंथण अणसण सीझ्यों, दोहरी लागी तीर्थ च्यारो रे ॥ घ० २० ॥
रुपिया हजारां लौकिक खातै, चरम मोच्छव में लगाया रे।
हय गय पलटण नगी निसाण, रुपियां री उछाल बजार रै मांह्यों रे ॥ घ० २१ ॥
दूजै दिन उपवासज कीधा, संत सत्यां बहु ताह्यो रे।
बारमी ढाले संक्षेप वर्णव, जय सुयश सूं अधिक जणायो रे ॥ घ० २२ ॥
इसा सुगुरुता युवपद भगता, थेट तांई पार पहुँचाया रे।
तीस वर्ष लगोलगी सेवा, विनय भक्ति करी अधिक पद पाया रे ॥ घ० २३ ॥

छंद

जिन मग पाज सु जाज जय गणी, तारीया भवि गुण निला।
सारण वारण कुमति निवारण, प्रबन्ध बांध्या अति भला ॥
लिखन वांचन फुन करत देशन, जोडण गणी उद्यमी घणा।
पट थाप मघवा आप सहु सुख, गणीराज स्वर्ग सिधावणा ॥

●

ढाल : १३

दोहा

हिव भाद्रवा सुदि बीज नें, मघवा गणी महिराण।
शुभ महुरत तख्त विराजिया, जाणै उदयाचल पर भाण ॥ १ ॥
मघवा गुण अपरंपर, अकथ कथा कहिवाय।
गुणवंत नां गुण गावतां, कर्मां री कोड़ खपाय ॥ २ ॥

ढाल

[गादी वीर जिणेश्वर गहरा भिक्षु मग अधिकारी—ए देशी]

उगणीसै अड़तीस भाद्रवै, शुक्ल बीज सुखकारी ।
शुभ महुरत शुभ लग्न घड़ी वर, जयनगरे जशधारी जी ॥
महाराजा थांरी पाट उच्छव छिव भारी ।
च्यार तीर्थ हद थाट मुख आगल, जाणै शोभै केशर नीं क्यारीजी ॥
महाराजा थांरी पाट उच्छव छिव भारी ॥ १ ॥
जय जय नंदा जय जय भद्दा, जय विजय तुम होयज्यो ।
कर्म शत्रु नें जीत मित्र वर्ग नीं, रक्षा रुड़ी कीज्यो जी ॥ म० २ ॥
इत्यादिक मंगलिक शब्द स्तवनां, गणी गुणां री ढालां ।
गुलाब सती संत फुन गृहस्थ नवी, रचि गावत गुणमाला जी ॥
महाराजा थांरी दिन दिन अतिशय बधज्यो ।
आप वड़ शाखा विस्तरज्योजी महाराजा, थे तो बहु तारी अनै आप तरीज्यो ॥
आप अविचल सुख चित धरज्यो जी, महाराजा थे तो शिव वधु वेगी वरज्यो ॥ ३ ॥
तिणहिज दिन गणी गोचरी पधारया, असन विविध ल्यावंतो ।
घर आंगण गणीराज देख नें, भवि चित अति हुलसंतो जी ॥ म० ४ ॥
गणपति भगनी सहोदरी सूरी, गुलाबकुंवर पुन्यवंती ।
पवित्रणी जिम पूज मुख आगल, ज्ञान ध्यान दीपंती जी ॥ म० ५ ॥
अतिशयधारी गण सिणगारी, ज्यांरी भाग्य दशा अति भारी ।
पट अछव दिन श्रमण दिक्षा थई, आई अचिंती भेट तिवारीजी ॥ म० ६ ॥
आचार्य नी अष्ट संपदा ओपै, वहु श्रुत ओपम सारी ।
वाणी अमृत घन सम गुंजे आपरी, मुद्रा पेखत लागै प्यारी जी ॥ म० ७ ॥
लोक जाणता जय गणी जेहवा, होणा दुःक्करकारी ।
देख छटा मघवा जन बोलै, आ माया अपरंपारी जी ॥
महाराजा थांरो सफल थयो अवतारी ।
हे गुण दरियो भरियो वर ज्ञाने, वले योग मुद्रा मनोहारी जी ॥
महाराजा थांरी भाग्य दशा अति भारी ॥ ८ ॥
तज सर्व दूषण विद्या नों भूषण, सरस्वती कंठे त्यारी ।
आदेज वयण सरस पीयूष रस, यश परिमल घर सारी जी ॥ म० ९ ॥
जोधाणा थी भंडारी वादरमल, दर्श करी सुख पावै ।
वले अनेक गामां ना देख कहै जन, स्वामी आप तुले कुण आवै जी ॥ म० १० ॥

झलाय ठाकुर नाहरसिंघजी, वाण सुणी सुख पायो ।
राज मार्ग यांने कहे इसा संत, इण इला पर नांयो जी ॥ म० ११ ॥
संत सत्यां नीं संपद सनूरी, संत इकोतर उदारी ।
बे सय पंच समणी वर नीकी, गणी आणा में हुंशियारी जी ॥ म० १२ ॥
सुजानगढ़ नीं जाति बेगवाणी, लिछमां जोधां जाणी ।
मां बेटी विहुं संयम लीधो, प्रथम सिष्यणी हुई स्याणी जी ॥ म० १३ ॥
चांदमलजी जयपुर वासी, जाति पोरवाल जाणी ।
गणपति पासे कार्ति मास लीयो, चरण हर्ष मन आणी जी ॥ म० १४ ॥
ढाल भली ए तीन ने दसमीं, पट उच्छव विस्तारी ।
पाट वीराज उपगार कस्यो ते, हिव सुणजो भविक नरनारी ॥ म० १५ ॥

●

ढाल : १४

दोहा

हिव चोमासो उतस्यां, विहार करी गणिराय ।
सिरदारमलजी रा बाग में, तिहां कारण जोग रह्या ताय ॥ १ ॥
दर्शण करवा संत सती, आया धरी आणंद ।
छटा देख हरषी रह्या, जेम चकोरा चंद ॥ २ ॥
सती गुलाब पिण तिहां रह्या, बड़ी सत्यां रे साथ ।
तीजां वक्राणी तणा तिहां, आय चरण लियो विख्यात ॥ ३ ॥
पाछा जयपुर पधारिया, विकस्या तीर्थ च्यार ।
उपचार कियां कारण मिट्यो, साता सर्व प्रकार ॥ ४ ॥
पंजाब नों एक सेठ ते, आवी पूछै एम ।
भीखणजी किसा बोध मैं, बुद्ध बोधी कह्यां हुवो हेम ॥ ५ ॥
वलि पूछा रा जाब सुण, रूंम रूंम विगसाय ।
अर्ज करै संता भणी, मेलो पंजाब रै मांय ॥ ६ ॥
सुरत थी तिहां आवियो, नगीनादासजी सेठ ।
दर्शण कर विगसत कहै, बीजा मत इण हेठ ॥ ७ ॥
दुकानदास्यां सर्व ही, मांड राखी है सोय ।
आप जिसो इण भरते में, आज न दीसै कोय ॥ ८ ॥

जाझा झंड जमाय नें, चैत मास करि विहार।
भूठवाड़े जोबनेर थइ, आया बोरावड़ शहर मझार॥ ९॥
बोरावड़ केइ दिन रही, आया डीडवाणै अवलोय।
कृपा करी थली देश पर, आया तारण भवियण लोय॥ १०॥

ढाल

[म्हारा ज्ञानी गुर इम कह्यो तूं न्यारो विचरण जाय—ए देशी]

उगणीसे गुणचालीसे चोमासो, बीदासर सुखकार।
सोल संत सती गुलाव सेवा में, अज्जा छतीस उदार॥
सुगणा गणी गुण रयण भंडार, गणी गुण रयण भंडार।
ज्यांरो नाम लियां निस्तार, ज्यांरो सुयश सुणो नरनार।
सुगणा मघवा जश गुण सुणिये॥ १॥
चोमासो उतरियां विहार सुखे सुखे, आप कियो गणिराय।
देश प्रदेशे संत सत्यां बहु, दर्शन कर सुख पाय॥ सु० २॥
राजलदेसर रतनगढ़ थई, आया सिरदारशहर।
श्रमण सत्यां नां वृन्द हगामें, दर्शण दिया गणि कर महर॥ सु० ३॥
खंड्यांरी वात देखी नें जन त्यां, सहु उतर गयो मन ताहि।
पूज आयां कर दर्शण प्रश्न पूछी, करण गुरधारणा हुंती मन मांय॥ सु० ४॥
भरत बाहुवलि महाकाव्य ते, व्याख्यान स्वमुख आप।
जन श्रवण कटोरा भर भर हरखे, जिम इतली चुप चाप॥ सु० ५॥
पंच ववहार नें विविध समय नां, न्याय निरणे अवलोय।
कहै इह भव मांहे वस्तु अपूरव, दीठी सुणी नहीं कोय॥ सु० ६॥
प्राक्रम अतिशय संपद देखी नें, सांभल नें वलि वाण।
प्रश्न पूछ्यां रो जाव तुरत ही, सुण सुण हर्षे असमान॥ सु० ७॥
गुलाव सती नीं पिण देशन सुण, देखी नें आचार गोचार।
नीत निपुण गुण पूरण गणपति, देखी नें हरप अपार॥ सु० ८॥
मघवा गणपति देखी ने जन, हुलसत हिवड़ै होय।
कै दर्शण देखी कै प्रश्न पूछी, करी गुरधारणा वहुलोय॥ सु० ९॥
श्री श्रीमाल जाति पांचोड़ी नां, कामेती मूलचंद।
त्रिय पन्नांजी नें शिवराज सुत कन्या, सिरैकुंवर गुणवृन्द॥

सुगणा गणपति गुण भंडार, गणपति गुण भंडार।
ए तो ज्ञान चरण दातार, ज्यांने आराध्यां शिव त्यार।
सुगणा गणपति गुण भंडार ॥ १० ॥

ए च्यारां नें गणपति दिक्षा, दीधी एकण साथ।
बहु मोच्छव मोटै मंडाणे, सूंपी गुलाव भणी गणिनाय ॥ सु० ११ ॥
माघ मास में चुरू करायो, मर्याद मोच्छव सुखकार।
बखतगढ़ नाथू नें गणपति, दियो चरण तिरण भव वार ॥ सु० १२ ॥
रिणी राजगढ़ थई पधार्‍या, गुलाव सती पिण संग।
खंड्यां रा श्रावक केई समझ्या, गुरधारण करी उमंग ॥ सु० १३ ॥
हरियाणा नां लोक सैंकड़ा, आया धरी उमंग।
गणपति नीं मुरजी थी पूरण, जाणो न हुवो किण ही प्रसंग ॥ सु० १४ ॥
चूरू राजगढ़ फतेहपुर थई, रत्नगढ़ राजलदेस।
बीदासर केई दिन विराज्या, जावा रो मन मुरधर देश विशेप ॥ सु० १५ ॥
ग्रीष्म ऋतु करी जाणो न हुवो, लाडणूं दर्शण दे तास।
रत्नगढ़ में बहुजन अरजी करतां, फुरमायो चूरू चोमास ॥ सु० १६ ॥
चालीसै चोमासो चुरू, सेवा में संत उगणीस।
गुलाब प्रमुख श्रमणी इकचालिस, करती तप जप अधिक जगीस ॥ सु० १७ ॥
मास खमणादिक तप बहु हुवो, घणो थयो धर्म उद्योत।
तिहां जम्मड़ मोतीजी दिक्षा लीधी, तिरवा भव जल पोत ॥ सु० १८ ॥
सती गुलाब तणे थयो कारण, ते थी तनु थयो खीन।
विहार करी रामगढ़ आया, पिण ज्ञान ध्यान लयलीन ॥ सु० १९ ॥
बीकानेर रा देश विषे तदा, थो अमराव राजा रे विरोध।
तिण कारण गणी रामगढ़ विराज्या, बावीस रात्रि प्रबोध ॥ सु० २० ॥
विहार करी रतनगढ़ आया, चवदमी ढाल मझार।
आप तो सिरदारशहर पधार्‍या, करायो गुलाब ने लाडणूं विहार ॥ सु० २१ ॥

●

ढाल : १५

दोहा

उपगार मुदो अति जाणनें, विहार कियो गणीराज।
सिरदारशहर पधारिया, सुधारण भविजन काज ॥ १ ॥

हिवै उपगार हुवो तिको, सांभलज्यो नर नार।
केई भविजन समझिया, केई लीधो संयम भार॥ २॥

ढाल

[रात रा अमला में होको गहरो गुंजे हो लाल—ए देशी]

समोसरण जिणराज तणी पर, च्यार तीरथ नां वृन्द।
मघवा सघन झड़ देवै देशनां, सुण जन लहै आनंद।
हो म्हारा श्रमण शिरोमणी, तेज दिनोमणी।
आपरा वचनामृत म्हाने, बाल्हा लागै हो स्वाम।
विमल निमल ए भ्रम मिटावण, सुण आणंद जागै हो स्वाम॥ १॥
विविध समय रस पावता जन नें, झीणी झीणी रहस्य अवलोय।
मिथ्यात खंडन विविध वचन सूं, समझाया बहु लोय॥ हो० २॥
हेतु दृष्टान्त नें काव्य कोश नां, अलंकार केई प्रकार।
च्यार बुद्धि कर सघन फरमाया, सुण गरक हुवा नर नार॥ हो० ३॥
शेषे काल सिरदारशहर में, हुवो घणो उपगार।
नर नारी गुरधारणा कीधी, ए तिरण भवोदधि वार।
हो पुन्यवंता गणपति।
आपरी अतिशय अति, म्हाने आछी लागै हो स्वाम।
सरद शशांक सो मुख मनोहर, देख्यां सूं आणंद जागै हो स्वाम॥ ४॥
चुन्नीलाल नाहटा व्रत लीधो, तजि मात भ्रात न तात।
डूंगरगढ़ रा आणंदरामजी, आया सगाई तज मात नें भ्रात।
हो पुन्यवंता गणपति।
आपरी छटा छिव, जिन जिम दरशै हो स्वाम।
रिझवारी कल्पतरु जिम रटियां, मुक्ति बखसे हो स्वाम॥ ५॥
पोष शुक्ल पख बीज ने दिने, बहु मोच्छव मंडाण।
गणिराज संयम पचखायो, आणंदराम चुन्नीलाल नें जाण॥ हो० ६॥
इकवीस दिवस रह्या तिहां गणपति, आया गुलाब तणा समाचार।
कृपा करी वेग दर्शण दीजै, दर्श दियां थयो हर्ष अपार॥ हो० ७॥
मेवाड़ देश थी आय नें कांई, मात पुत्र विहुं साथ।
हर्षचन्द ज्यांरी मात नोजांजी, संयम दियो पूज निज हाथ॥ हो० ८॥
मर्याद महोच्छव लाडणूं हुवो, ठाणा थया दोय सो नें दश।
गाम गाम नां लोक दरशनें आया, छटा देख बोले बहु गणी नों यश॥ हो० ९॥

गुलाब तनु कारण सूं गणी नों, न हुवो मरुधर नें विहार।
निज नगरे गणी आविया, तिहां वरत्या जय जयकार ॥ हो० १० ॥
पाली शहर नों आयो लूंकड़, रावतमल सुजाण।
अति उमंगे संयम लीधो, ए मघवा गणी महीराण ॥ हो० ११ ॥
इण विध स्वामी बहु हित कामी, अनुक्रमें करत विहार।
सुजानगढ़ रतनगढ़ थई आया, सरदारगढ़ मझार ॥ हो० १२ ॥
इकचालिसे वर्ष सरदारगढ़ में, चोमासो मुनिवर वीस।
गुलाब सती घणी सेवा साधै, सतियां सहु चालीस ॥ हो० १३ ॥
सती गुलाब रै कारण मिटियो, पूर्वे हुंतो जेह।
मास खमणादि तप बहु हुवो, मघव अतिशय अधिक कहेह ॥ हो० १४ ॥
चोमासा में पंच दिक्षा थई, डूंगरगढ़ की तीन।
सिणगार पेमां अणचां ए त्रिहूं, मघां सरदारशहर री लीन ॥ हो० १५ ॥
जुहारांजी फलवधी नां लीधो, काती में चरण धर प्रेम।
छट्ठी दिक्षा तिणहिज शहर नीं, सूजां मृगसर विद लियो कर नेम ॥ हो० १६ ॥
मुमासर गणी दर्शण देई, आया राजलदेसर मांय।
रतनगढ़ पड़ियारा छापर थई, बीदासर पूज आय ॥ हो० १७ ॥
सुजानगढ़ लाडणूं मोच्छव करी, जावा मरुधर देश मझार।
लघु भवान नें संयम देई करी, कियो माघ शुक्ल बारस नें विहार॥ हो० १८ ॥
पनरमीं ढाले थली देश में, करी घणो उपगार।
मघवा देश साजण ने चालै, तारक विड़द विचार ॥ हो० १९ ॥

●

ढाल : १६

दोहा

हिवे लाडणूं थी विहार करि, संग सती मंडाण।
अनुक्रमें धुड़िलै खाटू थई, चांदारूण मेलो मंडियो जाण ॥ १ ॥
ठाकुर साहमा आविया, थया बहु गामां ना लोग।
बाजोली डेगाणै ईड़वैं, दरश देख खुशी ह्वै कोक ॥ २ ॥
पादु थई आणंदपुर कियो, होली चोमास सुखकार।
ग्राम ग्राम में गणपति, करता बहु उपगार ॥ ३ ॥

बलुंदै लोटोती पींपाड़ थई, आया महामन्दिर गणीराय।
भंडारीजी दर्शण किया, पछै पधार्या जोधपुर मांय॥ ४॥

ढाल

[कोरो करवो जल भर्चो कांई धरती सिंच्या जाय—ए देशी]

जोधाणै में गणपति कांई, करता अति उपगार।
व्याख्यान हेतु युक्ति करी कांई, वाणी वरसत सघन जलधार।
पीवै भव प्राणी रे जाणी, सरध्यां सूं शिव सुखदाणी।
तिरै भव सायर रे नाणी, मघवा नीं अमृत वाणी॥ १॥
जयपूर रा हीरालालजी कांई, जुंहरी जात श्रीमाल।
सुतन चांदमल तेहनीं, बहु चंपाजी सुकुमाल।
गणी गुणवंता रे प्राणी, त्यांरो सुयश सुणो चित आणी।
ज्यांरा संत ने सतियां रे गुणखाणी, जे आराधे गुरु वाणी॥ २॥
अट्ठाईसे दिक्षा तणा कांई, भाव हुंता मन मांहि।
पिण पिहरीया करड़ा घणा, ले गया झूंझणूं ताहि॥ ग० ३॥
कष्ट सह्यो बारै बरस लगे, तो ही राख्या दृढ़ परिणाम।
हिम्मत कर चुरू आय नें, गणी दरशण कर अभिराम॥ ग० ४॥
गणपति संग सेवा करत कांई, आई जोधाणै मांहि।
भंडारी प्रति बुलाय नें कांई, आग्या लिखाई ताहि।
सती गुणवंती रे सूरी, रही कीरत जग में पूरी॥ ५॥
वैसाख सुदी बारस दिने कांई, संयम लियो मोटै मंडाण।
भैंरु बाग गणपति दियो, सूंपी गुलाब भणी गणभाण॥ स० ६॥
जोधाणै थी विहार करी कांई, पश्चिम थली अवलोय।
पंचभद्रे वीस रात्रि रही, जिन मारग दीपायो जोय॥ ग० ७॥
बालोतरै इग्यारै दिन रही कांई, जसोल बालोतरै होय।
विठोड़ै कोरणै थई, आया समदड़ी अवलोय॥ ग० ८॥
बयालीस को संत पणवीस सूं कांई, ठायो जोधाणै चोमास।
गुलाब सती पैंतालीस सूं कांई, सारै सेव हुलास॥ ग० ९॥
भंडारी उदैचंद भलो कांई, सुखजी अति सुखदाय।
संयम स्वाम समापियो कांई, मोच्छव थया सवाय।
नृणैं गुणवंता रे वारू, कांई मघवा सुयश उदारु॥ १०॥

नागोर नीं रूपमां कही कांई, सुता मुलचंद होय।
मकतुलां रतनगढ़ नां कांई, कोचर जाति सुजोय ॥ सु० ११ ॥
चतुर दिक्षा ए शोभती कांई, हुई अधिक सुजाण।
अति भक्ता बहु काम में कांई, भंडारी आगेवाण ॥ सु० १२ ॥
सम्यक्त दृढ़ व्रत दृढ़ श्रावक घणो, धर्म साहज देवण अगवाण।
बादरमल भंडारी बहु गुणी कांई, राज्यमान अति जाण ॥ सु० १३ ॥
बहु हठ कर चोमासो करावियो कांई, छो कारण तसु तन मांय।
भाद्रवै में कारण वध्यो, दिया दर्शण बहु गणीराय ॥ सु० १४ ॥
वैराग्य रूप वाणी सुणावता, सती गुलाब पिण दर्शण दीध।
अवर मुनि पिण ज्ञान सुणावता कांई, मिलियो जोग सखर सुप्रसिद्ध ॥ सु० १५ ॥
तब केई जन कहै भंडारीजी तणे, वली लालाजी रे जाण।
यां दोयां रे छेहलै अवसर, मिल्या जोग जिसा भक्तवान ॥ सु० १६ ॥
ज्यांरै लारै पिण भक्त में तीखा कांई, कृष्णमलजी आदि।
सेव विविध गणी गुलाब नीं कांई, करता धर अहलाद ॥ सु० १७ ॥
गुलाब सती रे गांठ रो कांई, थली में कारण हुंतो ताय।
हिम्मत कर आई जोवाण में, पछै कारण ज्यादा थाय ॥ सु० १८ ॥
वेदन में सेंठी घणी, वंछ्यो नहीं सावज उपचार।
गोरै डाकधर आदि घणो कह्यो, मेद काट साता करां इहवार ॥ सु० १९ ॥
सारण वारण प्रतिपालना कांई, करण घणी सावधान।
पूज्य भक्त करवा भणी कांई, डाही घणी गुणवान।
प्रबल पुन्यवंती रे श्रमणी, कांई नमण गुणे करी खमणी।
ग्यान ध्यान में रे रमणी, आ वचन सुधारस वमणी।
दुक्कर करती रे करणी, जाणै संत सत्यां ने जरणी।
तारक बहु नीं रे तूं तरणी, आ तो मुक्त सुखां ने भरणी ॥ प्र० २० ॥
वखाण वाणी वांचण नें गणी नें, साहज हुंतो श्रीकार।
कंठ कला वा रूप पंडिताई, जन कहै अधिक गुण च्यार ॥ प्र० २१ ॥
सेंठी रही कायर नहीं करती, अणोदरी तप सार।
कदे इकासणो कदे उपवास ही, कदे लेती दाल नों वार ॥ प्र० २२ ॥
दस विध आराधन ढाल ते कांई, आरावन करी सार।
आलोयण व्रत आरोपणा, करता ऊंचे शब्द उचार ॥ प्र० २३ ॥
गणपति दर्शण दिरावता कांई, हिव उतर्यां चोमास।
महामन्दिर विराजिया, तिहां थी आय सुणावता ज्ञान हुलास ॥ प्र० २४ ॥

पोष विद नवमीं पचखियो कांई, सागारी संथार।
सवा पोर जाझो आवियो कांई, सीझ्यो संथारो चोविहार।
सती गुणवंती रे सूरी, कांई गुलाबकुंवर गुण पूरी।
गणपति भगिनी रे दीपंती, चिहुं तीरथ में पुन्यवंती ॥ २५ ॥
चिहुं लोगस्स काउसग्ग कियो, प्रभात किया सहु उपवास।
मंढी उच्छव बहु किया, ए लोकिक रीत विमास ॥ स० २६ ॥
सोलवीं ढाले दाखियो, बयालिसा रो अवदात।
मघवा कृत गुलाब सुयश में, विस्तार सहित बहु बात ॥ स० २७ ॥

●

ढाल : १७

दोहा

जोधाण थी विहार करी, रातेनाडे रही रात।
कालामंड रोयट रही, आवै पाली शहर विख्यात ॥ १ ॥
तेरै रात विराजिया, पाली में तिहां पूज।
अन्यमति स्वमति आवता, करता ज्ञान चरचा री बूझ ॥ २ ॥
नवलांजी पाली तणा, सैंणी घणी धीरजवान।
आचार्य सूं प्रीत अति, जाणी अति वुधिवान ॥ ३ ॥
कृपा शुभदृष्टि गणपति करी, सव सतियां री जाण।
सार संभाल करो तुम्हें, नवलां कह्यो हुक्म प्रमाण ॥ ४ ॥
त्रिण रात्रि रही खैरवे, हिंगोलै करारी धामली आय।
मिठोड़ें ढुवोड़ मांढे थई, चोलावास सूं आया भिक्षु नगरे मांय ॥ ५ ॥
सिरीयारी नीमली राणावास होय, गादाणे चिरपटियै चोलावास।
ए तीन गाम एक दिन परसिया, आमद्र आउवै आया हुलास ॥ ६ ॥
रामसिंघजी रे गुढ़ै, जोजावर महामोच्छव होय।
कालांजी तीजांजी दिक्षा लीनी, दादी पोती दोय ॥ ७ ॥
पूर्वोक्त गामां मझे होवै, वखाण वाणी हगाम।
साथे सैंकड़ा जातरी, सांसारिक भक्त करे अभिराम ॥ ८ ॥
घाटै चढ़ आया नींवली, संग संत सती सुजाण।
मघवा गणपति गुणनिला, मेवाड़ में करै मंडाण ॥ ९ ॥

ढाल

[पायल वाली पदमणी ए नाजु इण गलियां मति आय—ए देशी]

देवगढ़ में आवतां, जन साहमां आया ताय।
रावजी मुसद्दी म्हेलिया, मैं पोते कारण जोग न आय।
गणी गुणवृन्दा जी, सुरत सुखकंदा जी।
होजी ए तो मघवा सम मघराज।
जैन के इन्दाजी, काटत दुख द्वंदाजी ॥ १ ॥
दर्शण देवा रावजी भणी, पधारता था गणिराय।
साहमां मिन्दर में मिल्या, वाण सुणी घणा हरपाय ॥ ग० २ ॥
परधान कामेती वहु जणा, वले भाईवंध अवलोय।
वाण सुणी हुलसाविया, कहै इसा न देख्या कोय ॥ ग० ३ ॥
विहार करी कोशीथल आविया, आमेट पधार्‍या गणिराय।
साहमां हजारां जन आविया, वाजार में मेला मंडाय ॥ ग० ४ ॥
आगरियै पधार दर्शण दिया, ठाकुर खुशी हुवो सुण वाण।
केलवै पधारत साहमां आविया कांई, ठाकुर कर मंडाण।
गणी विचरंता जी, भविक तारंता जी।
होजी ए तो दशावान पुन्यवान।
धर्म ज्याज खेवंताजी, ग्यान देवंताजी ॥ ५ ॥
तिहां दोय दिक्षा थई, पंचभद्रे रा पुनमचन्द।
पेपांजी केलवै तणा, मोच्छव में मेला मंड्या जनवृन्द ॥ ग० ६ ॥
तिहां थी लाहवै आविया, ठाकुर भाई साहमों आय।
रावलै हाजरी सुणाविया, सुण हर्ष लह्या मन मांय ॥ ग० ७ ॥
मोखणुंदै देवरियै थई, आया गंगापुर गणीराय।
दुधड़ो घणा वरषां तणो, गणी दियो राग द्वेष मिटाय ॥ ग० ८ ॥
अति उपगार करै गणी कांई, पोटलां रेलमगरे होय।
गाम गाम रा जातरी कांई, हजारां भेला होय ॥ ग० ९ ॥
कुरज कव्यारै होय नें कांई, गंगापुर गणी आय।
नव चोक्यां राजसमुद्र ऊपरै, देवकुंवर नें दिक्षा दिराय ॥ ग० १० ॥
धोइंदै नमाणै कोठारियै, पधार्‍या गणीनाथ।
गण भूषण सिर सेहरा कांई, श्रमण सत्यां वहु साथ ॥ ग० ११ ॥
नाथदुवारै पधारिया, दर्शण करण आया जन ताम।
थामलै पलाणै चंदेरै थई, आया उदियापुर अभिराम ॥ ग० १२ ॥

कविराजजी री बाड़ी मझे, शेषे काल रह्या छः रात।
परधान कुंवर पन्नालालजी, आया अवर मुसद्दी विख्यात॥ ग० १३॥
कविराज सांवलदानजी कांई, राज्य तणो बहु मान।
शासण धर्म स्यूं प्रीति घणी, उन्नति चावै घणो बुधवान॥ ग० १४॥
कविराज मोलवीजी संग सूं, शहर में पधार्‍या मोटे मंडाण।
केई दर्शण केई प्रश्न पूछवा, उपगार हुवो तिहां जाण॥ ग० १५॥
विहार करी वेदलै पधारिया, रावजी साहमां आया ताम।
उठै स्यूं गोघुंदै पधारिया, कुंवरजी साहमां आया अभिराम॥ ग० १६॥
गणपति देशन सांभली, आयो घणा जणा नें वैराग।
पन्नालाल मगनगोपालजी, धन्ना हीरा आदि लागवा मुक्त रे माग॥ ग० १७॥
त्यां थी बड़ी छोटी रावल्यां कांई, पधार्‍या गणीराय।
त्यां थी पाछा आविया, रह्या इकवीस रात्रि महाराय॥ ग० १८॥
पनजी त्याग किया परणवा तणा, जब राज कहै इम वाय।
आप घर उठाय दिया घणा, गणी कह्यो जबरी सूं न दिराय॥ ग० १९॥
दिक्षा वाला नें पका खरा किया, कहै जबर दिक्षा रो काम।
काम और भार पांती तणो, ए सतरमीं ढाल अभिराम॥ ग० २०॥



ढाल : १८

दोहा

गोघुंदा थी विहार करि, आया ग्राम नै वार।
तिहां गणीराज राजने सुणावियो, घणा हरष्या तिणवार॥ १॥
तीपोहे मंदार आहड़ थई, आवै शहर मझार।
हिव हगांम हुवो तिको, आगै सुणो अधिकार॥ २॥

ढाल

[सुण सुण रे सीख सयाणा, कांई होवो अधिक अयाणा—ए देशी]

उगणीसे तैंयालिस चोमासो, गणी संग चउवीस संत हुलासो।
श्रमणी अठवीस सुखवासो, थयो तप जप धर्म उजासो॥

सुण सुण रे गुणीजन वाचो, मघवा सुयश मही पर आछो।
मघवा सुयश वचनामृत आगै, षट रस पिण फीका लागै॥ १॥
हिन्दू मुसलमान गुण गावंता, गणी मुद्रा वाण सुणी हरषंता।
राज रा मुसद्दी घणा आवंता, गणी दरश देख देख हुलसंता॥ सु० २॥
हुक्मचंदजी रा टोला रो चोथमलो, ओ तो निपट कदाग्रही नहीं भलो।
बार बार कहे चरचा कराय, गणी कह्यो देस्यां संत म्हेलाय॥
सुण सुण रे भविजन वारू, गणी मघवा अधिक दीदारू।
ज्यांरी बुद्ध अकल अति जागै, कोई पहुंच सके नहीं आगै॥ ३॥
कविराजजी आदि कहवायो, इम चरचा कियां कदाग्रह थायो।
थारे चरचा करणरी हुवै मन मांह्यो, राज थी पंडित लेवां बुलायो॥ सु० ४॥
पंडितराज आदमी बीच में बैठायो, तिण सूं कदाग्रह नहीं थायो।
ए बात सुणी गणी फुरमायो, इम तो त्यार छां म्हारै अटकै नांयो।
धन धन हो मघवा स्वामी, ए तो अवसर नां जाण धामी।
ज्यांरा अतिशय सरस रस वाचा, जाणै रत्न चिंतामणी जाचा॥ ५॥
चोथमलजी नें पूछ्यां कहिवायो, यूं तो चरचा करूं हूं नांयो।
लोकां जाण लियो विख्यात, यांरै एक कदाग्रह री बात॥ ध० ६॥
डालचंद मुनि नें सोय, खंडी मिलियो मार्ग में जोय।
प्रश्न पूछ्यां रो जाब न आयो, घणो कष्ट हुवो मन मांह्यो॥ ध० ७॥
लोक सुणनें बोल्या इम वायो, चेलांई पूछ्यां रो जाब न आयो।
तो गणी तक केम पहुंचायो, थोथी आश हुंती मन मांह्यो॥
सुण सुण रे भवि गुणक्यारा, ए तो मघवा मुनिपति म्हारा।
अै तो सादृश जिम जिनराजै, ज्यांरा सुयश डंका मही बाजै॥ ८॥
राजमार्ग तांई हुई वातां, मघवा प्रबन्ध तणी हुई विख्याता।
थया दिग्जय में जयवंता, ज्यांरा अदीठ चक्र चलंता॥ सु० ९॥
बावीस चोविहार करंता, जेठांजी अघ मैल धोवंता।
कविराजजी साहिब ने सुणायो, मन देखी बहु हुलसायो॥ सु० १०॥
देशनोक रा रूपांजी आयो, दिक्षा लेवा चोमासा रे मांह्यो।
बींदोरी अच्छव बहु करंता, संसारी मेला अति ही मंडंता॥ सु० ११॥
चोमासो हुवो घणे हगाम, मृग बिद एकम विहार कर ताम।
कविराजजी री बाड़ी में आया, विविध देशन दीधी गणीराया॥ सु० १२॥
बीज दिन दिक्षा थई मोटे मंडाण, गाजा बाजा नारेल बांट्या जाण।
पादरी डाकधर वेहुं आया, मोच्छव देख खुशी घणा थाया॥ सु० १३॥

कविराज राणांजी रे पायो, गणपति री प्रशंसा करायो।
कहै आपरा मतमें सन्यास मत कहायो, आ रीत देखी आ संता रे मांह्यो ॥ सु० १४ ॥
म्हारै पिण सतसंगत थांरो, आप पिण तिहां बेग पधारो।
राणांजी कहै जावा रो अटकै नाहीं, पन्नालाल पुरोहितजी कहै न अटकै क्यांही ॥ सु० १५ ॥
आगै इण खावे रो काम पड्यो ताह्यो, जब दफ्तर वाला ने बुलायो।
दफ्तर देख अरज जब कीधी, खरतरगच्छ नां श्रीपूज आया प्रसिद्धि ॥ सु० १६ ॥
जग मन्दिर जग निवास रे मांह्यो, राणा शंभूतसिंघजी मिलिया जायो।
संत कठै बिराजे सुखदायो, और जागां तो दाय न आयो ॥ सु० १७ ॥
च्यार बज्यां नें संतां पैं जायो, कविराजजी ने कहवायो।
अजंट कनै बाग में आयो, तिण बख्त आणो नहीं पायो ॥ सु० १८ ॥
महिलां पधार पोशाक खुलाणो, याद आयां कहै संतां कनें जाणो।
अगाड़ी हलकारो दीधो भेजो, पोतै पिण आया न करी जेजो ॥ सु० १९ ॥

कलश

कविराज बाड़ी मांहीं राणो, फतेहसिंह तिहां आविया।
वंदणा सुणनें बैस गणी नीं, वाण सुण सुख पाविया ॥
संग पन्नालाल कवि मनोहरसिंहजी, सिंघीजी दर्शन कर हुलसाविया।
आसरै रही बावीस मींटज, पछै वंदणा कर महल सिधाविया ॥ २० ॥

ढाल

शहर में आश्चर्य अधिक कहाणो, गणी अतिशय अधिक जणाणो।
जिनधर्म उद्योत थयो तीखो, यो पाखंड सुण पड़ गयो फीको ॥ सु० २१ ॥
कविराज सांवलदान ताह्यो, गणीराज सूं अर्ज करायो।
आपरै महाराज सवायो, लारै लायक रो नाम फुरमायो ॥ सु० २२ ॥
मघवा भाषै निगै है म्हारी, अवसर आयां कहवा भाव सारी।
थांरी विचारणा अति भारी, हद शासण वृद्धि विचारी ॥ सु० २३ ॥
हिवड़ां तो बड़े गाम जावां, दिक्षा देई पाछा जब आवां।
थांरी अर्ज हिया मांही धारी, सुण हरप्या है कवि अपारी ॥ सु० २४ ॥
इसा अवसर नां जाण स्वामी, जाणे प्रगट्या है अंतरजामी।
ज्यांरा गुण सघन जो कहिये, तो ही सुरगिर पार न लहियै ॥ सु० २५ ॥

कविराज आदि मुसद्दी बोहला, देखी अतिशय भाक भवोला।
ज्यांरो हृदय हुलस गयो सोहरो, इसो माग अन्य नहीं ओरो॥ सु० २६॥
धन धन मघवा गणी गुणधामी, यश कीर्ति जग हद पामी।
भिक्षु मग नें कलश चढ़ायो, कह्यो अठारमीं ढाल रे मांह्यो॥ सु० २७॥

●

ढाल : १६

दोहा

बाड़ी थी विहार करी, आया गोघुंदै गणीराय।
तिहां पन्नालाल सगाई छोड़नें, वली धन्नाजी मगन री माय॥ १॥
चढ़ती वय संयम लियो, छांड़ सहु परिवार।
मृगसर सुदि चउदश दिनें, गणी कनें तिरण संसार॥ २॥
पचीस रात रही विहार करी, वेदलै आया स्वाम।
कानोड़ परबारो पधारणो, कविराजजी वेदलै आया ताम॥ ३॥
उदैपुर पधारो गणी, अर्ज कीधी घणी सवाय।
विनती मान आया तदा, कविराजजी री बाड़ी मांय॥ ४॥
सांझ समय तिहां आविया, करवा दर्शण ताय।
मुंहता पन्नालाल कविराजजी, पुरोहित मोलवीजी आदि घणा आय॥ ५॥
गणपति वाण सुणावतां, एक पंडित बोलण लागो वाय।
मोलवी कहै बीच बोलो मती, महाराज रा वचना री है चाय॥ ६॥
ओर चर्चा बात हुई घणी, त्यां थी विहार कियो गणीराय।
पहुंचायवा पन्नालालजी, कितिएक दूरै आय॥ ७॥
त्यां प्रश्न इम पूछियो, के हिंसक जीव नें दे मार।
मारण वाला नें स्यूं हुवो, उत्तर देवो विचार॥ ८॥
गणपति इम फुरमाइयो, सिंघ जीव नें मारै तो ताय।
पाप किणनें कहो लागतो, मुंहतोजी कहै लागै सिंघनें आय॥ ६॥
सिंघ नें मास्यो ते किणनें लागियो, कहै उणनें लाग्यो पाप।
उत्तर सुण हरप्या घणा, समभ गया आपो आप॥ १०॥

ढाल

[वाड़ी फूली अति घणी मन भंवरा रे—ए देशी]

विहार करण त्यारी थया गणीराया रे, बहु जन वृन्द संग जोय।
स्वाम सुखदाया रे।
कविराज इम चितवै ग०, गत हुक्म फरमावो सोय॥ स्वा० १॥
मघवा गणि विकसित थई ग०, बहु गुण सुख नों सीर। स्वा०।
म्हारी निगै में माणियो ग०, ग्यान गुणे गंभीर॥ स्वा० २॥
अबार इतरा साधां मझे ग०, माणक संत महंत। स्वा०।
इम सुणनें कविराजियो ग०, शीघ्र वच तहत कहंत॥ स्वा० ३॥
भायां नें कवि इम वदै ग०, देश दिसावर मांय। स्वा०।
लिख दो बेग सताब सूं ग०, जिम खबर पहुँचे जाय॥ स्वा० ४॥
अति अति स्तवना करी ग०, परणमें गणपति पाय। स्वा०।
कहै धराविभूषण आप थी ग०, आया जिण दिश जाय॥ स्वा० ५॥
ए नृप ठाकुर बहु रीझिया ग०, हाकम मुसद्दी नें बहु लोक। स्वा०।
रैत नें षट दर्शणी वली ग०, गुण करै मिल मिल थोक॥ स्वा० ६॥
उदैपुर उपगार करी घणो ग०, कानोड़ दिशि करी विहार। स्वा०।
उंठाड़ै दोय रात्रि रही ग०, करणपुर भींडर में पधार॥ स्वा० ७॥
कानोड़ सात रात्रि रही ग०, रावजी रे दरश रा परिणाम। स्वा०।
हुंता पण हुआ नहीं ग०, रात्रि उदैपुर चढ़ गया ताम॥ स्वा० ८॥
तिहां थी आकोलै आविया ग०, रेलमगरै दर्शण दिया ताम। स्वा०।
रंगूजी कनें सुन्दर सती ग०, करायो सवा षटमासी पारणो स्वाम।
सखर सुखदाया रे॥ ९॥
चोथमल खंडी तिहां आवियो ग०, साहमों उतरियो ताम। स्वा०।
मघवा गणी दिसां पधारता ग०, कहै चरचा करणी है लवै वेफाम॥ स्वा० १०॥
चरचा चालंता ह्वै नहीं ग०, करणी हुवै तो ठिकाणै कराय। स्वा०।
इतरा भाया साथे राखणा ग०, किसा सूत्र में कही वाय॥ स्वा० ११॥
गणी तो दिसां पधारिया ग०, लारै भगवानदास स्यामी चरचा कराय। स्वा०।
चरचा पूछी ते तेहनें आई नहीं ग०, जब खंडी रीस में आय॥ स्वा० १२॥
इतलै टोला तणो श्रावक हुंतो, ग०, दी भगवानदास रै थाप। स्वा०।
इतले लट्ठ ले आवियो ग०, जब लोकां पकड़चो झट आप॥ स्वा० १३॥
लोकां मिल कदाग्रह बुझावियो ग०, नहीं तो वधतो विरोध अपार। स्वा०।
लोकां मन में जाणियो ग०, ओ खंडी करतो फिरै राड़॥ स्वा० १४॥

बात राजा तांई विस्तरी ग०, ते हुकम एम कहिवाय । स्वा० ।
तेरापन्थ्यां रा पूज हुवै तिहां ग०, यानें मूल में जाणो नांय ॥ स्वा० १५ ॥
सिरसतादार लिखतां चतुराई करी ग०, दीसै लिखी इम वाय । स्वा० ।
तेरापंथ्या रां पूज रहै जठै ग०, त्यांनें साहमों जाणों नांय ॥ स्वा० १६ ॥
राजमारगी जाणियो गणिराया रे, ए कदाग्रही मूल । स्वा० ।
लाज शरम दीसै नहीं ग०, नहीं संयम सूं सूल ॥ स्वा० १७ ॥
रेलमगरै टोला री श्रद्धा रो श्रावक हुंतो ग०, तिणनें ओलंभो पूरो आय। स्वा० ।
भगवानदास कुरजवाला कनें ग०, हाकम करी घणी नरमाय ॥ स्वा० १८ ॥
तिहां थी कुरज पधारिया ग०, दियो दुवड़ो द्वेष मिटाय । स्वा० ।
पोटला चरचा बहु भई ग०, आया गंगापुर मांय ॥ स्वा० १९ ॥
गंगापुर धर्मोद्यम करी ग०, आवनी वोस्यापुर आय । स्वा० ।
बावलां स्वाम पधारतां ग०, ठाकुर साहमां आया हरषाय ॥ स्वा० २० ॥
बागोर बेमाली आविया ग०, रावजी वाण सुणी हरषाय । स्वा० ।
तिलोली दोलतगढ़ै ग०, लवाजमों ले ठाकुर साहमा आय॥ स्वा० २१ ॥
साडा षट मासी रंभा करी ग०, मघु संग दोलतगढ़ मांय । स्वा० ।
तिहां श्री पूज पधारनें ग०, स्वहस्त पारणो कराय ॥ स्वा० २२ ॥
रावलै दरश दिरावता ग०, लोकां मिल अरज कराय । स्वा० ।
मर्याद महोच्छव इहां करो ग०, महोच्छव कस्यो विनती मनाय ॥ स्वा० २३ ॥
घणा ग्राम नां जन भेला थया ग०, तिहां थी आसिंद पधार । स्वा० ।
रावजी तो तिहां हुंता नहीं ग०, साहमां आया मुसद्दी कामदार ॥ स्वा० २४ ॥
हाथी नगारो निसाण ल्याविया ग०, गणी कहै म्हारे प्रयोजन नांय । स्वा० ।
तीन रात्रि रही दोलतगढ़ आविया ग०, लाच्छुड़ै पिथास थई पुर आय ॥ स्वा० २५ ॥
तेरै रात्रि पुर शहर में ग०, रह्या धर्म ध्यान रा थाट । स्वा० ।
उगणीसमीं ढाल मेवाड़ में ग०, रह्या घणा गहगाट ॥ स्वा० २६ ॥



ढाल : २०

दोहा

भीलाड़ै नीं विनती, अति आयां सूं स्वाम ।
विहार करी नें आविया, हरष्या लोक तमाम ॥ १ ॥

भीलाड़ै में मेसरी आदि, लोक घणा हरषाय।
जयपुर कृष्णगढ़ तणा, दर्शण जात्रि घणा कराय ॥ २ ॥
पुर रा लोकां चोमासा तणी, विनती घणी कराय।
गणपति तो मानी नहीं, आर्या ठाकुर साहमां आय ॥ ३ ॥
तिहां थी बड़ै मुंहै आविया, भारीमाल रे ग्राम।
त्यां थी बनेड़ै आविया, राजाजी दर्शण किया अभिराम ॥ ४ ॥
चरचा वारता पिण हुई, आपरा धर्म रा छा जाण।
शंभुगढ़ रामपुरे थई, संचस्या जिम भाण ॥ ५ ॥

ढाल

[अभड़ भड़ रावणो इंदा सूं अड़ियो रे—ए देशी]

मेवाड़ में उपगार करी घणो, आवता थली देश मझार।
अजमेर त्रिण रात्रि रही, लाखण कोटड़ी में जन आया अपार।
गणी गुण सागरू, प्रश्न जाव देवै श्रीकार ॥ १ ॥
एक अन्यमति प्रश्न पूछिया, तिणनें जाव दिया गणीराज।
ए जग में मत च्यार छै, तिणमें एकत्व ओ छै आज ॥ ग० २ ॥
केई कहै ईसामसी जी, केई कहै ईश्वर भगवान।
जैन पूछ्यां कहे केवली जी, इम न्यारा न्यारा कहै जाण ॥ ग० ३ ॥
गणी कहै हिवड़ां न केवली जी, तसु वचना री परतीत।
रुड़ी आसता राखिये जी, ए सम्यक्त नीं रीत ॥ ग० ४ ॥
आप आपणी जाति नें जी, वखाणै सहु कोय।
पिण आर्य कुल धर्म नें जी, पाम्यां दुर्गति खोय ॥ ग० ५ ॥
इम अनेक अरथ कही जी, जाव दिया गणइंद।
अतिशय संपद देखनें जी, द्वेषी थया मति मंद ॥ ग० ६ ॥
ग्राम ग्राम नां जन वहु जी, वले शहर तणा वहु थोक।
दर्शण कर वाणी सुणी चित, हर्ष लहै वहु लोक ॥ ग० ७ ॥
तिहां टोलां तणी आरज्यां जी, कहै दिक्षा देवो मुझ स्वाम।
गणी मीठो उत्तर दियो इसो जी, मुझ मर्याद कठिन है ताम ॥ ग० ८ ॥
तिहां थी कृष्णगढ़ आविया जी, दीवानजी आदि लोक साहमां वहु आय।
घणा जाती दर्शण नें आविया, दिक्षा लीवी हीरां गोघुंदा थी आय ॥ ग० ९ ॥

झलाय ठाकुर दीपतो, नाहरसिंघ दर्शण किया आय।
जैपुर शहर पधारिये, गणी कहै अवसर हिव नांय।
प्रबल पुन्य पोरसा, मघवा गणी नामी रे।
ज्यांरा ग्यान चरण विहुं निरमला, पंचमीं गति कामी रे ॥ १० ॥
हरनाडै रूपनगढ़ थई रे, बोरावड़ केई रात्रि विराज।
बाल्या गाम में दस्तां लागतां, डीडवाणे आया गणीराज ॥ प्र० ११ ॥
तिहां थी लाडणूं विराजिया, पिण दस्त कारण मिटियो नांय।
वीस रात्रि रही सुजानगढ़ आविया, ओषद किया पिण कारण न मिटाय ॥ प्र० १२ ॥
आषाढ़ सुद में एक भायो तदा जी, सिरकारी ओषध लेतो जाण।
ते ओषध दीधी लाय स्वाम नें, दस्त झठ बंद हुई पिछाण ॥ प्र० १३ ॥
सुजानगढ़ लोकां अर्ज घणी करी, पिण मर्जी बीदासर करण री ताय।
विहार आषाढ़ सुद नवमीं कियो, सुद पुनम विराज्या जाय ॥ प्र० १४ ॥
चमालीसे चोमासो बीदासरे जी, संत वीस गणी सेवा मांय।
नवलांजी आदि श्रमण्यां इकचालिस सूं, आराधे तप जप आण सवाय ॥ प्र० १५ ॥
कालुजी कोठारी जाती छापर तणा जी, वले माता छोगांजी पिछाण।
बालक वय चरण गणी कर लियो जी, तीजा कानकुंवर सगाई तज जाण ॥ प्र० १६ ॥
आसोज सुद तीज नें दिने जी, दिक्षा दीधी मोटे मंडाण।
तप जप धर्मोद्यम हुवो जी, विविध देता गणी व्याख्यान ॥ प्र० १७ ॥
विहार कियो चोमासो उतर्‌यां जी, चाड़वास छापर गढ़सुजाण।
बीकानेर री विनती आई घणी, इकवार लाडणूं पधार्‌या गणी गुणखाण ॥ प्र० १८ ॥
पाछा सुजानगढ़ पधारिया, पुनमचंदजी आदि री विनती आय।
मुरजी हुवां विहार करावियो, सांडवै दर्शण गणी दिराय ॥ प्र० १९ ॥
तिहां थी विचरत देशनोक आविया, किताएक दिन तिहां विराज।
उदराम भीनासर होय नें, मोटे मंडाण सूं शहर में पधार्‌या गणिराज ॥ प्र० २० ॥
हाथी नगारा निसाण साहमां ल्याविया, भैंरूदानजी कविराजजी पिण आय।
घणे हगाम परिषद थाट सूं जी, ए ढाल वीसमी पधार्‌या शहर रे मांय ॥ प्र० २१ ॥

●

ढाल : २१

दोहा

नक्षत्र मास विराजिया, हुवो घणो उपगार।
अन्यमति स्वमति प्रश्न पूछता, मेला मंडत अपार ॥ १ ॥

मदजी राखेचा राजमान बहु, बड़ तपसी तप आप।
षट पोषा निरंतर मास में, पड़ती तेहनीं छाप ॥ २ ॥
तसु नेड़ा भाईबंध में, राखेचा मंगलचंद।
गणपति पै दर्शण करी, अबारूं मुक्ति जावै के न इम पुछंद ॥ ३ ॥
गणी फुरमायो जावै नहीं, अबारूं जनम्यो इण खेत।
वली कह्यो क्यूं जावै नहीं, वली कह्यो बल प्राक्रम हीणा एथ ॥ ४ ॥
अवर प्रश्न केई पूछिया, उत्तर सुणी हरषाय।
ओर पिण चरचा बहु हुई, ते सुणो भविक चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आई छूं देवा ओलंभड़ो सासूजी—ए देशी]

पुनमचन्द सुराणा तेहनीं सुगणाजी, जायगां में विराजिया गणिराय हो जशवंता।
वखाण उपासरा में बांचता सु०, छटा देख भविक विकसाय हो पुन्यवंता।
पुन्यवंता मघवा बुद्ध सागरू गणपतजी ॥ १ ॥
सुगनजी संवेगी घणो बोलतो सु०, हूं चरचा करस्यूं जाय हो।
भेषधरियो आयो उपासरै चलाय नें, मिथ्याभरियो बेकांम उलपतो वाय हो।
भेषधरियो भेषधरियो, अघ वश बोलतो बुद्धहणजी ॥ २ ॥
कोई कह्यो वखाण में बोलै घणो सु० सुण आया गणी ततकाल हो। ज०।
अतिशय देख ठंडो पड्यो सु०, पूछ्यो मंदिर रे कांटा दिराल हो ॥ पु० ३ ॥
श्रीजी फरमायो इम कहां नहीं सु०, म्हारो उपदेश ए पिण नांहि हो। ज०।
इम सुण राजी हुवो घणो सु०, फिर आऊंगो तुम पाय हो ॥ पु० ४ ॥
संवेगी जती पनरै आसरे सु०, ओर लोक भेला घणा होय हो। ज०।
चरचा करण नें आविया सु०, पुछ्यो आगम किता मानों जोय हो ॥ पु० ५ ॥
आगम तीन मानां अच्छां सु०, ते कहै किसा तेहनां नाम हो। ज०।
सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे सु०, वली पूछ्यो सूत्र किता मानों ताम हो ॥ पु० ६ ॥
गणपति कहै मिलता सूत्र मानां सवै सु०, ते कहै वतीस कै पैंतालीस हो। ज०।
वतीस मानां यां सूं मिलता ओर ही सु०, ओर क्यूं न मानों जगीश हो ॥ पु० ७ ॥
आगला मन सूं जोड़ घालिया सु०, ते मानणी में किम आय हो। ज०।
पाछला आगला वचन किसा अच्छे सु०, ते कहै इम कठै कहाय हो ॥ पु० ८ ॥
गणी फुरमायो कह्यो महानिशीथ में सु०, केई पानां लीयै खाव हो। ज०।
केई पानां सूं चिपी सिड़्या सु०, इम खंड विखंड लाव हो ॥ पु० ९ ॥

नेमीचंदजी आदि आठ मतो करी सु०, नवा पाठ घाल्या इण मांही हो । ज० ।
कठै पानों दो पानां ओली अक्षर कठै सु०, सुधार नें त्यार कराय हो ॥ पु० १० ॥
वले ते कह्यो दोष को आयो हुवै सु०, तो मम दूषण मत देह हो । ज० ।
महा निशीथ पाठ में इम कह्यो सु०, तो दूजो खांच आप में कुण लेह हो ॥ पु० ११ ॥
जाव सुणी गणपति तणा सु०, हरष्या घणा मन मांय हो । ज० ।
राजी होय नें ते गया सु०, गणी अतिशय जाण्या अधिकाय हो ॥ पु० १२ ॥
बावीस टोलां री कई आरज्यां सु०, मिलती मारग मांही हो । ज० ।
लुल लुल नें वंदणा करै सु०, वले हर्ष हिया में भराय हो ॥ पु० १३ ॥
श्रीपूज्य कवलै गच्छ तणो सु०, कहै उपासरे पगल्या कराय हो । ज० ।
गणी पधार्‍यां समय चरचा हुई सु०, पंडिताई देख हरष्यो मन मांही हो ॥ पु० १४ ॥
वली अतिशय धीरज देखनें सु०, वले संत सत्यां नों हेज हो । ज० ।
वले सामान पुस्तक तणो सु०, वले देख्यो गणी नों तेज हो ॥ पु० १५ ॥
अन्यमति बहु इम बोलिया सु०, एहवा मेला कदे इण शहर हो । ज० ।
म्हे तो नयणा नहीं देखिया सु०, ए मघवा किया कर महर हो ॥ पु० १६ ॥
भीमसिंघ राजा नें स्वामजी सु०, दर्श दिया हरषाय हो । ज० ।
वाणी सुण नें इम वदै सु०, जीतमलजी जिसाइज थाय हो ॥ पु० १७ ॥
हीरसिंघजी ठाकुर सांडवा तणा सु०, लुल लुल नें नमें गणीराज हो । ज० ।
आज दिवस भलो दर्श पाविया सु०, हूं नें शहर पावन हुवो आज हो ॥ पु० १८ ॥
मर्याद मोच्छव तिहां थयो सु०, दर्श किया घणा गामां रा लोक हो । ज० ।
जिनधर्म उद्योत हुवो घणो सु०, वले देखण आवै लोकां रा थोक हो ॥ पु० १९ ॥
ठावा ठावा जन पुर तणा सु०, बहुलपणा रै मांय हो । ज० ।
दर्श किया बहु गणी तणा सु०, इसा धर्म मुर्त्ति मुनिराय हो ॥ पु० २० ॥
गवाड़ सताईसूं तणा सु०, वले राजमारगी माण हो । ज० ।
जती संवेगी ढुंढिया सु०, आया महोच्छव देखण गणी भाण हो ॥ पु० २१ ॥
मा संगे मुखांजी आविया सु०, महोच्छव ऊपर जाण हो । ज० ।
गहिणां आभूषण पहिरण ओढवा सु०, बाल कुंवर बुधवान हो ॥ पु० २२ ॥
अर्ज करै सिरदारशहर पधारिये सु०, मुझ दिक्षा दीजै गणीराय हो । ज० ।
इचरज सुण देखनें आवता बहु सु०, पूछ्यां उत्तर देता खुलासा ताहि हो ॥ पु० २३ ॥
ढाल इकवीसमीं में सही सु०, करी घणो उपगार हो । ज० ।
मघवा गणी जिनराज सा सु०, विचरै धरा मझार हो बुधवंता ।
बुधवंता गणी चरण भेटिये सुखकर जी ॥ २४ ॥

ढाल : २२

दोहा

बीकाणा थी विहार कर, अनुक्रम सीथल आय।
महतां भक्त बहु करी, वले ग्यान चरचा कर हरषाय ॥ १ ॥
डूंगरगढ़ आडसर मुमासरै, थई आया सिरदारशहर।
मुखांजी आदि ओर पै, करी गणाधिप महर ॥ २ ॥

ढाल

[संभव साहिव समरिये—ए देशी]

वखाण वाणी हुवै घणा, आवै हो सुणवा बहुजन वृन्द क।
वाण सुणी दीदार वले देखनें, पामै हो मन में आणंद क॥
मघवा गणी महिमां निला, तारै हो भवि सुगुण नर नार क।
तीन बाई दिक्षा नें त्यारी थई, गणपति हाथे हो तिरवा भव व्रार क ॥ म० १ ॥
मुखांजी छोगांजी शेरां वली, मुखांजी हो कुंवारी कन्ना जाण क।
वेटी जुहारमलजी डागा तणी, मात प्रतापां हो श्रावका वहु जाण क ॥ म० २ ॥
छती रिध छिटकाय नें, दिक्षा लीधी हो वहु हठ सूं जाण क।
प्रथम चैत सुद नवमी दिनै, गणी हाथे हो उच्छव वहु मंडाण क ॥ म० ३ ॥
गणी मुरजी पिण हुंती घणी, अवारु हो करती वहु सेव क।
विनयवंत जे गणी तणो, इह भव परभव पामै सुखमेव क ॥ म० ४ ॥
तिहां थी राजलदेसर आविया, गोरांजी हो पति छोड़ व्रत लीध क।
कच्छ भुज नां लोकां दर्शण किया, प्रश्न पूछ्यां रो हो उत्तर गणी दीध क ॥ म० ५ ॥
बीदासर लाडणूं सुजाणगढ़ विचर, छापर पड़िहारा रतनगढ़ आय क।
लोकां अर्ज चोमासा री करी घणी, सिरदारशहर रो दियो फरमाय क ॥ ६ ॥
पेंतालीसे चोमासो सिरदारगढ़, छाविस संता सूं कीवो गणभाग क।
नवलांजी आदि सती सेवा मझे, धर्म उद्यम हो हुवो अधिक सुजाण क ॥ म० ७ ॥
उतर्‍यां चोमासो चूरू पधारिया, केलवा थी जयचन्दजी तमु नार क।
केसरजी उदैपुर तणा, गणी दियो हो त्रिहुं नें संयम भार क ॥ म० ८ ॥
मर्याद महोच्छव रतनगढ़ थयो, राजलदेसर बीदासर विचरै गणीराय क।
मुझनें दिक्षा देवा राजलदेसर भेजियो, छयांलिसै चोमासो लाडनूं थाय क ॥ म० ९ ॥

तेवीस संता सूं गणी कियो, नवलांजी आदि श्रमणी सुखदाय क।
वखाण तप जप सिखण हुवो घणो, तिण सूं हो क्षेत्र सुरंगो थाय क॥ म० १०॥
सुजानगढ़ बीदासर राजाणै थई, रतनगढ़ थई सिरदारगढ़ रही मास क।
तिहां धर्म उद्योत हुवो घणो, कीधो है मिथ्यामत नास क॥ म० ११॥
विहार करी बहु झंड सूं, साजनसर में हुवो हुलास क।
दुलरासर ग्राम में अग्रचालो हुवां, आया है मांगासर में तास क॥ म० १२॥
परिश्रम अति गणी रै थयो, संत सतियां हो खेचल बहु पाय क।
दूजै दिन विहार करी सहु, कोस आसरे हो खिलेरये आय क॥ म० १३॥
खेद मिटी गर्मी तणी, पिण नन्दरामजी काल कियो तास क।
पहिलां रतनगढ़ चोमासै मन हुंतो, कोई जोग स्युं फिरगयो मन विमास क॥ म० १४॥
तिहां थी रतनगढ़ आविया, चोमासै री हो कीधी घणी हठ क।
बीदासर चोमासा रा भाव है, सवाई कसर काढ़वा रा भाव जठ क॥ म० १५॥
सैंतालिसै चोमासो बीदासरै, संत सेवा में हो छावीस मन ल्याय क।
श्रमणी गुणसठ हद सेवा मझे, मुझ कारण जोग रहिणों हुवो गणी पाय क॥ म०१६॥
गणी शुभ दृष्ट मुझ सेवा हुई, पढ़ावणो धरावणो हो कियो उपगार क।
चोथमलजी गणी कर संयम लियो, श्रावण में हो पुत्र पोतादि तज धन सार क॥ म० १७॥
चिरंजीलालजी भियाणी तणो, भ्रमविध्वंशन वांच सरधा आई ताम क।
भाद्रव गणी कर संयम लियो, जड़ावांजी चाड़वास रा पुत्र तज लियो आम क॥ म० १८॥
इम उपकार हुवो घणो, गणपति हो मघवा गणभाण क।
वावीममीं ढाले तीन चोमासा कह्या, शीतलता हो शशि तुल्य पिछाण क॥ म० १९॥

●

ढाल : २३

दोहा

हिव चोमासो उतर्यां, सुजानगढ़ लाडणूं होय।
जयपुर पूज पधारवा, अगन पुनम विहार कियो जोय॥ १॥
अनुक्रमें गणी विचरता, डीडवाणै कुचामण आय।
वाग में सरावगी लोग सैंकड़ा, केई प्रश्न पूछण केई दर्शण के आय॥ २॥
चरचा वात हुई घणी, जाब सुणी हरषाय।
कह्यो तकलीफ हुई आपनें, पिण इसा जाव देण वाला और न देखाय॥ ३॥
गोचरी में भक्त करता घणी, ठाकुर केसरीसिंहजी ताय।
कुँवर भमर नें वाग में भेजिया, अर्ज करी शहर में पधारो महाराय॥ ४॥

गणी कहै जाग्यां किसी, रुघनाथ सेठ नों नोरो तिहां आय ।
ठाकुर आया तामजाम बैठ के, ग्यान संभलायो बहु गणीराय ॥ ५ ॥
वाण सुण राजी हुवा, उठै पधार दर्श दिराय ।
अर्ज करी परलोक सुधरे मांहरो, एहवो बतावो उपाय ॥ ६ ॥
गणी कहै परिणाम सुध राखवा, सभै सो त्याग वैराग ।
चवदश नीलोती मदिरा शिकार नां, त्याग किया घर राग ॥ ७ ॥
कपड़ो धाम्यो पिण लीधो नहीं, सत्यां गया रावला मांय ।
सुणिया अति राजी हुवा, बात बहु पिण इहां अल्प कहाय ॥ ८ ॥
नावैं जोबनेर थई, आया जयनगरे गणीराय ।
ओषध कारण दस मास रे आसरै, रह्या घाटबाग शहर रे मांय ॥ ९ ॥

ढाल

[भिन्न भिन्न जाणे रे श्रावक जीव अजोव नें—ए देशी]

अड़चासे जयपुर छावीस संत सूं, कियो गणी मघ चोमासो जी ।
नवलां आदि श्रमणी बावन थकी, सारै सेव हुलासो जी ॥
धन २ मघवा रे गणपति गुणनिला, ओ मेट्यो मिथ्यात अंधारो जी ।
ग्यान दिवाकर जाहर जगत में, आप तिरै पर तारो जी ॥ ध० १ ॥
वखाण वाणी रे नित्यप्रति होवता, गणी वाणी अमृत धारो जी ।
सुणसुण भविजन चात्रक हुलसता, गणी अतिशय तेज अपारो जी ॥
धन २ मघवा रे गणपति गुणनिला, तारया भविजन वृन्दों जी ।
पंचम पाटे थाट किया घणा, विचरै जेम जिणंदो जी ॥ ध० २ ॥
दिक्षा तीन थई सतियां तणी, आसांजी राजाणां रा ताह्यो जी ।
नाथांजी सिरदारशहर नां, पेमांजी बनेड़ै सूं लियो आयो जी ॥ ध० ३ ॥
विहार करी नें बाग विराजिया, रेलघर भुठवाड़ै थई जोबनेरो जी ।
गुढै नांवै थई कुचामण आविया, मेला मंड्या तिण शहरो जी ॥ ध० ४ ॥
आगला ठाकुर तो परभव गया, पछै शेरसिंघजी पाट बैठ्या ताह्यो जी ।
कुंवर भमर सहित आया बाग में, विविध वाण सुणी हरपायो जी ॥ ध० ५ ॥
गंगाजी चांदकुंवरजी रतनगढ़ नां, गणी संगे कुचामण आयो जी ।
गहणा कपड़ा बाल्य वय देख नें, जन सैंकड़ा देखी इचरज थायो जी ॥ ध० ६ ॥
पोंहचावी ठाकुर तब पाछा वल्या, गणी आगै कीव विहारो जी ।
दौलतपूरै डीडवाणै थई, लाडणूं मास रही श्रीकारो जी ॥ ध० ७ ॥

मर्याद महोच्छव सुजानगढ़ करी, रही बीदासर राजलदेसो जी।
रतनगढ़ सिणगारां भीम बेटा भणी, दी दिक्षा मघवा गणेशो जी॥ ध० ८॥
सूरजमल बैद बेटी तस वहु, गंगा चांदकुंवारी कन्या जाणो जी।
बहु परिवार सगाई तज लियो, गणपति कनैं कर मंडाणो जी॥ ध० ६॥
विहार करी राजाणै रही, फिर चोमासो रतनगढ़ थायो जी।
संत तीस श्रमण्यां गुणचालिस सूं, गणी काढी कसर सवायो जी॥ ध० १०॥
पहिलां वखाण हूं देतो सही, ऊपर आप भगोती वंचायो जी।
राते रामचरित्र में पधारता, उपगार चोमासा में वहु थायो जी॥ ध० ११॥
दो पचरंगी संत सत्यां में थई, अन्यमति स्वमति आई दर्श करायो जी।
ढाल भली कही ए तेवीसमीं, गणी महिमां देख हरपायो जी॥ ध० १२॥



ढाल : २४

दोहा

श्रावण बिद छठ दिन सूं, सरदी लाग खांसी गई होय।
अल्प तप तनु लखावता, जद त्रिफला लीवा जोय॥ १॥
खांसी कारण लोहसार लियो, फुन उलटी कारण होय।
शक्ति घटी पण मन बल घणो, चोमासो उतर्‌यां विहार कियो गणी जोय॥ २॥

ढाल

[वड वडा राय आय मिलिया—ए देशी]

मृगशिर बिद एकम विहार गणी कर, रह्या बाहिर धर्मसाला मांय।
प्रदेशी नों व्याख्यान फुरमायो, वाण सुण भविक हुलसाय।
गणी गुण सागरू रे।
महिमागर जग जोय, हृदय निमल अति होय।
ग्यान विमल तन धोय, गणी गुण सागरू रे॥ १॥
पायली भोपालसर थई रे, आया राजलदेसर मांय।
अर्ज करी बीदासर नजीक है तिण सूं, आप पधारो गणीराय॥ ग० २॥
चुरू सिरदारशहर दर्शण देणां, हिवड़ां सीयाला मांहि।
पछै उठीनें जावणो, ते उन्हाला में होवै नांहि॥ ग० ३॥

वमन कारण शक्ति घटी, पिण रतनगढ़ थई चुरू आय।
वमन तप नों अधिक कारण, गणी साहसीक वेदना मांय॥ ग० ४॥
तिरखाराम हरियाणां तणो, दिक्षा लेवा आयो गणी हाथ।
लोकां अर्ज करी कम शक्ति तनु दुर्बल, कृपा करी विराजो गणीनाथ॥ ग० ५॥
दरश करवा आया संत सतियां, करता गणी गुणग्राम।
इसा आचार्य पंचम आरा में, पामणा दोहरा अभिराम।
गणी गुण सागरू रे।
भवोदधि तारण पोत, करता अधिक उद्योत।
घालत भवि घट जोत, अधिक उजागरू रे॥ ६॥
सात दिन अधिका रह्या दिक्षा वास्ते, दिक्षा देई कियो विहार।
गाजसर में रह्या गणपति, संत सत्यां बहु लार॥ ग० ७॥
इसा कारण में पगले पगले, आया सिरदारगढ़ मांहि।
लोक हजारां साहमा आया, साहसिकपणो बहु ताहि॥ ग० ८॥
मर्याद महोच्छव नीं ढाल जोड़ी, वखाण में पिण आवणो ताहि।
संत सत्यां नीं हकीकत सुणणी, हाजरी आलोयण आप ही दिराय॥ ग० ९॥
सूरा तप जप स्वामजी, वीरा कर्म विदार।
धीरा सुर गिरि सारिखा, हीरा हृदय धार॥ ग० १०॥
मुनि जन मेला मंड रह्या, गणी छटा रही छिव छाय।
परम दयाल गोवाल स्वामजी, महा हिम्मत महाराय॥
गणी गुण सागरू हो।
मिणधारी मुनि जोय, धर्म मूर्त जग जोय।
इसो अवर नहीं कोय, दायक तरु सो मोय।
अधिक उजागरू हो॥ ११॥
महोच्छव में वहु वार विराज्या, अर्थ फुरमावता गणीराय।
ऊपर वखाण में पधारता, फुन पुनम पट्टोत्सव ढाल वणाय॥ ग० १२॥
पुनम पुठै शक्ति कम थई, सूरवीरता अधिक सवाय।
सीख सुमति गणी आपता, वहु धार्यां शिव सुख पाय॥ ग० १३॥
युवराज पदवी देण मन में, कागद लिख्यो तिण मांय।
गुरजी प्रमाण लिख नवलांजीनें आप्यो, आगै वार्त्तिका[1] में कही सुणाय॥ ग० १४॥

१—वर्त्तिका

अर्हन् सिद्ध साधुभ्यो नमः। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय जय मघवा रै लारै ऋषि माणिकलालजी नें सर्व काम गण रो भार भुलायो। विनयवंत आग्या अखंड आराधसी तो गुरुजी वधसी। कुई वधसी। सर्व कार्य सिद्ध हुसी। ए कागद लिख नवलांजी नें आप्यो।

ढाल

गति दिवस सुणणी तो पहलांई भुलाई, आलोयण हाजरी पिण दीधी भूलाय।
लोकां में वात प्रसिद्ध हुई, सुदि तेरस विना पांती आहार रो फुरमाय ॥ ग० १५ ॥
आराधन री ढाल सुणी नें, दे मिथ्या दुःकृत सार।
न्हाय धोय निशल्य थया गणी, खमत खामणा करता वारूंवार ॥ ग० १६ ॥
केई संतां नें गाथा बगसीस कीधी, एक वर्ष तांई सींवाई रंगाई बगसीस ताहि।
सीख सुमति पिण अति देता, कारण में दृढ़ता सवाय ॥ ग० १७ ॥
चैत बद बीज चिहुं तीर्थ वृन्दे, मुझ युवराज पदवी दिराय।
आप अंग नो चोलपटो पछेवड़ी, निज कर सूं दीव उढाय ॥ ग० १८ ॥
भिक्षु भारीमाल मघवा आदि लिखत में, निज कर सूं मुझ नाम लिखाय।
पछै लिखत में संतां कनें कराया, थाप्या दृढ़ मर्याद कराय ॥ ग० १९ ॥
चैत बिद कै आयां सतियां, पटड्यां आदि ल्याया ते करी भेट।
निज कर सुं हकीगत सुण नें, इसो सावचेतपणो रह्यो ठेटा ठेट ॥ ग० २० ॥
गण कार्य आछा करी गणाधिप, आगुंच प्रवन्ध कराय।
मघवा गणपति बुद्धि निरमल, ए चोवीसमीं ढाल कहाय ॥ ग० २१ ॥

●

ढाल : २५

दोहा

पंचम दिन दोपार में, साता पूछी वाल्ही बाई ताय।
गणी फुरमायो भाव साता अछै, इसा दृढ़ घणा परिणाम ॥ १ ॥
रात बात विगत हुई घणी, लोकां नें फुरमावता ताहि।
खांसी घणी इम फुरमावियो, इग्यारा बजे आसरा मांहि ॥ २ ॥
थोड़ी वार हुई बोल्या नहीं, वार वार हेला पाड्यां स्वाम।
शरणा देवावा लाग्या जद कह्यो, युं क्यूं मुझ खांसी गई ताम ॥ ३ ॥
फुरमायो जगावो माणकलालजी, संतां जगाया मुझ ताय।
संतां कह्यो ओर संतां ने जगाय ल्यो, श्रीजी फुरमायो सूता नें क्युं जगाय ॥ ४ ॥
शब्द सुणी संत आविया, इतना क्युं बेठ्या आय।
जाय सुवो इम फुरमावियो, संतां अर्ज करी सेव महाराय ॥ ५ ॥

ढाल

[उमांदे भटियाणी हो०…ए देशी]

गणी स्वर्ग हुआ जिण राते हो, हित बातें शिक्षा कही घणी।
घणा हुंता भाया तिणवार।
गणपति गुण कर ताजा हो, अति जाभा फुरमायो माणकलालजी।
संत सत्यां नी लाज थांनें है लार।
घन घन मघवा स्वामी हो, हितकामी सीख सुहामणी ॥ १ ॥

किणरी प्रकृत करड़ी हो, बैंड़ी बोली केहनी।
सगलां नें लीज्यो निभाय।
किण वखत नरम हो जाणो हो, पलाणो शुद्ध साधुपणों।
आप पालणो निर्मल सवाय ॥ ध० २ ॥

संतां नें फुरमायो हो, गणिरायो आज्ञा माणकलाल री।
गुण निपजसी आराध्यां ताहि।
संतां अर्ज करि इम हो, वर आप जिसा माणकलालजी।
आराधस्यां इधक सवाय ॥ ध० ३ ॥

धीर वीर पणो अति भारी हो, सुखकारी वचन मिठास नों।
माणकलालजी राखज्यो सार।
सीखण अरु चितारण हो, उद्यम अधिको राखज्यो।
ज्यूं रहै निर्मल नाण उदार ॥ ध० ४ ॥

मूल में सुमत गुप्त महाव्रत में हो, सावचेत घणा रहिज्यो सही।
फुरमायो भाया कुण २ बैठा है ताहि।
संतां अर्ज कीधी हो, प्रसिद्धि श्रीचन्द संपतरायजी।
भैरूंदानजी नाहटा गिणाय ॥ ध० ५ ॥

वाघजी मथेरण मालू ब्राह्मण हो, रूपो जाट वलि ते सही।
भायां रै प्रीत भारी देखाय।
सेठजी सुजाणगढ़ सूं हो, रामपुरुया चुनिलाल वैद केवलचंदजी।
रतनगढ़ रा कोचर चुनीलाल जसकरण वैद वनणा कराय ॥ ध० ६ ॥

न्यारा न्यारा जिकारा फुरमाया हो, गणीराया उपयोग निर्मलो।
सेठजी नें सेवा करतां घणा दिन थाय।
सेवा चोखी साभी हो, यांरै प्रीत घणी सतगुरु थकी।
केई चूरू रा भाया आया चलाया ॥ ध० ७ ॥

गुलाबचन्द रायचन्द सुराणा हो, कोठारी मंगुरामजी।
वंदणा कियां जीकारा दराय।
ओर अनेक जन आया हो, सुख पाया गणि दर्श देख नें।
उण वक्त री भक्त सभाय ॥ ध० ८ ॥
वलि गणी इम फुरमायो हो, भिक्षु भारीमाल आदि आचार्य नां।
प्रबंध बांध्या घणा श्रीकार।
प्रवर्त्यां इण रीतैं हो, शुभ चित्तै कठै ही अटकै नहीं।
सीधी सड़कां बंधी छै इकधार ॥ ध० ९ ॥
लकारादिक नी मर्यादा हो, विगयादिक ओपध जे करै।
संत सत्यांरा पाना लिखते कर लेणा वंचाय।
शेषे काल चोमासो विचरथा हो, पूछा कर समाधान करणो सही।
हिव उपदेश सुणो गणि ना मुख नी वाय ॥ ध० १० ॥
कष्ट पड्यां सेंठाई हो, दृढ़ताई इधकी राखणी।
वले सूत्र नी गाथा फुरमाता गणिराय।
खुहं पिवासं दुसिज्जं हो, संगामसीसे इवनागराया तणी।
पछै आप ही अर्थ फुरमाय ॥ ध० ११ ॥
फेरुं गणि फुरमायो हो, जिनकल्पी कष्ट उदेरी ने लियै।
सहिजै कष्ट आयां रहिणो सम परिणाम।
महावीर भगवंता हो, जशवंता उदेर कष्ट लिया कर्म काटवा।
घणों सैंठो रहिणो वेदन में ताम ॥ ध० १२ ॥
महावीर जिनराया हो, सुखदाया मुक्ति पधारथा तिण रात्रि में।
वीस पहर देशना दिवराय।
तिम मघवा गणि पुन्यवंता हो, हित सीख उपदेश देई भलो।
जाणै थोड़ी बार में स्वर्ग सिधावणो ताहि ॥ ध० १३ ॥
संता अरज सीधी हो, कांई कीधी खेंचल हुई घणी आपनें।
सुख फुरमावो गणिराय।
जद फुरमायो सुवावो हो, जद पोढाया गणी तदा वले।
अर्ज कीधी सीख कोई फुरमाय ॥ ध० १४ ॥
जद गणी फुरमायो हो, ज्ञान ध्यान उद्यम राखणो घणो।
देखा देख गुण बधावणां ताहि।
इतलै भैरूंदानजी दुगड़ वनणा कीधी हो, संतां अर्ज करी तदा।
'जी' भैरूंदानजी स्वमुख कहाय ॥ ध० १५ ॥

फुरमायो बैठ्या करो हो, तब संत गणी नें बैठ्या कस्या।
बैठ्या करतांई उवासी आई तिणवार।
संतां तब पचखायो हो, संथारो चोविहार जावजीव रो।
सरध लियो तो भरावो हुंकार॥ ध० १६॥
दोय बार मस्तक हलायो हो, दिराया शरणा अरिहंत सिद्ध साधु धर्मना।
तुझ शरणो मुझ होज्यो बारम्वार।
शरणा गणि ने दराया हो, ते सरधिया दीसै गणपति।
मोतीजी स्वामी नवी गाथा जोड़ सुणाई तिणवार॥ ध० १७॥

मोतीजी स्वामी कृत—

पंचम पट विरद जगताधिप को, धास्यो गणी तारण भव जी को।
हो म्हारा स्वामी जयवर के लाला, लागो छो म्हांनै प्राण जिसा व्हाला॥ १॥
धी नो धणी सुरगिर सो धीरं, अन्तरयामी स्वयंभू सो गम्भीरं॥ हो०॥
जयवर शिष्य तूं जीवन जी को, छाजे जी स्वामी त्रिभुवन जश टीको।
गजब गुण ज्ञान गच्छाधिपको॥ हो० २॥
अहो तुझ क्षान्ति दान्ति मोक्ति, आर्यव मृदु लाघवता वेक्ति।
बहु नामी षट मत में मानी, वेता षट वाक्य समय जानी॥ हो० ३॥
कदरदानी कहा कहिये थांरी, देवद्रुम जैसी रिझवारी।
पावत जन प्रारव्द अनुसारी॥ हो० ४॥

ढाळ

ओर संत पिण जाणी हो, आ वाणी विध विध वागरै।
अहो अनाथां रा नाथ।
आप कही जे वातां हो, ए मातां हिये में दोहिली।
आ विविध समय रस आय।
धन धन मघवा स्वामी हो, विसरामी छा भव जीव नें।
तारक विरद दयाळ।
सखर गुणे करी धामी जी, ए कामी पंचमी गति तणा।
मुनियां मंडन माळ॥ १८॥
जिम चर्म जिनंद चर्म काळै हो, वरसाळै वाणी वागरी।
जिम मघवा गणी आप।

इत्यादिक बहु वाणी हो, आ कहाणी जुगो जुग होय रही।
सुजश रह्यो जग व्याप ॥ घ० १९ ॥
आप जिसा इण आरी हो, अवतारी होणा दोहिला।
मुनियां छत्र गणेश।
निर्मल नीत शुद्ध क्रिया हो, गुण दरिया सायर सारपा।
ज्ञाता दाता दरेश ॥ घ० २० ॥
माफ करण मां ताता हो, विख्याता जग ए जाणता।
वले पाता ज्ञान पंडूर।
गणि जश नी केई बातां हो, गातां याद आवै सदा।
ए जाता बनादे सूर ॥ घ० २१ ॥
अनुज पूर्णमल केरा हो, ए देहरा सुर गिर सारिपा।
सतीय गुलाब नां वीर।
जिन मग में भल गाज्या जी, ए राज्या गादी जय तणी।
अघ दल हणवा मीर ॥ घ० २२ ॥
सुर गिर जेम सधीरा हो, ए वीरा कर्म काटण थया।
बांधी बहु विध मेर।
ए ओपम जग में आछी हो, ए जाची देऊं आपनें।
अल्प बुद्धि थी न सकूं हेर ॥ घ० २३ ॥
या सरस रसे करि आखी हो, कांई भाखी संथारा तणी।
गणी साहमो रह्या संत भाल।
अंतकाल ओ देखी जी, विशेषी संता नें थयो।
विरह पचीसमीं ढाल ॥ घ० २४ ॥

●

ढाल : २६

दोहा

सम दम खम उपशम गुणे, त्राता दाता स्वाम।
ग्राहता गुण माता जशैं, राता ज्ञान रु ध्यान ॥ १ ॥
विमल निमल प्रज्ञा रली, भली मिली मति मोड़।
धिन धिन धिन हो स्वामजी, वंदै विहुं कर जोड़ ॥ २ ॥

प्रबल प्रतापी अति सुयश, जग जश लीधो थाप।
भव भव में आशाऽव तुझ, करी मुनियां शिर छाप ॥ ३ ॥
उपगारी शिर सेहरो, देहरो जिनमग खेम।
इण भरते जाहर हुंतो, अहो विलवं केम ॥ ४ ॥
पिण सूरपणो गणि देख नें, संत रहे समभाव।
मणधारी पुन्य पोरसा, अहो मुनियां ना राव ॥ ५ ॥

ढाल

[आज भलो दिन ऊगोजो सिमंधर—ए देशी]

संता कर साहरै वैठा हो, गणी गुण पैठा सहु नें मन में।
संत सांह्मो जोय रह्या तिणवार।
हूं अनें कालुजी मोतीजी स्वामी हो, भीम गोविन्द जुहारजी स्वामी भला।
गणेशलाल छबील स्वामी सुखकार।
धन धन मघवा मुनिराया हो, मन भाया भवियण जीव रै।
आप जिसा इण आर।
हुवा नें वलि होसी हो, जे जोसी उत्तम जीवड़ा।
पिण हिवड़ा विरह अपार ॥ ध० १ ॥
उदैराम ईशरजी फोजमलजी, नवलहजारी छजमलजी शिवकरणजी।
अभैराज पनालाल चांदमल ताहि।
शिवराज आणंदमल चुनीलाल हो, हरषचन्द रावतमलजी मोडजी।
लिखमीचंदजी सेव गणी मांहि ॥ ध० २ ॥
उदैचंद पनालाल मगनजी हो, कालुजी डालचंदजी चोथमलजी।
चिरंजी भीम छगन जणाय।
नवांलजी जेठांजी मुखांजी हो, सतियां एक सौ सात सेवा में भली।
उण निशि सहु संत चालीस सेवा रै मांय ॥ ध० ३ ॥
देखत देखत प्रदेश खंच्या हो, संत कहै स्वाम जाये सही।
देख्यां दोहरी लागी अत्यंत।
काल सूं जोर कछु नांहि हो, गणराई अनहर लियो तदा।
इम जाणी सम रहै संत ॥ ध० ४ ॥
साधां तनु वोसरायो हो, दिल ल्यायो अरिहंत देव नो।
फुन गणधर आदि गिनाय।

इम जाणी सम पीधोजी, रस लीधो वर वैराग्य नो।
चउ लोगस्स काउसग ठाय।
धन धन मघवा मणधारी हो, सुधारी सारी आपरी।
कुमिय न राखी काय।
मिथ्यामत कियो रंकोजी, ओ डंको दीधो जैत रो।
यो जश तंवू धरा रह्यो छाय॥ ५॥
छठ दिवस उपवासो हो, सुविमासो संत सती किया।
गुरु चरणां में लीन सवाय।
गणपति गुण ना दरिया हो, कांई भरिया ज्ञान अंबु करी।
याद आयां हियो हुलसाय॥ ध० ६॥
मुझ सूं उपगार अति कीधो हो, प्रसिद्धो ते कठा तक कहूं।
गणी ज्ञान चरण दातार।
आछा आछा कारज हो, भला गुरुदेव प्रसाद थी।
सेव सज्यां गुण आवै अपार॥ ध० ७॥
अंत समय गणी देखी हो, पेखी मन में आई घणी।
आयु तीर्थंकरादिक नों न रहाय।
लौकिक ओछव बहु कीधो हो, जश लीधो यो एह लोक रो।
वाक्यवी रूप कहाय॥ ध० ८॥
दिन उगां जन बहु आई हो, बणाई मंडी अति नवी।
विराजण बीच सिंघासण कराय।
फिरणी तिरवारै हो, साईवान खंच्या तिहां।
थांभा जरी साटण कनारयां सूं मंढाय॥ ध० ९॥
मुगज इकावन सोना रूपा रा हो, कलश तुरा सहित एकाणवै।
चोतरफ किरण वादला ताहि।
इकताली गंगा जमुना हो, गुमज साटण कनारी सूं मंढ्यो।
सवा सौ धजा पताका लहकाय॥ ध० १०॥
पूठै चन्द्रवो जरी बूंटां को हो, सिंघासण रै साचा मोती लड़ लटकती।
जाणै देव विमाण सो देखाय।
जरी मुखमल तणा तकिया गादी हो, तिण ऊपर महाराज शरीर बैसावियो।
स्नान विलेपन अंतर फुलेल लगाय॥ ध० ११॥
रेशमी वस्त्र सपेत जरी की चदर हो, जरी दुशालो ओढावियो।
मुख जड़ाउ सोनापति में वन्धाय।

साचा मोत्यां तिलक़ज हो, नवकरवाली मोत्यां री हाथ में।
नैत्र खुल्या निलाड़ घणो भलकाय ॥ ध० १२ ॥
श्रीजी शरीर विमाण बैसाणी हो, चिहुँ पासै चामर बींजता।
आगै नृत्य डंडोत करता जाण।
हजारों जनवृन्द आगै हो, लवाजमो आयो राज सूं।
बाजा छड़ी कोतल नगारा निसाण ॥ ध० १३ ॥
रसालदार थाणादार सिपाई हो, चिराकां बहु मंडाण सूं।
सिरै बाजार दोफारां करता उछाल।
टिकड़ी सोनां री रुपइया हजारां हो, जय २ शब्द मुख बोलता।
अन्यमति स्वमति बोलत वाण रसाल ॥ ध० १४ ॥
ए तो जीवित शाश्वत अमर हो, दर्श देख्यांई हुवै भलो।
अनुक्रम शिवजीरामजी आंचलिया री छतस्यां आय।
विमाणसहित शरीर संस्कारयो हो, केशर किस्तूरी अगर तगर कपूर घृत खोपरा।
आसरै नव सहस्र नाणो लगाय ॥ ध० १५ ॥
लौकीक ओछ्व बहु करायो जी, दरशायो देखी जिसी वारता।
नहीं धर्म पुन्य तिण मांहि।
चर्मकल्याण प्रभु नो सूत्रे दाख्यो जी, तिम भाख्यो गणी नो मैं सही।
और प्रयोजन नांहि ॥ ध० १६ ॥
पिण मघवा गण सारो जी, गुणक्यारो सार संभाल में।
गणप्रतिपाल गोवाल।
आचार दृष्टि अति तीखी जी, मति नीकी अति महाराज नी।
दिल नो दरिया दयाल ॥ ध० १७ ॥
शंख अमोघ हरि जाणो जी, पिछाणो गज भट सिंह गिरी।
कोठार तरु रवि चंद।
द्रह समंद जल भरिया जी, निरया नीर गंगा तणो।
हद वृषभ अनें नर इन्द ॥ ध० १८ ॥
ए षट दश ओपम वाची जी, कांई जाची कही सिद्धान्त में।
तिम साची गणपति सोय।
मोह किलो वश कीधो जी, कांई लीधो रस समय तणो।
अति हुंशियारी होय ॥ ध० १९ ॥
आचार सूत्र वपु वचना जी, कांई रचना सूत्र वांचनी।
मति विचारणा जोय।

प्रयोग संपदा भारी जी, वले सारी संग्रह करण में।
वले सारण वारण सोय ॥ घ० २० ॥
एह संपदा सोहै जी, जन जोवै सादृश जिन तणो।
सही मारग ए आज।
मघवा गणेन्द्र सा राजा जी, दिवाजा करता जगत में।
भविजन रक्षक लाज ॥ घ० २१ ॥
ए छवीसमीं ढालो जी, रसालो चर्म कल्याण नी।
मतिवंत गणिराय।
सो पिण स्वर्ग सिधाया जी, जश छाय रह्यो संसार में।
भवि रह्या सुख पाय ॥ घ० २२ ॥

●

ढाल : २७

दोहा

दिक्षा लेइ गणी किया सहु, चोमासा इकचालीस।
गुरुकुल वासे तीस वर्ष रह्या, इग्यारा वर्ष स्व इच्छा विचरया गणीश ॥ १ ॥
जबर संघयण सु स्वाम नो, जाणै समचउरंस संठाण उदार।
आचार्य नी संपदा, शोभै घणी श्रीकार ॥ २ ॥
किण २ देशे विचरिया, किहां २ कीध चोमास।
संकलनां क्षेत्रां तणी, वर्णवुं गुण जस वास ॥ ३ ॥

ढाल

[सीता आवै रे धर राग—ए देशी]

नव को अठाइसै सैंतीसै अड़तीसै, जयनगरे किया जय संग।
अड़तीसै पाट विराज नें, कीधो धरी उमंग।
सुणिये मघवा गणि चोमास ॥ १ ॥
श्रीजीदुवारे दश को चोमासो, इग्यारै रतलाम कीध।
बारै उदैपुर वलि तैंयालीसै, पाली तेरै बावीस प्रसिद्ध ॥ सु० २ ॥
चवदै सतरै तेवीसै छाइसै, गुणतीसै फुन तीस।
पैंतीसै छतीसै गुणचाली चमाली सैंताली, बीदासर ग्यार चोमासा जगीस ॥ सु० ३ ॥

सप्त चौमासा किया लाडणूं, पनरै ठारै सतावीस।
बत्तीसै फुन तेतीसै चौतीसै, छयालीसै सु क्षेत्र जगीस ॥ सु० ४ ॥
सुजाणगढ़ में च्यार चौमासा, सोलै उगणीसै चौवीस इकतीस।
चुरू वीसै चालीसै कीधो, जोधपुर इकवीसै पचीसै बैयालीस ॥ सु० ५ ॥
सिरदारशहर में दोय चोमासा, इकतालीसै पैतालीस।
चर्म चोमासो रतनगढ़ गुणचासै, थयो धर्म उद्योत जगीस ॥ सु० ६ ॥
बारै शहर में इकतालीस चोमासा, अड़तीसा तांई कस्या जय संग।
इग्यारै चोमास स्व इच्छा कीधा, पंच देशां में विचर उमंग ॥ सु० ७ ॥
देश प्रदेश विचर गणाधिप, सास्या जिम जिनराज।
जिन मग नें वर शोभ चढाई, सास्या भविक नां काज ॥ सु० ८ ॥
ज्ञान ध्यान उद्यम अति कीधो, लीधो लाभ अपार।
समय बत्तीस बांच्या बहु वेलां, थिर बुद्धि घणी श्रीकार ॥ सु० ९ ॥
चन्द्रप्रभा जैनेन्द्र व्याकरण, भट्टी माघ किरात।
विदग्ध मुख मंडन ने रघु दुर्घट काव्य, केई वांच्या सुजात ॥ सु० १० ॥
ज्ञानसूर्योदय नाटक सखरो, भरतबाहुबली गेय।
महाकाव्य ते सुगम पणै करी, व्याख्याने बहु देय ॥ सु० ११ ॥
न्यायदीपिका परिक्षामुखमंडन, समाधि तंत्र पिछाण।
योग शास्त्र ने चंपु नाटक नां, ग्रन्थां ना केई जाण ॥ सु० १२ ॥
छन्द रत्नावली स्तोत्र केई जाती, वले पइन्ना ताम।
इत्यादिक बहु ग्रन्थ तणा म्हैं, लेउं कितायक नाम।
मघवा भजले पर्म दयाल ॥ १३ ॥
टीका संस्कृत प्राकृत फुन, ज्यांरा ग्रन्थ अनेक उदार।
केई पूर्ण केई वाकव रूपज, धारण अन्यमत ग्रन्थ आचार ॥ म० १४ ॥
उत्तराध्ययन रु दशवैकालिक, आवश्यक धुर आचारंग।
वृहत्कल्प ओर सूत्र नी गाथा, किया कंठाग्रे धरी उमंग ॥ म० १५ ॥
पूर्वार्द्ध सारस्वत नों, उत्तरार्द्ध चन्द्रिका नो जाण।
ग्रन्थ हजारां लिखणो कीधो, गणी अक्षर श्रेठ पिछाण ॥ म० १६ ॥
झीणी रहस्य समय नी, वले भांगा विविध पिछाण।
कठिन २ थल अति ही ऊंडा, ते जाण्या गणी भाण ॥ म० १७ ॥
धारणा शक्ति अति ही जबरी, कंठे पिण बहु होय।
प्रश्न पूछ्यां जाव तुरत ही, मधुर वचन दे मोय ॥ म० १८ ॥

रामचरित्र नें जम्बूकुमर, शालभद्र प्रदेशी जाण।
अमरकुमर सुरसुन्दरि नेम चरित्र, कंठाग्र किया आदि वखाण॥ म० १६॥
जय सुयश नें गुलाव सुयश, चउढाल्या त्रिहुं जाण।
वनां दलीचंद मयाचन्द स्वाम नो, ढालां गुलाव सती नी पिछाण॥ म० २०॥
तेरस सातम पूनम महोछव री, ढालां अनेक पिछाण।
संत सती तपस्या चोमासा री, वणाया प्रश्न उत्तर केई जाण॥ म० २१॥
संस्कृत अरु श्लोक भाषा नां, जोड्या केई गणिराज।
फुटकर कलश मानतुंग शोधी, पठन दियो केई साझ॥ म० २२॥
अष्ट सम्पदा सहित गणाधिप, गुण पट तीस उदार।
बहुश्रुती नी षोड्श ओपम, फावती गणी श्रीकार॥ म० २३॥
गणी गुणधारक भवोदधि तारक, कारक वर मर्याद।
दायक शिव सुख लायक लज्जा, सहायक ज्ञान ध्यान अहलाद॥ म० २४॥
सुरगिर धीर गिरवर सो, सायर जेम गंभीर।
हीर कीर सम उज्वल नाण युग, परिषह जीतण गणी सूर॥ म० २५॥
ज्ञान सु दाता ध्यान सु ध्याता, त्राता षट् काया व्रत पाल।
जिन वच राता ज्ञान सु पाता, साता शासण करण संभाल॥ म० २६॥
सौम्य वदन सुन्दर हद सोहै, मोहै भविक मराल।
वाणी अमृत घन जिम गुंजै, इर्य्या धुन हस्ती सम चाल॥ म० २७॥
मिथ्या तिमिर हरण गणी भानुं, मानु जिम महावीर।
शरद शशांक समो मुख शीतल, प्राक्रमधर कंठीर॥ म० २८॥
गण वृद्ध करण सु सारण वारण, खलता खोड़ मिटाय।
सीख सुमत दे निर्मल किये, वारू शासण शोभ चढ़ाय॥ म० २६॥
परम पूज्य ना अथग अनंत गुण, रवि रसना केम कहाय।
गणी गुण गातां गिनाता अंगे कह्युं, तीर्थंकर गोत बंधाय॥ म० ३०॥
मुझ सूं उपगार कियो अति मोटो, ते कह्यो कठा लग जाय।
ज्ञान सु आपी दृढ पद थापी, वलि विविध कुबं बधाय॥ म० ३१॥
गणी गुण सूरत याद आयां ही, हृदय कमल विकसाय।
पूरण भाग्य उदय थी पाम्या, मघव जिसा गणीराय॥ म० ३२॥
संत छतीस थया गण बारै, श्रमणी छिहंतर जाण।
स्व हस्त बावीस नें पैंताली, तारया गणी गुण भाण॥ म० ३३॥
नमो नमो श्री मघवा गणाधिप, तारण तिरण जिहाज।
संत एकोत्तर सत्यां शत सताणुं, म्हेली सारया आतम काज॥ म० ३४॥

इकतालीस वर्ष पूणा चार मासज, आराध्यो चरण उदार।
सर्व आयु तेपन वर्ष मठेरो, गणी पाल्यो पुन्य प्रकार॥ म० ३५॥
गणी मघवा गुण नो ग्रंथ रच्यो ए, कितियक सुणी लिखाई वात।
केइ निजरां देख्या गणि ना गुण, ते प्रगट किया विख्यात॥ म० ३६॥
अधिको ओछो आयो कै को, विरुद्ध आयो हुवै कोय।
कहतां असत्य लागो हुवै कोई, तो मिच्छामि दुक्कडं मोय॥ म० ३७॥
संध्या बाण ग्रह शशि संवत्, कार्तिक शुक्ल गुरुवार।
अष्टमी दिन वर जोड़ रची ए, बीदासर शहर मझार॥ म० ३८॥
समण पनरै समणी तीसज, तप जप अधिक जगीस।
वखाण वाणी वांचण विचारण, सारण वारण निश दीस॥ म० ३६॥
ढाल भली ए सप्त वीसमीं, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय।
जय मघवा प्रसाद कियो जश, मघवा पाटोधर धरि उच्छाह॥ म० ४०॥

छंद

इम करी रचना मघवा गुण नी, अधिक मन उलट धरी।
घणां दिवस मुझ उत्साह हुंतो, आज ते सफली करी।
सुख दयण रयण गणी वयण साचा, धारियां शिव पाव ही।
गणीराज शरण सु विघ्न हरणज, रह्या मंगल माल ही॥ १॥